लड़ाई के बाद

मामा वरेरकर

अनुवादक
श्री रामचन्द्र रघुनाथ सर्वटे

संस्करण : प्रथम १९६१

मूल्य . पाँच रुपये पचास नये पैसे

प्रकाशक विद्या प्रकाशन मन्दिर, दरियागंज, दिल्ली-६
मुद्रक हरिहर प्रेस दिल्ली

प्रस्तावना

प्रस्तुत उपन्यास का इतिहास अपने मे कुछ कम अपूर्व नही है, ऐसा मेरा ख्याल है। मूल कथावस्तु पर मैंने सन् १९२० मे एक नाटक लिखा था और सत्ताईस वर्षों के बाद सन् १९४७ मे वही कथावस्तु (मराठी मे) उपन्यास के रूप मे प्रकाशित हुई।

सन् १९२० मे इंदौर महाराज की 'यशवंत नाटक मडली' के सूत्र जब गणपतराव बोडस के हाथ मे आये, तब उस नाटक मंडली के लिए उन्होने मुझ से एक नाटक लिखने को कहा। मैंने उन्हे यह कथावस्तु बतायी। वह उन्हे अच्छी लगी और तुरन्त ही नाटक लिखना आरम्भ कर दिया गया। मडली जिस समय जलगाँव मे अपने खेल कर रही थी, उस समय नाटक का एक अंक लिखा जा चुका था और कपनी ने नाटक की 'तालीम' भी शुरू कर दी थी। परन्तु उसी वर्ष के अत मे बोडसजी ने यशवंत मडली से अपना सम्बन्ध तोड़ दिया। इस कारण नाटक की तालीम वही तक रही।

इसके बाद ललितकलादर्श मंडली के केशवराव भोसले ने इस नाटक को रगमच पर लाने का निश्चय किया। उस समय मडली टिपनीसजी का 'शहा-शिवाजी' नाटक जमा रही थी। उसके रंगमच पर आने के बाद यह नाटक रग-भूमि पर लाया जायगा, ऐसा तय हुआ था। इस नाटक मे जो लडाई के प्रसग थे, वे चित्रपट के द्वारा दिखाये जाने की योजना बनाई गई थी और इसलिए यह तय हुआ था कि जब मडली अपने खेल करने बम्बई जायगी, उसी समय इस नाटक की 'तालीम' शुरू की जायगी। 'शहा-शिवाजी' नाटक रगभूमि पर आया और गंधर्व तथा ललितकलादर्श दोनो मडलियो के संयुक्त खेल होने के थोडे ही दिन बाद,

याने ४ अक्टूबर १९२१ को, केशवराव भोसले का देहान्त हो गया। जिस योजना के अनुसार इस नाटक को खेलना तय हुआ था, उस योजना के अनुसार उसका खेला जाना नयी व्यवस्था मे, मडली की आर्थिक दृष्टि से सभव न होने के कारण मैंने मडली के लिए 'सत्त्चे गुलाम' (हिन्दी अनुवाद 'हक के गुलाम' नामक एक नया नाटक उस समय लिख दिया।

ललितकलादर्श मडली की आर्थिक दशा अच्छी हो जाने पर जब-जब इस नाटक को रगमच पर लाने का प्रयत्न किया गया, तब-तब सरकार से उसके खेलने की मंजूरी न मिली। इसलिए रंगभूमि और चित्रपट के मेल का प्रयोग अत मे कमतनूरकर के "श्री" नाटक के समय किया गया और वह सफल भी हुआ।

कथावस्तु मुझे अत्यन्त प्रिय थी और मैं उसे यू ही छोड देना नही चाहता था। नाटक दिखाने के लिए सरकार की मजूरी लेनी पडती है। परन्तु वही कथावस्तु उपन्यास के रूप मे छापनी हो, तो सरकार की मंजूरी की जरूरत नही होती। इसलिए मैंने उसे उपन्यास के रूप मे लिख डाला। शिवरामपत करदीकर ने अपने 'त्रिकाल' नामक सप्ताहिक पत्र के लिए यह उपन्यास ले लिया और उसके बारह प्रकरण धारावाहिक रूप से उसमे छपे भी। परन्तु आगे चलकर त्रिकाल साप्ताहिक का दैनिक मे रूपान्तर हो गया और इसलिए उपन्यास वही तक छपकर रह गया। उपन्यास की कथावस्तु युद्ध विरोधी होने के कारण और नाटक के रूप मे उसे सरकार की स्वीकृति प्राप्त न होने के कारण कोई प्रकाशक उपन्यास प्रकाशित करने को तैयार ही न होता था। एक प्रकाशक उपन्यास छापने के लिए पाडुलिपि मेरे पास से ले गये और दो साल तक अपने पास ही उसे रखे रहे।

सन १९३९ के आरम्भ मे "किताबखाना" वाले श्री-दामले ने इस उपन्यास को छापना चाहा। पर कई महीनो तक उसकी छपाई नही हो पाई। सयोग ऐसा आया कि इधर उपन्यास के पहिले फार्म का कपोजिंग पूरा हुआ और उधर उसी समय दूसरा महायुद्ध शुरू हो गया। इसलिए वह

काम बन्द कर देना पडा। उस लडाई के जमाने मे यदि यह उपन्यास प्रकाशित हो जाता, तो निश्चित ही सरकार इसे जब्त कर लेती। लडाई के बाद भी पूरे दो वर्ष गुजर गये और तब कही जाकर यह उपन्यास मराठी में प्रकाशित हुआ।

इसके प्रकाशन का आनन्द कितना बडा है, इसकी कल्पना मेरे अतिरिक्त और किसी को नही हो सकेगी। जहाँ तक मैं जानता हूँ कम-से-कम भारतीय साहित्य मे, इस प्रकार का यह उदाहरण पहिला ही होगा। विशेष आनन्द इसलिए होता है कि इस उपन्यास को प्रकाशित होने के लिए भारतवर्ष के स्वतन्त्र होते तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। स्वतन्त्र भारत मे ही यह यह उपन्यास प्रकाशित हो यह मेरा बड़ा भाग्य है।

पहिले युद्ध के समय मैं संगमेश्वर मे पोस्टमास्टर था। उस समय लड़ाई से लौट कर आये भिन्न-भिन्न व्यक्तियो से मुझे जो जानकारी मिली, उसी के आधार पर यह कथानक लिखा गया है। इसमे लड़ाई की जो घटनाये आई हैं, वे सब यथातथ्य हैं। विशेषतः डाक विभाग के मेरे एक मित्र गोपीनाथ सैतवडेकर ने, जो बैलजियम फ्रंट पर गये थे, और मेरे एक दूसरे मित्र श्री माधवराव कामत ने, जो मेसोपोटामियन, (जिसे आजकल ईराक कहते हैं) फ्रंट पर गये थे, वहाँ की जो सत्य-कथायें सुनाई उन्हीं पर इस उपन्यास के प्रसंग आधारित हैं। इसलिए मैं इस उपन्यास को 'ऐतिहासिक' कहता हूँ।

पहिले महायुद्ध के बाद गावो और शहरो मे जो परिस्थिति निर्मित हुई उसी से आगे चलकर मजदूर-आन्दोलन का जन्म हुआ। सच पूछा जाय तो बम्बई के मिल मजदूरो का आन्दोलन किसानो का भी आन्दोलन है। पहिले महायुद्ध के कारण गाँव उजड गये, इसलिए गाँवो के किसान बम्बई जाकर मजदूर बने। किसान और मजदूर इन दोनो हैसियतो से निर्मित हुए असंतोष से ही मिल-मजदूरो का आन्दोलन उत्पन्न हुआ।

प्रस्तुत कथानक उसकी प्रस्तावना है। इसके बाद के मजदूरो के आन्दोलन का इतिहास मेरे 'धावता धोटा' (उडती ढरकी) उपन्यास तथा 'सोने का शिखर' नाटक मे आया है।

पहिले महायुद्ध के बाद की परिस्थिति और दूसरे महायुद्ध के बाद की परिस्थिति, दोनो मे बहुत बडा अन्तर है। शिधू और अर्जुनराव के जीवन मे महायुद्ध के बाद जो घटनाये घटी, उन्हे उपन्यास मे यद्यपि सजाकर बताया गया है, फिर भी वे निरी काल्पनिक नही। जो पर्यवसान हुआ वह चाहे बिल्कुल ही वास्तविक स्वरूप का न हो, परन्तु लाक्षणिक दृष्टि से देखा जाय, तो बिल्कुल ही अवास्तविक नही कहा जा सकता। द्वितीय महायुद्ध के बाद का इतिहास पाठको के सन्मुख है, इसीलिए प्रथम महा-युद्ध के बाद के इतिहास का इसमे मिलाकर देखने के लिए यह कथानक उपयुक्त सिद्ध होगा।

महायुद्ध के बाद सामान्य जन जीवन किस प्रकार क्षत-विक्षत होकर बिखर गया, इसकी अनुभूति आज भी ताजी है। आज भी विश्व की कुछ बडी शक्तियाँ इस ससार को शीत-युद्ध मे लपेटे हुए है तथा कौन जाने कब अपने उन्माद से इस दुनियाँ मे विनाश की ज्वाला भडका दें, पर यह तो निश्चय है कि अगला विश्व युद्ध जितना ही वैज्ञानिक होगा उतनी ही उस की विनाश-लीला भयकर होगी और सामान्य जन-जीवन पूर्व महायुद्ध की अपेक्षा अधिक पीडित, दारुण और करुण होगा।

संसद-सदस्य (राज्य सभा)

नई दिल्ली

१ जून १९६१

भा० वि० वरेकर

प्रकाशकीय

मेरे आश्चर्य का उस समय ठिकाना न रहा जब मामा साहब ने एक जोर का ठहाका लगाते हुए कहा कि मैं पहले महायुद्ध के समय पोस्ट-मास्टर जरूर था, पर मैं सैनिक या पोस्ट-मास्टर के रूप मे लडाई के मैदान में कभी नही गया। हाँ, मेरे कुछ मित्र, जो लड़ाई का अनुभव लेकर लौटे थे, उन्ही से कुछ सुनी सुनाई बातो के आधार पर मैंने इस उपन्यास की रचना की है।

मामा साहब की अनुभूति बडी तीव्र और मर्मभेदनी है। उपन्यास को पढते हुए ऐसा लगता है जैसे पाठक स्वयं युद्ध-भूमि पर उतर कर सब कुछ देख रहा है। जिस कुशलता और मार्मिकता से मामा साहब ने अपने पात्रो की मन स्थिति का वर्णन किया है, वैसा वर्णन क्या बिना एक बार युद्ध-भूमि में गए कोई कर सकता है और यही मामा साहब की इस उपन्यास मे चरमकुशलता है कि युद्ध का अनुभव लिए हुए लोगो की अपेक्षा अधिक मार्मिक अनुभूति की संवेदना वे पाठको को देते है। इसके कुछ पात्र शिधू, अर्जुन आदि जो यथार्थ हैं वे तो अपने मे सजीव है ही, पर मादेलीन के रूप मे करुणा और उज्ज्वल चरित्र की जो सजीव मूर्ति मामा साहब ने खडी है वह अन्य पात्रो की अपेक्षा अधिक सजीव और मन पर अपनी अमिट छाप छोडने वाली है।

आज विश्व के शीत-युद्ध के विषम वातावरण मे, इस उपन्यास का प्रकाशन काफी सामयिक है।

कड-कट्ट-कडकट्ट

तार-प्रेषक यंत्र की 'कड-कट्ट-कडकट्ट' लगातार जारी थी। खिडकी के पास कोई नही था। आफिस मे प्रायः सन्नाटा छाया हुआ था! दोपहर का वक्त था।

पोस्ट-मास्टर साहब मेज पर पैर फैलाकर कुर्सी से टिके सो रहे थे। क्लर्क महाशय अपनी मेज़ पर सिर रखकर आराम कर रहे थे। तार बाबू शिधू जोशी तार-प्रेषक यत्र के नजदीक उस 'कड-कट्ट-कडकट्ट' के बीच की मेज पर सिर रखकर सोया हुआ दिख रहा था।

पर वह सोया नही था। उसके मस्तिष्क मे लगातार विचार आ रहे थे। उसके घर की आर्थिक परिस्थिति कोई बहुत अच्छी नही थी। संगमेश्वर जिले के कलबस्त नामक 'एक छोटे-से गाँव मे उसका एक छोटा-सा घर था। घर मे बूढी माँ थी। घर के बुजुर्गो मे दूसरा और कोई न था। तार बाबू की हैसियत से उसे २० रू० माहवार वेतन मिलता था। अपना खर्च चलाकर हर महीने के अत मे उसे पाँच-सात रुपये अपनी माँ के खर्च के लिए भी भेजने पडते थे। घर की खेती-बारी न हो, यह बात न थी, पर उस खेती से आय कुछ न थी।

कलंबस्त गाँव का वह जमीदार था। जमीदार के हक के बदले उसे साल मे निश्चित रूप से कुछ आय बँधी थी। पर उसमे हिस्सेदार भी बहुत थे और उसके ये भाईबंद अलग-अलग रहते थे। इसलिए इस शान के सिवा, कि मैं जमींदार हूँ, खेती से उसे और कोई लाभ न था।

वह बडा महत्वाकाक्षी था। मैट्रिक पास होने के बाद उसने वकालत पढना शुरू किया। परन्तु वकालत की पढाई से पेट न भरता इसलिए उसे डाक विभाग जैसे रद्दी मुहकमे मे नौकरी करनी पड़ी। उसी समय

के लगभग संयोग से बहुत से नये तारघर भी खुले, वरना तार का काम सीखने के लिए उसे कितने ही वर्ष प्रतीक्षा करनी पडती।

उस अवसर से लाभ मिल जाने के कारण एक ही साल मे उसकी तनख्वाह १५ रु० से बढकर २० रु० हो गई। उसके अन्य साथियो को, जो बिना मैट्रिक या स्कूल फाईनल पास किये ही नौकरी पा गये थे, शिधू से ईर्षा होने लगी। १५ रु० से २० रु० की तरक्की पाने के लिए तार की परीक्षा पास न होने के कारण उन्हे अभी पाँच-छः साल और लगने वाले थे।

हर साथी ने उसका अभिनन्दन किया। परन्तु उस अभिनन्दन मे मत्सर की बू थी। वे कहते, तुम्हारा क्या पूछना है, भई! तुम ठहरे मैट्रिक-पास। मैट्रिक पास होने पर तुम अफसोस करते थे कि जाने सरकारी नौकरी मिलती है या नही? आजकल स्कूल फायनल पास किये बिना सरकारी नौकरी मिलना बहुधा बडा मुश्किल होता है। यही एक मुहकमा है जहाँ मैट्रिक-पास को नौकरी मिल जाती है। नौकरी मिलते ही तुम्हारी किस्मत भी जाग उठी। सरकार ने तार घरो की सख्या बढाने का निश्चय किया और मैट्रिक होने से तुम्हें पहला चान्स दिया। बेटा, पूरे पाँच साल निगल डाले तुमने! बस, मजे हैं तुम्हारे।

जब उसके साथी ऐसी बात कहते तो उसे जितना आनन्द होता उतना ही दुख भी होता।

उसकी यह बडी महत्वाकाँक्षा थी कि कालेज मे जाकर एल० एल० बी० पढे। वह स्वदेशी आन्दोलन का जमाना था। नौकरी करना उस वक्त हेय माना जाता था और वकालत को लोग राजनीति मे प्रवेश करने का पहला कदम मानते थे। आज वकालत का उतना सम्मान चाहे न हो, पर उस जमाने मे वकील होने वाला प्रत्येक व्यक्ति कभी-न-कभी एक राजनीतिज्ञ व्यक्ति होगा, ऐसा सर्व-साधारण जन-समाज का विश्वास था।

राजनीति मे प्रवेश करूँ, नाम कमाऊँ, थोडी देशसेवा कर सकूँ,

ऐसी शिघू की महत्वाकांक्षा थी। पर जिस दिन उसने नौकरी स्वीकार की उस दिन उसके सामने यह प्रश्न खडा हुआ कि नौकरी मिलने से मैं आज अपनी उस महत्वाकाक्षा से तो वचित नही हो गया। और इस लिए उसने अपनी पुस्तके नही फैकी।

यहाँ यद्यपि वह सरकारी दफ्तर मे, तार बाबू की हैसियत से तार-प्रेषक यत्र के नजदीक मेज पर सिर रखकर, अग्रेजी साम्राज्य के एक महत्वपूर्ण विभाग की इकाई के नाते बैठा था, फिर भी उसके दिमाग मे वकील बनकर देश-सेवा करने के विचार निरंतर उठ रहे थे। अपने लिये उसने इस समय जिस पुस्तक का उपयोग किया था, वह कानून की ही एक किताब थी। वह आँख बंद किये पडा था फिर भी उसके चेहरे पर हास्य की हलकी रेखा चमक रही थी।

वह हवाई महल बना रहा था। वकील होने पर सनद कहाँ की निकालूँ? रत्नागिरी के डिस्ट्रिक्ट कोर्ट मे वकालत करूँ या कि सीधे बम्बई हाईकोर्ट से ही आरम्भ करूँ? यह वह तय नही कर पा रहा था। उसे लगता, रत्नागिरी मे क्या रक्खा है? उसी तरह वह सोचता; बबई मे भी क्या धरा है? मुझे तो सीधे पूना जाना चाहिए। देश-सेवा की आग उस सयय पूना मे धधक रही थी। लोकमान्य तिलक के कार्य से सारा महाराष्ट्र ही नही, अपितु समूचा हिन्दुस्तान चौधिया गया था। लोकमान्य तिलक को छः वर्ष के कारागार की सजा मिलने से हिन्दुस्तान की राजनीति मे कुछ शिथिलता आ गई थी, पर सब को यह विश्वास होने लगा था कि यह शिथिलता शीघ्र जाती रहेगी।

उस भविष्य काल पर शिघू की दृष्टि केन्द्रित हो गई थी।

इस तरह विचार करते-करते वह चौक पडा और झट से जाकर उसने तार-प्रेषक यंत्र की चाबी पर हाथ रखा। इस समय तक उस यत्र से जो "कटकट" चल रही थी, उससे शिघू का कोई सम्बन्ध नही था। जब उसके आफिस के नाम से पुकार आई तो वह चट-से काम के लिए तैयार हो गया। दो-तीन तार आये थे। उन्हें लेकर उसने पैंसिल फैक

दी और कुर्सी पर पीछे गर्दन डालकर "हुश" करता हुआ पड गया।

खिडकी के दरवाजे पर कोई एक व्यक्ति खडा था। उसने धीरे से "बाबू साहब" कहकर बड़े अदब से शिधू को पुकारा। शिवू ने उसकी ओर मुडकर देखा। वह तड़ाक-से उठा और और खिडकी के पास जाकर बोला—"क्या हुआ ? क्या घर में आग लग गई है ? या कोई सरकारी वारट आया है ? या कोई बीमार मौत की घडिया गिन रहा है ? क्या हुआ—आखिर हो क्या गया ?

शिधू की इस भरमार से बेचारा खिडकी के पास खडा वह मनुष्य घबडा गया। वह बोला—"मुझे तार करना है।"

"फिर करो न ?"—शिवू ने उसे उत्तर दिया—"मैं कहाँ कहता हूँ कि मत करो ? इसी काम के लिए तो सरकार मुझे हर महीने बीस रुपये नकद बजाकर देती है। तार ले आये हो लिखकर ?"

"मुझे अग्रेजी नही आती बाबू साहब ?"—उस व्यक्ति ने उत्तर दिया।

"ऐसा !"—शिधू ने व्यग-पूर्ण आवाज मे कहा—'तुम्हे अग्रेजी नही आती ? फिर तुम दुनिया मे क्या करोगे ? अँग्रेजी के बिना जिन्दा नही रह सकते। अगर अँग्रेजी न आती, तो दादा भाई नौरोजी, माननीय गोखले और लोकमान्य तिलक को कोई कुत्ता भी न पूछता। अँग्रेजी न आती तो 'बग-भग' का आन्दोलन लडखडाकर गिर पडता। अग्रेजी है इसीलिए स्वदेश है…'

"माफ कीजिए"—वह व्यक्ति बोला—"मुझे विलायत तार भेजना है।"

आश्चर्य-चकित होकर शिधू बोला—"ओहो ! अँग्रेजी के नाम तो काला अक्षर भैंस बराबर है, और तार करोगे विलायत ? क्या अंग्रेजी न जाननेवालो का भी विलायत से सम्बन्ध होता है ? ऐसा कौन है तुम्हारा जो विलायत गया है ? कम-से-कम उसे भी अँग्रेजी आती है या नही ?

"उसे भी नही आती।"—वह व्यक्ति बोला।

जोर से माथा पीटकर शिधू कुर्सी पर बैठ गया।—"हे भगवान ! हे सगमेश्वर के करुणेश्वर ! अँग्रेजी न जाननेवाले लोग भी विलायत जाते है और इस शिधू को अँग्रेजी का अच्छा ज्ञान होते हुए भी तूने उसे कट्-कड्कट्ट करने को इस तार-आफिस मे क्यो बन्द कर रखा है ?"

तार बाबू के उपरोक्त उद्गार सुनकर खिडकी के पास खड़ा हुआ वह व्यक्ति बहुत शरमिदा हो गया। क्या कहे, यही वह नही समझ पा रहा था। मुझे अँग्रेजी नहीं आती और मैं तार करने आया हूँ और अँग्रेजी न जाननेवाले अपने भाई को विलायत तार कर रहा हूँ, ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाने के कारण मुझे तार बाबू से इतनी फटकार सुननी पडी, इसका उसे बहुत दुख हो रहा था।

'क्या करूँ बाबूजी"—वह बोला—"हम दाल्दी लोग है। मछलियाँ मारते मारते हमारी जिंदगी बीत गई और फिर हम है मुसलमान।"

"मुसलमान ! तुम मुसलमान हो ?"—शिधू चिल्लाया—'अरे, बडी शुद्ध मराठी बोलते हो तुम तो ! कोकण के मुसलमान अपने को मुसलमान क्यो कहते हैं, इसी पर मुझे ताज्जुब होता है ! अच्छा तो तुम दाल्दी हो ?"

अपने आपसे पुटपुटाता हुआ शिधू बोला—"तुम दाल्दी हो। अच्छा, अब यह बताओ कि तुम्हारा भाई, नही तो बाप, नही तो ससुर, या दामाद, क्यो जी, तुम्हारे लडकी है क्या ?—कहाँ का तुम्हारा कौन किस जहाज से विलायत के किस शहर गया है ? कैसी बदकिस्मती है, देखो ! यह दाल्दी हुआ इसलिए विलायत जा सकता है। और मैं ब्राह्मण हुआ इसलिए यहाँ तार बाबू होकर अटका पडा हूँ। यदि मैं मुसलमान होता, या कम-से-कम ब्राह्मण न होता तो यह दाल्दी मुझे भेंट देने के लिए दो-चार मछलियाँ ले आता।

"शायद मछलियाँ आपको नहीं चलतीं साहब ?"—वह व्यक्ति बोला—"मैं ले आया हूं थोड़ी-सी। आपके बड़े साहब को चलती हैं

न ! परसों विलायत से मेरा मनीआर्डर आया था उस समय उन्होने भी ऐसा ही कुछ कहा था ।"

"हाँ, हाँ ! उन्हे चल जाती है । अगर लाये हो, तो दे दो उन्हे । अच्छा, तो अब बताओ क्या तार करना है तुम्हे ?'

उस व्यक्ति ने जेब से एक कागज निकाला और शिधू को थमा दिया । पता मर्सलीस का था । शिधू उस पते की ओर लगातार देखता रहा । मार्सलीस का बन्दरगाह उसकी नजरो के सामने मूर्त हो गया था । जहाज भी उसकी कल्पना-सृष्टि मे उतर आया था और वहाँ उसे एक मूर्त्ति भी दिखाई देने लगी थी । इस दाल्दी व्यक्ति का वह भाई नीली वर्दी पहिने हाथ मे झाडन रखे डेक साफ करता हुआ उसे दिखने लगा । शिधू को लगा, डेक साफ करके ही क्यो न हो, पर मुझे भी विलायत जाने मिल जाता तो ? ···· ··· ।

उसने तार लिखा । गाईड निकालकर रेट देखा, क्योकि उस गाँव से तार विलायत शायद ही कभी जाते थे। उसने पैसे गिन लियें । उस व्यक्ति को टिकट देकर उससे उन्हे पीले फार्म पर चिपकाने को कहा और उसे रसीद देते हुए बोला—"यार, तुम बडे किस्मत वाले हो ! क्या तुम नही जाओगे कभी विलायत ?"

"मैं कैसे जा सकता हूँ विलायत ?"—वह बोला—"आज मेरे पाँच भाई अलग-अलग जहाज पर गये हैं । वे वहाँ से पैसे भेजते हैं और मैं इधर रोजगार करके परिवार को सभालता हूँ । इसके सिवा मेरी एक नौका भी है । नौका से मुझे अपने पेट लायक काफी मिल जाता है । इसके सिवा······"

"ठहरो ।"—शिधू बोला ।

वह पोस्टमास्टर की मेज के पास गया । मास्टर साहब अभी तक सोये हुए थे । उसने मेज पर दो-चार बार हाथ पटका । मास्टर साहब जाग गये । शिधू ने खिड़की की ओर अगुली दिखाकर हाथ के इशारे से पोस्टमास्टर को मछली के आकार का संकेत किया । "ले

आया है ।"—शिधू बोला, "परसो जब इसका मनीआर्डर आया था, तब आपने इससे मछलियाँ लाने को कहा था न ?"

पोस्टमास्टर अब कन पूरी तरह जाग गये थे । बोले—"ऐसा ! तो भिकू से कह दो, उसे घर के पिछवाडे ले जाए । ये दाल्दी लोग जबान के बडे सच्चे दिखते हैं। उस दिन मैंने तो यूँ ही कह दिया था, पर यह सचमुच ही ले आया ! देख तो रे भिखू ! वह कौन-सी मछली लाया है ?"

भिखू चपरासी दाल्दी की टोकनी की पहिले ही जाँच कर चुका था । दाल्दी के तार की खिडकी के पास जाने से पहिले ही उसने अपने लिए उस टोकनी से एक अच्छी बढिया मछली निकालकर अलग रख ली थी ।

"राँवगी मछलियाँ हैं हुजूर ।" भिकू बोला । पोस्टमास्टर का चेहरा आनन्द से खिल उठा । उन्हे लगा, आज शाम के भोजन मे बडा मजा आयेगा । इस जाति की ताजी मछलियाँ इस गाँव मे हमेशा नही मिल सकती ।

शिधू ने तार दे दिया । दाल्दी खिडकी के पास ही खडा था । बोला मेरा तार चला गया क्या ?"

शिधू सोच मे पड गया । पहिले के अनुभव से, सच्ची बात कहना इष्ट नही यह उसके ध्यान मे आया । वह बोला—"ठहरो, जाता है ।"

उसने तार के फार्म की एक पोगली बनाई और कड-कट्ट आवाज निकालनेवाले यन्त्र के नीचे धकेल दी । यन्त्र की चाबी पर हाथ रख कर यूँ ही 'कड-कट्ट' किया और धीरे-धीरे वह पोगली यन्त्र के नीचे पूरी घुसेड दी ।

खिडकी के पास खडा दाल्दी यह सब देख रहा था । बोला—"तार चला गया शायद ?"

"हाँ, चला गया ।"—शिधू ने उत्तर दिया ।

"आपके लिए क्या लाऊँ बाबूजी ?" मूली का साग पसन्द है । आपको ? भिंडी, तरोई या जो आप कहे ?"—उसने पूछा ।

"मेहरबानी करो बाबा। और यहाँ से अब रास्ता नापो।"—शिधू बोला—"मैं अभी तक पोस्टमास्टर नही हुआ हूँ। सब्जी के डंठल मे भी मुझे "रिश्वत" शब्द दिखाई देता है। मुझे तनख्वाह काफी मिल रही है। पैसे-दो पैसे की सब्जी के लिए मेरे कारण तुम्हारी जेब से पैसे क्यो जाएँ? अगर मैं मछली खाता होता, तो मछली तुम से ले लेता। एक बार खाने की कोशिश करके देखना चाहता हूँ तुम्हा ी खातिर, पर अभी तक मुझ से वह बू बरदाश्त नही होती।"

"फिर आप विलायत कैसे जायेंगे बाबूजी?"—दाल्दी बोला—"विलायत जाने वाले को मछली खाना चाहिए, अडे खाना चाहिए, मास खाना चाहिए, बकरे का, भेड़ का और जम गया तो ढोरों का भी।"

"तुझ से हाथ जोडता हूँ, बाबा! अब तू जा।"—शिधू बोला, "अगर कुछ देर रुक जायेगा, तो मेरे मुँह मे पानी भरने लगेगा और मुझे अपने ब्राह्मणत्व को भूलकर, तेरे घर का भोजन का निमन्त्रण स्वीकार करने की इच्छा होने लगेगी। इसलिए मेरे पिताजी! हाथ जोड़ता हूँ। अब यहाँ से मुँह काला करो!"

दाल्दी हँसते-हँसते बोला—"उत्तर आने पर उसका मराठी अनुवाद करके भेज देना बाबूजी।"

"हाँ-हाँ! सब भाषाओ मे करके भेज दूंगा। अगर कोई मुसलमान मिल गया, तो उर्दू मे भी कर दूंगा। पर अब आप यहाँ से जल्द खिसकिए।"—ऐसा कहकर शिधू ने अपनी पीठ खिडकी की तरफ मोड़ ली।

दाल्दी चला गया।

तार-प्रेषक यन्त्र की 'कट-कट' लगातार जारी ही थी। नजदीक के स्टेशन काम कर रहे थे। शिधू के मस्तिष्क मे लगातार विचार उठ रहे थे। उसने सोचा—कैसा दुर्भाग्य! गँवार और अशिक्षित, किन्तु उतना ही साहसी होने से दाल्दी विलायत जा सका। शिक्षा से हमे

क्या लाभ हुआ ? पहिले तो हिम्मत और साहस का खात्मा हो गया। आक्रमण करने का भय लगने लगा। विदेश-गमन की कल्पना ही दु.सह होने लगी। फिर हम हिन्दू हैं विदेश-गमन के विरोधी। यदि जाने को मिलता, तो कोई रास्ता निकालते—पर जाएँ कैसे। शारीरिक परिश्रम करने की शक्ति चाहिए। वह हममे कहाँ ? खलासी का काम करना चाहे, तो जहाज में कदम रखते ही एक-दो खलासियो के हाथ के सहारे की जरूरत पडती है। फिर समुद्र मे तूफान उठे, तो वहाँ हमारे पैर ठहरेंगे भी कैसे ?

यदि मैं किसी जहाज़ पर खलासी बनकर जाऊँ तो वहाँ मुझे कौन-सा काम करना पडेगा, इसकी कल्पना वह कर रहा था। अंग्रेजी उपन्यासों मे खासकर क० मैरियट, डब्ल्यू डब्ल्यू जैकब्स, जोसेफ कानरड, के उपन्यासो मे आये वर्णनो को वह याद कर रहा था। उन परिस्थितियो मे क्या मेरा निभाव होगा ? उसे विश्वास न होता।

पुनः तार-प्रेषक यन्त्र मे उसकी पुकार हुई। एक तार आया।

वह सरकारी बुलेटीन था। युद्ध छिड जाने का समाचार आया था। वह जोर से चिल्ला उठा—"अरे बाप रे !"

पोस्टमास्टर ने पूछा—"क्या हुआ शिधू बाबू ?"

पोस्टमास्टर की मेज पर तार का फार्म पटककर शिधू जोर-से चिल्लाकर बोला—"क्या हुआ साहब ! क्या हुआ ! अनर्थ हो गया ! यह देखिए, लडाई शुरू हो गई। किसी सर्विया या आस्ट्रिया के राजकुमार को सर्विया या आस्ट्रिया अथवा किसी दूसरे देश के मनुष्य ने गोली मार दी। यह देखकर रूस का जार क्रोध से उन्मत्त हो गया और जर्मनी का केसर अपनी मूँछो के घुमाव को मोम मलने लगा और अब लड़ाई शुरू होगी। अब दो दल बनेंगे। कुछ लोग एक दल में होगे और कुछ लोग दूसरे दल मे शामिल होगे। दोनो एक दूसरे के साथ लड़ने लगेंगे। हजारो लोग—नहीं लाखो, बल्कि करोड़ो लोग मरेंगे। उनकी कोई अन्त्येष्टि-क्रिया नही करेगा। आगे क्या होगा कौन जाने ?

तार-प्रेषक यन्त्र से आवाज आयी—कड कट्ट कड कट्ट R.T. राईट।"

'सुना साहब ?" शिघ्रू बोला—"यह निर्जीव यन्त्र भी कह रहा है कि मैं जो कह रहा हूँ वह ठीक है।"

पोस्टमास्टर ने एक गहरी साँस ली। "यू आर राईट।"—वे बोले—"कौन कह सकता है कि क्या होगा ?"

———

सूत न कपास जुलाहों से लट्ठम-लट्ठा

शाम को शिधू घूमकर घर आया। वह डाकखाने की इमारत मे ही रहता था। उस इमारत की रचना ऐसी थी कि उसके बहुत से भाग मे पोस्टमास्टर का क्वार्टर था और थोड़ा भाग, याने बबई के दो कमरो बराबर जगह तार बाबू के रहने के लिए थी। एक कमरा रनर लोगो के लिए था। बाकी हिस्से मे डाकखाना था। क्लर्क बस्ती मे ही रहता था।

पोस्टमास्टर और तार बाबू को चौबीस घटे डाकखाने मे हाजिर रहना चाहिए, इसलिए डाकखाने की इमारत मे उनके रहने का भी प्रबध प्राय सभी डाकखानो में रहा करता था।

शिधू घर आया और नित्य की भाँति उसने टोपी निकालकर एक ओर फेक दी, कोट उतारकर दूसरी तरफ डाल दिया, छडी बीच मे ही पटक दी और रसोई मे, जहाँ उसकी पत्नी खाना पका रही थी, उसके नजदीक चूल्हे के पास जाकर बैठ गया।

उसके पास जाकर बैठते ही रमाबाई जरा दूर सरक गई और बोली, "यह क्या है जी! कम-से-कम पैर धोकर आना था! बिल्कुल बाहर के पैरो से सीधे एकदम चूल्हे के पास आ धमके! अरे, कुछ आचार-विचार का भी ध्यान है या नही?"

एक कहकहा लगाकर शिधू बोला, "भई, आचार विचार पर तो तुम्ही ध्यान दिया करो! हमारे आचार-विचार तो ऐसे ही हैं, अगर इन में तुम्हें कुछ भ्रष्टाचार दिखता हो, तो तुम खुशी से कई पीपे भर कर गोमूत्र और कई टोकरियाँ भरके तुलसी के पत्ते लाकर यहाँ उँडेल सकती हो, मुझे कोई आपत्ति नही। पर मैं जैसा हूं, वैसा ही रहूगा। मुझ मे जरा भी फर्क नही होगा!"

रमाबाई बोली, "कुछ भी हो, पर ब्राह्मणो ने अपने आचार-विचार · · ·"

"· · ·ब्राह्मणो ने ?" शिधू ठहाका मारकर बोला, "अजी सरकारी नौकरी और ब्राह्मण, ये दो शब्द ही परस्पर मेल नही खाते। सेवा वृत्ति शूद्रो का धर्म है। जिस दिन हमने म्लेच्छो की नौकरी स्वीकार की उसी दिन हम शूद्र हो गये और अब तो यह लडाई शुरू हो गई।"

"लडाई !" रमाबाई चौककर बोली, "कहाँ शुरू हुई है लडाई ?" वह डर गई थी।

"इतना डरो नही।" शिधू बोला—"वैसे तो लडाई सात समुद्र के पार शुरू हुई है, पर उसके फल हमे भोगने होगे। हमारे हिन्दुस्तान में आजकल लडाई संबधी तारो का ताता-सा लगा है और अब सरकारी बुलेटिन भी निकलने शुरू हो गये हैं। उनमे अखबारो की तरह ठसाठस मज़मून भरा रहता है। इसके साथ ही अब व्यापारी लोग भी पागल-से हो उठे हैं। चाय की कीमत बढ गई, चीनी की बढ गई। दियासलाई की डिबिया की कीमत क्यो बढी, सो भगवान् ही जाने ! यह पहेली मैं किसी भी तरह हल नही कर पा रहा हूँ। लडाई शुरू हुई है विलायत मे, और चीज़ों की कीमते बढ रही है हमारे इस कोकण मे ! इसके अलावा अब जहाजों मे भर-भरकर कोकण के लोग भी विलायत भेजे जाएँगे। वहाँ कसाईखाने खुलेंगे और यहा के लोगो को वहाँ ले जाकर, वही उन्हें कत्ल कर दिया जाएगा। यहाँ की जनसख्या कम हो जाएगी। सच पूछा जाए तो ऐसी परि स्थिति मे यहा की चीजो की कीमतें भी घटनी चाहिए। पर अब क्या होगा, कौन जाने ? अभी तक एक पैसे में चार दियासलाई की डिबियाँ मिलती थी सो अब पैसे की एक मिलती है और कल शायद चार पैसे मे एक मिलेगी।"

रमाबाई उदासीन होकर अपने पति की बाते सुन रही थी। यह क्या चमत्कार हो गया है, इसकी वह रच-मात्र भी कल्पना नही कर पा रही थी ! लड़ाई विलायत में ही हो रही है और चीजे यहाँ मँहगी हो

रही हैं ! इन दोनों मे परस्पर क्या सबंध है, यह प्रश्न सहज ही उसके सामने खडा हो गया। परंतु इसका जबाब पति से पूछे कैसे ? पत्नी-धर्म तो यह है कि पति से कोई प्रश्न न पूछना चाहिए। पति जब स्वय कहे तो पत्नी को सुनना चाहिए और उसे अपने पति के बारे मे यह विश्वास भी था कि कम-से-कम उससे पूछने की जरूरत न थी, क्योकि जब वह एक बार बोलने लगता है तो धाराप्रवाह बोलता है। दुनियाँ के इतिहास की सारी बाते सुना देता है, यहाँ तक कि फिर सुनाने को उसके पास कुछ भी शेष नही रह जाता।

बीच ही मे शिघू बोल उठा, "अजी, यूँ मुह फाडकर क्या देख रही हो ? इतना डरने की जरूरत नही। तुम्हारा पति कोई सिपाही नही है। टेलिग्राफ डिपार्टमैन्ट का तारबाबू होता तो शायद मुझे भी लडाई पर जाना पडता। परन्तु इस रद्दी और दरिद्री डाक विभाग का तारबाबू होने के कारण कम-से-कम मुझे इस बात का जरा भी डर नही लगता कि सरकार मुझे जानबूझकर लडाई पर भेजेगी। घबडाती क्यो हो ? भोजन बन गया हो तो जल्दी थाली लगाओ। मुझे जोर की भूख लगी है।

शिघू ने बदन से कुरता उतारकर वही चूल्हे के पास ही फेंका और हाथ-मुह धोने के लिए वह कुएँ पर चल दिया। रमाबाई सोच मे पड़ गई। जब उसके कानो मे यह पडा कि तार बाबू को भी लडाई पर जाना पडता है, तब उसका मन भय से काप उठा। उसे लगा, यह लडाई का जमाना ठहरा ! कौन कह सकता है, डाकखाने के तार बाबू को भी लडाई पर भेज दे ? फिर इन्होने जो कहा उसे भी सच कैसे मान लूँ। शिघू के बातचीत के ढग से रमाबाई परिचित थी। मामूली बात भी वह उल्टी-सीधी मोडे बिना कभी न कहता। इसलिए उसके मन को ऐसी भी एक शंका छू गयी कि उन्होंने डाकखाने के तार बाबू को लडाई पर न भेजने की बात शायद इसलिए कही हो कि मैं कही घबरा न जाऊँ।

इन विचारो मे खोयी रहने से उसकी बघार जल गयी। साडी के सहारे उसने चूल्हे से बर्तन उठाकर, वह बघार फेंक दी और दूसरी बघार देने के लिए उसने बर्तन फिर से चूल्हे पर रखा।

शिघू हाथ-मुँह धोकर आया और एक पीढा लेकर बैठ गया।

वह बोला, "पीने के पानी के बर्तन को गीला कपडा लगाकर रखा है या नही? वरना तुमने सोचा होगा कि ये तो बरसात के दिन हैं। ठंडे पानी की क्या जरूरत? परतु जहा तक गर्मी का सवाल है कोकण की हवा के लिए ग्रीष्म और वर्षा दोनो एक समान ही है।"

"हाँ, हाँ, जनाब, गीला कपडा लगाकर ही पानी रखा गया है। मुझे यूँ रोज-रोज जताने की जरूरत नही, समझे? और क्यो जी, कल जब आप लडाई पर जाएँगे तो वहाँ आपके लिए पीने के पानी के बर्तन को कौन गीला कपडा लगाएगा?"

"अपने हथकडे मुझे न दिखाओ, समझी?" शिघू बोला—"मैं 'डाकवाला" भले ही होऊँ, पर अगर मन मे लाऊँ तो लडाई पर जा सकता हूँ और तुम नही जान्ती कि वहाँ अफसरो की क्या शान होती है। बर्फ की तहो मे रख देते हैं एक-एक अफसर को। वहाँ तुम्हारे इस गीले कपडे को कौन पूछता है?'

यह देखकर कि रमाबाई मन-ही-मन मे हँस रही है, शिघू बोला—"हँसी को दबाती क्यो हो? यह पाखड मुझे पसद नही। हँसने को जी चाहता है, तो हसना चाहिए, रोने को मन होता है तो रोना चाहिए। अगर मामूली क्रोध आ जाए तो गालियाँ देनी चाहिए, अगर जोर-से गुस्सा आ जाए तो मुह पर चाँटा जड देना चाहिए। मनुष्य को बिल्कुल "नेचुरल" होना चाहिए। परंतु स्त्रियो को देखो तो हमेशा पाखडी और हमेशा झूठी। पतिव्रता जो हो तुम! पति को तुम भगवान् मानती हो। उसके मनोरथ सफल करने के लिए मन मारकर जब तुम बर्ताव करने लगती हो, उस समय आदत से तुम पक्की धार्मिक बन जाती हो। हँसने को जी चाहता है तो दिल खोलकर हँसो।"

रमाबाई बडे जोर से हँस पडी।

"हाँ, अब देखो, कितनी सुदर हँसी।" शिधू बोला।

रमाबाई ने भोजन परोसना शुरू किया। परोसते हुए उसे पति की बातो का स्मरण होकर हँसी के उबाल आ रहे थे। उन्हे दबाने का वह लगातार प्रयत्न कर रही थी और फिर उसकी बातो की याद आ जाने से जोर से हंस पडती थी।

"आज क्या किसी ने तुम्हे "लाफिंग गैस" सुघा दिया है?"—शिधू बोला, "इतना हँसने को क्या हो गया? क्या मैं मुहर्रम के ताजिए की तरह नाच रहा हू? या कि विदूषक जैसा नखरे कर रहा हूँ? मैं सच कहता हू कि लडाई पर आफीसरो की बडी शान रहती है। मैंने पुरानी लडाइयो के वर्णन पढे हैं। आफीसरो को मोर्चों पर नही जाना पडता। सिपाही मरते हैं। आफीसरो का काम होता है सिर्फ हुक्म देना। उन्हे सिर्फ यह कहना पड़ता है, मेरे वीरो! मोर्चे पर जाओ और जान दे दो। अगर काम आ गये तो तुम्हारी आत्मा स्वर्ग जाएगी और यदि जिंदा लौट आए तो तुम्हे एक फीता मिलेगा।"

रमाबाई की हँसी अब बेकाबू हो गई। परोसते समय दाल का बर्तन उसके हाथ से छूटकर शिधू की थाली मे जा गिरा।

"वाह! वाह! क्या खूब! इतनी दाल तो मुझे चाहिए थी। जब से बरसात शुरू हुई है, तब से मैं शाम को नही नहाता। अब तुमने मेरे नहाने का इन्तजाम कर दिया है। पर तुम्हारा क्या होगा? सारी दाल तुमने मेरी थाली मे उँडेल दी। मेरा ख्याल है कि हम लोगों मे पति की जूठी थाली मे पत्नी के भोजन करने की जो प्रथा है उसका यही उद्देश्य होना चाहिए। सच पूछा जाए तो सब से अच्छा तो यह होगा कि पति और पत्नी को मुसलमानो की तरह एक ही समय एक ही थाली मे भोजन करना चाहिए। ऐसा होने से भोजन का बँटवारा बिना किसी चखचख के एक समान हो जाएगा। शिकायत करने के लिए किसी को कहीं भी कोई गुजाइश न रहेगी।"

शिघू की बकवास लगातार जारी थी और उसी के साथ-साथ रमा-बाई का हँसना भी जारी था।

वह हँस रही थी, पर बेचैन थी। उसके मन मे यह बात पक्की तरह जम गई थी कि शिघू को लडाई पर जाना होगा और उसी की वह नित्य की भाँति भूमिका बाँध रहा है। यदि उसे लडाई पर जाना पडा, तो मेरा क्या होगा ? ससुराल मे अकेली एक सास थी। मायके मे उसका अपना कोई था ही नही। माँ-बाप उसे बचपन मे ही अनाथ कर गये थे। उसके एक मामा ने, जिसके परिवार में वह रहती थी, उसका विवाह कर दिया था। मामा उससे स्नेह रखते थे, पर आखिर थे पराये ही। उन्हे लगता, यह एक बडा बोझ हमारे परिवार पर आ गया है। जब रमाबाई का विवाह हुआ तब उन्होंने एक प्रकार से छुटकारे की साँस ही ली। घर मे जो बोझ आ गया था, उसके निकल जाने पर, उन्हे जो आनन्द हुआ था, उस आनन्द को उन्होने रमाबाई के सामने भी व्यक्त करने मे कमी न की।

अब यदि पति लडाई पर चला गया तो मुझे कम-से-कम कुछ दिनो के लिए तो मायके मे रहना पड़ेगा, इस विचार से उसके रोंगटे खडे हो गये।

वह बोली—"कितने दिन चलेगी यह लड़ाई ?"

"हम दोनो के जिंदा रहने तक !"—शिघू बोला—"कौनसी लडाई ? क्या वह जो विलायत मे शुरू हुई है ? मैं समझा, मेरी और तुम्हारी। इस लडाई के बारे मे क्या कहा जा सकता है ? अभी तक हमारी सरकार उस लडाई मे शामिल नहीं हुई है। हमारी सरकार के उस लडाई मे शामिल होते तक तो कम-से-कम हमे कोई भय नही। और अगर हमारी सरकार उस लडाई मे शामिल भी हो गई, फिर भी हमे डरने की कोई जरूरत नहीं, क्योंकि मैं ठहरा "डाकवाला"। मुझे कौन भेजेगा लडाई पर ? मैं लाख चाहूँ तो भी !"

"पर मैं जाने दूँगी तब न ?"—रमाबाई बोली।

शिघू बोला—"अगर लडाई पर जाने का हुक्म ही आ गया, तो उसे रोकना न तुम्हारे हाथ मे है और न मेरे हाथ मे। सरकार का हुक्म आया और चुपचाप कूच कर देना होगा। यहाँ जब तुम मुझे हुक्म देती हो, सब्जी लाने के लिए, तो आखिर चुपचाप मैं सीधा बाजार जाता ही हूँ कि नही ? उसी तरह है यह !"

रमाबाई हँस-हँसकर दोहरी होने लगी।

"हँसती क्या हो ?"—शिघू बोला—"मै बिलकुल सच कहता हूँ। जिस दिन हमने नौकरी स्वीकार की, उसी दिन से जो हुक्म मिले उसे मानने के लिये हमे तैयार रहना चाहिए, ऐसा नियम है। इसे भी विवाह सरीखा ही समझो। हम सब सरकारी नौकर सरकार के जनानखाने की बीबियाँ हैं। जो काम बताया जाय उसको करनेवाले, जो भोजन दिया जाय उसे खानेवाले और जो हुक्म दिए जाएँ उनके तावेदार ! आज अगर नौकरी छोडनी भी चाहे, तो वह एकदम नही छोड सकते। तीन महीने के लिए नोटिस देना पडता है और इतनी अवधि तक हम लडाई पर जाकर मर भी सकते है !"

"अलाय-बलाय टले !"—रमाबाई ने कहा—"अभी कही किसी बात का कोई ठिकाना नही और क्यो व्यर्थ की उस लडाई की ···· "

"खैर, तो छोडो उस चर्चा को।" कहकर शिघू चुपचाप भोजन करने लगा।

भोजन के उपरान्त शिघू ने उस दिन का समाचार पत्र लिया। लैप जलाया और बिस्तर पर लेटकर समाचार-पत्र पढने लगा। उस समाचार पत्र मे लडाई की पूर्व-परिस्थिति का वर्णन आया था। सम्पादक ने लडाई होने के चिन्ह स्पष्ट करके दिखा दिये थे। उसने यह भी अनुमान लगाया था कि किन-किन राष्ट्रो मे लडाई की आग भडकेगी, कौन-कौन से राष्ट्र परस्पर मित्र बनेंगे और कौन-कौन से राष्ट्र शत्रुदल में सम्मलित होगे। अंग्रेज सरकार की दृष्टि से भी कुछ अनुमान लगाये गये थे। पर सम्पादकजी के ये सारे अनुमान आगे चलकर गलत साबित

हुए। मित्र होनेवाले राष्ट्र एक दूसरे के शत्रु बन गये थे और जो शत्रु होनेवाले थे वे मित्र हो गये थे। कम-से-कम पहिले तो ऐसा लगता था कि जर्मनी लडाई आरम्भ करेगा। पर लड़ाई का पहिला कदम रूस के जार ने ही आगे बढाया। जर्मनी को लडने के सिवा कोई चारा ही नही रहा था। फ्रान्स और इटली किस तरफ मुडते हैं इसका किसी को कोई अन्दाज नही था। ब्रिटिश पार्लमेंट के लार्ड ग्रे के भाषण ने उस समय बडी सनसनी फैला दी थी और उसके कारण इग्लैंड लडाई मे शामिल होगा या नही इसका सभी को सन्देह था। अॅसक्विथ और लाइड जार्ज दोनो के मत भिन्न थे। मत्रि-मडल मे भी एकमत नही था। यहाँ के समाचार पत्र पढनेवालों मे सर्वत्र यह सदेह प्रकट किया जाता था कि इग्लैंड इस लड़ाई में कही तटस्थ तो न रहेगा ?

शिघू सो गया, पर उसे लडाई के सपने दिख रहे थे। सच पूछा जाय तो वह लड़ाई पर जाने से डरता न था। प्रत्युत उसके मन मे लडाई पर जाने की बडी प्रबल इच्छा थी। वह सोच रहा था, यदि इग्लैंड इस लडाई मे सम्मलित हुआ, हिन्दुस्तान से लड़ाई का सम्बन्ध आया और हिन्दुस्तान से भी लडाई पर मनुष्य भेजे गये, तो उस अवसर को मुझे हाथ से नही जाने देना चाहिये। इस विचार मे खोया हुआ ही वह सो गया।

दूसरे दिन वह जागा तो उसे लगा, जैसे मैं लडाई से लौटकर आया हूँ। अनाप-सनाप सपने के कारण उसके मन पर जो परिणाम हुआ उसे देखकर, वह अपने आप पर ही हँस पडा।

पर वह विचारो में डूब गया। अगर लडाई शुरू हो गई तो मैं उस पर जाऊँ या नही ? जो नौकरी इस समय वह कर रहा था, उसमें आगे चलकर उसे क्या आशा थी ? कानून की पुस्तकें हाथ मे रखे वह दिन काट रहा था सही, पर डाकखाने की नौकरी के भार के कारण कानून का अध्ययन सतोषजनक रीति से करना उसके लिए असंभव हो गया था।

उसकी महत्वाकाक्षा यह थी कि मैं दूसरो की अपेक्षा कुछ विशेष करके दिखाऊँ और लडाई का डका पिटते ही अपनी इस महत्वकाक्षा की पूर्ति के लिए उस मे नया बल आ गया था।

सिराहने रखी कानून की किताबो को उसने एक-के-वाद-एक खोल कर देखा और उन्हे एक तरफ फेक दिया।

आखिर वकील बन कर भी मैं ऐसा कौनसा बडा झडा गाड दूँगा। इससे तो अगर लडाई पर ही चला जाऊँ तो ? उसे लगा, लडाई पर जाने से कोई विशेष बात होगी। अनपेक्षित परिस्थिति की अपेक्षा कोई भिन्न ही परिस्थिति मैं प्राप्त कर सकूगा अथवा कम-से-कम समरभूमि पर काम आ जाऊँगा। हिन्दुस्तान के कुछ लोग लडाई के मैदान पर जाकर मरे, कम-से-कम इतना ही नया इतिहास तैयार किया जा सकेगा। क्या प्लेग से नही हजारो लोग मर गये ? तपेदिक से कितने मरे है ? बिस्तर पर पडे-पडे मरने की अपेक्षा समरभूमि पर किसी बंदूक की गोली अथवा तोप के गोले से यदि प्राण चले जाएँ · · ?

उसे यह कल्पना बडी अभिनव प्रतीत हुई।

पुराना इतिहास पढते समय उसे अपने पूर्वजो की वीरता का जो भान होता था, उसकी अपेक्षा आज शुरू होनेवाली लडाई के उसके भान मे एक प्रकार की विलक्षणता थी। युद्ध की वे कथाये रम्य थी और आज यह चालू परिस्थिति थी। कौन कह सकता है कि लडाई की यह आँधी हिन्दुस्तान तक आकर न पहुँचेगी। हवाई जहाज की कल्पना उन दिनों अस्तित्व मैं आ चुकी थी। कौन कह सकता है कि हमारे शत्रु हवाई-जहाज मे आकर हम पर अग्नि-वर्षा नही करेगे ? ऐसी परिस्थिति उपस्थित होने से पहिले ही मैं अगर विलायत की समर-भूमि मे चला जाऊँ तो··· ?

कल्पना की इस नवीनता के कारण उसका हृदय भर आया। युद्ध की विकरालता के चित्र वह अपनी दृष्टि के सन्मुख मूर्त करने लगा।

रमाबाई घर मे झाड-बुहार कर रही थी। शिघू उसके सामने

जाकर खडा हो गया और बोला—"और अगर मुझे लडाई पर जाना पडा तो क्या तुम इजाजत दे दोगी ?"

यह सुनकर रमाबाई जैसे ऐंठ-सी गई। वह लगातार शिधू की आँखो मे आँखे डाले, पलक भी न झपकाते, स्तब्ध खडी रही। उसके ओठो से शब्द निकल गये—"लडाई पर जाना पडेगा ?"

शिधू को विश्वास हो गया।

नित्य की आदत छोडकर वह उतनी ही गभीरता से बोला—"जाना ही पडेगा, ऐसी कोई बात नही। पर कौन कह सकता है ? यह नौकरी है। लडाई शुरू होने पर वहाँ अवश्य ही तारबाबुओ की माँग होगी। आज सरकार के टेलिग्राफ-विभाग मे जो तारबाबू काम कर रहे है, वे प्राय. सभी मिलटरीवाले है। वे यदि युद्ध के मोर्चों पर चले गये, तो सरकार को डाक-विभागवाले हम जैसे तारबाबुओ को सिगनलर का काम करने के लिए लडाई पर मजबूरन भेजना ही पडेगा और ऐसा अगर हुआ ।" इतना कहकर शिधू चुप हो गया।

"तो मतलब यह कि यहाँ से जाना होगा !"—रमाबाई पुटपुटायी, 'फिर मैं यहाँ क्या करूँगी ?"

एक क्षण के भीतर उसकी गभीरता विलुप्त हो गयी और वह जोर-जोर से हँसने लगा।

"कैसे पागल हैं हम लोग !"—शिधू बोला—"अभी किसी बात का कोई ठिकाना ही नही और लडाई पर जाने की बाते कर रहे हैं ! चलो। चाय तैयार हो गई हो तो जाकर ले आओ जल्दी। क्या मेरी यह प्रतिज्ञा, कि बिना चाय पिये दातुन नही करूँगा, मुझसे आज भग करवाओगी ?"

रमाबाई चाय का प्याला ले आयी। प्याला लेते समय शिधू ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखो मे आँसू आ गये थे।

—

"अरे धुत् पगली !"—वह उसके गाल पर हौले से एक चपत मार-कर बोला—"सूत न कपास जुलाहो से लट्ठमलट्ठा !" इस वाक्य को कहते समय उसने अपने चेहरे पर ऐसा विलक्षण आविर्भाव प्रकट किया कि उसे देखते ही रमाबाई से अपनी हँसी न रोकी गयी और वह जोर-जोर से हँसने लगी।

———

अर्जी गयी

रोज बुलेटिन आ रहे थे। लडाई की तेजी का ढिंढोरा जहाँ-तहाँ पिट रहा था।

पर इग्लैंड अभी तक युद्ध मे सम्मिलित नही हुआ था। अपने-अपने ढग से हर व्यक्ति तर्क भिडा रहा था। पर युद्ध मे शामिल हुए बिना इंग्लैड को कोई चारा न था, यह बात भी बिल्कुल स्पष्ट थी।

अगस्त की चार तारीख उदित हुई। उस दिन जो बुलेटिन्स आ रहे थे उनसे अनुमान लगाकर निश्चित रूप से यह नही कहा जा सकता था कि इंग्लैड लडाई मे शामिल होगा। मत्रि-मण्डल का विरोध साफ दिख रहा था, पर परिस्थिति जरूर विकट थी।

शाम को छ बजे तार आफिस बन्द करके सब लोग घूमने निकले। साथ मे पोस्टमास्टर भी थे। सब लोगो की चर्चा का विषय एक ही था। लडाई की बाते छोडकर उस समय और कोई दूसरी बात किसी को सूझती ही न थी। पोस्टमास्टर बोले—"मुझे बडी चिन्ता लगी है। अभी तक हम युद्ध मे शामिल नही हुए हैं और कब शामिल होंगे यह भी कहा नही जा सकता। यदि हम भी युद्ध मे शामिल हो गये तो पहिली विपत्ति डाक-विभाग पर टूटेगी। टेलीग्राफ-विभाग में काम करनेवाले कर्मचारी प्राय. सभी मिलिटरी वाले हैं। वे तो लडाई पर जाएँगे ही। उनके स्थान मे तार का काम करनेवालों की कमी पडेगी और फिर धीरे-धीरे डाक-विभाग में काम करने वाले तार बाबू उनके स्थान पर भेज दिये जाएँगे। डाक-विभाग मे नयी भरती होगी, इसकी आशा नही करनी चाहिए। कम-से-कम टेलिग्राफ विभाग मे तो नयी भरती नहीं होगी, इसका मुझे पूर्ण विश्वास है क्योंकि ऐन वक्त

पर तार का काम सीखे हुए लोग उन्हे कहाँ मिल सकते है। और नयी क्लास खोलकर नये आदमी तैयार होते तक कम से-कम कुछ महीनो के लिए तो काम का बोझ डाक-विभाग मे काम करनेवाले हमी लोगो पर पडेगा, इसी की अधिक सभावना है।"

"और क्या लडाई पर कोई तार बाबू नही जाएँगे ?"—शिघू ने पूछा।

"यह कैसे कह सकते हैं ?"—पोस्ट-मास्टर ने कहा, 'हम जबसे नौकर हैं तब से कोई लडाई हुई ही नही। इसलिए हमे ऐसा कोई मौका देखने को नही मिला। पहिले एक बार बोर-वार हुई थी। पर उस समय मैं सरकारी नौकर नही था। उस वक्त के लोगो से मैने जो सुना है उससे हम यह कह सकते हैं कि इस लडाई की आँच हमे नही लगेगी। मैं नही सोचता कि डाक-विभाग के कर्मचारियो को जबरदस्ती लडाई पर भेजेंगे। हाँ, पर तार-विभाग के कर्मचारियो को अवश्य लडाई पर जाना होगा।"

"यदि कोई अपने-आप लडाई पर जाने के लिए तैयार हो, तो उसे भेजेगे या नही ?"— शिघू ने पूछा।

"यह क्या पागलपन घुस गया है तुम्हारे दिमाग मे ?"—पोस्ट-मास्टर साहब बोले, "क्या तुम जाना चाहते हो लडाई पर ?"

"मैं ? मैं क्यों जाने लगा लडाई पर"—शिघू बोला, "हमारी यहीं जो लडाई चल रही है वही काफी है। हाथ और मुंह की लड़ाई लडते-लडते हमारा कचूमर निकला जा रहा है। ऐसी दशा मे घर के लोगों को अकेला छोड़कर लडाई पर कौन जाएगा ?"

शिघू जोर से हंस पड़ा। पोस्ट मास्टर साहब ने भी एक ठहाका मारा, पर उनकी हँसी का कोई मतलब न था। अगर कोई उनसे पूछता कि आप क्यो हँसे तो दोनो के पास इसका जवाब न था।

आठ से पहिले दोनो आफिस में आए। आठ बजे तार आफिस खोल कर जो तार बाहर से आते वे दस बजे तक लिये जाते थे। इसके बाद

लोगो के भेजे जानेवाले तार लिये जाते । पहिला ही तार आया—

वह छोटा-सा ही था। परन्तु उसके आते ही शिधू ने कुर्सी की पीठ से गर्दन टिका दी।

उसने फिर एक बार तार पढकर देखा और जोर से पोस्टमास्टर साहब को पुकारा।

पोस्टमास्टर साहब दौडते हुए ही आए। तब शिधू बोला—"लीजिए साहब ! हो गया फैसला ! इग्लैंड लडाई मे शामिल हो गया !"

"तो इसमे घबराने की क्या बात है ?"—पोस्टमास्टर बोले—"पर आसार जरूर अच्छे नही। कुछ भी हो, आखिर यह लडाई है। बरस-छः महीने बराबर चलती रहेगी और इस अवधि मे सरकार जान ले लेगी हम डाकखानेवालों की। हमारे सिर पर ढेर-सा काम आएगा और हमारी मदद के लिए नये आदमी देने के बजाए जो आदमी हमारे पास अभी हैं उनमे से भी बहुतो को ले जाएँगे।"

पोस्टमास्टर की बात सुनकर शिधू हँसने लगा। बोला—"आप तो कुछ भी सोच रहे हैं, साहब ! अजी लडाई तो लडी जा रही है यूरोप मे। हिन्दुस्तान से उसका क्या संबंध ?"

"तुम भूलते हो शिधू बाबू !" पोस्टमास्टर ने कहा—"सारी लडाई लडी जायगी हिन्दुस्तान की जान पर। इग्लैंड कितना भी बलशाली हो, पर लडने के लिए उसे आदमियो की जरूरत होगी और इसकी माँग हिन्दुस्तान से ही पूरी की जाएगी। यहाँ से लडाई पर तहसीलदार नही जाएँगे, सब-जज नही जाएंगे अथवा कचहरियो के बाबू लोग नही जाएंगे। आफत आएगी डाक-विभाग पर और मैडिकल विभाग पर। दोनो विभागो के कर्ममचारियो को अब बोरिया-बिस्तर बाँधकर तैयार रहे बिना दूसरा चारा नही।"

शिधू अपने घर आया। भोजन बनाकर रमा उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। कुछ न बोलकर शिधू सिर्फ खडा रहा। यह देखकर वह बोली—"क्या आज मुँह-हाथ नही धोओगे ?"

"अजी कहाँ का मुँह-हाथ धोना और कहाँ की सध्या-पूजा लिये बैठी हो ?"—शिघू बोला, "अब हमारी सरकार भी लडाई मे शामिल हो गयी है। अब मुझे जाना पडेगा जर्मनों से लडने"—"रमा हँस पडी तो शिघू बोला—"दाँत क्यो निकालती हो ? क्या तुम्हे झूठ लगता है ? अभी जाओ और जाकर पोस्टमास्टर साहब से पूछ आओ। वे क्या कहते हैं जानती हो ? हिन्दुस्तान से पलटनें जब जाएँगी तब जाती रहेंगी, पर पहिले लडाई पर तार बाबू भेजे जाएँगे !"

"सच ?"—रमा के स्वर मे घबराहट थी।

"तो क्या मैं झूठ कह रहा हूँ ?" शिघू बोला, "तुम जानती हो मेरा यह स्वभाव नहीं कि किसी गभीर बात पर मज़ाक करूँ। मजाक के वक्त ही मजाक करता हूँ। जहाँ इतनी बडी लडाई हो रही है क्या वहाँ कोई मज़ाक करेगा ?"

इस तरह कहता हुआ शिघू पिछवाडे कूएँ पर चला गया। रमा आश्चर्य से भरी वही खड़ी थी। शिघू कब आकर पीढे पर बैठ गया, इसका उसे पता तक न चला।

"अब परोसो न ?"—शिघू जोर से चिल्ला पडा।

रमा एकदम चौंककर होश मे आई और परोसने लगी।

खाना खाते वक्त दोनो मौन थे। शिघू के दिमाग में लगातार विचार आ रहे थे। विदेश जाने की उसे बडी रुचि थी। सरकारी खर्च से विदेश जाने को मिलेगा, इस विचार से उसे एक प्रकार का आनन्द हो रहा था।

यदि मुझे सरकार द्वारा लडाई पर नही भेजा गया तो मैं लडाई पर जाने के लिए अर्जी दूँगा, ऐसा उसने अपने मन मे निश्चय कर लिया। तार बाबुओ की वहाँ जरूरत होगी, इसमे कोई शक ही न था। पर उसे इस बात का अलबत्ता शक था कि वह तार बाबू की हैसियत से ही लड़ाई पर भेजा जाएगा या नहीं। उसकी धारणा थी कि लड़ाई मे हिन्दुस्तानियों को तार के काम पर नियत नहीं करेंगे। वरना पलटन के

लोगो को तार का काम सिखाने की क्या जरूरत ? अगर गये तो सिर्फ ईसाई और एंग्लो-इंडियन या यूरोपियन तार बाबू ही लड़ाई पर भेजे जाएँगे। तार बाबू के नाते मैं नही भेजा जाऊँगा, यही उसे लग रहा था।

यह देखकर कि भोजन करते समय हमेशा बकवास करने वाला पति बिल्कुल चुपचाप भोजन कर रहा है, रमा को एक धक्का लगा। वह बोली "क्या लडाई पर सचमुच जाना पडेगा ? यदि ऐसा कोई मौका हो तो आज ही इस्तीफा दे दीजिए। यही ठीक होगा।"

"इस्तीफा देना क्या हसी-खेल है ?" शिघू बोला, "इस्तीफा तो मैं आज दे दूँ। परन्तु उसे मंजूर करना या न करना सरकार की मर्जी पर है। लडाई के वक्त अगर सभी लोग इस्तीफा देने लगें तो सरकार हर-एक को तोप से उडा देगी। पहिले तो सरकारी नौकरी करके ही हमने गलती कर दी है। अब जो भी होगा उसे हमे चुपचाप बरदाश्त करना होगा।"

इस पर बेचारी रमा क्या जबाव देती ? उसका कलेजा टूट गया था। मायके मे उसका अपना कोई नही था। ससुराल मे अकेली सास थी। वह भी भाई-भाइयो के झगडे मे फसी हुई थी। शिघू को यदि लडाई पर जाना पड़ा तो सुसराल मे जाकर रहने के सिवा उसे कोई चारा न था। उसे लगा, मेरी सास शिघू को लड़ाई पर नही जाने देगी। कम-से-कम सास के आग्रह से ही पति यदि नौकरी से इस्तीफा दे दे तो यह विपत्ति टल जाएगी।

इसे छोडकर उसे और कोई दूसरा उपाय नही सूझ रहा था।

शिघू जाकर बिस्तर पर लेटा और नित्य की भाँति समाचार पत्र पढने लगा। उसके दिमाग में विचारो ने कुहराम मचा दिया था। उसे लग रहा था कि मुझे यह ढिठाई करनी ही चाहिए। अनेक वर्षों तक हिन्दुस्तान को इसकी कोई कल्पना ही न थी कि लड़ाई क्या होती है।

सिर्फ लडाई की कहानियां पढी जाती थी। महाराष्ट्र मे जो ऐतिहासिक पुरुष हो गये है उनके पवाडे गाये जाते थे। भिन्न-भिन्न प्रकार के आन्दोलन हो चुके थे। उस जमाने मे हमारे नेता लोग गला फाड-फाड कर लडाइयो का वर्णन करते और उन्हे सुनकर तालियाँ बजाते-बजाते श्रोताओ के हाथ लाल हो जाते।

अब खून से हाथ लाल करने की बारी आ गई थी। वह प्रसग जितना अनुभूत था उतना ही अनपेक्षित भी था। जो राष्ट्र कितनी ही सदियो तक एक दूसरे के बैरी थे वे राष्ट्र एक हो गये थे। रूस और इगलैड एक हो जाएँगे यह बात उस लडाई से पहिले किसी को सच ही न लगती। फ्रास और इगलैड की मित्रता पर भी उतना ही आश्चर्य होता था। तुर्किस्तान भी इँगलैड, फ्रांस और रूस के विरुद्ध उठ खडा हो गया, यह भी एक महान आश्चर्य था।

इतने चमत्कार हो जाने पर हिन्दुस्तान मे भी लडाई न हो, यह कौन कैसे समझता ?

कुछ वर्ष पहले सुने हुए बडे-बडे नेताओ के भाषणो की उसे याद हो आयी। देश के लिए हथेली पर सिर लिये रणभूमि पर जाने वाले इतिहास-कालीन योद्धाओ के चरित्र सुनकर उस समय उसकी रग-रग का खून खोल उठता था। हर प्रकार का स्वार्थ त्याग करने के लिए हमे तैयार रहना चाहिए, तत्कालीन नेताओं के ये उद्‌गार उसके कानो मे गूँज रहे थे।

उसके सामने प्रश्न था तो केवल यही कि यदि वह लडाई पर गया, वहाँ उसने अनेक कष्ट झेले, वहा वह काम आ गया तो क्या यह उसकी मातृ-भूमि भारत के उद्धार के लिए होगा ? इस प्रश्न का उत्तर उसके मन मे अकुरित न होता। लडाई की आग यदि भडकती गई तो उसकी आँच हिन्दुस्तान को भी लगे बिना न रहेगी, ऐसा उसे लग रहा था। यूरोप में ही यदि यह आग बुझ गई तो क्या हिन्दुस्तान नही बच जाएगा ? उस लड़ाई की आग को यूरोप मे ही बुझा देने के लिए जो

जो हिन्दुस्तानी वहाँ काम आएंगे तो क्या यह नही कहा जा सकेगा कि वे हिन्दुस्तान की रक्षा के लिए काम आये ? लडाई मे काम आना, जाने क्या है इसे हिन्दुस्तान आज कई वर्षो से भूल गया है। पिछले कुछ वर्षो मे प्लेग से क्या कुछ कम आदमी मरे थे ? प्लेग से मरने की अपेक्षा लड़ाई मे मरना क्या अधिक श्रेयस्कर नही है ?

उसका मन दुविधा मे पड़ा था। देशाभिमान से इस युद्ध का मेल मिलाया जा सकता है क्या, इसका वह विचार कर रहा था। वह सोचता था, यदि सरकार का हुक्म आता तो चाहे जिस समय और चाहे जहाँ लडाई पर जाने के लिए वह मजबूर था। उस समय वह यह विचार कैसे कर सकता था कि लडाई पर जाना देशाभिमान है या नही। उसे लगा लडाई पर जाकर भी मैं ऐसा कौन सा बडा मैदान मारूगा ? सिर्फ "कड्कट्-कड्कट्ट" करता बैठा रहूँगा अथवा पत्र और पार्सल की थैलियाँ खोलता रहूँगा। क्या ये काम लडाई की मर्दानगी मे शामिल हो सकते हैं ? प्रत्यक्ष लडाई में भाग लिये बिना, कन्धे पर बन्दूक रखकर फायर पर फायर उडाये बिना लडाई के किसी भी विभाग में किया गया काम मर्दानगी मे गिना जायेगा क्या ?

उसका मन नही कहता। लडाई की घमासान मे कन्धे पर बन्दूक धारण कर प्रवेश करने की महत्वाकाँक्षा रखने के लिए समय अनुकूल न न था। लडाई के मोरचे के नजदीक रहने का भाग्य तो किसी पोस्ट-मास्टर को भी मिल जाता। क्या महत्वाकाक्षा इसी से तृप्त होती है अथवा लडाई के बेस आफिस मे बैठकर थैलियाँ खोलने मे होती है ?

उसका मन निश्चय न कर पाता। उसने सोचा, चाहे जो हो, लडाई पर तो मैं जाऊँगा ही। कम-से-कम यह देखने को तो मिलेगा कि लडाई क्या होती है। मर्दानगी के बारे मे हमारा ज्ञान जो अभी इतिहास पढने तक ही सीमित है कम-से-कम उसे कुछ प्रत्यक्ष स्वरूप तो प्राप्त हो जाएगा।

बार-बार एक ही प्रश्न उसके मन में झाक जाता, यह सच है कि मुझे लडाई पर जाना चाहिए। पर किसलिए मै अपनी जान खतरे मे डालूँ ? देश के लिए ? पैसे के लिए ? कीर्ति के लिए ? उसने सोचा किसी के लिए भी क्यो न हो ? बिस्तर पर पडे-पडे मरने की अपेक्षा किसी तोप के गोले से रणभूमि पर अथवा रणभूमि के बेस पोस्ट आफिस मे यदि मौत आवे तो बुरा क्या है ? इस प्रकार मरने से मेरे गाँव के लोग कम-से-कम यह तो कहेगे कि हमारे गाँव का शिधू लडाई मे मरा। कोंकण के एक गाँव मे पैदा हुआ एक क्लर्क जो आगे चलकर वकील या कोई आफिसर भी हो सकता था, देशभक्त हो कर अकड से घूम सकता था, कौसिल मे जा सकता था, देश भाईयो के लिए कौसिल मे लड सकता था (काहे का लडना, सिर्फ शब्दो की लडाई)—वह कोकरण का एक भद्र पुरुष लडाई मे मरा। इस तरह गॉव के लोग कम-से-कम कहते तो रहेगे। यह क्या थोडा हुआ ?

भगवान का नाम लेकर उसने निश्चय किया। जो होना हो सो हो, मैं लड़ाई पर जाऊगा। सरकार की ओर से आर्डर नही आया तो मै स्वय अर्जी दूँगा।

विचारो की शृ खला इतनी सनसनाने लगी कि अखबार को बिस्तर पर पटककर वह जोर से चिल्ला पडा—बस तय हो गया ! लडाई पर जाऊँगा।

रमा बिस्तर के नजदीक खडी थी। वह गम्भीर स्वर मे बोली—"और फिर मैं क्या करूँगी ?"

शिधू ने सोचा इस समय गम्भीर होकर काम नही बनेगा। वह बोला—"तुम भी चलो न हमारे साथ लडाई पर। सिपाहियो के लिए खाना पकाने को कोई रसोईदारिन रखनी ही पडेगी। उस पद पर तुम्हे नियुक्त करा दूँगा। बस ! काम बन जाएगा !"

आँसुओ से डिबडिबाई आँखे पोछकर रमा अत्यन्त दयनीय मुद्रा से बोली—"लडाई पर जाऊँगा, यह कहना आपको बडा आसान मालूम

होता है। पर इधर मेरा कलेजा जो टूट रहा है इसका भी कुछ ख्याल है आप को !"

"अजीब पगली हो।" शिधू बोला—"तुम व्यर्थ डर रही हो। अजी, लडाई पर जाने वाले सभी मनुष्य यदि मरते तो राज्य चलाने के लिए पीछे कोई बचता ही नही।"

"यह सच है।" रमा बोली—"पर राज्य चलाने वाले लोग लडाई पर जाते ही कहाँ है ? वे तो सिर्फ हुक्म ही दिया करते है। लडाई मे मरते हैं सिपाही और सेना के साथ मे रहने वाले दूसरे निकम्मे लोग।

"वाह वाह !" शिधू बोला—"अच्छा तुम इतना समझने लगी हो। हमे तुमने निकम्मो मे शामिल कर दिया। हाँ, यह कोई झूठ नही। मर्दानगी दिखाने के लिए सिपाहियो का बाना होना चाहिए। वह मेरे भाग्य मे नही। पर इससे तुम्हे खुशी होनी चाहिए। हम निकम्मे लोग है इसीलिए सुरक्षित रहेगे। फिर इसमे भय की क्या बात है ? निकम्मो की कल्पना अच्छी बताई तुमने। यह अभी तक मेरे दिमाग मे ही नही आई थी। हम निकम्मे है, यह यदि मेरे ध्यान मे पहिले आ जाता तो अलबत्ता मुझे इतना अजीब न लगता।"

रमा ने कहा—"क्या सचमुच आपको लडाई पर जाना होगा ?"

"बार-बार यही क्यो पूछ रही हो ?" शिधू तनिक चिढकर बोला —"यह जानते हुए भी कि निकम्मे लोग लडाई पर अधिक सुरक्षित रहते है, यदि मै वहाँ चला गया तो नुकसान क्या हुआ ? और लडाई पर जाना ही पडेगा यह भी अभी निश्चित कहाँ है ? अभी तो सब अपने-अपने अदाज लगा रहे हैं। तुम अभी से मनौती मनाना शुरू कर दो। तुम्हारी गौरी देवी या जो भी हो, उन्हे मन्नत बोलकर रखो। पेशगी घूस पाने की आशा होने पर बडे-बडे अफसरो की तो आँखे फट जाती है। उसी तरह तुम्हारे ये देवी-देवता ब्रिटिश सरकार के हुक्म

मे दस्तंदाजी करने लगे तो तुम्हारा यह पति कभी लडाई पर नही जायेगा।"

शिधू ने एक जोर का कहकहा लगाया। वह हास्य बनावटी था। पर उस हास्य के कारण रमा का समाधान हो गया।

मँहगाई रोज बढती जाती थी। परन्तु अखबारो पर लोग टूट पडते थे। जिनके घर खाने के लाले पडे थे ऐसे लोग भी पेट को एक अधिक चिकोटी काटकर लडाई की खबरे पढने के लिए अखबार खरीदते थे। हर मनुष्य की जबान पर लडाई को छोडकर दूसरी बात न थी। अखबार की खबरो को नमक-मिर्च मिला कर कहने मे होड़ लगा करती। काल्पनिक खबरे आजादी से उडाने मे सब दर्जे के लोग भाग ले रहे थे।

सरकार के द्वारा जो बुलेँटिन्स तार से आते थे वे पढने को मिलने के कारण शिधू को अखबार पर निर्भर रहने की आवश्यकता न थी। लेकिन थोडे ही दिनो के बाद ये बुलेटिन्स बन्द हो गये और शिधू को भी अखबार के लिए रोज पैसे खर्च करने पडे।

रगरूटो की भरती शुरू हो गई थी। गाँव-गाँव रिक्रूटिग आफिसर घूमने लगे थे। कोकण की दरिद्र जनता घर मे भूखो मरने की अपेक्षा लडाई मे मरकर स्वर्ग प्राप्त करना अच्छा, इस कल्पना से प्रेरित होकर स्वेच्छा से पलटन मे भरती हो रही थी। बहुतो पर सख्ती भी की जाती थी। कभी-कभी रिक्रूटिंग आफीसर और गाँववालों मे थोडी-बहुत लडाई भी हो जाती थी।

कानून की किताबो पर शिधू का ध्यान न जमता। आफिस का काम सुचारू रूप से किये बिना चारा न था। इसीलिए वह काम उससे हो रहा था। लडाई पर जाने की लालच ने उसके मन पर इतना असर किया था कि आफिस में बैठे हुए भी उसकी नजरो के सामने लडाई की घमासान के ि व्य स्वप्न दिखते थे।

जिस अवसर की वह बड़ी उत्कंठा से बाट जोह रहा था वह अवसर आखिर आ गया। स्वेच्छा से लड़ाई पर जाने के लिए जो तैयार हों उनसे अर्जियाँ लेकर जल्द भेजी जाएँ, इस तरह का बड़े दफ्तर से आया हुआ हुक्म शिघू ने जिस दिन पढा उसी दिन झट-से अपनी अर्जी देकर वह शान्त चित्त से सोया।

———

क्विक मार्च

कलबस्त एक छोटा-सा गाँव है। उस गाँव में भी चर्चा का सर्वत्र एक ही विषय था—लडाई ! सच पूछा जाय तो लडाई की आँच शहरो की अपेक्षा गाँवो के लोगो को ही अधिक लग रही थी। शहर मे रहने वाले सफेदपोश लोग लड़ाई की खबरे पढ-पढकर सिर्फ बेचैन ही होते रहते। इससे आगे और कोई प्रभाव उन पर न पडता। पर गाँव के लोग, विशेषत कोंकरा के गाँवो के लोग, प्रत्यक्ष समर-भूमि पर पहुँचे थे। वे रोज जा रहे थे। इसलिए शहर के लोगो की अपेक्षा लडाई के समाचार जानने की उत्सुकता गाँववालो को ही अधिक महसूस होती।

यशोदा का लडका अर्जुन पलटन में था। वह लड़ाई पर गया था। जिस गाँव मे वह लड रहा था, उस गाँव के नाम का भी यशोदा ठीक से उच्चारण नही कर सकती थी। अर्जुन के दो बडे भाई खेत मे काम करते हुए, हाथ मे खुरपी और हल पकडे, पुराने जमाने की बन्दूको और तोपों का वर्तमान बन्दूको और तोपो से मिलान करते।

कोई ठीक से कुछ भी न जानता था। समाचार पत्रो मे लडाई की जो खबरे आती, पटेल और पटवारी के घर उनके बारे मे जो चर्चा होती, उन्ही बातो को ये दुहराते रहते। लडाई से लौटने के बाद अर्जुन सूबेदार होगा या उससे भी कोई बडा ओहदा उसे मिलेगा, इस विषय मे दोनो भाई बाते कर रहे थे। शिधू जोशी की माँ गोपिका बाई शान्त चित्त से उन दोनो भाइयो की बाते सुनकर मन-ही-मन हँस रही थी। वह खेत को मेड पर बैठी थी।

गोपिका पढी-लिखी थी। साप्ताहिक "केसरी" वह बडी आस्था से पढा करती। अपनी पडोसिनो को भी पढकर सुनाती। अखबार में

आनेवाली लडाई की खबरो से अर्जुन के भाइयो के मुँह की सुनी खबरो का कोई मेल न देख उसे मजा आता।

बेचारी यशोदा अलबत्ता इन चर्चाओ मे कोई भाग न लेती। लडका लडाई पर गया है, उसे वापिस आना चाहिए। जैसा गया है उसी तरह वापिस आना चाहिए, इसी पर उसका सारा ध्यान केन्द्रित था। दिन मे दस बार वह देवी की मनौती मनाती। हर बार की मन्नत की मुर्गियो का यदि हिसाब लगाते, तो अभी तक लगभग पचास मुर्गियाँ देवी के दरवाजे पर काटनी पडती। इस हिसाब से लडाई के बन्द होते तक और अर्जुन के घर लौटते तक मुर्गियो की सख्या लाखो तक भी पहुँच जाती।

गोपिका ने एक दिन यशोदा से कहा—"यशोदा, तुम्हारे लड़के कैसी पागल जैसी बाते करते है! गाँव के कुछ लोग अनाप-सनाप गप्पे उडा देते है और ये पगले उन्हे सच मान लेते है। "केसरी" को छोड़कर और किसी भी समाचार-पत्र पर मेरा विश्वास नहीं। अभी ये लडके कह रहे थे कि जर्मनी ने पंख लगाकर आसमान मे उडने की तरकीब निकाली है। जा! किस निगोडे ने यह गप्प ठोक दी। अब तुम्ही बताओ कि पंख लगाकर उडने के लिए क्या वे रावण-राज्य के राक्षस है?"

"मुझे इन खबरो से क्या मतलब? मेरा अर्जुन किसी तरह सुरक्षित लौट आयें, तो मेरा जी ठडा हो जायेगा। लडाई की बाते करने मे किसी का क्या जाता है? जाने उसकी कैसी मति भ्रष्ट हो गयी थी कि उसे लडाई पर जाने की सूझी? आज अगर यही रहता, तो मजे से खेत मे काम करता और सुख पाता। कुछ भी हो, पर आखिर यह मुई लडाई ही तो है। इस मे कब क्या हो जाय, कौन कह सकता है?" यशोदा की आँखे एकदम भर आई।

"चुप हो जाओ, यशोदा! रोओ नही!" गोपिका ने कहा—"लडाई पर गये मनुष्य की याद मे आँसू बहाना ठीक नही। किस वक्त क्या हो जाए, लडाई मे इसका कोई ठिकाना नही रहता। इसलिए हमे

सिर्फ अपने कुलदेव का स्मरण करना चाहिए और लड़के को आशीस देनी चाहिए।"

"तुम मजे मे हो पटेलन।"–यशोदा बोली–"तुम्हारा बेटा तारबाबू है। हर महीने तुम्हे खर्चा भेजता है। वह क्यो लडाई पर जाने चला ?" गोपिका बोली—"हम रामायण महाभारत आदि पढते है। पेशवाओ ने जो लडाईयाँ लडी थी, उनके वर्णन पढते है। कुछ दिन पहले मैंने बापट नामक एक लेखक द्वारा लिखी "पानीपत का सग्राम" नाम की पुस्तक पढी थी। युद्ध का वर्णन पढने से ही रोगटे खडे हो गये थे। पर उस जमाने की लडाईया भी क्या कोई लडाईयाँ थी ? आजकल तो सुनती हूँ कि बडे-बडे शोध हुए है। मनुष्यो को मारने के हवाई जहाज, सुरग, पनडुब्बियाँ तोपे, और राम जाने क्या क्या ! इसलिए मै कहती हूँ कि मेरा शिधू सचमुच यहाँ बडे मजे मे है, सुख से है और यही मेरा बडा सुख है। वैसे देखा जाए तो ऐसे कितने ब्राह्मण लडाई पर गये होगे ? तुम कुर्मियो या मराठो को जाना पडता है लडाई पर। पहिले जब पेशवाओ का राज्य था, उस समय ब्रह्मण भी रकाब मे पैर फँसाकर घुड-दौड किया करते थे, परतु अब हम ब्राह्मण लोग यदि अपने हाथ का जौहर दिखाना भी चाहे, तो हमारे पास कलम को छोडकर और दूसरा कोई हथियार ही नही है।"

"मतलब ?"—बीच ही मे यशोदा बोल उठी—"क्या तुम्हे लगता है कि तुम्हारा बेटा भी लडाई पर जाए और हाथ का जौहर दिखाए ?"

"यह मैंने कहाँ कहा ?" गोपिका बोली—"अग्रेज सरकार के कानून के मुताबिक ब्राह्मण सिपाही नही हो सकता। जब पहिले जमाने की लडाईयो के वर्णन पढती हूँ, तो मन मे आता है कि ब्राह्मणो के लडको को भी लडाई पर जाना चाहिए। तुम्हारा अर्जुन अब लडाई पर गया है, पर जब उसकी याद आती है, तो मेरा कलेजा भी धडकने लगता है। फिर मान लो, कल यदि मेरा शिधू भी लडाई पर चल दे, तो मेरे जी का क्या हाल होगा ? ऐसा होता है हम स्त्रियो का मन !

एक बार जी मे आता है कि मेरा बेटा भी लडाई पर जाए और ना- पैदा करे। पर पुनः ममता का पाश मन को मजबूती से बाँध देता है !"

गोपिका की बात वही तक रही। घर से नौकर दौडता आया। बोला—"शिधू भैया आये है। छोटी मालकिन भी साथ है।"

गोपिका का कलेजा धक्-से हो गया। उसे लगा, शिधू कही बीमार तो नही हो गया ? अचानक कैसे आया ? परसो ही तो उसका पत्र आया था। उसमे यहाँ आने की कोई खबर नही थी।"

गोपिका दौडती हुई ही घर पहुँची। यशोदा उसके पीछे-पीछे चलने लगी थी। शिधू दरवाजे के पास खडा था। उसे देखकर गोपिका को लगा कि शिधू की कही अचानक बदली हो गयी होगी और कही नजदीक पास ही हुई होगी, वरना पूरा सामान साथ मे लाने की क्या जरूरत थी ? कही नौकरी तो नही छूट गयी-यह विचार भी उसके मन मे आया।

कपडे उतारकर शिधू नहाने के लिए कुएँ पर गया था। रमा सामान खोलकर सफर मे गदे हुए कपडे निकाल रही थी और उन्हे धोने के लिए अलग रख रही थी। उसे देखते ही गोपिका ने पूछा— "तुम लोग अचानक कैसे आए, बहू ?"

सामान खोलने के लिए झुकी हुई रमा एकदम चौककर सीधी खडी हो गई और सास के मुँह की ओर सिर्फ ताकने लगी। उसके मुँह से शब्द ही नही निकल रहा था।

बेचारी गोपिका के छक्के छूट गये।

"आखिर बात क्या है, बताओ न ?"—कहते हुए गोपिका का स्वर काप उठा था।

"कोई खास बात नही।"—रमा अदब से एक ओर हटकर बोली "इन्हे लडाई पर जाने का हुक्म मिला है।"

गोपिका धम्म-से नीचे बैठ गयी—"लडाई पर ! मेरा शिधू

लड़ाई पर जाएगा ? तारबाबुओ की लडाई पर जाने की क्या जरूरत है ?"

"यह सब आप अब उन्ही से पूछिए।" कहकर रमा ने कपडे समेटे और उन्हे लेकर पिछवाडे के द्वार से कुएँ पर चली गयी।

इस समय तक यशोदा भी आगई थी। उसे देखते ही गोपिका बोली—"देख लो, हम जो अभी बाते कर रही थी, अचानक वही हो गया। अभी-अभी मै तुम से कह रही थी कि मेरे शिधू को लडाई पर नही जाना पडेगा और अब सुनती हूॅ कि उसे भी लडाई पर जाने का हुक्म मिला है। शिधू को वे क्यो लडाई पर भेज रहे हे ? क्या वह सिपाही है ?"

"इस लडाई के जमाने मे क्या होगा और क्या नही होगा, यह कोई नही कह सकता।" आँखे पोछती हुई यशोदा बोली।

गोपिका जब से नीचे बैठी थी सो अभी तक वही बैठी थी। उसकी आँखो से लगातार आँसू बह रहे थे।

पीछे से शिधू की आवाज आई—"माँ ! ओ माँ ऽ ऽ !"

शिधू की वह हर्ष-भरी आवाज सुनकर, गोपिका के आँसू थम गये। आँचल से मुँह पोछकर, वह तडाक से खडी हो गयी और बोली—"आ गये बेटा ! लडाई पर क्यो जा रहे हो ? अभी-अभी रमा ने बताया मुझे कि तुम्हे लडाई पर जाने का हुक्म मिला है।"

"कम-से-कम मेरे आते तक तो रुक जाती !" शिधू रमा को लक्ष्य करके बोला—"इतनी जल्दी क्या पडी थी ? माँ, मुझे लड़ाई पर जाना है। यशोदा के अर्जुन की तरह नही। लडाई तो होगी मोरचे पर और हमारा डाकखाना रहेगा उससे बहुत दूर पीछे की तरफ। मैं तारबाबू बनकर नही जा रहा हूँ। सिर्फ डाकवाला बाबू बनकर जा रहा हूँ। मुझे वहाँ केवल कुर्सी पर बैठे रहना होगा। अगर पत्र या पार्सल आये तो थैली खोल कर उन्हे निकालना और बँटवा देना। बस, इतना ही काम

रहेगा मेरा। वहाँ न रजिस्ट्री करना है और न मनीआर्डर करने है। हमारे डाकखाने के आसपास बडा कड़ा पहरा रहेगा। डाकखाने को सुरक्षित रखकर ही लडाई चल सकेगी। इसलिए सरकार को सर्वप्रथम अपने डाकखाने की पूरी सुरक्षितता पर ध्यान देना होगा। यहाँ चिपलून मे रहना या रत्नागिरी मे रहना, या कि वहाँ बेल्जियम-फ्रन्ट पर रहना सब एक समान है। यहाँ आने मे जो देर लगेगी वही सवाल है।"

शिधू माँ के सामने जाकर बैठ गया और हँसकर बोला—"देखो माँ! अब क्या बताऊँ? क्या तुम यह सोचती हो कि मै कमर मे पट्टा बाँधे, कांधे पर बदूक रखे, क्विक मार्च करता हुआ लडाई पर जाऊँगा? मुझे तनख्वाह क्या मिलेगी, जानती हो?"

"आग लगाओ अपनी तनख्वाह को।"—गोपिका बोली—"जो यहाँ मिल रही है वही बहुत है।"

"क्या बहुत है? तुम्हे हर महीने पाँच-छ रुपए भी तो नियम से नही भेज सकता। घर गिर रहा है। तीन साल से सोच रहा हूँ कि मरम्मत करूँगा। पर

"अब चुप भी रहोगे या नही?"—गोपिका बोली—"यूँ गीले कपडो मे कब तक खडे रहोगे? धोती बदलकर जल्द आकर पीढे पर बैठ जाओ। सध्या कर लो। थोडा-सा दूध देती हूँ, पी लेना। फिर मैं भी जाती हूँ रसोई मे। रमा अब आती होगी। बडी देर कर दी उसने। ऐसे कितने कपडे धोने थे उसे?"—इस तरह कहते हुए गोपिका घर मे चली गयी।

भोजन के बाद शिधू सो गया। उसे नीद नही आयी थी। लडाई पर जाने के विचार उसके मन मे उठ ही रहे थे। बबई के डाकखाने मे फौरन जाकर हाजिर होने का हुक्म उसे मिला था। अधिक-से-अधिक एक-दो दिन ही वह गाँव मे रुक सकता था।

लडाई पर जाने के लिए उसने जिस समय अर्जी भेजी थी, उस समय

का उसका उत्साह अब उसमे नही रह गया था। उसका मन दुविधा मे पड गया या। कही मैंने गलती तो नही की, यह विचार उसके मन को कचोट रहा था। घर मे अकेली माँ है, पत्नी का भी मायके मे अपना कोई नही, वह भी अकेली है। ऐसी परिस्थिति मे, मेरे लड़ाई पर जाने के बाद, यहाँ उनकी चिन्ता कौन करेगा ? लडाई से घर वापिस वह कब लौट सकेगा, इसकी उसे कोई कल्पना न थी। लोग कहते थे कि चार-छः महीने के भीतर यह लडाई बद हो जाएगी। चार-छ महीने के बाद, जहाँ यह लडाई खत्म हुई कि मैं लौट आऊँगा। तनख्वाह करीब-करीब आज से चौगुनी मिलेगी। बाकी सब खर्च सरकार देगी ही। इस मधुर विचार से कि ऐसी परिस्थिति मे वह पूरी तनख्वाह घर भेज सकेगा, उसे बडी खुशी हो रही थी। इससे जब वह वियोग के दुख का मिलान करता, तो वह दुख उसे क्षुद्र लगता। अपनी माँ दुख मे जिदगी काट रही है इसलिए उसके मन मे बडी चुभन होती थी। उसके आर्थिक कष्ट किस प्रकार दूर होगे, सुख और सतोष मे जीवन व्यतीत करने की परि-स्थिति उसे कब और किस प्रकार प्राप्त हो सकती है, इन्ही विचारो मे खोया हुआ वह आज तक जी रहा था। परन्तु अब यह महसूस करते कि लडाई पर जाने के बाद से हमारे आर्थिक कष्टो का निवारण होगा और माँ सुख और सतोष मे रह सकेगी, उसका मन उल्लसित हो रहा था। साथ ही, यह जानते हुए भी कि प्रत्यक्ष मोरचे पर जाने का मौका उसे नही आएगा और उसकी जान इतने खतरे मे नही रहेगी जितनी कि सिपाही की रहती है। उसे लगा कि यह सोचना भी भूल है कि डाक-खाने मे रहते हुए भी मै बिल्कुल सुरक्षित ही रहूँगा, क्योकि मोरचे के आसपास ही छावनी होती है और वही डाकखाना होता है। लडाई मे यदि मैं मारा गया तो मेरी माँ का क्या होगा।, इस विचार से उसके प्राण सूखने लगे थे। फिर उसने सोचा कि बिना साहस किए सुख नही मिलता और जब साहस करने का अवसर आ गया है, तो उसे न कर पीछे हट जाना पुरुषो को शोभा नही देता। उसने यह सिद्धान्त रमा को

तो जैसे-जैसे समझा दिया था, पर माँ को समझाना बडा कठिन था।

सायकाल भोजन के बाद माँ आकर उसके बिस्तर के पास बैठी। उस समय वह बोला, "माँ, रोओ मत। हमने बीसवी सदी मे जन्म लिया, इसे हम पुरुष अपना दुर्भाग्य समझते थे। पेशवाओ के जमाने की वीरता की बातें कहते और सुनते वक्त हमारी भुजाएँ फडक उठती थी। वही वीरता दिखाने का आज मौका आया है। प्रत्यक्ष वीरता दिखाने का मौका यद्यपि यशोदा के अर्जुन को मिलेगा, फिर भी डाकखाने मे मोरचे के पीछे रहने वाले हम बाबुओ को वह मिलेगा ही नही, यह नही कह सकते। आज अगर पेशवाओ का राज्य होता, तो तुम्हारे पुत्र को लडाई पर जाना ही पडता। यही समझ लो कि आज पेशवाओ का ही राज्य है और अपने जी को पक्का करो। सच पूछा जाए, तो मुझे वहाँ किसी किस्म का कोई खतरा नही। पर तुम्हे यह बात जँचती ही नही। मैं बार-बार कह रहा हूँ कि मेरी जान सुरक्षित है। यहाँ की अपेक्षा मुझे वहाँ सुख ही अधिक मिलेगा। खाना-पीना, नौकर-चाकर, ऐशोआराम सब कुछ भरपूर है वहाँ मेरे लिए। यहाँ के तहसीलदार और जज लोग जितने ठाट मे नही रहते, उतने ठाट से हम लोग वहाँ रखे जाएँगे। पीछे रहने वाले हम लोगो की सुरक्षा पर ही मोरचे पर के लोगो के प्राण अवलबित है, यह तुम्हारी अपेक्षा हमारी सरकार अच्छी तरह जानती है। तुम जरा भी चिन्ता न करो। वापिस लौट कर आऊगा, तो सौ सवा सौ महीने की नौकरी मेरी बाट ही जोहती रहेगी।"

गोपिका ने कोई उत्तर नही दिया। दोनो कुहनियाँ घुटनो पर रख कर वह लगातार जमीन की ओर देख रही थी। उसकी आँखो से निरतर आँसू बह रहे थे। उसकी वह अवस्था देखकर वह बोला—"यह कैसी अशुभ बात कर रही हो माँ! तुम्हारा पुत्र लडाई पर जा रहा है। उसके पथ को क्या तुम आँसुओ से सीचोगी? भगवान का नाम लेकर मुझे आशीर्वाद दो। तुम्हारे आशीर्वाद के बल पर तुम्हारा यह बेटा शिघ्र लडाई मे नाम कमाकर पुनः तुम्हारे चरणो पर सिर रखने के लिए

शीघ्र ही लौटकर आएगा। भगवान क्या इतना निर्दयी है ? तुम्हारा भगवान पर विश्वास है न ? अब मेरे जाने के बाद आँखो से आँसू न बहाना। मा की आँखो से आँसू की एक बूद निकलते ही पुत्र के शरीर से खून की सौ बूदे बहने लगती है। इसीलिए रोना नही चाहिए। सदा प्रसन्न मुद्रा से रहना चाहिए, हँसते हुए।"

कोने मे खडी अपनी पत्नी की ओर मुडकर शिधू बोला, "और तुम भी सुन लो। यह न समझना कि सिर्फ अपनी माँ से ही कह रहा हूँ। दुनियाँ की सब माताओ से कह रहा हूँ। यह लडाई अब शुरू हो गयी है। दुनियाँ मे अब बडी उथल-पुथल होने वाली है। आने वाले जमाने में सब माताओ के लडको को लडाई पर जाना होगा। इसलिए तुम्हे भी यह ध्यान मे रखना चाहिए।"

पुन: माँ की ओर मुड़कर बोला —'अब तुम जाकर सो जाओ। अपने मन को थोडा भी कष्ट न दो। जिस दिन से मैने सरकारी नौकरी स्वीकार की है, उसी दिन से मैं उनके हुक्म का तावेदार हो गया हूँ। जो हुक्म मुझे मिलता है, उसकी अदूली मैं नही कर सकता। यदि नौकरी छोडना चाहूँ, तो वह भी मेरे हाथ मे नही। अब तो जो विपत्ति सामने आ गई है उसका सामना करने के लिए भगवान का नाम लेती रहो और रोज अपना आशीर्वाद मुझे भेजती रहो। हा, उठो तो अब ."

एक शब्द भी न कहकर गोपिका उठकर चल दी।

मीठ-मीठी बाते करके मैंने अपनी माँ को धोखा दिया, इसका उसे पश्चाताप हुआ। सरकार उसे सख्ती से लडाई पर नही भेज रही थी। उसने जानबूझ कर यह सकट अपने-आप अपने पर ले लिया था, परन्तु माँ के मन को धक्का न लगे, इसीलिए उसने झूठमूठ ही यह कह दिया था कि सरकार ही उसे लडाई पर भेज रही है। इस बात पर रमा ने भी विश्वास कर लिया था। रमा की उम्र ही क्या थी, यही सिर्फ सोलह वर्ष। अभी लडकी ही तो थी वह। विवाह हुए तीन ही वर्ष हुए थे।

पति से परिचय हुए अभी पूरा डेढ साल भी नही हुआ था। इतने मे ही यह वियोग का प्रसग और वह भी लडाई पर जाने का !

लडाई पर जाने वालो के लिए आँसू नही बहाना चाहिए, यह तत्व-ज्ञान शिधू के खूब काम आया। उसका मन भी अस्वस्थ हो गया था। वह हमेशा हँसता रहता। पर इस प्रसग पर उसका मन हिल गया था। यह देखकर कि रमा को नीद लग गई है, वह भी अपनी नित्य की आनन्दी वृत्ति का त्याग करके यथेच्छ आँसू बहाने लगा। यह कर लेने पर उसका मन स्थिर और हल्का हो गया।

दूसरे दिन जाने की तैयारी आरभ हुई। सारी तैयारी यद्यपि सरकार की तरफ से होने वाली थी, फिर भी इतने लम्बे सफर के साधन जमा करने के लिए उसे अपने खर्च से भी बहुत सी चीजे खरीदना आवश्यक था। उसने बडी किफायतदारी से हिसाब लगाया, फिर भी इन चीजो को खरीदने के लिए कम-से-कम सौ-डेढसौ रुपये की जरूरत थी। यह रकम सरकार से मिलने वाली नही। इसलिए उसने सगमेश्वर के एक साहूकार के पास अपना एक खेत गिरवी रख कर दो सौ रुपया कर्ज लिया। यह कर्ज लेते समय उसे बडी आन्तरिक वेदना हुई।

उसे पहिले भी अनेक कठिनाइयाँ आयी थी, पर खेत गिरवी रखकर कर्ज लेने का अवसर उस पर नही आया था। उसके हृदय पर यह भारी आघात हुआ। पर उसे यह विश्वास होने के कारण कि लडाई से लौटने के बाद मै यह कर्ज सहज ही अदा कर दूँगा, उसने अपने मन को दुखित न होने दिया।

जब यह गाँव से जाने लगा, तब उसे बिदा देने के लिए उसके सब आसामी और उसके कुनबे के लोग उ ग गाँव की सरहद तक पहुँचाने गये। गोपिका और रमा धीरे-धीरे चल रही थी। उन्हे आखिरी सदेश देते समय शिधू बोला—"माँ, अब तुम कहाँ तक जाओगी मेरे साथ ? यदि किसी दूसरे काम से विदेश जाता , तो तुम्हे बम्बई तक भी साथ

ले चलता। तुम स्वय देख लेती कि हमे किस शान से बिदाई दी जाती। परन्तु यह मौका है लडाई पर जाने का। वहाँ बदरगाह पर हार पहिनाना और बाहो मे भरना—यह कुछ नही हो सकेगा। वह सब यही निपट ले। वाह, यह क्या ? रो रही हो ? याद रखो, आँसू नही बहाना है और अपनी इस बहू से भी कह देना कि बेकार रोवे नही।"

रमा की ओर मुडकर वह बोला—"अपना कुकम कुछ पुछा-पुछा सा ही लगाया करो। समझी ? पति को लडाई मे जहाँ स्वर्ग प्राप्त हुआ कि वह झट से पोछ सको।"

"यह क्या बकता है रे ? निगाडे की जीभ मे जैसे हड्डी ही नही है !" गोपिका बोली, "तेरी यह आदत अब छूटेगी भी कब ? उसके मन की ओर भी देखेगा या नही ?"

"सब के मनो की ओर देख रहा हूँ और उनके चेहरो की ओर भी देख रहा हूँ। अब तुम सब लौट जाओ। हाँ, जाओ तो—लेफ्ट टर्न-क्विक मार्च ! सुना माँ, राघो भरारी के वेग से मैं लडाई पर जा रहा हूँ। उसने जिस तरह अहमदशाह अब्दाली का गला दबाया था उसी तरह मैं भी कौन जाने किसके प्राण लेकर ही लौटूगा। अपनी बहू से कह देना कि उस समय पचारती लेकर तैयार रहे। अच्छा, तो अब आप सब लोग लौट जाइए न। हाँ, जाओ अब !"

शिघू ने एकदम आगे चलना शुरू कर दिया। फिर से पीछे मुड़कर देखा भी नही।

—o—

आलिंगन

विलायत जाने वाले अपने कुछ मित्रों को विदा देने के लिए शीघ्र जोशी पहिले एक दो बार बम्बई गया था। उस समय हार और पुष्प-गुच्छ देकर उसने अपने मित्रों को बिदा दी थी।

परन्तु यह प्रसग बिल्कुल भिन्न था। लडाई पर जाने वाले लोगो की इस भीड मे हार और गुलदस्ते देता कौन और लेता कौन? पहिले उसे पोस्ट-मास्टर जनरल के आफिस मे हाजिर होना पडा। वहाँ से वह मिलिटरी कैम्प के हवाले कर दिया गया। लडाई पर जाने वाले अन्य पलटनो के साथ उसे भी एक जहाज पर बैठा दिया गया।

यह सब काम सरकारी निगरानी मे होने के कारण मुलाकात, होने और पुष्प-गुच्छो आदि का प्रश्न ही उपस्थित न होता था। जिन-जिन से वह मिलना चाहता था, उन से मिलिटरी कैम्प में प्रवेश करने से पहले ही उसे मिल लेना पडा था।

उसका अपना यह अनुमान था कि पोस्ट-मास्टर की हैसियत से वह वेलजियम के किसी मोरचे पर भेजा जा रहा था इसलिए कह रहा हूँ कि कौन कहा भेजा जा रहा है, इसका पता किसी को भी नही लगने दिया जाता था।

पोस्टमास्टर की हैसियत से वह एक आफिसर था। इसलिए जहाज मे उसे सेकिंड क्लास के केबिन मे स्थान मिला। सैकिंड क्लास का केबिन मिलने की खुशी के साथ ही उसके हृदय मे एक भय भी झाँकने लगा था। "बेस आफिस" मे उसकी नियुक्ति हुई होती तो वह एक क्लर्क की हैसियत से ही जाता और फिर लडाई के मोरचे से कई मील दूर रहता

परन्तु पोस्ट-मास्टर की हैसियत से जाने के कारण उसकी नियुक्ति किसी फील्ड आफिस मे ही होगी, यह निश्चित था और इसीलिए उसके हृदय में भय-सा छा गया था।

उसका जहाज अदन के बंदरगाह पर कुछ समय के लिए रुका था। वहां उसने यह समाचार सुना कि स्वेज की नहर पार करने के बाद जहाज को खतरा है। समुद्र मे जहाँ-तहाँ सुरंग डाल दिये गये हैं और शायद कहीं-कही शत्रु के 'डिस्ट्रायर्स' भी मार कर रहे हैं। वैसे वह डरपोक न था। लडाई पर जाने के लिए वह जान बूझकर तैयार हुआ था। यह खतरा उसने खुद मोल लिया था। इसके बावजूद यह समाचार पाकर उसके हृदय को धक्का लगे बिना न रहा।

जहाज पर वक्त बडे मजे मे कट रहा था। यद्यपि उसके साथियों मे महाराष्ट्रीय कोई भी न था, फिर भी हिन्दी बोलने वालो की वहाँ कोई कमी न थी। हिन्दी भाषा मे बाते करने लिए पहले पहल उसे बडी कठिनाई प्रतीत हुई। अँग्रेजी जानने वाले जो लोग जहाज पर थे, उनसे शिघू का सम्बन्ध शायद ही कभी आता, क्योकि वे सब फौजी अफसर थे और उन अफसरो की दृष्टि मे पोस्टमास्टर एक तुच्छ व्यक्ति था। मामूली सिपाही से पोस्टमास्टर का रैंक ऊंचा माना जाता था, जो जमादार के रैंक के बराबर था। नये कमीशन प्राप्त एक-दो हिन्दुस्तानी डाक्टर उसके साथी थे। उनसे उसकी अच्छी घनिष्ठता हो गई।

पहिले-पहल उसे खाने-पीने की बडी कठिनाई हुई। कुछ दिन तो उसने डबल-रोटी, मक्खन, चाय और सब्जियो पर ही रहने की कोशिश की। पर इन्हे खाकर उसका पेट नही भरता। नये डाक्टरो ने उसे फौजी खाना खाने की दीक्षा दी। पहिले ही वक्त जब उसे गोश्त परोसा गया तो उसे वह खाने की हिम्मत न हुई। अभक्ष्य भक्षण का आरम्भ उसने आमलेट से किया।

पहिला आमलेट खाने के बाद दो-तीन दिन उसका जी मचलता रहा। पर आगे चलकर वह उसका आदी हो गया और कुछ ही दिनो के

बाद वह करी-राईस तक पहुँच गया ।

पहिले आमलेट फिर सिर्फ करी-राईस, बाद मे कटलेट्स और फिर तो जो भी उसके सामने आ जाता, उसे वह निःसंकोच खा डालता । मार्सलीज के बन्दरगाह पर उतरते तक फौजी खाना खाने का वह इतना आदि हो गया कि उसे यह जानने की भी परवाह न रही कि जो गोश्त खाने की मेज पर रखा है वह किस जानवर का है !

शिधू को लगा कि लडाई के मैदान पर जाने के लिए अब मैं पूरी तरह से तैयार हो गया । गोश्त हजम करने लगा, यह क्या कम हुआ ?

मार्सलीज पर मिलिटरी गाडी तैयार थी । इस गाडी से उनका सफर शुरू हुआ । वह गाडी किसी भी स्टेशन पर खडी न होती थी । जिस स्टेशन पर वह खडी हुई थी उस स्टेशन के नाम का भी किसी को पता न चला । उस स्टेशन पर लोग प्लेटफार्म पर उतर पडे थे । इसलिए वह भी उतर पडा । इस गाडी से जिस तरह यूरोपियन सोल्जर्स जा रहे थे उसी तरह हिन्दुस्तानी सिपाही भी जा रहे थे ।

स्टेशन पर बडी भीड़ थी । वहाँ के लोगो की जो भाषा कानो मे पड रही थी, वह अंग्रेजी न थी । इसलिये शिधू ने सोचा कि वह शायद फ्रेन्च भाषा होगी ।

वह एकदम आश्चर्य-चकित हो गया । बहुत सी स्त्रियाँ प्लेटफार्म पर आयी और जो भी सोल्जर उन्हे मिला—फिर वह चाहे अंग्रेज हो या हिन्दुस्तानी—उसे अपनी बाँहो मे भर कर चूमने लगी ।

यह बात उसके साथ भी हुई । तब वह घबरा उठा । आज तक उसकी धारणा थी कि गोरे चमडे के लोग अतिमानव है जिन्हे दूर से ही देखना पडता है और जिनसे हाथ मिलाना करीब-करीब असम्भव ही होता है । ऐसे विकट लोग होते है ये गोरे चमडे वाले और ऐसी श्रेष्ठ जाति की स्त्रियाँ तो महाविकट होती हैं ! जीवन में जिन योरोपियन लोगो को उसने देखा था, वे सब कलैक्टर, डिस्ट्रिक्ट जज आदि उच्च पदधारी ऊँचे दर्जे के लोग थे । वे यदि थोडा भी मुस्करा देते, तो

जिसकी तरफ देखकर वे मुस्कराते, वह अपने आपको बडा धन्य समझता, उसे लगता मेरा जीवन कृतार्थ हो गया ! और यहाँ इस स्टेशन पर ? ये अतिमानवो की स्त्रियाँ हिन्दुस्तानी लोगों को अपनी गोरी बांहो में भर कर चूम रही हैं ! बेचारे शिघू का कलेजा फट-सा गया !

स्वागत-सत्कार का यह तरीका उसकी दृष्टि मे अपूर्व था । जिस लडकी ने इस नाजुक तरीके से उसका स्वागत किया था, उसने शिघू से बाते करना शुरू किया । वह फ्रेन्च भाषा बोल रही थी । शिघू को मजाक करने की सूझी । वह अपनी मराठी भाषा मे उत्तर देने लगा । वह बार-बार फ्रेन्च बोल रही थी और वह बार-बार मराठी मे उत्तर दे रहा था । भाषा शास्त्र की इस आँख-मिचौनी मे दोनो मशगूल हो गये थे । दोनों उस प्रसग का रसास्वादन कर रहे थे ।

बेचारा शिघू आखिर थक गया और अग्रेजी बोलने लगा । वह लडकी बोली—"नो अगले !"

शिघू बोला—"आई इडियन—मराठी पोस्टमास्टर—"ऐसा कह-कर उसने हाथ से डाक बांटने का अभिनय करके दिखाया ।

उस अभिनय का अर्थ वह लड़की समझ गयी ।

वह बोली—"नो सोल्जर ?" शिघू ने सीधा मराठी मे जबाव दिया, "अगर मौका आ गया, तो मै भी लडूँगा ।"

ऐसा जान पड़ा कि शिघू के रग-ढग से वह लड़की उसका आशय समझ गयी । उसने एक बार पुनः शिघू को अपने बाहु-पाश मे बद्ध करके चूम लिया और बोली—"अँग्ले, इन्डियन्स-सेव्हियर्स !

उनके इन उद्‌गारो का अर्थ शिघू के ध्यान मे आ गया । फ्रान्स की रक्षा के लिए भारतीय सेना को लेकर अँग्रेज लोग दौड़ पडे, इसीलिए फ्रेन्च लोगो को बहुत आनन्द हुआ । यह आलिगन और चुम्बन उसी आनन्द का प्रदर्शन था, ऐसा उसने अनुमान लगाया ।

सीटी बजी और वह फिर गाडी मे बैठा । स्वागत की इस नयी पद्धति का उसके मन पर बड़ा विलक्षण प्रभाव पड़ा था । क्या कोई

भारतीय स्त्री विदेशियों का इस प्रकार स्वागत-सत्कार करती ? भारतीय नारियाँ विजयी वीरो की आरती उतारती थी, यह उसने भारतीय इतिहास मे पढा था। वह सोचता, क्या युवतियाँ सचमुच विजयी वीरों के सामने आकर उनकी आरतियाँ उतारती थी या कि वे निरे वर्णन ही है। शायद विजयी पतियो की पत्नियाँ आरती उतारती भी हों। दिवाली मे आरती उतारने की प्रचलित पद्धति का उसे स्मरण हो आया।

वह बडा पापभीरु था। परायी स्त्री की लालसा तक उसके मन में कभी नही जन्मी थी। यह सच है कि उसका प्रेम-विवाह नही हुआ था, फिर भी दैवयोग से जिस तरुणी मे उसका विवाह हुआ था, वह अत्यन्त स्नेहमयी थी। उसे अपने पति पर गर्व था। पत्नी के प्रति उसके हृदय में भी एक विशेष प्रकार का तीव्र आकर्षण था। तत्कालीन प्रचलित प्रथा के अनुसार परायी स्त्री को सिर्फ छूना भी पाप था। भीड मे भी यदि किसी परायी स्त्री का केवल स्पर्श ही हो जाता, तो भी उसके रोंगटे खडे हो जाते। उसे लगता, मेरी भूल हो गई, मैं शिष्टता से गिर गया, मर्यादा का मैंने उल्लघन कर दिया! परन्तु एक सुन्दर स्त्री जिससे कोई पहचान भी न थी, एकदम आई और अपनी दोनो बाहे उसके गले मे डाल उस पर चुबनो की वर्षा करने लगी! इस विलक्षणता में क्या रहस्य था, यह वह समझ नही पा रहा था।

उसने अँग्रेजी उपन्यास पढे थे। जब प्रेमी युगल एक दूसरे पर अनुरक्त हो जाते, तब अनुराग के आवेश मे, उन मे परस्पर घनिष्ठता स्थापित होती और उनके अधरो से अधर भी मिल जाते, पर एक अनजाने अनदेखे, यही नही, बल्कि भारत मे रहने वाले गोरे अँग्रेजो की दृष्टि में अत्यन्त तुच्छ माने जाने वाले हिन्दुस्तानी को एक सुन्दर यूरोपियन ललना ने अपनी भुजाओ मे क्यो भर लिया, उसे क्यो चूम लिया, यह रहस्य वह समझ नहीं पा रहा था।

उस स्पर्श की स्मृति अभिनव थी। वह युवती रेशमी कपड़े पहिने

थी। उसकी त्वचा मृदु थी। इत्र की खुशबू उसके आस-पास महक रही थी। ऐसी युवती ने मेरे अधरो पर अपने अधर धर दिये!—वह प्रसग उसे बार-बार याद आता और उसका हृदय बेचैन हो उठता।

वह अपनी मातृभूमि छोड कर आया है यह भी वह भूल गया। वह लडाई पर जा रहा है, जान का वहाँ खतरा है, मौत वहाँ नजदीक खडी है, ये विचार भी उस वक्त उसके मन मे नही आए।

उसके स्निग्ध स्पर्श की उसे बार बार याद हो आती। वह हक्का बक्का हो गया। उसकी नित्य की सतुलित वृत्ति ने उसका साथ छोड दिया। उस फ्रासीसी रमणी का रमणीय मुखडा, बासुरी के स्वर जैसी मीठी आवाज, अँग्रेजी से भी अधिक सुन्दर लगने वाले फ्रेन्च भाषा के शब्द उसके कानो मे गूँज रहे थे।

उसके मस्तिष्क मे एकदम प्रकाश पडा। यही बात है! आज तक लोग कहते आये है कि तरुणियो के प्रोत्साहन पर तरुणो की वीर-वृत्ति अवलम्बित है। बस यही वह बात है! इसी नशे के जोर पर प्राणो की परवाह न कर हथेली पर सिर लिये सिपाही समरभूमि मे लडा करते थे।

इन फ्रेन्च युवतियो को ज्ञान है, इसीलिए उन्होने इस रीति से हिन्दुस्तानी सिपाहियों का स्वागत किया। जो यूरोपियन हिन्दुस्तान मे आकर हिन्दुस्तानियो के साथ इस तरह पेश आते है जैसे हिन्दुस्तानी शुद्र-चमार हो, उन्ही यूरोपियनो की ये लडकियाँ सूर्य के प्रखर ताप से झुलसे हुए हिन्दुस्तानियो की काली चमडी को चूम रही है। सूखे जामुन की तरह हिन्दुस्तानियो के मोटे होठों से उन्हे घृणा न हुई। पान और तमाखू की लहे चढ-चढकर काले हुए हिन्दुस्तानियो के शिगाफदार सडे दाँतो को देख कर, उनके रोगटे खडे नही हुए।

यही है वह स्वदेश-प्रेम की भावना! क्या यह स्वदेश-प्रेम की भावना हिन्दुस्तानियो में है? शिघू अपने मन से पूछने लगा।

उसे पुरानी याद हो आई। पुराना इतिहास उसके मन में घूम गया।

परदेश जाने वाले राघो भरारी का चित्र उसकी दृष्टि के सन्मुख आया। पर उस इतिहास मे ऐसी कोई घटना नही थी जिसमे इस प्रकार शरीर के करने लायक कोई उत्तेजना की बात होती—उसे लगा शायद संस्कृति-भेद के कारण उत्तेजना देने के तरीकों मे यह फर्क हो गया हो। दोनों संस्कृतियों के इस अन्तर का उसने अत्यन्त सूक्ष्मता से मंथन करने का निश्चय किथा।

उसकी गाडी किसी स्टेशन पर आकर रुक गयी। वहाँ मय सामान के वह उतारा गया और मोटर द्वारा किसी अज्ञात स्थान को रवाना कर दिया गया।

उसका सफर शुरू हो गया। कुछ दूरी पर डेरे और रावटियाँ नजर आने लगी। बहुत दूर से तोपो के दगने की अस्पष्ट-सी आवाजे उसके कानो से टकराने लगी।

उसका सीना धडक उठा। यह महसूस करके कि मैं अब मैदानेजग मे पहुँच गया हूँ, वह हक्का-बक्का हो गया। वह जिस छावनी मे थोडी देर के लिए उतरा था, उस छावनी से भी आगे उसे जाना था। वह फौजी अस्पताल था। उस अहाते मे प्रवेश करने की किसी को इजाजत न थी।

स्थान-स्थान पर रैड-क्रास के चिन्ह दिख रहे थे। यही पर डाक्टरो से उसका साथ छूटा। वहाँ जो डाकखाना था, वह "बेस आफिस" था। उसने उस पोस्ट आफिस मे पहिले हाजिरी दी, आगे उसे कहाँ जाना है, इसका हुक्म भी उसे वही मिला। उस हुक्म-नामे पर गाँव का नाम न था। फील्ड पोस्ट आफिस का सिर्फ नबर लिखा था। इस कारण वह इस समय कहाँ था और अब कहाँ जाएगा, इसका उसे कोई पता न चला।

उस दिन उन सब लोगो ने उस छावनी के एक अलग हिस्से में ठहरकर आराम किया। जहाँ-तहाँ गडबडी मची थी। भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग आ-जा रहे थे। बडे-बडे टैंक आ रहे थे। रेडक्रास की मोटरें

आ-जा रही थी। मामूली कारें भी इधर-उधर दौड रही थी। प्रत्येक व्यक्ति कार्य मे व्यस्त था। रात हो गयी थी फिर भी किसी को चैन न था। हर व्यक्ति किसी-न-किसी काम मे खोया हुआ था।

किसी चेहरे पर घबराहट नजर नही आती थी। हर व्यक्ति अपने काम में इतना डूबा हुआ था कि मौत उसके आसपास घूम रही है, इस की याद भी उसे न होती थी। इतना समय ही उसके पास कहाँ था जो उसे यह याद आती ?

उस रात शिघू को नीद आई। पर नीद आते ही दूर पर सुनाई पड रही तोपो की गडगडाहटे उसे जगा देती। उनकी आवाजे इतनी बडी न थी कि उनके कारण गहरी नीद मे सोया हुआ व्यक्ति जाग उठता, पर सोते समय यही विचार उसकी नजरो के सामने झूल रहा था कि वह रणभूमि मे आ गया है। इस विचार के कारण वे अत्यन्त मन्द गडगडाहटे भी उसकी नीद भगा देती थी। वह घबराया नही था। फिर भी मृत्यु के विशाल जबडे के आसपास वह कही है, इसी की याद उसे सोने नही देती थी। कधे पर बन्दूक रखे लडने के लिए रणभूमि पर जाने वाला सिपाही वह नही था। उसे लगा, शायद इसीलिए वह डर रहा है। उसके नजदीक सोये हुए गोरखा सिपाही घोडे बेचकर सोये थे। कुछ तो अच्छी तरह खर्राटे भर रहे थे !

उसे लगा कि लडाई पर अगर आना है, तो सिपाही बनकर ही आना चाहिए, तभी वीरता का सच्चा अनुभव प्राप्त हो सकता है। वह क्लर्क बनकर समर-भूमि पर आया था। इस पर उसे शर्म आने लगी। हथियार हाथ मे लेकर आने के बदले वह हाथ मे लेखनी लेकर आया था। उसे लगा, लेखनी चलाकर वह युद्ध कैसे जीतेगा ?

पर इसके लिए अब कोई चारा न था और पहिले भी कभी न था। दुर्भाग्य से उसने उच्च वर्ण मे जन्म ग्रहण किया था। उच्च वर्ण की यह पैदायश इस साम्राज्य मे उसके हृदय मे उमड रही वीरता के आड़े आ रही थी।

वह उठकर डेरे के बाहर ग्राया। उसने दूर निगाह फेककर बड़े ध्यान से देखा। वर्षा मे जिस तरह बिजली चमकती दिखाई देती है, उसी तरह तोपो के धडाको की चमकें उसकी नजरो के सामने से सर-सराती चली जाती थी। लड़ाई के मैदान मे क्या रात को भी विश्राम नही ? कहाँ गये वे धर्म-युद्ध ?

महाभारत की कथाग्रो का वह स्मरण करने लगा। दिन-भर लड़ कर रात को सब के लिए एक-सा ग्रावागमन खोल देनेवाले कौरव-पांडवो का इतिहास उसे जिस समय याद ग्राया, तब उसे ऐसा लगने लगा कि यह जमाना धर्म-युद्ध का है ही नही। इस जमाने मे युद्ध का मतलब युद्ध है। युद्ध मे धर्म की भावना कैसी ? धर्म ग्रौर ग्रधर्म—ये व्यवहारिक कल्पनाएँ है। लडाई के मैदान मे कुछ भी धर्म-ग्रधर्म नही ! युद्ध धर्म ही रणभूमि मे धर्म होता है। इसी युद्ध-धर्म के ग्रनुसार एक को दूसरे के प्राण लेना चाहिए, बस !

उसे लगा एक मनुष्य दूसरे के इस प्रकार प्राण क्यो ले ? यहाँ किसने किसका क्या ग्रपराध किया है जिससे उसका बदला प्राण लेकर चुकाया जाय ? जिन्हो ने यह युद्ध ग्रारम्भ किया है, क्या वे इस रणभूमि मे स्वय ग्राए हैं ? फिर यह युद्ध किनका ? युद्ध उपस्थित किसने किया ? ग्रौर लड कौन रहा है ?

जैसे-जैसे वह सोचने लगा वैसे-वैसे उसका मस्तिष्क भ्रमण करने लगा। उस भ्रमण के बीच ही उसकी ग्राँख लग गई।

सुबह सूरज निकलते ही वह प्रत्यक्ष समरभूमि की ग्रोर कूच करने के लिए निकल पडा।

पहिली झलक

वह सफर यद्यपि मोटर से हो रहा था, फिर भी मुकाम पर पहुँचने के लिए उसे काफी वक्त लगा।

सफर मे बातचीत करने के लिए कोई न था—यह मतलब नही कि कोई दूसरे मनुष्य थे ही नही—पर वहाँ जो मनुष्य थे, उनकी भाषा से शिघू परिचित न था। वे प्राय सभी गुरखे थे। जो गोरे थे, वे दूसरी मोटरो मे बैठे थे। सिपाही के दर्जे से शिघू का दर्जा बेशक बडा था, पर वह अफसरों की बराबरी का न था। फिर भी उसके दर्जे का को ख्याल न कर उसे मामूली सिपाहियो के साथ ही बैठा दिया गया था।

वह अँग्रेजी पढा-लिखा था। इसलिए मामूली सिपाहियो के साथ बैठा दिये जाने से उसे बुरा लगा। उसे कम-से-कम ऐसे लोगो के साथ बिठाते जो अँग्रेजी जाननेवाले थे, तो उसका समाधान हो जाता। ऊँचे और नीचे दर्जे का यह प्रश्न न था। प्रश्न था पढे-लिखे और अनपढो की सगति का।

विचार करने के उपरान्त शिघू को यह दिखाई दिया कि यह प्रश्न शिक्षित और अशिक्षित का भी नही है, क्योकि जो गोरे सिपाही थे, वे भी कहाँ शिक्षित थे ? उनकी भाषा हमारे यहाँ की ग्रामीण भाषा से भी गई बीती थी। अश्लील और अशिष्ट शब्दो के बिना उनके मुँह से एक भी वाक्य नही निकलता था। फिर ऐसा क्यो होना चाहिए ?

उसके मन ने यह पहेली हल कर ली। अश्लील और अशिष्ट ही क्यो न हो, पर उनकी भाषा अँग्रेजी थी और अँग्रेजी भाषा ही शिक्षितो की भाषा मानी जाती है। जिसे अँग्रेजी भाषा आती है, वही सुशिक्षित है, ऐसी धारणा हिन्दुस्थान मे जड पकडे हुए है। उसी का यह परिणाम

उसके मन पर हुआ।

सब लोग मुकाम पर जा पहुँचे। शिघू ने फील्ड आफिस का चार्ज लिया। उस स्थान पर जो मनुष्य पहिले काम कर रहा था, उसे ही शिघू की मातहती मे काम करने का हुक्म मिला था।

शिघू को इससे बडा समाधान हुआ। कम-से-कम इस जगह तो उसके दर्जे का ख्याल किया गया था। अगर उस आदमी की मातहती में काम करने का उसे हुक्म मिलता, तो उसे बहुत बुरा लगता।

आफिस का काम एक निश्चित साँचे मे ढला हुआ-सा था। पत्र और पार्सल को छोडकर, दूसरा किसी भी प्रकार का काम इस आफिस में न था।

पत्र और पार्सलो को इकट्ठा करके भेजना और आए हुए पत्रो और पार्सलों को बाँट देना, इतना ही काम था। हिसाब-किताब रखने की कोई झंझट न थी। मनीआर्डर करने या टिकट बेचने का काम वहाँ नही करना पडता था। कम से कम उस वक्त तो नही था। सारे पत्र और पार्सल फील्ड सर्विस के पते पर आने-जाने के कारण उन पर टिकट लगाने का सवाल ही न था। आए हुए पार्सलो की रसीदे तैयार करना और उन पार्सलो को जहाँ-के-तहाँ बाँट देना, यही एक बडा काम था।

पार्सलो की सख्या बेशक बहुत बडी होती। दुनिया के प्रायः सभी हिस्सो से पार्सल आया करते। यह बात न थी कि सभी पार्सल सैनिको के रिश्तेदार ही भेजते हो। अनेक अज्ञात व्यक्तियों की तरफ से भी सैनिको के लिए उपहार के रूप मे कमाडिग आफीसर के पते से अनेक उपयोगी चीजो के पार्सल आया करते। इन पार्सलो को शिघू कमांडिग आफीसर के पास पहुँचा देता। इसके बाद वह आफीसर उन चीजो का क्या करता इसका शिघू को कोई पता न चलता और न इसकी उसे कल्पना ही थी।

काम बहुत था, पर झंझट न थी। परिस्थिति अगर विकट थी तो सिर्फ एक ही बात मे, बिलकुल कानो के नजदीक ऐसी आवाजे दनदनाती

थीं कि कानों के परदे फट जाने का भय था। खंदकों मे बैठकर लडने की कल्पना नही निकली थी। बडी दूर तक निशाना फेकने वाली तोपें ईजाद हो चुकी थी। शत्रु की सेना को हमारी हलचल दिखाई न दे इसलिए खदक खोदे गये थे और सिपाही उनमे बैठे रहते। इन खदकों मे सिपहियो के रहने आदि का प्रबन्ध करीब-करीब बैरक जैसा ही रहता। इन खदको से निकलकर सिपाही सामनेवाली खन्दक पर आक्रमण करते।

ये सुनी हुई बाते थी। प्रत्यक्ष खन्दको के भीतर की परिस्थिति कैसी होती है, यह देखने का शिघू को मौका ही न मिला। रणभूमि पर जितनी सुरक्षा की अपेक्षा की जा सकती है, उतने सुरक्षित स्थान मे उसका आफिस था।

पूछताछ करने पर उसे पता चला कि वह बेलजियम देश के किसी गॉव के आसपास है। बेलजियम का विनाश करके जर्मन लोग फ्रान्स की सीमा के बहुत निकट पहुँच गये थे और इसीलिए फ्रान्स की सहायता के लिए इग्लैड की फौजे लड रही थी।

शिघू को एक बात बडी कठिन लग रही थी। इस एक ही विषय मे उसे लग रहा था जैसे उसे बडी कडी सजा मिली है। आठो पहर चलने वाली उसकी मुँह की तोप बन्द पड गई थी। बात करने के लिए ही कोई न था। फिर बोलता किससे? और जो भी नजदीक थे उनकी भाषा उसे आती न थी। जो असिस्टेट मिला था वह पजाबी था। उसे हिन्दी ठीक से नही आती थी। वह उर्दू मे लिखा करता। उसे अँग्रेजी बहुत कम आती थी—डाकखाने का काम चलाने लायक! फिर भी वह अपने मातहत सतसिंह के साथ अँग्रेजी मे बोलने की कोशिश करता। कभी-कभी उसकी अँग्रेजी संतसिंह समझ भी जाता। पर कठिन प्रश्न था शिघू को संतसिंह की अग्रेजी समझ मे आने का। यह सच था कि संतसिंह की अंग्रेजी से शिघू का काफी मनोरजन हो जाता।

आफीसर लोग कभी-कभी आया करते। उस समय उनसे बातें

करने की शिधू कोशिश करता। पर एक तो अँग्रेज और ऊपर से मिलि-टरी वाले! वे क्यो बात करने लगे? अगर कोई बात करने वाला मिल ही जाता, तो शिधू उससे लडाई की खबरे जानने का प्रयत्न करता, परन्तु उसे कोई उत्तर प्राप्त न होता। लेकिन इससे वह निराश कभी न हुआ और खबरे पूछना उसने कभी बन्द न किया। उसे लगता उत्तर न मिले तो न सही, पर कम-से-कम प्रश्न पूछने के सुख से ही वह क्यों वचित रहे?

सतसिंह को नेपाली भाषा आती थी और इसीलिए वह इस स्थान पर नियुक्त किया गया था। वह गुरखों से गप्पे हाँकता बैठा रहता। वहाँ से उठकर आने के बाद अपनी टूटी-फूटी अँग्रेजी मे लडाई के समाचार सुनाने की वह कोशिश करता। उस समय उसकी बाते ठीक से समझ लेने के लिए शिधू को अपना काफी दिमाग लडाना पडता।

एक दिन उसने बडा मजेदार समाचार सुनाया। बोला—"एक गुरखा ने आज जर्मनी के कैसर की मूँछे काट ली और वह उन्हें अपने साथ ले आया है।" शिधू को इस पर विश्वास न हुआ। जर्मनी का कैसर किसी खन्दक के इतने नजदीक होगा और इतना असावधान होगा कि एक मामूली गोरखा जाकर उसकी मूँछ काट ले, यह उसे सच न लगता था। पर इस समाचार का बडा बोलबाला हुआ। यहाँ तक कि अफसरो मे भी वह चर्चा का विषय हो गया। पत्रकारो ने यह समाचार हिन्दुस्थान भी पहुँचा दिया था, इसका पता शिधू को बाद मे चला।

बात यह थी कि गुरखा किसी जर्मन की मूँछे काटकर ले आया था, इस मे शक नही। पर वे किसी मृत जर्मन सैनिक की रही होगी। राजा का अनुकरण करने के लिए जर्मन सिपाही भी मोम मलकर अपनी मूँछो को कैसर की मूँछो की तरह मोड लेते थे। उस गुरखा ने कैसर का चित्र कही देख लिया था। मूँछो को देखकर उसे लगा कि यह मृत सिपाही ही कैसर है। काट ली उसकी मूँछें और लाकर दे दी अपने कमानी साहब को। और अफसरो ने भी इस बात को मजाक मे न उड़ा-

कर उसे एक प्रकार का महत्व दे दिया । रणभूमि मे ऐसी बाते होती ही रहती है ।

गुरखे बडे मजबूत होते हैं। लडाई मे दुश्मनो का मुस्तैदी से मुकाबला करना कोई इनसे सीखे । परन्तु उस स्थान का जलवायु उन्हे परेशान कर रहा था । कडाके की ठड के कारण कभी-कभी उनकी कुछ न चलती । बेचारे विवश हो जाते । लेकिन वे कभी पीछे न हटे और न उन्होने कभी कोई शिकायत की ।

इसी तरह कुछ दिन बीते । तोपो और मशीनगनो की आवाजो का शिधू को जो भय लगता था, वह अब धीरे-धीरे कम होने लगा । उसे इतना अभ्यास हो गया था कि उन आवाजो की ओर अब उसका विशेष ध्यान ही न जाता था । यही नही बल्कि यदि कभी वे आवाजे बन्द हो जाती, तो उसे सूना-सूना-सा लगने लगता । जिस रात शान्ति होती, तोपों और बदूको की आवाजे उसके कानो मे न पडती, उस रात उसे नीद न आती ।

उसे अपने पर ही आश्चर्य होने लगा । सोचता, ऐसा कैसे हो गया ? फ्रान्स की सरहद पर जब वह उतरा था, उस समय उसका मन उचट गया था । समरभूमि पर कौनसे प्रसग उपस्थित हो जाएँगे और उन प्रसगो से कैसे छुटकारा होगा, इस की चिन्ता उस समय उसके मन मे जाग्रत हो गई थी । परन्तु प्रत्यक्ष रणभूमि मे आने के बाद उसे कोई चिन्ता न होती थी। एक जख्मी सिपाही को स्ट्रेचर पर रखकर लाये जाते हुए उसने जब पहिली बार देखा, उस समय उसकी आँखो के सामने अधकार छा गया था और उसे लगा था जैसे वह बेहोश होकर गिर पडेगा । खून की बहती हुई धार, कटे हुए हाथ-पैर, फूटे हुए सिर, यह सब देखकर पहिले उसके रोगटे खडे हो जाते । परन्तु जैसे-जैसे इन बातो को वह नित्य ही देखने लगा, वैसे-वैसे उसका मन पक्का हो गया और उसका हृदय तनिक भी विचलित न होता । वहाँ सब तरह के घायल लाये जाते और रेड-क्रास की गाडियो मे रखकर अस्पताल रवाना

कर दिये जाते। ऐसे समय घायलो को रेड-क्रास की मोटरो मे चढाने आदि के काम में वह अपने आप खुशी से मदद करने लगा। रेड-क्रास के लोग एक पोस्टमास्टर को इस प्रकार उनकी मदद करते देखते तो उसकी बड़ी सराहना करते। जानबूझकर वह गाडियो के पास जाता और खुशी से बिना माँगे रेड-क्रास वालो को अपनी सहायता देता। इन कामो को करने मे उसका मुख्य उद्देश्य यही था कि खून देखकर उसके रोगटे खडे न हो। चाहे उसे स्वय कही कोई जख्म न हुई हो, पर दूसरो के जख्मो से बहनेवाले खून से यदि उसके हाथ तर हो जाएँ, तो उसे घिन न आनी चाहिए। फर्स्टएड का काम वह अपने आप सीख गया और जब वह फर्स्टएड भी देने लगा, तब तो अफसर लोग भी उसे आदर की दृष्टि से देखने लगे।

धीरे-धीरे आफीसरो से उसका परिचय होने लगा। एक-दो अफसरो से उसकी मित्रता भी हो गयी। लडाई के समाचार जितने जान सकना सम्भव थे, उतने उसे मालूम होने लगे।

इन समाचारो के मालूम होने की एक सीमा रहती। फील्ड पर रहने वाले लोगो को किन बातो की जानकारी देनी चाहिए और किन की नही देनी चाहिए इसकी एक सीमा थी। पत्रकारो द्वारा लडाई के जो समाचार सारी दुनिया मे भेजे जाते, उन समाचारो का फील्ड पर रहने वालो को पता तक न चलता था। फिर भी इन अफसरो की मित्रता के कारण शिधू को युद्ध की तत्कालीन परिस्थिति की थोडी बहुत कल्पना होने लगी। उन अफसरो मे से एक अफसर की उससे काफी घनिष्ठता हो गई थी। यद्यपि वह अफसर बिल्कुल युवा न था, फिर भी उसे बूढो में नही गिन सकते थे। उसने विश्वविद्यालय की डिग्रियाँ प्राप्त की थीं। साहित्य का काफी अध्ययन किया था और अपनी मातृभाषा के बराबर ही तीन-चार अन्य यूरोपीय भाषाओ पर भी उसका काफी प्रभुत्व था। तत्कालीन फ्रेंच और अंग्रेजी मासिक पत्रो मे उसके द्वारा लिखे लेख अत्यन्त लोकप्रिय हुए थे।

और इस कारण ही शिघू के साथ उसकी खूब पटी । लडाई के बारे मे यद्यपि वे कोई चर्चा न कर सकते, फिर भी साहित्य-चर्चा करने की उन्हे वहाँ कोई मनाही नही थी। तत्कालीन साहित्य मे जो नई विचार-धाराएँ बहने लगी थी, उनका प्रथम परिचय इस अफसर ने ही शिघू को कराया था ।

लडाई के कार्य-कारण के भाव के बारे मे वे दिल खोलकर विस्तार से बाते करते।

उस अफसर को जिसका नाम माश्यू लैग्रा था अपने देश के प्रति ज्वलत अभिमान था । फिर भी इस लडाई के कार्य-कारण भाव के बारे मे तत्कालीन राजनैतिक पुरुषो से उसका मतभेद था । यही नही, बल्कि युद्ध का विषय ही उसे पसन्द न था । उसका पिता एक प्रख्यात पादरी होने के कारण शान्ति के प्रचार की कल्पना उसके कानो मे बचपन से ही पड रही थी । इसीलिए उसके मत उसकी मर्जी के खिलाफ बनते गये थे । पेशा था लडने का, पर स्वभाव हो गया था शान्तिवादी । ऐसे इस विलक्षण पुरुष से परिचय हो जाने के कारण शिघू को बडा आनन्द हुआ । लडाकू मनुष्य के मुँह से शान्तिवाद का समर्थन सुनते हुए शिघू को बडा अचभा होता ।

एक दिन माश्यू लैग्रा ने कहा—"हमारी पलटन ने आज बडी मर्दा-नगी दिखाई । जर्मनो को खूब ही चकमा दिया । जर्मनो की लाशो को पैरो तले रौदते हुए हमारे सिपाही आगे के खदक मे पहुँचे । मैं उनके साथ था । लडने के आवेश मे लाशो को पैरो से रौदता हुआ मैं भी आगे बढा । पर लौटते समय मेरी स्वाभाविक वृत्ति जाग उठी । इन लोगो मे से कुछ लोग मेरी गोलियो से भी मरे होगे । यह विचार मन मे आते ही मेरे रोगटे खडे हो गये । इन मनुष्यो ने मेरा क्या बिगाडा था ? उनके किस अपराध के लिए मैंने उन्हे इस तरह मौत की सजा दी ?

इन में के कुछ लोगों से मेरी मुलाकात भी हुई होगी—उनके साथ मैंने एक मेज पर बैठकर खाना भी खाया होगा—साहित्य-चर्चा करते हुए कुछ लोगो के साथ मेरे दिन आनन्द मे बीते होगे ! ऐसे लोगो को, जिनसे मेरा व्यक्तिगत कोई वैर न था, आज मैंने क्यों मौत के घाट उतार दिया ?"—मेरे मन ने उत्तर दिया।—"देश के लिए !" इन बेचारो ने मेरे देश का क्या बिगाडा था ? जिन लोगो को आज मैंने मार डाला है, उन्होंने मेरे देश की शायद भलाई भी की होगी। मेरे देश मे बनी चीजों पर उन्होने अपनी उपजीविका चलाई होगी। मेरे देश का अन्न खाकर शायद वे जिए भी होगे। फिर वे मेरे वैरी कैसे हुए ? जिनसे मेरा कोई परिचय नही, जिन्हे मैंने कभी देखा तक नहीं, जिन से मेरा रत्ती-भर भी ताल्लुक नही, उन लोगो को मैंने अपनी बंदूक का निशाना क्यों बनाया ? क्या बिगाडा था उन्होने मेरा ?"

यह कहते हुए उसके नेत्र सजल हो गये थे। शिधू को आश्चर्य हुआ। यह युद्ध क्यो हो रहा है ? कौन लड रहा है ? किस के लिए लड़ रहा है ? किस के विरुद्ध लड रहा है ? इस रणभूमि पर आमने-सामने लडने के लिए खडे किए गये ये लोग व्यक्तिगत रूप से एक दूसरे के शत्रु भी न थे—मित्र भी न थे। लेग्रा की तरह शिधू को भी लगा कि फिर एक-दूसरा एक-दूसरे के प्राण क्यो लेता है ? शिधू ने लेग्रा से प्रश्न किया—"यदि ऐसी बात है, तो आप लडाई मे क्यो आए ?'

माश्यूं लेग्रां बोला—"मैं कहाँ इस लडाई मे आया ? इस लडाई में मैं पड़ूं, यह मेरी इच्छा कहाँ थी ? मेरी इच्छा मुझे यहाँ खीचकर नही लायी है। नौकरी मुझे यहाँ घसीटकर लायी है। इसे आप चाहे सौभाग्य कहे या दुर्भाग्य, जिस पेशे को मैंने एक बार अगीकार कर लिया, उस पेशे के कारण यह कृत्य मेरे हाथो हो रहा है। स्वदेश की रक्षा के लिए मैं यहा आया हूँ। पर मैं आप से पूछना चाहता हूँ कि आप को इस लडाई मे आने का क्या कारण है ? सात समुद्र पार करके यह भारतीय सेना फ्रान्स-बेलजियम की सरहद पर लड़ रही है, सो किस देश के लिए ?

किसके देश के लिए ?"

शिघू बडे अभिमान से बोला—"हम अपनी सरकार के लिए लड़ रहे है।"

"याने आप अपने देश के लिए नही लड रहे हैं ?"—माश्यूं लेग्रां ने आश्चर्य से पूछा।"

शिघू बोला—"हमारी सरकार ही हमारा देश है। हमारी सरकार का जो हित है, वही हमारा भी हित है। हमारी सरकार की जय ही हमारी जय है, ऐसा हम समझते है। इसीलिए हमारा हिन्दुस्थान इस लडाई मे अग्रसर हुआ है। इस मे हमारा भी कोई स्वार्थ न हो, यह बात नही। थोडा-सा स्वार्थ भी है। थोडासा ही क्यो, बडा भारी स्वार्थ है। संकट के समय हमने अपनी सरकार को सहायता दी है, इसलिए हमे आशा है कि लडाई मे हमारी सरकार की जीत होने के बाद हमारे देश को राजकीय अधिकारो का एक बहुत बडा हिस्सा प्राप्त होगा।"

"क्या आपको विश्वास है कि आप की यह आशा पूरी होगी ?"—माश्यू लेग्रा ने पूछा।

"हाँ, हमे पूरा विश्वास है।"—शिघू बोला।

माश्यू लेग्रा सिर्फ हँस दिया।

"आप हँसे क्यो ?"—शिघू ने पूछा।

क्षण-भर सोचने के बाद लेग्रा बोला—"आप भारतवासी बडे आशावादी है। आपकी सारी फिलासफी आशावाद की नीव पर खडी है। आपकी फिलासफी ने आपको यही सिखाया है कि निराशा याने मौत! इसीलिए आप ऐसा सोचते है। वैसा सोचना भूल है, ऐसा मैं नही कहता, पर हम लोगो का स्वभाव बेशक वैसा नही है। हम आशावादी होते, तो इस लडाई मे न पडते। हमारी और आपकी फिलासफी मे जो अंतर है वह यही है। हम जडवादी है, आप आध्यात्मवादी है। जो दृश्य है वह नाशवान है, ऐसा आपको लगता है और जो दृश्य है वही सत्य है, इस धारणा से हम चलते हैं। इसीलिए इच्छा न होते हुये भी हम यहाँ

लाशें बिछा रहे हैं।

इसी समय एक बड़े जोर की आवाज हुई। धरती हिल उठी। बिगुल बजा और माश्यू लेग्रा भागता हुआ वहाँ से चल पडा।

शिधू अपने आफिस मे गया। वह चला गया, इसीलिए बच गया। वह जहाँ खडा था उसी स्थान पर तोप का एक बडा भारी गोला आ गिरा था। नजदीक के दो डेरो को उस गोले ने नष्ट कर डाला था।

लडाई की यह पहिली झलक शिधू को देखने को मिली।

नये पाठ

बसरा से अर्जुन का पत्र आया था। उसे लिए यशोदा गोपिका के घर आयी। उस पत्र को देखते ही उस बेचारी के छक्के छूट गये थे। एक तो उस पर टिकट नही लगा था। बिना टिकट वाला पत्र बैरंग क्यो नहीं हुआ, यह उसके लिए एक आश्चर्य था। दूसरे, भीतर बहुत जगहो पर छापे लगी थी। लिखा हुआ मजमून भी यत्र-तत्र काट दिया गया था। यह काट-छाँट देखकर उसके मन मे शक हुआ था।

गोपिका घर मे नही थी। रमा ने यशोदा से जब उसके आगमन का कारण पूछा, तब यशोदा ने वह पत्र उसे थमा दिया और उसे पढकर सुनाने को कहा।

यशोदा बोली, "पहिले यह देखो कि यह काट-छाँट क्यो की गई है ?"

जितना मजमून पढा जा सकता था, उतना रमा ने पढकर सुना दिया। कौनसा मजमून काटा-छाँटा गया था, यह जानने की उसने भरसक कोशिश की, परन्तु जो मजमून काट दिया था, उसका एक शब्द भी वह न पढ सकी।

लडाई पर जाने से पहिले शिधू ने रमा को जो बाते बताई थी उनका उसे स्मरण हो आया। तब वह इस काट-छाँट का अर्थ समझ गई। वह बोली—"लडाई पर गया मनुष्य यदि अपने पत्र मे कुछ ऐसा मजमून लिख दे जिसका लिखना युद्ध-काल मे उचित नही माना जाता, तो सरकार द्वारा वह काट दिया जाता है, ऐसा युद्ध का कानून है। इस मे चिन्ता की कोई बात नही।"

फिर भी यशोदा का समाधान न हुआ। पर यह सोचकर कि पटेलन

पर विश्वास न करूँ, तो फिर किस पर करूँ यद्यपि वह चुप रही, फिर भी उस काट-छाँट के कारण उसके देहाती मन को जैसे घुन-सा लग गया।

यशोदा बोली—"ऐसी कौन सी बातमेरे बेटे ने लिखी होगी जिसे काटने की सरकार को जरूरत पड़ गई। लिखी होगी कोई लडाई की बात, अगर लड़ाई की कोई बात लिख ही दी तो क्या हो गया ? कौन मैं गाँव भर मे जाकर उसका ढिंढोरा पीटती ? मेरे बेटे की जन्म से ही यह आदत पडी है कि कोई भी बात मुझ से बिना कहे वह नही रह सकता। जब गाँव मे था, तब भी यहाँ की एक-एक बात जब तक मुझ से आकर न कह देता, उसे रात को नीद न आती। इसी तरह वहाँ की भी सब बाते विस्तार से उसने मुझे लिख भेजी होगी, तो सरकार के बाप का क्या जाता था जो उन्होने वे काट दी ?"

"हम-तुम जैसा सोचती है, सरकार वैसा नही सोचती।"—रमा बोली—"अजी, ये सरकारी कानून हैं। इनके बारे में हम कोई प्रश्न नही पूछ सकते। तुम्हे लडके का कुशल-समाचार तो मिल गया न ? बस इतनी ही तो तुम्हे चाहिये !"

इसी समय गोपिका भी जा पहुँची। उसे देखकर रमा बोली "यशोदा के लडके का पत्र आया है। बसरा से भेजा है उसने। उसने माँ से थोडे पापड मगवाये हैं। हमे भी "उन" के लिए थोडे पापड भेज देने चाहिए। यदि थोडा अचार भी भेजा जा सके, तो और भी अच्छा होगा। मेरा ख्याल है एक डिब्बे के भीतर अचार रखकर भेजा जा सकता है। एक डिब्बे के भीतर एक बढिया कलईदार बर्तन रख देगे। कलई की अच्छी मोटी तह उस बर्तन मे लगा देंगे जिससे उसमे रखा अचार खराब न होगा।"

गोपिका हँस पडी और बोली, "अर्जुन का पत्र आने के बाद तुम्हें शिघू की याद आयी ? मैं कितने दिनो से कह रही हूँ कि उसे कुछ पापड भेज देना चाहिए। उस मुए विलायत मे कहाँ से आया अचार और कहां से आये पापड ? राम जाने, गरम-गरम दाल-भात भी वक्त पर मिलता

होगा या नही ? अगर पापड भेज भी दे, तो वह उन्हे वहाँ भूँन सकेगा या नही ?"

"वैसे वहाँ उन लोगो का पूरा इन्तजाम रहता है।" यशोदा बोली, "हमारे एक रिश्तेदार है। वे मेजर सूबेदार थे। अब पेन्शनर हैं। वे कहते थे कि लडाई पर सिपाहियो को किसी भी प्रकार की तकलीफ नही होती। फिर शिधू भैया को तो कोई भी कठिनाई नही होगी, क्योकि उन्हे कोई मैदान मे जाकर लडना है ? हाँ, अर्जुन की बात जरूर दूसरी है। वह जैसा गया है, वैसा ही लौट आवे, तभी मेरा मन शान्त होगा !"

"ऐसा क्यों कहती हो, यशोदा !"—गोपिका ने कहा—"अर्जुन गया है सिपाही बनकर। पहिले से ही वह पलटन मे है। अब लडाई के बाद वह मेजर सूबेदार होकर ही लौटेगा।"

"मुझे वह सूबेदारी नही चाहिए।"—यशोदा बोली, "वह यही खेती करता रहता, तो मुझे अच्छा लगता। जाने किस निगोडे ने यह लडाई पैदा की ! परसो मैंने सुना कि कुटरा गाँव से जो दो आदमी लडाई पर गये थे दोनो वहाँ मारे गये। कोई कहते है सिर्फ घायल हुए है और कोई कहते है बिल्कुल ही खत्म हो गए है। सच भूठ भगवान जाने। पर जब से सुना है, मेरा दिल बैठ गया है। भोजन गले के नीचे नही उतरता। नीद का तो नाम ही न लो। वैसे तुम सचमुच बडी मजे मे हो।"

"इसीलिए तो निश्चित हूँ।"—गोपिका बोली, "और यशोदा, क्या तुम्हारा यह ख्याल है कि मेरा खाना गले के नीचे उतर जाता है ? इकलौता लडका इतनी दूर गया है। यहाँ मैं अगर बीमार पड गयी, तो तार भेजकर उसे बुला भी नही सकूँगी—"

"ऐसी अशुभ बात नही कहते, माँजी !"—रमा ने बीच ही मे कहा—"एक तो वैसे ही हमारे मन उदास है, और ऊपर से यदि कोई अशुभ विचार मन मे आवे, तो हमारी हालत बडी अजीब-सी हो जाती है।"

"भगवान सब को सुखी रखे और सब सकुशल घर लौट आएँ।"—

अर्थ यह होगा कि मैंने अपने पति की बात नही मानी। यह महसूस करके उसका मन पक्का हो गया था।

पर क्या सुभद्रा ने यह महसूस नही किया ? फिर वह क्यो रोती है ? उसने सोचा जाकर सुभद्रा से ही पूछना चाहिए ?

उस दिन तीसरे पहर वह खेत पर गयी। वहाँ सुभद्रा से उसकी भेट हुई। खेत मे सुभद्रा काम कर रही थी, पर मिट्टी-सने हाथो से वह बीच-बीच मे आँसू पोछ रही थी। यह देखकर रमा को विश्वास हो गया कि यशोदा की बातो मे रच-मात्र भी अतिशयोक्ति न थी।

सुभद्रा रमा से उम्र मे बडी थी। पर उसके अभी कोई बाल-बच्चा नही हुआ था। नाती देखने के लिए यशोदा बडी उत्कठित थी। अभी तक बहू की गोद नही भरी इसका उसे बडा दुख होता था।

खेत की मेड पर बैठकर रमा सुभद्रा से बाते करने लगी। बोली—"क्यो सुभद्रा, आँखे क्यो पोछ रही हो ? क्या कुछ तिनका-विनका चला गया है ?"

सुभद्रा ने गर्दन उठाकर रमा की ओर देखा। खुरपी जमीन पर रखकर वह खडी हो गयी। बोली यह तुम मुझसे पूछ रही हो ? मेरा घर वाला लडाई पर गया है। उसी तरह तुम्हारा पति भी गया है। मैं ही तुम से पूछती हूँ कि तुम्हारी आँखो मे आँसू क्यो नही आते ?"

रमा ने मन ही मन लज्जित हो गई। बोली—"अजी, लडाई पर जो जाते है उनके लिए आँसू नही बहाना चाहिए, ऐसा शास्त्रो मे लिखा है।

"आग लगाओ अपने उन शास्त्रो को !"—सुभद्रा बोली, "तुम्हारा बाना सिपाही का नही, इसलिए तुम ऐसा कहती हो। सिपाही का बाना निभाना कितना कठिन होता है, इसकी तुम्हे कल्पना ही कैसे हो सकती है ? लड़ाई पर जाने वाला मनुष्य अगर लौट आवे तो अपना, नही तो भगवान का आदमी भगवान के घर चल देता है ! लडाई पर जो आदमी जाते हैं वे भगवान के प्यारे होते हैं। वे अपने मनुष्यो की ओर नही

देखते, भगवान की ओर देखा करते हैं। भगवान कब उन्हे उठा ले जाएगा, इसका कोई ठिकाना नही। उन आदमियो को अपने मनुष्यो की परवाह नही होती। इसीलिए तो मेरी आँखो से ये आँसू आते है। क्या बात है, मैं नही कह सकती, पर मुझे लगता है कि अब मेरी उन से भेट नही होगी। ऐसे बुरे सपने देखती हूँ कि क्या बताऊँ ? नीद नही आती।"

"और मैं क्या सुख और संतोष अनुभव कर रही हूँ ?"—रमा बोली, "यह सच है कि लड़ाई के मैदान मे उन्हे नही लडना है। पर नौकरी तो लडाई के मैदान पर ही कर रहे है न ? वहाँ भी कब क्या हो जाए, यह कौन कह सकता है ? इसलिए कहती हूँ कि रोना नही चाहिए। तुमने लड़ाई पर जाने वाले आदमियो को भगवान के प्यारे कहा। यह झूठ नही है। भगवान के प्रिय आदमियो के लिए यदि हम आँसू बहाएँ, तो भगवान हम पर नाराज हो जाएँगे। वे सोचेंगे कि आँसू बहाने वाले का मुझ पर कोई विश्वास नही और इसके फल-स्वरूप कुछ भला-बुरा भी हो जाए। इसीलिए कहती हूँ कि आँसू मत बहाओ। अपनी सास को देखो। अर्जुन उनके पेट से ही पैदा हुआ है न ? क्या माँ को अपने बेटे की कोई चिन्ता नही होती, ऐसा तम सोचती हो ? क्या तुम्हारा यह ख्याल है कि उनका हृदय व्याकुल नही हो रहा है ? क्या वे तुम जैसी रोती है ? क्या उन्होने अपना जी कड़ा नही कर लिया है ?"

"यही तो मै नही समझ पाती।"—सुभद्रा बोली "मै सास जी को हमेशा खुश-दिल देखती हूँ और मुझे बार-बार यही आश्चर्य होता है कि मा होकर उन्हे लड़ाई पर गये अपने बेटे की कोई चिन्ता कैसे नही है ?"

"नही सुभद्रा, तुम्हारा ख्याल गलत है। तुम्हारी सास को तुमसे भी अधिक दुख है। आज अर्जुन का बसरा से पत्र आया है। उसमे सरकार ने बहुत सा मजमून काट दिया है। यह देखकर तुम्हारी सास बहुत घबरा गई थी। उनके प्राण आँखो मे आ गए थे। पर उनकी आँखो से एक आँसू की बूंदें भी नही टपकी। मैंने जब उनसे उस काँट-छाट का कारण कहा तब कही उन्हे सतोष हुआ और एक तुम ही हो जो दिन भर आँसू

बहाती हो। कैसी पगली हो तुम !"

रमा की बाते सुनते समय सुभद्रा झुकी हुई काम कर रही थी। वह सीधी खडी हो गयी और बोली—"क्या सच आँसू नही बहाना चाहिए? पर मेरे आँसू तो बरबस निकल पडते है इसके लिए क्या करूँ ? मन जो बौखला गया है। लगता है पंख लगाकर उड़ जाऊँ ! पर जाऊँ कहाँ यह नही जानती और पंख भी लगाते नही बनते।"

इन दुख भरी बातो के बीच भी रमा हँस पडी और बोली, "सुभद्रा, आज से कभी आँसू न बहाने का निश्चय कर लो। जो हालत तुम्हारी है वही मेरी भी है। है न ? मुझे देखो। क्या मेरी आँखे रो-रोकर तुम्हारी तरह फूली है ? तुम रोती हो, तो तुम्हारी सासजी का कलेजा मुँह को आ जाता है। उनके हृदय मे कितनी चुभन होती है, इसकी कोई कल्पना भी है तुम्हे ? एक तो बेचारी पहिले से ही दुख मे है और जब तुम्हे भी रोती देखती है तो उनका दुख और भी अधिक बढ जाता है। वे किसे देखकर धीरज रखे ? वे तुम्हे समझाएँ या अपने मन को रोककर रखे ?"

सुभद्रा बीच ही मे बोल उठी—"तुम अखबार पढती हो न उसमे बसरा का कोई हाल आया है क्या ?"

"हाँ आया है।" रमा बडा रोब लाकर बोली—"बसरा में हमारी सेना जीतती हुई धडाके से आगे बढ रही है। केसरी मे लिखा है कि हमारी सेना को जय के बाद जय प्राप्त हो रही है। हमारे सिपाहियो ने शत्रुओ को धूल मे मिला दिया है।"

"सच ?"—सुभद्रा हर्षविभोर होकर बोली—"फिर कल वे कौन लोग आये थे जो कह रहे थे कि कुटला के दो आदमियो ने वीरगति पाई। वे क्या झूठ बोले ?"

"झूठ नही तो क्या ?" रमा बोली—"यहाँ जो लोग रह गये है, वे उन लोगो से जलते हैं जो हिम्मत करके लडाई पर चले गये है। यही अगर किसी की तनख्वाह बढ जाती है तो दूसरे उस पर जलने लगते हैं। यह तो गाँववालो की आदत ही है। जो लड़ाई पर गये है उन्हे

तनख्वाह भी अच्छी मिल रही है और लड़ाई भी जीत रहे हैं। फिर उन पर यहाँ वाले क्यो नही जलेंगे ? तुम किसी से कोई बात सुना ही मत करो और न उस पर विश्वास किया करो अगर तुम्हे कोई आकर लड़ाई की कोई बात बताये तो वह सच है या झूठ, यह आकर मुझ से पूछ लिया करो। मैं नियम से केसरी पढती हूँ। उसमे लडाई की हर खबर आती है। तुम्हे पढकर ही सुना दिया करूँगी, तब तो तुम्हे सतोष हो जायेगा न ?"

"हाँ !" सुभद्रा बोली—"यह तुमने ठीक कहा। अगर लडाई की थोडी भी खबरे मालूम होती रहे, तो मन उतना ही शान्त रहता है। पर क्या "उनका" नाम लिखा आता है अखबार मे ?"

"कैसी पगली हो तुम, सुभद्रा !" रमा बोली—"लाखो आदमी लडाई पर गये है। अखबार मे कितनो के नाम लिखेगे ? अब दो-चार महीने मे ही लडाई बन्द होती है और फिर सभी अपने-अपने घर लौट आयेगे : उनसे हमे लडाई की एक-एक बात मालूम हो जायेगी। तब तक मन को सतोष देने के लिए अखबार पढ लेना चाहिए।"

सुभद्रा का समाधान हो गया। उस दिन से उसने नियम बना लिया। दिन म जब भी थोडा अवकाश मिलता, वह रमा के घर जाती और उसमे अखबार पढवाती और खबरे सुनती।

रोज समाचार सिर्फ सुनकर ही उसका समाधान न होता। उसे लगता यदि मैं भी पढ सकती तो कितना अच्छा होता ! उसने रमा से कहा और लिखना-पढना सीखना आरम्भ कर दिया। रमा ही उसकी शिक्षिका बनी। दोनो को एक-दूसरे का अच्छा साथ रहता और दिन का कम से कम थोडा समय तो आनन्द मे कट जाता।

हर सप्ताह शिधू और अर्जुन के पत्र आते। यदि किसी सप्ताह पत्र न आता तो दोनो के घरो मे घबराहट की हवा बहने लगती। कोई बोलता नही था—रोता नही था। पर घर पर बेचैनी की छाया छायी रहती। पत्र प्राप्त होते ही पुनः सर्वत्र प्रसन्नता का वातावरण छा

जाता।

पत्रो मे सिवा कुशल-समाचार के और कोई हाल नहीं लिखा रहता। इस कारण उन पत्रो से जितना होना चाहिए उतना समाधान किसी को भी न होता। अर्जुन के जो पत्र आते उनके मजमून बहुत जगह कटे रहते। अर्जुन के पत्र टूटी-फूटी मराठी मे लिखे आते, पर उनके मजमूनो की काट-छाँट देखकर रमा को भी बेचैनी महसूस होती। कभी-कभी अर्जुन के पत्र का आधे से भी अधिक मजमून काटा जाता था। और काट-छाँट भी इस सफाई से की जाती कि कटे हुए मजमून का एक अक्षर भी पढ सकना असम्भव होता। बाद मे यशोदा और सुभद्रा को इस काट-छाँट का इतना अभ्यास हो गया था कि पत्र के प्राप्त होते ही वे पहिले ही समझ जाती कि अन्दर बहुत-सा मजमून कटा हुआ होगा। उन्होने इसके लिए अपने मन को तैयार कर लिया था। पर रमा के मन मे इस काट-छाँट के प्रति जिज्ञासा जाग उठती। अर्जुन ऐसी कौन-सी बाते लिख देता है जो काट दी जाती है, यह जानने की तीव्र जिज्ञासा उसे बेचैन कर देती।

उसी तरह उसे इसका भी बुरा लगता कि उसका पति अपने पत्र मे लडाई का कभी कोई हाल लिखकर नही भेजता। अखबार मे लडाई की खबरे पढकर उसके मन का समाधान हो जाता, इसमे शक नही।

फिर भी अपना पति वहाँ की खबरें पत्रो मे क्यो नही लिखता, इसके कारण उसके मन को जलन होती।

अखबार की खबरों से लडाई की कोई कल्पना ही नही होती थी। गाँव मे समझदार माने जानेवाले जो लोग थे, वे अपने-अपने ढग से लडाई की चर्चा करते। कोई कहता दो-चार महीने मे ही यह लड़ाई बन्द हो जाएगी। अखबार की खबरो को देखकर कुछ लोग कहते कि यह लडाई अभी कितने साल और चलेगी यह कोई निश्चित रूप से नही कह सकता। अखबार की खबरो पर अब बहुत-से लोग विश्वास न करते। गप्पे ऐसी विचित्र रूप से उडा करती कि अखबार मे भेजे जाने-

वाले समाचार सब बनावटी होते है, ऐसी भी लोगो की एक धारणा हो चली है ।

इस तरह परस्पर विरोधी बाते जब रमा के कानो में पडती, तब वह अत्यन्त अस्वस्थ हो उठती ।

हर हफ्ते वह पत्र भेजती । उन पत्र मे यहाँ के समाचार विस्तारपूर्वक लिखा करती । परन्तु अर्जुन के पत्र की काट-छाँट देखकर उसे लगता कि मेरे द्वारा लिखा गया पूरा मजमून मेरे पति को पढने को मिलेगा या नही । उससे आनेवाले पत्रो मे उसके मजमून के बारे मे कुछ भी जिक्र न रहता । पूछे गये प्रश्नो के उत्तर भी न होते ।

और वह बेचारी ऐसे प्रश्न भी आखिर क्या पूछती ? लडाई कब खत्म होगी ? आप लौटकर कब आ रहे है ?—इन्हे छोडकर और दूसरे कौन-से प्रश्न हो सकते थे ? परन्तु इन प्रश्नो के भी उत्तर शिधू के पत्र मे न होने के कारण रमा के हृदय को धक्का लगता । वह सोचती—प्रत्यक्ष लडाई पर उपस्थित रहने वाले मनुष्य को यह कैसे नही मालूम हो सकता कि लडाई कब खत्म होगी ? उन्हे मेरे इन प्रश्नो का उत्तर क्यो नही देना चाहिए ?

बेचारी रमा यह नही जानती थी कि लडाई की जितनी खबरे अखबार से उसे मालूम होती थी, उनका सौवाँ हिस्सा भी शिधू को मालूम न होता था । प्रत्यक्ष रणभूमि पर होते हुए भी वहाँ से कुछ अन्तर पर नजदीक ही घटने वाली घटनाएँ भी उसे अज्ञात रहती ।

एक-दूसरे के मन एक-दूसरे को बुला रहे थे । कौन कह सकता है, शायद पुकार का उत्तर भी देते हो । परन्तु वह उत्तर उनके कानो मे सुनाई नही पडता था—हृदय को महसूस होता था—और इसीलिए दोनो एक-दूसरे की याद करते हुए आनन्द से दिन काट रहे थे ।

———

परिवर्तन

उस दिन पीछे हटने का हुक्म आया। जिस छावनी मे फील्ड आफिस था वह कुछ मील पीछे ले जायी गयी। उसी अदाज से बेस आफिस भी पीछे हटा दिया गया था।

उस हुक्म के कारण शिधू का मन अत्यन्त अस्वस्थ हो गया। उसके लडाई पर आने के बाद से यह पहली "रिट्रीट" या पीछे- हटाई थी। उसने सोचा शायद कही पर हमारा पराभव हुआ है। जब माश्यूँ लेग्रा से उसकी भेट हुई तब उसे पता चला कि वह पराभव न था, बल्कि बडी चालाकी से हमारी सेना पीछे हट गयी थी। इसी प्रकार कभी--कभी पीछे जाना युद्ध की एक चाल होती है। इस चाल से शत्रु को चकमा दिया जाता है। शत्रु जब विजयानन्द से उन्मत्त हो जाता है, तब एक-दम उस पर उलट कर आक्रमण करते है और उसे धूल मे मिला देते है।

माश्यू लेग्रा का यह सब वर्णन सुनकर शिधू को समाधान न हुआ। लेग्रा की बात मे कही-न-कही कुछ अनिश्चितता है ऐसा उसे लगा। इस का कोई कारण न था। शायद अपने मन का प्रतिबिम्ब ही वह उसकी बातो मे देख रहा था। उस संदेह को दूर करने के लिए शिधू ने लेग्रा से पूछा, "क्या हमारी सेना सचमुच चालाकी से पीछे हटी है या कि सिर्फ पीछे हटी है?"

"तुम्हें यह शक क्यों हुआ?"—लेग्राँ ने पूछा।

"मुझ जैसे सिविल मनुष्य को यह समझना कि पीछे हटना लडाई मे मर्दानगी होती है, असम्भव है। पीछे हटने मे जैसा कि आपने अभी कहा, हो सकता है कि कोई चाल हो, पर जाने क्यो मेरा मन यूँ ही

क्षोभित हो गया है। इसलिए मैं पूछता हूँ।"

"शंकाये सभी को आती है।" लोगो ने कहा—"पर लडाई के सूत्र जिन के हाथो मे होते है, वे सर्वज्ञ हैं। उनका हुक्म हुआ कि उसे मानना पडता है। यह फौजी अनुशासन है। हुक्म के खिलाफ थोडा भी शक प्रकट करना अथवा उस पर कोई चर्चा करना लडाई के मैदान में सबसे बडा गुनाह है। सिपाहियो को अपना दिमाग नही चलाना पडता, सिर्फ काम करके दिखाना पडता है।"

माश्यूँ लेग्रा के इस उत्तर से शिधू का बहुत कुछ समाधान हो गया। छावनी हटाने की बडी गडबडी मची हुई थी। बात की-बात मे सब कूच करने लगे और दूसरे स्थान पर जाकर इतनी फुर्ती और चपलता से डेरे लगाकर रहने लगे कि किसी के ध्यान मे भी न आया कि जगह बदली गई है। हर व्यक्ति की तत्परता, चपलता और कार्यक्षमता इतनी विलक्षण थी कि उसके कारण ऐसा लगता था जैसे सब काम मशीन से ही हो रहा है।

इस नयी छावनी मे शिधू को नये असिस्टेन्ट के रूप मे जो व्यक्ति मिला था उसके आते ही शिधू अस्वस्थ हो गया।

उसके इस नये आफिस मे एक तार-प्रेषक यत्र रख दिया गया था और उस काम को करने के लिए एक फ्रेंच युवती नियत की गई थी। आफिस मे एक लडकी का काम करना शिधू को दुःसह हुआ। लडकी और तारबाबू! लड़कियो का जन्म क्या बाबूगिरी करने को हुआ है? अस्पतालो मे लडकियाँ नर्स की हैसियत से काम करती थी, यह उसने देखा था। पर वह देखकर इस विषय मे उसे कोई बेचैनी महसूस नहीं हुई थी, क्योकि नर्स का काम स्त्रियो का ही काम है। नर्स शब्द ही मूल मे स्त्री-वाचक है।

पर तारबाबू—लड़की? उसके मन को यह जँचता न था।

उस लड़की को थोडी-बहुत अँग्रेजी आती थी। उच्चारण मे थोडा फर्क था। फिर भी हमारे यहाँ को अँग्रेजी चौथी या पाँचवी कक्षा के

लडके जिस प्रकार की अँग्रेजी बोलते हैं, उस प्रकार की वह अंग्रेजी थी। उतनी अग्रेजी से शिधू को उसकी बात समझने मे कठिनाई नही होती थी।

उस लडकी का नाम मादेलीन था। वह यद्यपि तार का काम करने के लिए नियुक्त थी, फिर भी डाक का भी बहुत-सा काम, याने फ्रेंच मे लिखे पत्रो और पार्सलो पर के पते पढना आदि काम भी उसे ही करने पडते थे। यही नही, बल्कि इस काम को ध्यान मे रखकर ही उसकी नियुक्ति की गई थी।

फ्रान्स मे पहिला कदम रखते ही शिधू को 'स्वागत और सत्कार' का जो अनुभव हुआ था, उसकी याद उस लड़की को देखते ही उसके मन में फिर हरी हो रही थी। कही यह लडकी भी तो वैसा ही कुछ न कर बैठे, इस भय से उसके छक्के छूटने लगे।

पर अब स्वागत का प्रश्न न था। वह वहाँ नौकरी करने आयी थी। काम करने की उसकी तत्परता देखकर शिधू के मन से धीरे-धीरे यह भावना भी विलुप्त हो गयी कि कोई लडकी उसके नजदीक बैठी काम कर रही है।

मादेलीन की सिर्फ एक बात पर ही शिधू को बडा आश्चर्य होता था वह सिगरेट पीती थी। उस जमाने मे यूरोप की स्त्रियाँ सिगरेट नही पीती थी। स्त्रियाँ सिगरेट पिये, फिर वे स्त्रियाँ विदेश की ही क्यो न हो, यह विचार ही शिधू को असह्य हो जाता।

हिन्दुस्थान मे उसने अग्रेज अफसरो की स्त्रियो को देखा था। पर उस ने उन्हे सिगरेट पीते कभी न देखा था और इसीलिए मादेलीन को सिगरेट पीते देखकर उसके रोगटे खडे हो जाते।

हिन्दुस्थान मे वह बीडी पीने का आदी था। परन्तु लडाई पर आने के बाद से बीडियाँ प्राप्त न होने के कारण वह सिगरेट पीने लगा था। सिगरेट से उसकी तलब पूरी न होती पर करता क्या? सिगरेट पीने के सिवा उसे कोई चारा ही न था।

एक लड़की मेरे आफिस मे काम करती है उसका उचित सम्मान करना चाहिए, यह सोचकर वह उस लडकी के सामने सिगरेट न पीता। परन्तु जिस समय वह लडकी ही उसे सिगरेट देने लगी, उस समय तो वह दंग ही रह गया। सिगरेट स्वीकार करूँ या नही, यह प्रश्न उसके सामने खडा हो गया। उस लडकी ने उसे सिगरेट पीते देखा था। इसलिए वह उससे यह भी नही कह सकता था कि वह सिगरेट नही पीता।

उसके द्वारा दी गई सिगरेट शिधू ने ले ली और जब बडी नजाकत से मुस्कराते हुए अपने गोरे हाथों से उस लडकी ने दियासलाई जलाकर उसकी सिगरेट जलाई, उस समय शिधू का हृदय टूट गया।

उसे लगने लगा कि वह बडा अपराध कर रहा है। स्त्रियों को सम्मान देने की तत्कालीन हिन्दू कल्पना की ज्योति उसके हृदय मे जल रही थी। वह अभी तक मानता था कि स्त्रियो के सामने बीडी या सिगरेट पीना महान असभ्यता है। परन्तु जब स्त्रियाँ ही सिगरेट पीने लगी, तो उनके सामने सिगरेट पीने मे क्या अपराध है? ऐसा सोचकर, उसने उस प्रसग के आगे अपना सिर झुका दिया।

वह मादेलीन से कभी-कभी युद्ध के बारे मे बाते करता। बात आरम्भ करने में उसे सकोच होता, पर वह नि.संकोच उसके प्रश्नो का उत्तर देती। उस समय उ यह आश्चर्य होता कि उसे इतना सकोच क्यो मालूम होता है और उस लडकी के मन मे यह भावना क्यो नही आती।

युद्ध की परिस्थिति के विषय मे मादेलीन की ठीक से कोई कल्पना न थी। वह हाल ही मे लड़ाई पर आई थी। इसलिए समाचार पत्र पढ़कर, उसने तत्कालीन परिस्थिति की, लडाई के मैदान के बाहर रहते समय जो धारणा बना ली थी, उसी धारणा के अनुसार वह चर्चा किया करती। माश्यूँ लेग्रा और मादेलीन की बातो मे तुलना करने पर जो अन्तर दिखाई देता वह यह था कि माश्यूं लेग्रा कुछ छिपाता हुआ बाते करता, हर शब्द को बडा सोच-समझकर बोलता, पर बातो मे सावधानी बरतने की आदत मादेलीन मे न थी। वह कोई बात न छिपाती

उसके मन में जो आता वह अपनी अधूरी अँग्रेजी मे साफ-साफ कह डालती। उसकी इन बातों पर शिधू को बड़ा आश्चर्य होता। उससें बाते करते समय शिधू को यह कभी दिखायी न दिया कि स्त्री और पुरुष के भेद की कल्पना उस लड़की के हृदय मे कही वास करती हो।

वह एक कुलीन परिवार की लडकी थी। अच्छी पढी-लिखी थी। फ्रेंच साहित्य का उसने गहरा अध्ययन किया था। उसी के कारण शिधू का "ज्ञोला" से प्रथम परिचय हुआ। इससे पहले जोला के ग्रंथो को उसने नही पढा था। जोला के ग्रंथो के अँग्रेजी अनुवाद उस लडकी ने ही उसे कही से प्राप्त करा दिये और उसी ने उससे पढवा लिये। उन ग्रथो के परिशीलन से शिधू को फ्रेंच लोगो के मन की काफी कल्पना हो गयी और मादेलीन के प्रति उसे जो सकोच लगता था, वह अब न लगता।

लड़ाई पर आने के बाद से शिधू को जो एकाकीपन महसूस हो रहा था, मादेलीन के आ जाने से वह विलुप्त होने लगा। पारिवारिकता की चाह हिन्दुस्थानियो के हृदय मे इतनी गहराई तक घुसी हुई होती है कि उसके कारण बिना परिवार के रहना हिन्दुस्थानी मनुष्य को—विशेषत. महाराष्ट्रियन को असम्भव-सा हो जाता है। पारिवारिकता की विशेष प्रकार की भावना वर्तमान परिस्थिति में यद्यपि पूरी नही होती थी, फिर भी लडाई के रूखे मैदान पर स्त्री-जाति की कोमल आवाज सुनाई पडने के कारण उस भावना की एक बड़े अंश मे भरपाई हो गयी है, ऐसा उसे लगा।

मादेलीन के साथ रहने के कारण शिधू की मनोवृत्ति मे परिवर्तन होने लगा था। पाश्चात्य आचार-विचारों के प्रति उसके मन मे पहिले जो घृणा थी, वह क्रमशः कम होने लगी। कभी-कभी वह अपने मन में अपने ही बारे मे कल्पना करके देखता और उस समय उसे अपने आप पर हँसी आ जाती।

वह सोचने लगा—यदि मेरी पत्नी रमा मेरी मातहती मे यहीं तार-

बाबू का काम करती मुझे दिखाई दे तो मुझे कैसे लगेगा ? मादेलीन की तरह वह भी सिगरेट पिये तो कैसा लगेगा ? जिस समय वह ऐसे कल्पना-चित्र अपने अन्त चक्षु के सामने खडे करने लगता, उस समय आनन्द होने के बदले विनोद की अनुभूति ही उसके मन मे अधिक जाग्रत होती ।

उसे लगा, मादेलीन को जो बाते शोभा देती है, वे हिन्दुस्थान की किसी भी "रमा" को शोभा नही देगी । मादेलीन एक लडकी थी । फिर भी राजनीति पर बाते करने की उसमे काफी क्षमता थी—शक्ति थी । रमा पढी-लिखी थी—याने लिख-पढ सकती थी । रोज बिना नागा अखबार पढती थी । फिर भी अगर शिधू राजनीति पर उससे चर्चा करता, तो वह लजाकर कह देती—हम औरतो का इन बातो से क्या सम्बन्ध ? इन दो मनो का यह अन्तर ध्यान मे रखकर, तुलना करते समय वह यह निश्चित न कर सका कि मादेलीन और रमा मे, अच्छी किसे कहा जाए और बुरी किसे कहा जाए ? इस देश के रीति-रिवाज इस देश के लिए उचित है और हमारे रीति-रिवाज हमारे लिए ठीक है। ऐसा सोचकर जब वह अपने मन का समाधान करने लगता, तब उसके मन का स्वास्थ्य बिगड जाता । पाश्चात्य देशो की नारियो को जो बातें शोभा देती है, वे भारतीय नारियो को क्यो शोभा नही देती ? भारतीय नारियो की भावनाओ को सब पहलुओ से सार्वजनिक बनाने के किसी ने कोई प्रयत्न क्यो नही किये, इस पर उसे आश्चर्य होता । क्या यह स्वतन्त्रता के अभाव का लक्षण है ? क्या राजनीति और क्या धर्म, सभी विषयो मे पाश्चात्य देशो की स्त्रियाँ जिस तरह सपूर्ण रूप से भाग लेती है उसी तरह हमारी भारतीय स्त्रियो को भी क्यो नही लेना चाहिए ? अगर यह लडाई हिन्दुस्तान मे होती, तो मोरचो पर चाहे जैसा खतरे का काम करने के लिए, इस देश की नारियों की तरह, क्या भारत की नारियाँ भी आगे बढती ?

उसके विचारशील मन ने उत्तर दिया—"नहीं ।"

वह सोचने लगता—क्यो नही ? हमारी नारियो को लडाई के मोरचो पर क्यो नही जाना चाहिए, तोपों की आवाजों को क्यो नही सुनना चाहिए, मशीनगनो की दनदनाहट से उनके कान के परदे क्यो नही फटना चाहिए, खून से लथपथ जख्मियो की सेवा-सुश्रुषा करते हुए, विपुलता से बहनेवाले लाल रक्त मे, हमारी भारतीय नारियों के हाथ क्यो न सनने चाहिए ? जरा-सी अँगुली कटकर खून आ जाए, तो उसे देखकर, हमारी भारतीय नारियो को गश आ जाता है !

जब उसने यह बात मादेलीन से पूछी, उस समय वह बोली—"मुझे भी रक्त देखकर गश आता, पर इसलिए नही कि मैं नारी हूँ। मैं दयावान हूँ, इसलिए रक्त देखकर, मेरा हृदय हिल जाता। लेकिन वही रक्त जब मैं मोरचे पर बहता हुआ देखती हूँ, तब गश आने के बदले मुझ मे वीरता का आवेश भर जाता है और उस आवेश के उन्माद मे ऐसा लगने लगता है, हाथ मे बन्दूक लेकर, मैं भी खंदक मे जाऊँ और अपने देश के वीरो की तरह देश के शत्रुओ से लडूँ। जैसा मैं सोचती हूँ, उसी तरह हमारे देश की हर लडकी सोचती है। आज हमे मोरचो पर बदूक लेकर नही जाने दिया जाता। पर एक वक्त ऐसा आएगा जब लडने के लिए, देश की नारियो का जाना आवश्यक हो जाएगा। यह लडाई उस भावी काल की ही नीव है, ऐसा मैं सोचती हूँ।

मादेलीन के ये स्फूर्तिदायक उद्गार सुनकर, शिवू को अपनी परिस्थिति पर मन ही मन शर्म आई। उसका मन कहने लगा—स्त्रियाँ तो दूर रही पर हमारे हिन्दुस्थान मे कितने पुरुष लडाई मे मरने को तैयार रहते हैं ? जो इस लडाई मे आए है वे नौकर थे इसलिए आए—या जबरदस्ती भरती करके लाए गए। मेरी तरह स्वेच्छा से आए हुए भी दो-चार लोग होगे। पर मैं भी तो मन मे एक इच्छा लिये लाया हूँ—कीर्ति की इच्छा। मेरी आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण कुछ कमा ले जाने के लिए आया हूँ।

मादेलीन की संगति का उसके मन पर विलक्षण प्रभाव पड़ने लगा।

उसके मन पर उसकी संगति का असर होने लगा। पर उस असर में शृंगारिकता न थी—कामुकता भी न थी।

रमा के सहवास में उसे जो आनन्द हुआ करता, उस आनन्द की अपेक्षा इस आनन्द की अनुभूति बिलकुल भिन्न प्रकार की थी। यदि उसके कोई बहिन होती और वह मादेलीन की तरह ही सुशिक्षिता होती, फिर भी मादेलीन की सगति मे उसे जो नशा चढता, वह उस बहिन की संगति मे न चढता, ऐसा उसे लगा। हृदयो की भावनाओ मे यह भावना एक प्रकार से अपूर्व थी। उस भावना के मूल मे देश के प्रति आत्यंतिक आत्मीयता थी। स्वदेश के लिए अपना खून बहाने की मादेलीन की अत्यन्त उत्कठा देखकर, शिधू को भारतीय मनोवृत्ति पर शर्म आने लगी। फ्रान्स बडी विकट परिस्थिति मे था। जर्मनी के केसर ने गरुड का झडा पैरिस पर फहराने की प्रतिज्ञा की थी। फ्रान्स का सर्वनाश हो जाने वाला था—यूरोप के पहिले प्रजातन्त्र राज्य का जर्मनी मालिक हो जाने वाला था। इसलिए प्रत्येक फ्रान्सवासी के हृदय मे ऐठन पड़ रही थी।

बेलजियम का सर्वनाश उनकी नजरो के सामने था। फ्रान्स की भी वही दशा न हो, इसलिए प्रत्येक फ्रान्सवासी बच्चा-बच्चा भी अपने खून की अनेक बूंद रणभूमि मे अर्पण करने के लिए तैयार हो गया था। यह देखकर शिधू को लगा कि स्वदेश के प्रति प्रेम की ऐसी भावना अपने हिन्दुस्थान मे कही भी दिखाई नही देती।

यह पाठ उसके लिए नया था। समाचार-पत्रो तथा युद्ध के अनेक ग्रथो को पढकर उसे यह अनुभूति प्राप्त नही हुई थी। रणभूमि मे जो लाशे पडी सड रही थी उनके ढेरों मे भी स्वदेश-प्रेम के पावित्र्य की जो प्रखर ज्योति जलती रहती है, उसकी चमक वह प्रत्यक्ष अपनी अंधी हुई हिन्दुस्थानी आँखो से देख रहा था।

उस मोरचे का जलवायु भारतीय सेना के लिए अनुकूल न था। चर्चा हुई और भारतीय सेना को वापिस भेज देने का हुक्म आया।

पलटने किसी दूसरे मोरचे पर जा रही थी या कि हिन्दुस्थान लौट रही थी, यह बात बिल्कुल गुप्त रखी गई थी। आगे कौनसा हुक्म आता है, इसका किसी को भी कोई पता न था। गुरखे जिस उत्साह से इस रणभूमि पर आए थे उनका वह उत्साह इस समाचार के पाते ही ठडा पडने लगा। वे निराश हो गये, हम खूब बुद्धू बनाए गए, यही उन्हे लगा।

पर इसका कोई उपाय नही था। फौजी हुक्म इतने बडे होते है कि उन के बारे मे बात भी नही की जा सकती।

कूच की तैयारी हुई। शिधू ने माश्यू लेग्रा से विदा ली। उस फ्रान्सीसी सैनिक को भी शिधू को बिदा देते समय दुख हुआ। एक दूसरे की सगति मे उन्होने आनन्द के कुछ क्षण बिताये थे। लेग्रा की आँखे छलछला आयी। उसने शिधू को कसमसाकर अपने हृदय से लगा लिया।

शिधू को रोमाच हो आया। गोरे लोगो के बारे में उसकी जो धारणाएँ पहिली थी, वे अब सब जाती रही। चमडे का रंग कुछ भी हो, लडाई के मैदान पर वर्ण-भेद स्नेह के आडे नही आता, यह वहाँ दिखाई दिया।

मादेलीन से विदा लेते समय अलबत्ता वह अस्वस्थ हो गया। उसके द्वारा दी गई पुस्तके उसने सुरक्षित रखी थी। जब वह रवाना हो रहा था, तब अपने गले का लाकेट निकालकर मादेलीन ने उसे दिया। वह एक छोटा-सा उपहार था।

फ्रान्स की रणभूमि का वह असाधारण स्मृति-चिह्न प्राप्त होने से उसे बडा अभिमान हुआ। मोटर मे चढने से पहिले जिस समय उसने मादेलीन से हाथ मिलाया, उस समय उसके सारे शरीर में एक मीठी सिहरन दौड गयी। कुछ देर हाथ मे हाथ डाले वह निश्चल खडा था।

एकदम मादेलीन ने उसे अपने बाहुपाश मे भर लिया और अपने कोमल ओठ उसके ओठों पर धर दिये।

फिर से वही अनुभव—नही, उसी अनुभव का कितना अधिक

गुना। पहिले का "स्वागत" अपरिचितो का था। इस स्वागत में परिचय था, स्नेह था, सहवास की सुखद स्मृतियाँ थी।

झट-से उसने गर्दन घुमाई। फिर जाने उसने क्या सोचा, उसने वही "स्वागत" उसे वापिस लौटा दिया।

गर्दन घुमाकर वह जाने लगा। उस समय मादेलीन के हृदय से निकली हुई एक मन्द सिसकी उसे सुनाई दी।

कहाँ का यह पूर्व-सम्बन्ध ? कहाँ का यह रिश्ता ? मानवी हृदय वीणा का कौनसा यह सूक्ष्म तार ? शिघू अपनी मनोभावनाओ का विश्लेषण न कर सका।

खिन्न मन से वह मोटर मे जा बैठा।

अमारा

मार्सलीस मे जिस समय वह जहाज मे बैठा, उस समय वह किस मुकाम पर जा रहा है, इसकी उसे कोई कल्पना न थी । सभी सैनिक यह जानने को, कि वे कहाँ ले जाये जा रहे है, बडे उत्कठित थे । पर इस उत्कठा के शात होने की सम्भावना न थी । फौजी कानून ही ऐसे है कि उनके अनुसार पलटन कहाँ जा रही है, इसका पता साधारण सिपाहियो को नही लगने दिया जाता । इस विषय मे सैनिक अधिकारी बडी सावधानी बरतते है ।

जहाज रवाना हुआ, पर सब के हृदयो मे, एक प्रकार की धीमी धडकन थी । उस अवधि मे अनेक जहाजो के डुबा दिये जाने के समाचार थे । जर्मनी के नाशकारी पनडुबियो जहाज समुद्र के भीतर जहाँ-तहाँ चक्कर काट रहे थे । उसी तरह समुद्र मे जहाँ-तहाँ सुरग भी डाल दिए गए थे । कँटीले स्थान से जाते समय मनुष्य जिस प्रकार टटोल-टटोलकर चलता है, इसी प्रकार हमारा जहाज जा रहा था । यदि कही कुछ भी खटका होता, तो हर मुसाफिर अपनी-अपनी जगह छोडकर, पूछताछ करने के लिए दौडता हुआ डैक पर जा पहुँचता ।

एक बार जहाज से पहिले भी सफर कर चुकने के कारण इस बार शिधू को इस सफर मे कुछ भी अनोखापन न लगा । खान-पान सबन्धी निषेध उसने अब बिल्कुल छोड ही दिए थे । जहाज मे बहुत से लोगो के एकत्र हो जाने के कारण वह कितने ही नए-नए लोगो से पहचान कर ले रहा था । हिंदी बोलने का अब उसे अच्छा अभ्यास हो गया था । इसके कारण परिचय कर लेने मे उसे कोई कठिनाई न होती ।

जहाज पर जितने भी लोग थे सभी सिपाही थे, लडने वाले । उनमे

कुछ अफसर भी थे। शिधू से अँग्रेज अफसरों के स्वभाव की जानकारी होने के कारण उनसे परिचय प्राप्त करने का उसने तनिक भी प्रयत्न नही किया।

और परिचय प्राप्त करना भी सभव न था। पहिले तो वे अफसर थे दूसरे अँग्रेज थे और फिर परिचय करने का इच्छुक शिधू था हिन्दुस्तान का नेटिव!

जहाज पर कुछ डाक्टर भी थे। पर वे भी अँग्रेज ही थे। पिछले सफर मे डाक्टर हिन्दुस्तानी थे, इसलिए उनसे पहचान कर लेना उसे संभव हो गया था। परन्तु इस बार ऊपर के दरजे मे बैठे लोगो मे ऐसा कोई न मिला जिससे वह परिचय कर लेता।

जो मिले वे सब सिपाही थे और प्रायः सभी गुरखा और पजाबी थे। उनकी मनोवृत्ति दोनो मे किसी भी प्रकार की समानता न थी। सिर्फ वक्त काटने के लिए ही परिचय करना था। इसके सिवा उन सिपाहियो के परिचय से उसे कौन सा विशेष लाभ हो जाता?

कुछ दिनो के बाद शिधू को पता लगा कि जहाज बसरा जा रहा है। मोरचे पर रहते हुए उसे जो भी लडाई की खबरे मालूम होती थी उनसे उन्हे जानकारी हो गई थी कि बसरा की रणभूमि पर तुर्कों और अरबो से लडाई हो रही है।

भूगोल मे उसने बसरा का नाम भर पढा था इससे अधिक वह बसरा के बारे मे और कुछ नही जानता था। उसे इसका कोई पता न था कि वह प्रदेश किस प्रकार का है, वहाँ का जलवायु कैसा है, वहाँ के लोगों का रहन-सहन क्या है और उसे किस प्रकार की बस्ती में जाकर वहाॅ रहना है?

बसरा के बंदरगाह पर वे उतरे। वहाॅ दूसरे जहाज तैयार थे। उन छोटे-छोटे जहाजो मे बैठ कर वे नदी से जाने लगे। विलायत जाने वाले जहाजो की तरह वे विशालकाय नही थे। छोटे छोटे जहाज थे। इस-लिए हमेशा कोकण के किनारे पर जलयात्रा करने वाले शिधू को वे

जहाज परिचित से लगे और उनके प्रति उसके मन मे अपनत्व की भावना पैदा हुई ।

उसकी पलटन जिस जगह उतरी उस गाँव का नाम अमारा था, ऐसा उसे बताया गया । वहाँ के जिस पोस्ट आफिस मे जाकर वह दाखिल हुआ वह फील्ड पोस्ट आफिस था । उसका "बेस आफिस' बसरा मे था ।

अमारा पहुँचते ही "सैपर्स और माइनर्स" का काम शुरू हो गया । और थोडी ही देर मे छावनी खडी कर दी गयी । सप्लाई और ट्रान्स-पोर्ट का प्रबंध वहाँ पहिले ही हो चुका था । पर वहाँ के खाने-पीने का प्रबन्ध बेलजियम फ्रन्ट की तरह अच्छा न था ।

उसका पोस्ट आफिस तैयार हो गया । उसने अपना आफिस खोल कर काम शुरू कर दिया । पहिले उसकी मातहती मे काम करने के लिए एक पजाबी दिया गया था । पर दो-तीन दिन के बाद ही उसे किसी दूसरी जगह जाने का हुक्म मिला और उसकी जगह पर एक नया आदमी आया ।

उस नये आदमी को देखते ही शिधू कुछ सोच मे पड़ गया । वह सोच ही रहा था कि इस आदमी को मैंने पहिले कही देखा था कि तभी वह मातहत एकदम दौडकर उसके पास गया और उसने शिधू को अपनी भुजाओ मे लपेट लिया । ! एक क्षण के लिये ही क्यो न हो, पर शिधू को अपना दर्जा महसूस हुआ । यह देखकर कि उसका एक मातहत, जो मामूली सिपाही की रैंक का था, एकदम अपने आफीसर को आलिंगन करता है, उसके मन मे रोष की भावना जाग्रत हो ही रही थी । तभी शिधू ने उस आदमी को पहचान लिया । वह उसके गाँव का, यशोदा लड़का, अर्जुन था ।

रोष की वह भावना एकदम उसके हृदय से अस्त हो गयी । चाहे समरभूमि मे हो और चाहे परदेश मे हो, जब दो मित्रो से अचानक भेंट हो जाती है, तब उनके बीच खड़ी हुई ऊँच-नीच की दीवाल एकदम ढहकर गिर पडती है । हम एक ही गाँव के हैं, एक ही वृक्ष की

छाया तले बैठे है, एक ही खेत मे घूमे है और हम दोनो आज विदेश में एक दूसरे से अचानक मिले हैं, यही एक भावना उस समय शिधू के हृदय मे शेष बच रही।

दोनों की पोशाके बदली हुई थी। उन बदली हुई पोशाको के कारण परस्पर परिचय होने मे जो रुकावट आ गयी थी, वह रुकावट नजरो के सामने से अब हट गयी। शिधू गाँव का पटेल है। अर्जुन उसका आसामी है। शिधू ब्राह्मण है। अर्जुन अछूत है। यह भावना भी विलुप्त हो गयी। शिधू अगर गाँव मे होता और उससे अर्जुन की इस तरह अचानक भेट हुई होती, तो अर्जुन उससे झुककर राम-राम करता, उसके चरण छूता। प्रेम से बातें अदब के साथ करता। लेकिन यहाँ रणभूमि मे, मृत्यु के इस प्रांगण मे, अदब की वह भावना उन दोनो मे से किसी के भी हृदय मे न जागी।

अर्जुन बोला, "मेरा कितना सौभाग्य है। यदि मुझ से कोई कहता कि इस रणभूमि मे तुम्हे तुम्हारा पटेल मिलेगा और उसके मातहत मे काम करने के लिए तुम्हे नियुक्त किया जाएगा, तो इस पर मैं कभी विश्वास ही न करता। अब पहिला काम घर पर पत्र भेजने का है। यह खबर पाकर कि मैं तुम्हारे हाथ के नीचे काम करता हूँ, माँ को बडी खुशी होगी और वह बेचारी बिल्कुल निश्चित हो जाएगी।"

"और मेरी माँ भी निश्चिन्त हो जाएगी यह जानकर।"—शिधू बोला—"किसी परिचित का चेहरा देखने के लिए मेरा मन बहुत तडप रहा था। आज इतने दिन हो गये, परिचित मनुष्य की तो बात ही छोडो, किसी से मराठी बोलने का भी मौका मुझे नही आया आज तक। जो भी मराठी बोलता मन-ही-मन बोल लेता अपने आप से। इस फ्रन्ट पर बहुत से मराठे हैं?"

"हाँ, है। एक सौ सोलहवी मराठा पलटन यही है। इसके अलावा और भी पलटनें है। बहुत से लोग मोरचो पर गये हैं। सुनता हूँ कुतेल अमारा पर मोरचे लगे हैं। यहाँ तुम्हे मराठी बोली के लिए तड़पना नहीं

पडेगा। मैं अकेला ही तुम्हारी इतने दिनों की प्यास बुझा दूंगा। यहाँ दूसरा काम ही क्या है ? मजे से दिन-भर बाते करते रहेगे। बस।"

शिधू के आनन्द की सीमा न रही। यदि उसके कोई भाई होता और उससे वह मिलता, तो जितना आनन्द उसे उस समय होता, उतना ही आनन्द उसे इस समय अर्जुन की भेट से हुआ। कई बरसो से अर्जुन गाँव मे नही गया था और शिधू भी गाँव मे न था। फिर भी दोनो गाँव की बातें कर रहे थे। पुरानी स्मृतियाँ कुरेद-कुरेदकर निकालते और उन पर चर्चा करते रहते। शिधू के भाई-बन्द उनके आपसी झगडे, अदालत के मुकद्दमे, खेत, बैल, गाय भैस, इन सब के बारे मे बाते करते हुए उनका वक्त कैसे गुजर गया, इसका उन्हे तक पता न चला।

शिधू जब अकेला बिस्तर पर लेटा हुआ होता, उस समय घर की याद के साथ ही उसे बेलजियम फ्रन्ट की भी याद हो आती। मादेलीन का साथ, उसकी बाते, उससे होनेवाली साहित्य-चर्चा और अत मे एक दूसरे ने एक दूसरे की जो विदा दी थी—ये बाते उसे याद आती। उन यादो के साथ उसके मन मे जो भावनाएँ जागती, वे घर के लोगो के वियोग की भावनाओ के समान ही तीव्र होती। रमा की याद उसे आती। वह क्या कर रही होगी, मेरे वियोग के कारण उसे कितना दुख हो रहा होगा—यह सब वह भूला नही था। पति की अत्मीयता से वह अपनी पत्नी के वियोग को याद करता—

परन्तु मादेलीन की याद आने पर उसके मन मे कैसे भाव उठते थे, इस विषय मे यदि उससे कोई पूछता, स्पष्ट रूप से वह स्वय इसका उत्तर न दे सकता। वह प्रेम नही था—नित्य की आत्मीयता न थी। फिर भी संगति के कारण मादेलीन के प्रति जो एक विशेष प्रकार की आत्मीयता उसके हृदय मे जाग उठी थी, उसकी स्मृति से भी उसको आनन्द होता। रमा की याद के साथ ही उसे जब मादेलीन की भी याद आती तब उन दोनो व्यक्तियों की याद एक ही समय क्यो आती है, इसका कारण खोजने में वह असमर्थ रहता। बारीकी से वह अपने मन की जाँच

करता। मादेलीन की याद मे जिस तरह प्रेम की कल्पना न थी उसी तरह कामुकता की भावना भी न थी। परन्तु वह आत्मीयता बेशक अपूर्व थी, इसमे सदेह न था।

अर्जुन से उसने अपनी इस मन स्थिति के बारे मे कुछ नही कहा। यदि कहता भी, तो उस सिपाही के पास इतनी सूक्ष्म दृष्टि थी ही नही जो उसके मन का विश्लेषण करके उस मन:स्थिति का कारण खोजकर उसे बता सकता।

हिन्दुस्तान के पोस्ट आफिस मे काम करते समय उसकी मन.स्थिति जैसी मशीन-स्वरूप रहा करती, उसी तरह यहाँ भी थी। यहाँ परिचित भाषा के लोग मिल जाने के कारण बेलजियम फ्रन्ट पर उसे जितना परायापन महसूस होता था, उतना परायापन उसे यहाँ महसूस न होता। यहाँ का जलवायु उसके लिए प्रतिकूल था और यही उसकी यहाँ बडी कठिनाई थी। सारा प्रदेश एकदम रूखा था। जहाँ-तहाँ रेतीले मैदान थे। अगर वृक्ष थे भी तो खजूर के। एक बात वहा बडी आश्चर्यमयी थी। वहाँ की नदी बडी थी और समुद्र के बिल्कुल नजदीक थी। पर उस नदी का पानी मीठा था।

बस यही एक अच्छी बात थी वहाँ। यदि वह घूमने जाता तो एक विशिष्ट सीमा के बाहर जाने की मनाही थी। प्रत्येक स्थान पर रोक थी। फिर दूर से आनेवाली तोपो की गडगड़ाहटो से यहा भी उसका पीछा नही छूटा था। प्रत्यक्ष मोरचा अमारा से काफी दूर था। परन्तु यहां परिस्थित कब वदल जाय और ठीक मोरचे के नजदीक ही कब जाना पड जाए, इसका अन्दाज उस परिस्थिति मे नही लगाया जा सकता था।

इस मशीनवत जिंदगी से शिधू ऊब उठा था। सुख से उतना ही समय कटता था, जब तक अर्जुन उसके साथ होता। पर वह बेचारा भी बाते करता तो आखिर कितनी करता? दोनो की सस्कृतियों में अतर था, दोनो मनो की रचना अलग-अलग थी। दोनो की शिक्षा में अन्तर था। दुनिया की ओर देखने की दोनो की दृष्टि भी भिन्न थी।

उन दोनो में बातें होती तो सिर्फ उनके गाँव के बारे में ही हो सकती थी।

लडाई के जो समाचार मिलते उनसे किसी को भी समाधान न होता। लोगो द्वारा सुने हुए जो समाचार आते उनमे सच्चाई की अपेक्षा झुठाई ही अधिक होती। हर व्यक्ति का ध्यान केवल एक बात पर केन्द्रित था—लडाई कब बन्द होगी।

और लडाई तो बन्द होने का नाम न लेती। धीरे-धीरे रेंग ही रही थी। किसी भी मोरचे पर ऐसे आसार नजर नही आ रहे थे जिनसे यह अनुमान हो सकता कि लडाई जल्द समाप्त हो जाएगी।

एक दिन शिधू बीमार पडा और वह बसरा की अस्पताल मे भरती कर दिया गया। बेचारा अर्जुन व्याकुल हो उठा। अपने पटेल के साथ अस्पताल मे रहने की उनकी बडी इच्छा थी। पर लडाई के मैदान पर वह उसका पटेल न था। शिधू को जब जहाज बैठाया गया, तब अर्जुन खूब रोया। वह बड़ा निडर सिपाही था। रणभूमि पर अनेक बार जा चुका था। बदूक की गोलियो और तोपो के गोलो की उसे तनिक भी परवाह न होती, परन्तु यह देखते ही कि शिधू बीमार हो गया है, वह एक बालक की तरह रो उठा। शिधू ने उसे बहुत समझाया और यह भी आश्वासन दिया कि वह शीघ्र ही स्वस्थ होकर लौटेगा और दोनो फिर मिलेंगे।

मिलना न मिलना किस के हाथ में था ? वहा सभी हुक्म के ताबेदार थे। आज यहा तो कल वहा। हुक्म होने पर क्यो, कब और किस लिए ? ये प्रश्न पूछने की किसी की भी हिम्मत न थी। शिधू ने सिर्फ समझाने के लिए अर्जुन को आश्वासन दे दिया था। पर स्वय शिधू को भी कहा विश्वास था कि उसके अस्पताल से लौटने के बाद भी अर्जुन उसी का मातहत रहेगा ?

बसरा की अस्पताल मे व्यवस्था बहुत अच्छी थी। वहाँ के डाक्टरों मे बहुत से महाराष्ट्रीय थे। इसलिए शिधू को अमारा की अपेक्षा भी

बसरा मे परायापन कम लगने लगा । उसे पेचिश हो गयी थी । वह बीमारी जल्द अच्छी होने वाली न थी । कितने दिन उसे अस्पताल मे रहना पडेगा, इसका अन्दाज डाक्टर लोग भी नही लगा सकते थे ।

यहाँ शिधू को एक नया मित्र मिला । उसे शिधू की विशेष घनिष्ठता हो गयी । उसका नाम था माधवराव । वह अस्पताल मे क्लर्क था । करीब करीब शिधू की ही उम्र का बिल्कुल युवक । शिधू की तरह वह भी स्वेच्छा से ही लडाई पर आया था और उसे यह नौकरी मिली थी । उसकी विशेषता यह थी कि इतने दिन उसे लडाई पर आये हो गये थे, पर उसने अपने खान-पान मे कोई बदलाहट नही की थी । वह माँसाहारी नही हुआ था ।

माधवराव बडा बातूनी था । घटो बाते करता रहता । जो भी बात बताना शुरू करता, तो उसका अत न होता । जहाँ एक बार वह बोलना शुरू कर देता, तो उसकी बाते उससे रोके नही रुकती थी । बात करने का उसका ढग भी बडा बडा विलक्षरण था । वह बडी जल्दी-जल्दी बोलता । बोलते समय हाथ नचाता जाता । साराँश माधवराव स्वय एक हलचल था ।

अपने तुल्य-गुरण साथी पाने पर शिधू को बडा आनद हुआ । समय निकालकर माधवराव जब शिधू के पास आकर गप्पे करने लगता, उस समय उसे डाक्टर की दवा की आवश्यकता भी न महसूस न होती । उसकी सुहबत मे इतना अच्छा उसे लगता । माधवराव शिधू को पुनः पुराने जमाने मे ले गया, पुन उसे निरामिषहारी बना दिया ।

उसकी बीमारी का सच्चा काररण उसका माँसाहार ही था । उसके पेट को माँसाहार की आदत न थी और मेसोपोटामिया मे खान-पान का इतजाम खराब होने के काररण वहाँ का खाना उसके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल न हुआ । इसलिए वह बीमार पड गया था । दवा की अपेक्षा अन्न को बदल देने से ही उसकी बीमारी धीरे-धीरे अच्छी होने लगी ।

यह सच है कि अर्जुन की उसे बार-बार याद आती। पर माधवराव का साथ छोडना उसकी जान पर आता। यह भी सच है कि अर्जुन उसका बचपन का साथी था और शिधू के प्रति उसके हृदय मे भक्ति थी और उसकी भेट होने पर शिधू को परमानन्द हुआ था। फिर भी अर्जुन के भक्ति-भाव की अपेक्षा नवपरिचित माधवराव का स्नेह ही उसे अधिक मूल्यवान लगता। जैसे-जैसे उसके स्वास्थ्य मे सुधार होने लगा, वैसे-वैसे वह घूमने-फिरने लगा। घूमने फिरने लगा कहने के बजाय यह कहना ही ठीक होगा कि वह घूमने-फिरने की सहूलित लेने लगा। माधव-राव भी कभी-कभी समय निकालकर उसके साथ घूमने जाता।

आसपास के भूभाग का वह निरीक्षण करता। वहाँ के निवासियो का परिचय प्राप्त करना उसके लिए सभव न था, क्योकि उसकी भाषा वहाँ किसी को भी नही आती थी। वहाँ के निवासी यद्यपि मुसलमान थे, फिर भी उनकी भाषा शुद्ध हिन्दुस्तानी नही थी। इसलिए उस प्रदेश के लोगो से परिचय प्राप्त करने की इच्छा होते हुए भी उन दोनो के लिए वह सभव न हुआ।

मादेलीन का हाल जब उसने माधवराव से कहा, तो उसे सुनकर माधवराव आश्चर्यचकित हो गया। उसके अस्पताल मे भी कुछ यूरो-पियन नर्से थी। परन्तु उनके बर्ताव करने का ढग मादेलीन से तुलना करने योग्य न था। वे प्राय सभी अग्रेज थी। परिचय हुए बिना किसी से बात नही करती थी, यह उनका स्वभाव था और नेटिव्ह सिपाहियो से परिचय करना वे अपनी शान के खिलाफ समझती थी। उन्हे अपने उच्च वर्ण और दर्जे का बडा ख्याल था।

इसलिए माधवराव को आश्चर्य हुआ था। उसने सोचा अँग्रेज और फ्रेन्च महिलाओ की मनोवृत्तियो मे ही फर्क होना चाहिए।

मालेदीन के परिचय का हाल यद्यपि शिधू ने माधवराव को सुनाया था, फिर भी उनकी सगति का उनके मन पर जो विशेष प्रभाव पडा था, वह उसने माधवराव से स्पष्ट रूप से नही कहा था, क्योकि मन पर

पडा वह प्रभाव अत्यन्त कोमल था। उसे लगा, अगर स्पष्ट खोलकर वह सब उसे बता दू तो मेरी बात का गलत अर्थ निकला जाएगा। अपने हृदय के रहस्य को उसने इसीलिए माधवराव के सामने खोलने का प्रयत्न नही किया।

दिन बडे आनन्द से बीत रहे थे कि इसी समय एक आपत्ति आई। छावनी मे हैजा फैल गया।

डाक्टर लोग इस बीमारी के कारण की खोज मे लग गये। जो खाना सिपाहियो को खिलाया जाता था उस पर कडी नजर रखी जाने लगी। पानी उबाल कर दिया जाने लगा। सर्वत्र रोग-कीटाणु-नाशक दवाये छिडकी जाने लगी। इसके बावजूद बीमारी का जोर कम नही हो रहा था।

बहुत से लोग इस बीमारी के शिकार हो गये। इस कारण डाक्टरो के छक्के छूट गये। यदि बीमारी का यही हाल रहा तो कौनसी विपत्ति आ गिरेगी, इसकी किसी को कोई कल्पना न थी। डाक्टरो पर बडी भारी जिम्मेवारी आ पडी थी।

आश्चर्य यह कि बीमारी का कारण एक छोटे फल मे निकला। उस प्रदेश मे सर्वत्र खजूर के पेड थे। जगल मे हर जगह लगे थे ये पेड। हिन्दुस्तान में खोजने पर न मिलेंगे इतने स्वादिष्ट और बढिया खजूर वहाँ इफरात मिलते थे। सडको पर खजूर के ढेर पडे रहते और सभी उन फलो को मनमाना खाते थे। यह कोई नही जानता था कि इन फलो मे हैजे की कीटाणुओ का डेरा पडा है।

एक डाक्टर ने यह आविष्कार किया और खजूर खाने की कानूनन मनाही कर दी गयी। जो खजूर खाते पकडा जाता, उससे चार आना जुर्माना वसूल किया जाता और जो इसकी खबर देता उसे वे चार आने इनाम के बतौर दे दिये जाते।

शिधू पूर्ण स्वस्थ हो गया था। एक-दो दिन मे वह अपनी नौकरी पर अमारा जाने वाला था। लेकिन इसी समय उसकी अक्ल मारी गयी।

पुनर्जन्म

डाक्टर की इस नयी खोज से कि खजूर खाने से हैजा होता है शिधू को बडी भ्रमजनक मालूम हुई। हिन्दुस्तान मे उपवास के दिन खजूर खाने का आम प्रचार है, पर उसके खाने से वहा तो हैजा कभी नही हुआ। उसे लगा, डाक्टरो का यह निरा पाखड है। किसी भी चीज का कही भी सम्बन्ध जोडकर अपनी धौस जमाने का डाक्टरो का तरीका ही है।

वह जिद पर आ गया और एक दिन जान-बूझकर उसने बहुत से खजूर खा लिये। इस जिद का उसे फल मिला।

दूसरे ही दिन उसे हैजा हो गया और वह हैजा-अस्पताल मे भरती कर दिया गया।

पहिले दिन वह जिन्दगी और मौत के बीच लटक रहा था। उसे लगातार दस्त हो रहे थे। हर क्षण उसकी शक्ति क्षीण हो रही थी। वह सब देवी-देवताओ को याद करने लगा। उसकी माँ उसकी नजरो के सामने मूर्त हो उठी। रमा का आगे क्या होगा इस विचार ने उसे अत्यन्त व्याकुल कर दिया। विदेश मे—फिर लडाई के मैदान मे—तोप के गोले से नही, बन्दूक की गोली से नही, अथवा सुरग या बम से भी नही, रणभूमि मे मेरी मृत्यु हैजे से होगी! इस विचार के मन मे आते ही उसे मरण से भी अधिक दुख हुआ।

अर्जुन उसके पास न था। माधवराव से भी मुलाकात न होती थी। अस्पताल के उन कर्मचारियो को जो डाक्टर नही थे इस अस्पताल मे नही आने दिया जाता था, क्योकि हैजा छूत की बीमारी है।

जहाँ कोई प्रिय व्यक्ति नही था—यहाँ तक कि कोई परिचित भी नहीं था—जहाँ मराठी भाषा के शब्द भी कानो मे नही पड़ते थे, ऐसी

अस्पताल मे वह पड़ा था। उसके दुर्भाग्य से महाराष्ट्रीय डाक्टरों मे से एक भी डाक्टर इस अस्पताल मे न था।

जैसे-जैसे उसकी शक्ति क्षीरण होने लगी, वैसे-वैसे उसकी दृष्टि अन्तर्मुखी बनने लगी। रणभूमि पर आने के लिए जिस समय वह तैयार हुआ था, उस समय उसे मृत्यु की चिन्ता न थी। उसने महसूस कर लिया था कि क्या लड़ाई मे और क्या घर मे, मृत्यु निश्चित ही है। यह महसूस करके ही उसने लडाई पर जाने का निश्चय किया था।

डाक्टर से उसने एक कागज माँगा और घर के लोगो को एक पत्र लिखा।

उसे लगा, मौत अब बिल्कुल नजदीक आ गयी है। दस्त बद हो रहे थे इसमे शक नही, पर शक्ति का बहुत अधिक ह्रास हो गया था। आँखे खोलने की शक्ति भी उसमे नही रह गयी थी।

उसे एक इजक्शन दिया गया। वह उसने महसूस किया। उसके मस्तक पर ठडे जल की पट्टी रखी गयी। उसे लगा दिमाग उसके कब्जे से निकला जा रहा है।

कोई बाते कर रहा था। डाक्टर की आवाज उसके कानो मे पड रही थी। डाक्टर नर्स को हुक्म दे रहा था। वह नर्स डाक्टर से बाते कर रही थी।

उसे लगा मादेलीन बोल रही है। कोई भी यूरोपियन स्त्री बोलने लगती, तो वह मालेदीन ही है, ऐसा भ्रम उसे हो रहा था। सच पूछा जाय तो ऐसा भ्रम होने का कोई कारण नही था, क्योकि अग्रेज और फ्रेन्च मनुष्य के उच्चारण मे बहुत अतर होता है। त और ट, ड और द, इन अक्षरो के उच्चारण अंग्रेज और फ्रेन्च बिल्कुल भिन्न-भिन्न प्रकार से करते है। यही नही बल्कि अग्रेजी मे "त" और "द" अक्षरो का उच्चारण ही नही है—उच्चारण "त" और "द" के होने से ही उसे लगा जैसे मालेदीन बोल रही है। यही नही, बल्कि बोलने वाली की आवाज भी उसे मालेदीन जैसी ही लगी। वह मन-ही-

मन सोच रहा था, यहाँ मालेदीन कहाँ से आएगी ? होगी कोई दूसरी फ्रेन्च स्त्री ! उसे लगा जैसे वह जोर से मालेदीन को पुकार रहा है ।

सोचते-सोचते स्मृति पर से उसका अधिकार जाता रहा । वह मृत्यु थी या नीद, इसका वह निश्चय नही कर पाया । उस स्थिति मे ग्लानि थी, पर यातनाये न थी । मृत्यु के समय यातनाये होती है, ऐसा उसने सुना था । फिर इस समय मुझे यातनाएँ क्यो नही हो रही है ? क्या जो मैंने सुना था वह झूठ है ? भ्रम है ? सिर्फ कहने की ही बात है ? ज्ञान का अन्तर्धान होना ही क्या मृत्यु है ? या कि एक स्थिति से दूसरी स्थिति मे जाग्रत होना मृत्यु है ?

उसे लग रहा था जैसे वह सो गया है । धीरे-धीरे स्मृति पर से उसका अधिकार अब सम्पूर्ण रूप से जाता रहा ।

वह जागा । उस समय रात थी । आसपास के रोगी कराह रहे थे । यह देखकर उसका जी ठडा हुआ । उसे महसूस हुआ कि वह जीवित है । पूर्व-सस्कारानुसार उसने अपने कुलदेव की बन्दना की । उसे लगा भगवान की कृपा से ही मैं जीवित हूँ ।

उसने चारो ओर बडे ध्यान से निगाह दौडाई । एक दीप टिमटिमा रहा था । किसी की कोई हलचल नही हो रही थी । प्राय: सभी रोगी नीद मे थे । जो कराह रहे थे, वे भी शायद नीद मे ही कराह रहे थे । अत्यन्त कोमल स्वर मे उससे किसी ने पूछा—"अब आपको कैसा लगता है ?"

वह एकदम चौंक पडा । आवाज मालेदीन की थी । उसे लगा यह सारा भ्रम है । मेरी आँखे बन्द है । मैं जाग्रत हूँ, क्या यह भी भ्रम है ?"

वह दुविधा मे पड गया ।

फिर वही आवाज उसके कानो से टकराई ! वही शब्द फिर उसके कानो मे पडे । बोलने वाली उसे दिख नही रही थी । यह सोचकर कि यह सारा भ्रम है, उसने आँखे नही खोली थी । परन्तु बोलने वाली के हाथ का जब उसे स्पर्श हुआ, नाडी पर रखे हाथ से जब उसका हाथ

सलग्न हुआ, तब उसने आँखे खोली, देखा तो सामने मादेलीन खडी थी । वही उसकी नब्ज देख रही थी। वह आश्चर्य से बोल उठा, "कौन मादेलीन ! तुम ! या कि मैं भ्रम मे हू ?"

मादेलीन ने उसके मस्तक को सहलाते हुए कहा—"उत्तेजित न होइए, बोलिए नही। मैं मादेलीन ही हूँ परन्तु इस समय आपको अपना मस्तिष्क बिल्कुल शान्त रखना चाहिए। आँखे बन्दकर चुपचाप पडे रहिए। अच्छा हुआ जो आपको नीद आई, अगर और अच्छी नीद आ जाए तो सुबह आपको और अच्छा लगेगा।"

अनजाने शिधू ने उसकी आज्ञा का पालन किया। फिर बोलने की कोशिश न की। वह उसका सिर सहलाती हुई उसके समीप बैठी थी।

शिधू के मस्तिष्क मे विचारो ने कुहराम मचा दिया था। उस कुह-राम के बीच वह कुछ ऐसे कल्पना-चित्र रग रहा था कि उन्हे देखकर स्वय उसे अपने पर आश्चर्य हो रहा था। उसे लगा लडाई बन्द हो गई है। हम जीत गये है। जय के उपलक्ष मे एक वृहत जलूस निकला है। दो व्यक्ति जिनके कारण यह जय प्राप्त हुई है, बडी शान से जलूस के आगे आगे चल रहे हैं। जनता उन पर पुष्प-वर्षा कर रही है। वह जलूस उसे दिख रहा था। उसने देखा जलूस के आगे चल रहे दो व्यक्तियों मे एक वह स्वय है और दूसरी मादेलीन है।

वह आश्चर्य-चकित हो गया। मैं ही अपने आप को किस तरह देख रहा हूँ ? यह वह समझ न पाता। इस दृश्य का परस्पर सबन्ध क्या था, यह रहस्य वह सुलझा नही पाता। उसे लगातार दिख रहा था कि जलूस मे के आगे एक वह स्वय है और दूसरी मादेलीन हे।

उसने अपने आप से पूछा—इन दोनो ने इस लडाई मे ऐसे कौन से झडे गाडे है ? क्या मर्दानगी दिखाई है ? किस वीरता के बल पर इन दोनो ने यह लडाई जीती है ?

स्मरण करने का वह प्रयत्न कर रहा था। परन्तु वह प्रयत्न करते हुए ही वह दृश्य विलीन हो गया और साथ ही उसकी स्मृति भी गलगयी।

दूसरे दिन वह जागा। उस समय उसे काफी अच्छा लग रहा था। डाक्टर ने आकर उसकी जॉच की और यह कहकर कि वह रोग-मुक्त हो गया है, उसे वहाँ से हटाकर, दूसरे वार्ड मे रखने का प्रबन्ध कर दिया।

वह जब जागा उस समय मादेलीन वहाँ न थी। जब उसने मादेलीन को वहाँ न देखा, तो उसके मन मे विश्वास हो गया कि पिछली रात उसने जो कुछ देखा था, वह सब निरा भ्रम था। दूसरे वार्ड मे जाने पर माधवराव से उसकी मुलाकात हु । दोनो एक दूसरे से मिले। उस समय उनके आनन्द का पारावार न था। बेचारा माधवराव शिधू के बीमार पड जाने के बाद से बिल्कुल हक्का-बक्का हो गया था। हैजे की अस्पताल मे वह जा नही सकता था और उसे सिर्फ पूछताछ पर ही सतोष कर लेना पडता था। पूछताछ करने मे भी उसे ठीक पता न चलता। इतने रोगियो मे किसी विशेष रोगी के बारे मे उससे कोई ठीक से कह भी क्या सकता था? डाक्टर सब, अँग्रेज मेमे थी। फिर पूछता किससे?

माधवराव ने अपने मुँह की तोप शुरू की, "आखिर एक नर्स से तुम्हारा हाल मालूम हुआ। वह नर्स अच्छी मालूम होती थी वर्ना दूसरी यूरोपियन नर्से बडी घमडी होती है। अमीरो की बेटियाँ जो होती है। जनता को यह दिखानेके लिए कि हम कितना स्वार्थ-त्याग कररहीहै, वे नर्स बनकरलडाई परआती हैं। वैसे वे काम अच्छा करती है इस मे शक नही। कभी टाल-मटोल नही करती कभी थोडा भी आलस्य नही दिखाती। हमारे हिन्दुस्थान की अँग्रेज नर्सो की तरह रोगियो के बारे मे असावधानी या लापरवाही नही दिखाती। पर मेमे आखिर मेमे ही तो है। यदि उन से कोई मामूली बात पूछने जाएं तो ठीक से जवाब भी नही देती। परन्तु जिसने तुम्हारा हाल बताया, वह छोकरी ऐसी नही थी। मैं तो पूछ रहा था डाक्टर साहब से, पर उस डाक्टर ने मुझे ठीक से कोई उत्तर नहीं दिया और बेटा बड़ी शान से अकडता हुआ चल दिया। यह देखकर

वह छोकरी आगे बढी और बोली, 'आप कोई चिन्ता न करे। आप शायद जोशी पोस्ट-मास्टर के बारे मे पूछ रहे है वे अच्छे है। अब बिल्कुल 'आऊट आफ डेन्जर' है। आज ही उन्हे दूसरे वार्ड मे ले जाया जाएगा।' जब उसने यह कहा तब कही मेरा जी शान्त हुआ। यूरोपियन भी हो तो क्या हुआ, उनमे भी कुछ अच्छे लोग होते ही हैं। थोडी देर चुप रहकर माधवराव ने एक ठहाका मारा और फिर बोला "यार, उस लडकी की अग्रेजी बडी विचित्र थी। कुछ अजीब-से उच्चारण करती थी। जाने उसे अँग्रेजी ठीक से आती भी है या नही, इसी का मुझे शक हुआ। दूसरी नर्सें जिस तरह उच्च कुल की हैं, वैसी यह नही मालूम होती। मुझे लगता है वह किसी देहाती परिवार की है।"

माधवराव के मुह की तोप लगातार दग रही थी। पर शिधू का उस ओर ध्यान न था। माधवराव के मुँह से नर्स की बाते सुनते हुए उसे फिर मादेलीन की याद हो आई थी। रात को मुझे दृश्य दिखा वह क्या था? भ्रम था, या सचमुच मादेलीन ही आई थी? फ्रान्स को छोड़ कर क्या वह मेसोपोटामिया की समर-भूमि पर नर्स बनकर आई होगी।

माधवराव शिधू को हल्के-से झकझोरते हुए बोला—"मै जो कह रहा हूँ वह सुन रहे हो न? बडी खुबसूरत लडकी है वह। बाते भी मीठी करती है। जैसी उसकी आवाज मधुर है, उसी तरह उसकी मुद्रा भी बडी सौम्य है। तुम्हारे बारे मे जो बात कह रही थी, उन से ऐसा लगता था जैसे तुमसे उसका बहुत पहिले का परिचय हो! बडे प्यार से तुम्हारा हाल बता रही थी। तुम्हे क्या-क्या दवाएं दी? कौन-कौन से इजेक्शन दिये? डाईट क्या दिया था? यह सब उसने मुझे बताया।

"क्या उसने तुम्हे अपना नाम भी बताया था?" शिधू ने पूछा।

माधवराव जोर से हँस पडा। बोला—"अब तुम्हे क्या बताऊँ जोशी! अजी क्या कोई किसी नर्स का नाम भी कभी पूछता है? नर्स याने नर्स! उसके चेहरे से उसे पहचान लेते हैं या उसकी पोशाक से। हो सकता है उसका कोई नाम हो। पर मैं क्यो पूछता उसका नाम? मुझे

क्या जरूरत थी उसका नाम जानने की ? मेरा उससे काम हो गया था। मैंने उसे थैंक्स दिये और तुम्हें ताज्जुब होगा शिधू ! उसने हाथ आगे बढा दिया और मुझ से शेक हैंड किया।"

माधवराव बडे रग मे आकर बोला—"यार कितना गोरा कोमल और सुन्दर हाथ था। जीवन मे कम-से-कम एक बार तो ऐसे हाथ से हाथ मिलाने का मौका अवश्य आना चाहिए, वरना यह जिन्दगी बेकार है। कुछ गलत मत समझ लेना, मित्र ! वैसे मेरे मन मे उसके बारे मे कोई बुरा विचार नही आया था। पेड पर यदि सुन्दर फूल दिखाई दे, तो क्या मनुष्य को आनन्द नही होता ?"

बडी देर तक माधवराव शिधू से बाते करता रहा। पर उसकी बातो पर शिधू का ध्यान नही था। बार-बार उसे मादेलीन की याद आ रही थी।

माधवराव के जाने पर उसे बडा उदास-सा लगने लगा। नजदीक की चारपाई पर पडे एक बीमार की ओर मुडकर वह बोला—"कितने दिन से है आप यहाँ ?"

वह बीमार भी मराठा था। इसलिए उसने मराठी मे ही उत्तर दिया। "दो-तीन दिन ही हुए है मुझे यहाँ आये। मै आपसे सच कहता हूँ कि वह नर्स, जिसके बारे मे आप के मित्र अभी आप से बाते कर रहे थे, एक विलक्षण स्त्री है, इस मे शक नही। जिसको उसका हाथ छू जाता है, वह तुरन्त अच्छा हो जाता है। मेरी भी उसी ने सुश्रुषा की थी। वह स्त्री नही, देवी है।"

"अभी उसका सारा हाल आपने शायद सुना ?"—शिधू बोला।

"यहाँ आप ही के नजदीक तो पडा हूँ। इसलिए सहज ही सब बाते मेरे कानों मे पड गयीं। बातचीत के सिलसिले मे जब उस नर्स का हाल निकला, तो मेरा ध्यान सहज ही उस ओर आकृष्ट हो गया। उसका सिर्फ स्मरण होते ही हृदय भर जाता है। डाक्टर की दवा की अपेक्षा उसकी सुश्रुषा से ही मुझे अधिक लाभ हुआ और आपके मित्र ने जो

अभी कहा वह झूठ नही—वह नर्स सचमुच गुलाब का फूल है। उसे देखते ही उसके प्रति हृदय मे श्रद्धा जाग उठती है। वैसे बहुत-सी नर्से मैने देखी है। कोई-कोई तो इतनी छिनाल होती है कि सिपाहियो से भद्दे मजाक करने की भी उन्हे शर्म नही आती। पर यह उस मिट्टी की नहीं बनी है। उम्र भी उसकी कोई अधिक नही, परन्तु लगता है जैसे सच्ची माँ है।"

सिपाही उस नर्स की भूरि-भूरि प्रशसा कर रहा था। शिधू की जिज्ञासा जाग्रत हो उठी। उसे इस बात की जैसे रट ही लग गयी कि ऐसी नर्स मुझे एक बार अवश्य देखना चाहिए। उसने उस सिपाही से पूछा—क्या इस वार्ड मे भी वह आती है कभी ?"

"यहा वह क्यो आने लगी ?"—उसकी ड्यूटी उसी वार्ड मे है। यहाँ बहुधा नर्से आती ही नही, क्योकि जिनकी बीमारी ठीक हो जाती है वही इस वार्ड मे कुछ दिन और रखे जाते है जिससे थोडा आराम कर ले।"

शिधू का मस्तक भ्रमण करने लगा, मादेलीन सचमुच यहाँ आई है क्या ? या कि भ्रम मे मैने किसी दूसरी भली लडकी को ही मादेलीन समझ लिया ? उसे माधवराव की बात याद आई। उसने कहा था कि वह ठीक से अँग्रेजी भाषा का उच्चारण नही कर सकती। फ्रेन्च लोगों के उच्चारण कैसे होते है यह माधवराव जानता न था। यदि यह उसे मालूम होता, तो वह एकदम कह देता कि वह फ्रेन्च स्त्री थी। इसलिए जब कि उसके अँग्रेजी उच्चारण मे दोष था, तो वह जरूर फ्रेंच ही होगी। शायद मादेलीन ही हो, यह शका भी उसके मन को छू गई।

उसकी जाँच के लिए जो डाक्टर आए वे महाराष्ट्रीय थे। इधर-उधर की गप्पे हाँकते हुए वे बहुत देर उसके पास बैठे थे। उस समय उन्हे भी कोई खास जरूरी काम न था। शिधू ने सहज ही उनसे भी उस नर्स के बारे मे पूछकर देखा।

पर निराशा ही उसके पल्ले पड़ी। उस वार्ड की नर्सो के बारे मे

उस डाक्टर को कोई जानकारी न थी। यदि उसे कोई जानकारी होती भी तो भी वे उसका सशय दूर कर ही देते, इसका उसे भी विश्वास न था।

शिघू निराश हो गया। सशय के कारण उसकी अन्तरात्मा तडप रही थी। उसे लगने लगा कि वह नर्स मादेलीन ही होगी और यह भावना जैसे-जैसे उसके हृदय मे बल पकडने लगी, वैसे-वैसे उसका मन अधिक व्याकुल होने लगा।

शाम को माधवराव अाया। फिर से गप्पो का सिलसिला आरभ हुआ। उसने समाचार सुनाया कि छावनी अमारा से हटा दी गयी है और उसे शेखसाद ले गये है। कुतेर आमारा पर मोरचे लगाने है इसी की यह तैयारी है। शिघू का पोस्ट आफिस भी अमारा से शेखशाद ले जाया गया। कुरना की छावनी मे जो पलटने थी उन्हे शेखसाद जाने का हुक्म हो गया था।

शिघू के सामने सवाल था कि अर्जुन का क्या हुआ होगा? क्या वह अभी तक पोस्ट-आफिस मे डाकिया ही होगा या कि उसे मोरचे पर जाने का हुक्म मिल गया होगा? परन्तु इसका पता लगने का कोई जरिया न था।

छावनी मे बडी गडबडी मच गयी थी। अस्पताल के लिए जो सामान खरीदा गया था उसमे का बहुत-सा सामान गायब था। उसका कही हिसाब ही नही मिलता था। ऐसे प्रमाण मिले थे कि आटे के बहुत से बोरे जो गोदाम से गायब हो गये थे, वे नजदीक के बाजार मे बेचे गये थे और इसकी बडी बारीकी से तहकीकात हो रही थी। सौभाग्य से माधवराव का इस गोदाम से कोई ताल्लुक न था, वरना इस घपले के चक्कर मे वह बेचारा भी फँस जाता।

मिलटरी के अपराधियो की तहकीकात सिविल अपराधियो की अपेक्षा अधिक कडाई से होती है। वह तहकीकात किस प्रकार होती है इसके बारे मे माधवराव शिघू से बाते कर रहा था।

ऐसा पता लगा था कि उस मामले मे कुछ बडे-बडे अफसरो का भी हाथ था और यदि उनके खिलाफ सबूत मिल जाएँ, तो उन्हे भी बडी कडी सजा दी जाएगी। ये सजाएँ किस रूप की होती हैं यह भी माधवराव अपने ढग से शिधू को बता रहा था।

माधवराव की ये बाते यद्यपि शिधू सुन रहा था फिर भी उसके मस्तिष्क मे सारे विचार मादेलीन पर केन्द्रित हो गये थे। वह माधवराव की सब बातें सुन रहा था। हुकारी भर रहा था। बीच-बीच मे कुछ प्रश्न भी पूछ लेता था। उसके प्रश्नों मे कोई असगता भी न रहती।

बाते करते-करते शिधू ने सामने देखा। छावनी के दरवाजे से एक आकृति बाहर आती हुई उसे दिखाई पडी।

उसने आँखे मली, फिर आँखे फाडकर देखा, अपनी आँखो पर उसे विश्वास न होता था।

साक्षात मादेलीन ही उसके सामने आकर खडी थी।

———

पुनर्मिलन

मादेलीन को सामने देखते ही शिधू उठकर बैठने की कोशिश करने लगा। परन्तु उसने अपने हाथ से उसे बिस्तर पर उसी तरह पडे रहने के लिए बाध्य कर दिया। वह बोली—"अब आपको कैसा लगता है ?"

"आप इधर कहाँ ? आपको देखकर मै आश्चर्य-चकित हो गया। क्या आपका फ्रान्स का काम पूरा हो गया ?"

"शिधू ! क्या यही मादेलीन है ?"—माधवराव बोला।

शिधू की चारपाई के बिल्कुल निकट कुर्सी खीचकर मादेलीन उस पर बैठ गयी और बोली—"उस काम से मैं ऊब उठी थी। जो इच्छा लिये मै लडाई पर आई थी, वह इच्छा डाक या तार विभाग मे काम करने से पूरी नही होती थी। वह काम मुझे बिल्कुल बाबूगिरी लगता। उसकी अपेक्षा रणभूमि पर घायल होने वाले सैनिको की सुश्रुषा करने का काम, जो मैं अब कर रही हूँ, मुझे अधिक उत्साहवर्धक लगता है। अब आपको कैसा लगता है ?"

"अब बहुत अच्छा लगता है।" शिधू बोला—"मेरा ख्याल है एक-दो दिनो मे मे घूमने-फिरने लगूँगा।"

मादेलीन हँस पडी। बोली—"इतनी जल्दी न कीजिएगा। इससे कोई लाभ न होगा। जब तक डाक्टर इजाजत न दे, तब तक बाहर जाना उचित नही। आप लाख कहे कि बाहर जाऊँगा, पर डाक्टर जाने दे तब न ? अच्छा, यह बताइए, आपको इस वातावरण मे कैसा लग रहा है ? बेलजियम फ्रन्ट पर भी आप कुछ दिन रह लिए है और अब यहाँ रह रहे हैं। इन दोनो स्थानो मे आपको कोई फर्क मालूम होता है ?

"बहुत ज्यादा फर्क है।" शिधू गभीरता-पूर्वक बोला—"मुझे किसी

की निंदा या प्रशसा नही करनी है। पर वहाँ से यहाँ आने पर फर्क जरूर महसूस हुआ। वहाँ के लोगो के उत्साह और यहाँ के लोगो के उत्साह मे जमीन-आसमान का फर्क है। वह वातावरण अलग था और यह अलग है। खाने-पीने के इतजाम मे भी फर्क है और अफसरो के बर्ताव मे तो बडा भारी फर्क है। वहाँ फौजी अनुशासन बडी कडाई से पाला जाता था, फिर भी 'प्राईवेट लाईफ' मे ऊँच-नीच का भेद महसूस न होता था। वहाँ मुझे जितना अपनापन महसूस होता था, उतना यहाँ नही होता। यहाँ तो ऐसा प्रतीत होता है, जैसे सब किराये के टट्टू हैं। वहाँ का जलवायु भिन्न था, सारा वातावरण ही भिन्न था। क्या आप भी ऐसा महसूस नही करती ?"

"मै यह कभी सोचती ही नही, इस विषय की परवाह ही नही करती। मैंने सेवा-धर्म स्वीकार किया है। कौन स्थान कैसा है, वातावरण कैसा है, इसकी कोई परवाह न करती हुई मै मन लगाकर अपना काम करती हूँ। हर मोरचे पर मुझे आत्मीयता ही महसूस होती है। किसी प्रकार के भेद-भाव का विचार ही मेरे मन मे कभी पैदा नही होता।"

"क्या सभी नर्स इसी भावना से काम करती है ?"—माधवराव एकदम मादेलीन के सामने आकर बोला।

उस अचानक पूछे गये प्रश्न से मादेलीन चौंक पडी। क्षणभर वह माधवराव के चेहरे की ओर देखती रही और शिधू की ओर मुडकर बोली—"ये आपके मित्र हैं शायद ? इन से मैं मिल चुकी हूँ।"

फिर माधवराव की ओर मुडकर बोली—"आपका प्रश्न ठीक है। परन्तु दूसरे क्या सोचते है, उन्हे क्या लगता है या उनका बर्ताव कैसा है, इस विषय मे मैं किसी से कभी कोई पूछताछ नही करती और यह जानने की मुझे परवाह भी नही होती। मै स्वय अपना काम सचाई और तत्परता से करती हूँ या नही, यही प्रश्न मैं अपने मन से बार-बार पूछती रहती हूँ। दूसरे लोग यदि अपना काम ठीक से न करे, तो मैं उनके काम मे किसी भी प्रकार का कोई हस्तक्षेप नही करती, क्योकि वह मेरा

अधिकार नही। कौन किस तरह बर्ताव करता है, यह देखने का जिन्हे अधिकार है वे ही इन बातो को देख सकते है।"

"पर आपको कैसा लगता है, कम-से-कम यह तो मुझे बताइये न ?"

"दूसरो के गुण-दोष दिखाना मैं पसद नही करती।

"मिस्टर जोशी का इतजाम तो यहाँ ठीक है न ?"

हाथ नचाता हुआ माधवराव बोला—"अब आप बात न उडाइए। साफ-साफ बताइए कि यहाँ की दूसरी नर्सों के बारे मे आपका ख्याल है ? क्या उनका बर्ताव भी आप ही की तरह है ?"

मुँह फेरकर मादेलीन बोली—"मैं अपने काम मे इतनी व्यस्त रहती हूँ कि दूसरी नर्स अपने काम किस तरह करती है, यह देखने को मुझे अवकाश ही नही मिलता।"

माधवराव शिधू की ओर मुडकर मराठी मे बोला—"देखा शिधू, कितनी चालाक लडकी है ? मुख्य प्रश्न को किस तरह टाल रही है ?"

शिधू खिन्नता से हँसा। मादेलीन लगातार उसकी ओर देख रही थी। टकटकी लग गई थी उसकी। शिधू ने भी अपनी आँखे उसकी आँखो मे डाल दी थी। वे एक दूसरे की ओर बडी आत्मीयता से देख रहे थे। माधवराव उन दोनो को देख रहा था। वे दोनो जानते थे कि माधवराव उनके पास बैठा है, फिर भी वे एक दूसरे की ओर उसी भाव से देखते रहे। यह देख माधवराव को आश्चर्य हुआ।

मादेलीन की दृष्टि सहज ही शिधू के गले पर गयी। उसके द्वारा दिया गया लाकेट उसके वक्ष पर झूल रहा था। मादेलीन ने जब उसे स्पर्श किया तो शिधू का हाथ भी लाकेट के पास पहुँचा।

हाथ से हाथ मिल गये। हाथ से हाथ पकडे दोनो उसी स्थिति मे चुपचाप बैठे रहे।

हाथ अलग न करते हुए मादेलीन ने कहा—"सोच रही थी कि आप शायद हिन्दुस्तान लौट गए होगे। यह भी आशा कर रही थी कि आप का पत्र आएगा। आपका पत्र आए बिना आपका क्या पता है, यह

जानना सभव न था। आपकी पलटन वहाँ से कहाँ गयी इसका भी पता वहाँ किसी को न था। क्या आपको मुझे पत्र भेजने की कभी इच्छा नही हुई ?"

"हाँ, यह सच है।" —शिघू बोला—"मैने पत्र नही भेजा और न मेरे ध्यान मे आया कि आपको पत्र लिखू। याद जरूर बनी थी। हर क्षण आपकी याद हरी रहती थी। पर पत्र भेजने का विचार जाने क्यो नही आया

मादेलीन सिर्फ हँस दी। यह देखकर माधवराव बोला—"हम हिन्दु-स्थानियो की यही आदत है। याद हमे बराबर आती है। पर पत्र भेजने का आलस्य आता है। आप लोगो की कुछ रीतियाँ मुझे बडी पसद है। आप लोग अपने मित्रो की जन्म-तारीखे नोट कर लेती है और उन तारीखो पर आप हर वर्ष उन्हे बधाई के तार या पत्र भेजती हैं। हमे अपने रीति-रिवाजो पर कितना भी अभिमान हो, पर व्यक्ति-विषयक आदान-प्रदान मे हम अभी बहुत पिछडे हुए है।"

"तुम सच कहते हो, माधव!" शिघू बोला—"किस का जन्म-दिवस किस तारीख को है, यह हमे याद नही रहता। यही नही, बल्कि हिन्दुस्थान में ऐसे बहुत कम लोग मिलेगे जो स्वय अपने जन्म की तारीख जानते हो। मुझे याद है मादेलीन ने भी मुझे अपनी जन्म-तारीख एक दिन बताई थी और मैंने उसे अपनी डायरी मे लिख लिया था। पर वह डायरी अब मेरे पास है या गुम गई, इसका आज मुझे पता नही।"

मादेलीन ने झट-से अपना हाथ अलग कर लिया और घडी की ओर देखकर बोली—"मुझे अब जाना चाहिए। फुरसत मिलने पर फिर आऊँगी।" दोनो से हाथ मिला कर वह चल दी।

"कितनी चालाक लड़की है ? कोई बात सीधी तरह से कहती ही नही।" माधवराव बोला।

"तो क्या इसे तुम चालाकी कहते हो ?"—शिघू ने पूछा।

"नही, यह बात नही। मेरे कहने का मतलब यह है कि घुमा-फिरा

कर उत्तर देने के बदले उसे स्पष्ट शब्दो मे कह देना चाहिए था कि मैं नही बताना चाहती। यहाँ की नर्सों को मै आज कई महीनो से देख रहा हूँ। उनके बर्ताव से भी पूरी तरह परिचित हूँ। पर तुम्हारी मादेलीन इन नर्सो के दोषो पर परदा डालना चाहती थी।

शिघू आवेश से बोला—"जो काम करनेवाले होते है, वे अपना काम करते है, दूसरो की ओर ध्यान नही देते। अपने काम से काम और राम से राम जैसा स्वभाव होता है ऐसे लोगो का। हम हिन्दुस्थानी ही हैं जो अपना काम छोडकर दूसरो के कामो मे दिलचस्पी लेकर मेख निकाला करते है। बेलजियम फ्रन्ट के अस्पताल मैने देखे है। वहाँ के कर्मचारी अपने-अपने काम मे इतने व्यस्त रहते है कि एक को दूसरे की खबर नही होती। यहाँ की अस्पताल मे मैं रोगी की हैसियत से भरती हुआ और मुझे नर्स मिली मादेलीन। इसलिए मुझे यहाँ की कोई विशेष जानकारी न हो पाई। अब एक बार दर्शक की हैसियत से यहाँ का भी अस्पताल देखना चाहूँगा।"

"अच्छे होने के बाद ही न ?" माधवराव बोला—"पर अच्छे होने पर क्या तुम यहाँ एक दिन भी रह सकोगे ? अभी-अभी ही देखना चाहो, तो देख सकते हो। पर यह भी शायद न हो सकेगा। तुमने कहा, वह सच है। बेलजियम फ्रन्ट की बात अलग है और यहाँ की अलग।"

शिघू से बिदा लेकर माधवराव चल दिया। शिघू यूँ ही पडा रहा। मादेलीन से अचानक भेट हो जाने के कारण उसे एक प्रकार की मानसिक शान्ति आ गयी थी। उसी शान्ति के नशे मे उसे नींद आ गयी। जब किसी ने आकर खाने के लिए उसे जगाया, तब वह चौक कर उठा। उसका हाथ गले के लाकेट की ओर गया। उसने लाकेट निकाला और उसे खोलकर बहुत देर तक उसके भीतर रखे मादेलीन के चित्र की ओर वह देखता रहा। उसके सामने खाने के लिए पतला साबूदाना एक प्लेट मे रख दिया गया था। पर उसकी ओर उसका ध्यान न था। दूसरे कमरो से बर्तन बटोरकर जिस समय नौकर फिर से शिघू के कमरे आया

तब भी उसका साबूदाना वहाँ ज्यो-का-त्यो रखा था। नौकर की आहट पाकर शिघू का ध्यान टूटा और उसने जल्दी-जल्दी साबूदाना खाकर प्लेट नौकर के हवाले कर दी।

वह बेचैन हो गया था। सोच रहा था, इतने दिन मैं हिन्दुस्तान को कैसे भूला रहा ? मेरी याद बेलजियम फ्रन्ट तक पहुँचकर आगे हिन्दुस्थान तक क्यो न बढी। उस फ्रन्ट पर ही क्यो अटक गयी ?

रमा की मूर्ति उसकी नजरों के सामने मूर्त हो उठी। उसे लगा मेरी याद मे वह सूखकर काँटा हो रही होगी। उसने अपनी बीमारी का उसे न लिखने का निश्चय किया। बीमार हो जाने के कारण उसने बहुत दिनो से घर पत्र नही भेजा था। वार्ड के नौकर से उसने पत्र लिखने का एक फार्म मँगाया और अपनी कुशलता का समाचार उसने उसमे लिखा।

पत्र बन्द करके डाक मे छोडने के लिए वह उसे वार्ड के नौकर को दे ही रहा था, तभी मादेलीन वहाँ आ पहुची। इस समय माधवराव के वहाँ हाजिर न रहने से दोनो के बीच कोई परदा न रह गया था। बातें करते समय उसने अब सारा सकोच छोड दिया था।

वह जाकर शिघू की चारपाई पर उससे सटकर बैठ गयी और उसने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया। उसके चेहरे की ओर देखते हुए उसकी आँखो से आँसू बह रहे थे। कुठित स्वर मे वह बोली—"आप की यह कैसी हालत हो गयी है ? जीभ पर क्या आप थोडा भी कब्जा न रख सके ? थोडे से खजूर के लिए जान पर खेल गये। लडाई पर आने वाले वीर को अपने मन पर पूरा अधिकार रखना चाहिए।

शिघू झेप गया। यह देख कर कि मेरा स्वास्थ्य देखकर मादेलीन का हृदय भर आया है, वह भी गदगद हो गया। "बोला मुझ से आप इतना स्नेह क्यो रखती है ? इस अस्पताल मे आये आपको बहुत दिन हो गये हैं। इस बीच आपने अनेक बीमार देखे होगे, उनकी सुश्रुषा की होगी, पर सिर्फ मेरे लिए ही आप इतनी आत्मीयता क्यो दिखाती हैं।"

यह फ्रान्स की भूमि का सम्बन्ध है।" मादेलीन ने गम्भीरता से कहा—"मेरी मातृभूमि पर हम दोनो का परिचय हुआ। इग्लैड के साथ हिन्दुस्तान के वीरो ने आकर फ्रान्स की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया है। अगर इस के लिए हम लोग आप लोगो के कृतज्ञ न रहे, तो आपके देश के उपकार-भार से हम उऋण कैसे होगे ? सिर्फ इसीलिए मैं मेसापोटामिया आई हूँ। फ्रेन्च और अँग्रेज सैनिको की सुश्रुषा बहुत स्त्रियाँ कर रही है। परन्तु किसी भी प्रकार का स्वार्थ न होते हुए जिन हिन्दुस्थानियो ने फ्रान्स की रणभूमि पर अपना खून बहाया है, उन हिन्दुस्थानियो की सेवा करने के लिए मुझे इस रणभूमि पर आना पडा। आप यहाँ मिलेगे, यह मैंने कभी न सोचा था। परन्तु आप मिल गये। और मिले भी मौत की घडियाँ गिनते हुए ! आप को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। कैसा विलक्षण सयोग ! इस लड़ाई के जमाने मे जितने चमत्कार हो रहे है, उतने शान्ति-काल मे कभी हुए हो, ऐसा नही दिखाई देता। यह लड़ाई न होती, तो आप का और मेरा परिचय भी कैसे होता ?"

आप की मातहती मे एक टेलिग्राफिस्ट के रूप मे मैं आई। उससे पहिले मैं एक अँग्रेज की मातहती मे वही काम कर रही थी। उस अँग्रेज ने मेरी मातृभूमि के बारे मे मुझ से कोई पूछताछ नही की। वह करता भी क्यो ? इंग्लैड और फ्रान्स दोनो एक दूसरे के नजदीक जो हैं। उसे फ्रान्स की जानकारी है। फिर अँग्रेज है। अपना "बुलडागी" स्वभाव कभी नही छोडेगा। पर आपने मुझ से फ्रान्स के बारे मे पूछा। हम लोगों का रहन-सहन, हम लोगो के आचार-विचार और हम लोगो का साहित्य यह सब आपने बडी दिलचस्पी और कुतूहल से जानना चाहा और मैंने आपको सब बताया। उसी से हम दोनो मे यह आत्मीयता पैदा हुई। मैंने भी आप से हिन्दुस्थान के बारे मे बहुत सी बाते पूछी और आपने वे बड़े प्रेम और उत्साह से बतायी। उनका प्रभाव मेरे मन पर पडा। अभी आपसे भेट होती चाहे न होती, पर इस लडाई के खत्म होने के

बाद आपके उस अभागे देश को देखने के लिए मैं जानबूझकर वहाँ जाती। परन्तु जब मुझे पता चला कि हिन्दुस्थान के वीर मेसोपोटामिया की रणभूमि पर लड रहे हैं और वहाँ नर्सो की जरुरत है, तब अपने एक मित्र की सहायता से मैंने अपनी बदली इस रणभूमि पर करा ली। हमारे देश के लिए अपना खून बहानेवाले हिन्दुस्थानी वीरो की थोडी भी सेवा कर सकूँ और उपकार-भार से थोडी भी उऋण हो सकूँ इसीलिए मैं यहाँ आई। सयोग से ऐसी परिस्थिति मे यहाँ आप से भी भेट हो गई। डाक्टरो ने आशा ही छोड दी थी, पर अपनी पत्नी के सौभाग्य से आप बच गये। अब आप को कोई भय नही। शीघ्र ही आपको अपनी ड्यूटी पर वापिस जाना होगा और कौन कह सकता है हम फिर कब मिलेंगे ?"

बाते करते-करते आखिर उसकी दृष्टि शून्यवत हो गयी थी। अज्ञात की मजिल को निहारने के लिए अपने अन्तरग मे देख रही थी।

बात समाप्त होते ही वह स्तब्ध हो गयी। शिधू भी कुछ न बोला।

वह क्षण बडा गम्भीर था। शिधू का हृदय भर आया था। उसे लगा, स्वदेश-प्रेम की यह कितनी उज्ज्वल भावना है ! हम हिन्दुस्थानियो के हृदयो मे स्वदेशो-प्रेम की जडे क्या इतनी गहराई तक घुसी है ?

उसका मन "हाँ" मे उत्तर न देता।

मादेलीन का हाथ अभी तक शिधू के हाथो मे था। मादेलीन ने उसे छुडाने का प्रयत्न न किया और न शिधू ने ही अपना हाथ पीछे हटाया। उसकी खाट पर उसके नजदीक बिल्कुल उससे सटी हुई वह बैठी थी। उस रुग्ण दशा मे भी उसके मन की भावनाएँ हिल उठी।

नजरों के सामने से एकदम दृश्य झूल गया। कलंबस्त गाँव का उसका घर, उसके खेत, उसकी मा, उसकी सहधर्मचारिणी रमा ! वह मादेलीन को लक्ष्य करके बोला, "स्वदेश के प्रति आपका यह ज्वलन्त प्रेम देखकर मुझे बडा कुतूहल होता है। मैं हृदय से आपकी सराहना करता हूँ। मैं निर्लज्ज हो कर आपसे कहना चाहता हूँ कि हम हिन्दुस्थानी लोग

इस वृति से अभी तक वचित हैं।"

खिन्नता से हँसती हुई मादेलीन बोली—"इसीलिए आप लोग स्वतन्त्र देश के रूप मे हमारी मदद करने नही आए। हम फ्राँसीसी लोग लोक-सत्तावादी है। राजभक्ति किसे कहते है यह हम नही जानते। प्रजातत्र से हमारा राजशासन चलता है। देश के प्रति हमारा प्रेम, देश भक्ति और राजभक्ति मे नही बँट जाता। हिन्दुस्तान का इतिहास मैंने पढा है। पहिले से ही आपके इतिहास मे राजभक्ति का बडा महत्व रहा है। आपके पुराने उपदेशो मे और ग्रन्थो मे देश-प्रेम का नाम तक नही मिलता। हिन्दुस्थान जिस समय स्वतन्त्र था, उस समय यदि कोई विदेशी-आक्रमण उस देश पर होता, तो आप लोग अपने राजा के लिए लडा करते, देश के लिए नही। आपकी राष्ट्र-भक्ति राजभक्ति पर केन्द्रीभूत हो जाने के कारण जो भी राजा आता, आप उसे ही अपना राजा समझते, राजधर्म के अनुसार यह राजभक्ति क्या है, यही हम लोग नही समझ पाते। हमारी भक्ति केवल अपने देश के प्रति ही होती है। हमारा शासन चाहने वाला हमारे द्वारा चुना गया एक प्रेसीडेन्ट होता है। वह यदि हमेशा के लिए रहता, तो उसके प्रति हमारे हृदय मे जो भावनाएँ आज है, उनका रूपान्तर राजभक्ति मे हो जाता। परन्तु वह हमेशा बदलता रहता है। इसलिए हम प्रेसीडेन्ट-भक्ति के शिकार नही हुए और इसीलिए हमारी देशभक्ति विशुद्ध और एकतत्र रही।"

प्रजातत्र राज्य-प्रणाली के बारे मे वह बहुत देर तक बातें करती रही। वह वर्णन करते समय उसे जो उल्लास आया था, उसे देखकर शिधू के मन पर बडा विलक्षण प्रभाव पडा। सामाजिक विषयो पर उन दोनो मे कोई चर्चा न हुई। व्यक्ति के लौकिक प्रपच की अपेक्षा राष्ट्र के प्रपच मे ही उनका मन पूर्ण रूप मे रंग गया था।

उसके सानिध्य से तात्कालिक उत्पन्न हुई वैयक्तिक वासनाएँ शिधू के हृदय से क्रम-क्रम से विलुप्त हो गयी। जब उसे मालूम हुआ कि कृतज्ञता को महसूस करने के कारण ही वह उसके प्रति इतनी श्रद्धा

दिखा रही है, उस समय उसके हृदय मे क्षण-भर के लिए जो वैयक्तिक वासना उत्पन्न हुई थी, वह सहज ही नष्ट हो गयी ।

उससे विदा लेकर मादेलीन चली गई। इसी समय माधवराव आया । जा रही मादेलीन पर उसकी नजर पड गई थी ।

"शायद फिर आई थी वह छोकरी !"—माधवराव बोला ।

माधवराव के इन उद्‌गारो को सुनकर शिधू को दुख हुआ । वह बोला—"ऐसा क्यो कहते हो माधवराव ? अपना घर-बार छोडकर घायल सिपाहियो की सुश्रुषा करने वह इतनी दूर अकेली आई है । क्या तुम्हारी दृष्टि मे उसके इस स्वार्थ-त्याग का कोई मूल्य नही ? हम भी लडाई पर आये है। पर हम सेवा करने नही आये हैं । पैसा कमाने आये है, पेट के लिए आये है। वहा हमारा आधी रोटी से पेट नही भरता था, इसलिए उसे चौगुनी पाने के लिये आए हैं। लालची की तरह हम इस रणभूमि पर आये हैं । क्या यहाँ हम अपने देश के लिये लड रहे है ? लडाई शुरू हुई यूरोप मे और उसकी आँच लगी एशिया को । पर हिन्दुस्तान से उसका क्या सम्बन्ध है ?"

माधवराव शर्मिन्दा हो गया और बोला—"सच है। कम-से-कम मेरे बारे मे तो, यह जरूर सच है । मैं यहाँ सिर्फ पैसे कमाने की आशा लेकर आया हूँ । मुझे विदेशो मे घूमने का भी शौक है । सरकार के खर्च से विदेश घूमने का यह मौका मिला, तो मैंने उसे हाथ से न जाने दिया। पर घर से इतनी दूर आने का जो साहस किया है, वह सिर्फ पैसे कमाने के लिए ही किया है। हिन्दुस्तान मे पन्द्रह रुपये की नौकरी पाने के लिए मै दो साल तक सिर पटकता रहा, पर नौकरी न मिली और यहाँ आते ही सवा सौ रुपये महीने की नौकरी मिल गई ! ऊपर से रहना-खाना-कपडा सब मुफ्त ! इसके लिए गाँठ से एक कानी कौडी भी खर्च नही करनी पडती । माफ करना, जोशी ! हमारी यह महाराष्ट्रीय वृत्ति स्त्रियो के बारे मे हमेशा बडी संकुचित होती है । दुनियाँ के व्यवहार मे निःसकोच घूमने वाली स्त्री को जब हम कही देखते हैं, तो उसके बारे

मे हम कुछ भी अनाप-शनाप उद्‌गार निकालने लगते है। आज तुम्हे वचन देता हूँ कि भविष्य मे स्त्रियों के प्रति ऐसी सकीर्ण-हृदयता मैं कभी नही दिखाऊँगा।

छावनी की हलचले शुरू थी। उनके बारे मे बाते करता हुआ माधवराव बहुत देर तक बैठा था। उसके जाने पर शिधू मादेलीन की बातो का विचार करता हुआ बिस्तर पर पडा रहा।

खून की धार

लगभग एक सप्ताह के पश्चात शिधू को अस्पताल से डिस्चार्ज मिला। उसे शेखसाद के फील्ड-आफिस जाने का हुक्म मिला था।

जाते समय जब वह माधवराव से विदा लेने गया, उस समय बेचारे माधवराव का कंठ एकाएक भर आया। जब तक शिधू अस्पताल में था, तब तक उन दोनो मे काफी घनिष्ठता हो गई थी। दोनो का दर्जा एक ही होने के कारण माधवराव शिधू से सभी बाते दिल खोलकर कह सकता था। उस छावनी मे जो अन्य महाराष्ट्रीय थे, वे प्रायः सभी आफिसर थे या डाक्टर थे। इसलिए माधवराव की उनसे घनिष्ठता होना सभव न था और इसीलिए शिधू जिस समय वहाँ से हमेशा के लिए जाने लगा, उस समय माधवराव को सूना-सूना सा लगने लगा।

मादेलीन से विदा लेने के लिए शिधू को जाना आवश्यक ही था। माधवराव भी उस समय उसके साथ था। उसे टालना शिधू के लिए सभव न था।

शिधू बडे असमजस मे पड गया। मादेलीन से विदा लेते समय यदि फ्रान्स जैसा ही यहाँ भी हुआ, तो माधवराव अपने मन में क्या सोचेगा ?

जी कडा करके वह मादेलीन से मिलने गया। मादेलीन को मालूम हो गया था कि शिधू को अस्पताल से डिस्चार्ज मिल गया है और अब वह अपने काम पर लौट रहा है। पहिले दोनो ने हाथ मिलाये। इसके बाद शिधू ने मादेलीन से कहा—"मैंने नही सोचा था कि अब हम कभी फिर मिल सकेगे। पर हम मिल ही गये। आगे की क्या कह सकते हैं ? मैं फील्ड आफिस जा रहा हूँ। वहाँ से जो समाचार आ रहे हैं उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ बहुत ज्यादा खतरा है। किस पर कौन सी

आपत्ति आ जाए कोई कुछ नही कह सकता। अगर बचकर जिन्दा यहाँ लौट आए और तब तक आप भी यही रही, तो भेट जरूर होगी। वरना···"शिधू को आगे शब्द नही सूझे।

" वरना हमारी मुलाकात मन-ही-मन मे होगी या कि भावुक लोग जैसा कहते है, अगर कही स्वर्ग है तो फिर स्वर्ग मे होगी।" मादेलीन बोली।

"ऐसा क्यो कहती हो मादेलीन !"— माधवराव बोला— "ऐसी अशुभ बात मन मे क्यो लाती है ? हम यही क्यो न सोचे कि सब बाते ठीक ही होगी। कुछ दिनो के बाद यह लडाई बन्द हो जाएगी। यहा की छावनियाँ उठ जायेगी। और हमारा हिन्दुस्तान देखने के लिए आप भी हमारे साथ हिन्दुस्तान चलेगी। ऐसी बात हम क्यो न सोचे ?"

"मैंने वह इसलिए कहा, क्योकि यह लडाई है !"—मादेलीन ने कहा—"रणभूमि पर मृत्यु की याद हमे पहिले रखनी चाहिए जिससे हमे फिर निराश होने का भय नही होता। आप जैसा कहते है यदि वैसा हो जाए तब तो आनन्द ही है। पर यदि न हुआ खैर, छोडिये भी ये बाते। विदा के वक्त इन विचारों की क्या जरूरत ?"

तीनो की पलके गीली हो गयी थी। विदा लेकर शिधू जाने लगा तो उस समय उसका हृदय धडक रहा था।

सौभाग्य से बेलजियम-फ्रन्ट की पुनरावृत्ति यहाँ नही हुई।

वह जहाज मे बैठा। उस समय वह कुछ खिन्न हो गया। बेलजियम फ्रन्ट की पुनरावृत्ति की लालसा उसके हृदय मे थी। पर वह माधव के कारण न हुई। उस समय यह उसे अच्छा लगा था, परन्तु बाद मे, उस आकाँक्षा की पूर्ति न होने के कारण उसे दुख हुआ।

उसके सामने जो प्रश्न था, वह यही था कि क्या मादेलीन का स्वभाव बदल गया या कि उस तरह का स्वागत सिर्फ उसकी मातृभूमि पर ही सभव था ? पराये मुल्क मे आने के कारण क्या उसने अपने आचार-विचार बदल दिये या कि उसकी भावनाएँ भिन्न दिशा मे मुड

गयी ? या कि माधवराव उसके साथ था, सिर्फ इसीलिए यह बात न हुई ?

शँखशाद्र के फील्ड-आफिस मे आकर जब वह दाखिल हुआ, तब यह देखते ही कि अर्जुन अब भी वहा है उसका हृदय भर आया। अर्जुन दौडता हुआ ही उसके पास गया और उसने कसमसाकर उसे अपनी भुजाओ मे भर लिया।

"मेरी जोखूमाई ने मेरा पटेल अत मे लाकर मेरे हवाले फिर कर दिया।" अर्जुन लगातार उसके चेहरे की ओर टकटकी लगाये देखता हुआ बोला—"मैंने यहाँ दिन कैसे काटे, इसकी तुम्हे कोई कल्पना नही हो सकती। यहाँ कौन था जो मुझे तुम्हारी खबर देता। अपने गाँव की खबरे यहाँ मिल सकती है, परन्तु यहाँ से दो मील दूर उस अस्पताल से खबर पाना बडा कठिन है। रोज मन-ही-मन छटपटाता था। व्याकुल हो रहा था। जोखूमाई की मनौती मानता था। अन्त मे मेरी माई ने मेरी पुकार सुन ली और तुम अच्छे होकर फिर यहाँ आ गये। यहाँ तुम्हारे स्थान पर एक ईसाई बाबू आया था। उसने मेरी नाक मे दम कर दिया। मुझे इतना तग किया कि तुम से क्या कहूँ। वह मेरी बोली नही समझता था और उसकी भाषा मेरी समझ मे नही आती थी। कहता था कि मराठी जानता है। पर यह भी नही जानता था कि "श्री" क्या होती है। बडी धूम मचा रखी थी उसने यहाँ। अगर किसी पत्र पर लिखा पता उससे पढते न बनता, तो वह उस पत्र को ही फाडकर फेंक देता। सिपाही बेचारे रणभूमि पर रहते है। रात-दिन मौत की छाया उन पर फैली रहती है। वे घर के पत्र के लिए कितने उत्सुक रहते हैं यह हमी जानते है और वह चाडाल यहाँ बैठकर जब उनके पत्र फाडने लगता तो मुझे ऐसा लगता जैसे कोई मेरा कलेजा ही फाड़ रहा है। खदको मे पडे सिपाही घर के पत्रो की ओर कितनी आशा लगाये बैठे रहते होगे, इसकी उस दुष्ट को क्या कोई कल्पना ही न रही होगी?"

"अजी, छोडो भी।" शिघू बोला—"अब तो मै आ गया हूँ न ?

अब सब ठीक हो जाएगा । अब किसी को कोई असुविधा न होगी ।"

अर्जुन को अस्पताल का हाल सुनाने मे शिधू का वह दिन गुजरा । दूसरे दिन से नित्य का डाकखाने का काम शुरू हो गया, वही पत्रो का, पार्सलो का और मनीआर्डरो का बँटवारा । उस रूखे जीवन से शिधू ऊबने लगा । उसे लगने लगा, इससे तो बीमार होकर अस्पताल मे पडे रहना ही अच्छा ।

लडाई पर आये इतने महीने हो गये थे, पर उसके अन्तरतम की इच्छा पूरी होने का मौका अभी तक उसे नही मिला था । इस पर वह विचार करता । अर्जुन से एक दिन उसने कहा—"तुम पलटन में सिपाही थे, इसलिए लडाई पर आये । पर मैं यहाँ क्यो आया, यह मैं स्वय नही समझ पाता । यह सच है कि यहाँ मुझे वहाँ की अपेक्षा वेतन अधिक मिल रहा है । पर सिर्फ अधिक वेतन पाने के हेतु से ही मैं यहाँ नही आया हूँ । मुझे प्रत्यक्ष लडाई पर जाना था इसलिए आया । पर यहा लडाई कहाँ है ? लडाई के वर्णन पढकर मैंने अपने मन मे उसकी कल्पना का जो चित्र बनाया था, वह चित्र मैं यहाँ नही देख रहा हूँ । तुम मोरचे पर गये थे । खदको मे बैठकर लडे थे । कम से-कम तुम्हे यह सतोष तो है ।"

"मुझे सतोष है ?"—अर्जुन हँसता हुआ बोला—"वह कैसा सतोष कहाँ है, यह हमे आँखो से दिखता नही । बदूक चलाने का हुक्म मिला कि बदूक चला देते है । इसके परे हमारी मर्दानगी नही जाती । हवाई जहाज हमारे सिरो पर मँडराते रहते हैं । कभी-कभी ऊपर से बम भी बरसा देते हैं । परन्तु जब तक शत्रु अपने सामने न हो, तब तक लडाई मे रग नही चढता । कोई कहते है कि आमने-सामने खडे होकर भी हुई लडाई हुई थी । एक दूसरे के सीने मे बागनेट घुसेडे गए थे, ऐसा भी कोई कहते है । पर यह भाग्य मेरे हिस्से मे नही आया । इसलिए मेरे शरीर मे भी जो खुमखुमी है वह अभी तक शान्त नही हुई । और अब तो उन्होने मुझे डाकखाने मे डाकिया बनाकर भेज दिया है । यहाँ

तुम हो इसलिए खुश हूँ। वरना मैं तो भाग जाता एक दिन इस लडाई से ?"

अर्जुन बके जा रहा था। पर शिधू के कानो मे उसकी बाते पड़ रही थीं या नही, उसका मन अन्यत्र ही भ्रमण कर रहा था। मादेलीन द्वारा बतायी गयी देश-भक्ति और राजभक्ति की परिभाषाये उसके मनः चक्षु के सामने झूल रही थी। देशभक्ति और राजभक्ति दोनों मे जो भेद है उसके कारण भिन्न-भिन्न व्यक्तियो के मन मे राष्ट्रीयता की प्रस्थापना किस प्रकार भिन्न-भिन्न रूप मे होती है, इसका वह विचार कर रहा था। बिना राजभक्त हुए कोई देशभक्त कैसे हो सकता है, इसका वह निराकरण न कर पाता। छत्रपति शिवाजी का जमाना उसकी नजरों के सामने मूर्त हो उठा। पेशवाओ का इतिहास तो अभी हाल ही का था। लोकमान्य तिलक द्वारा महाराष्ट्र मे आरम्भ किये गये आन्दोलन का शिवाजी के नाम पर ही सूत्रपात हुआ था। यदि अत्यन्त प्राचीन काल की ओर दृष्टिपात किया जाए, तो हम देखते है कि जब महाराष्ट्र का शासन देवगिरी के यादव करते थे तब भी महाराष्ट्र की निष्ठा यादव, भोसले और पेशवाओ के घरानो के प्रति थी। सिर्फ महाराष्ट्र के बारे मे नही, बल्कि अखिल हिन्दुस्थान मे राजभक्ति की बाते बोली जाती थी। पर ये नाम अलबत्ता छोड दिये जाते थे। हिन्दुस्थान मे हो या महाराष्ट्र मे हो, किसी नये प्रकार की शासन-प्रणाली की निर्मिति के विषय एक अस्पष्ट-सौ कल्पना साधारण जनता के सामने थी।

प्रजातत्र राष्ट्रो के बारो मे हमे जो कुछ थोडी-सी जानकारी थी,उस मे यह राष्ट्रभक्ति किस मध्य-बिन्दु पर केन्द्रित होती थी, इसकी निश्चय रूप से शिधू की कोई कल्पना करते न बनती थी। वह सब उसने सिर्फ इतिहास मे पढा था। अनुभव जन्य ज्ञान की थोडी भी झलक न होने के कारण प्रजातंत्र राज्य मे राज्य-निष्ठा के लिए मध्यवर्ती सस्था कौन सी है, इसका निर्णय सामान्य जनता अभी तक नही कर पाई है, यही शिधू को लगा।

शिधू ने सोचा इन सब बातो का विचार करने की मुझे क्या जरूरत ? डाकविभाग के एक नौकर की हैसियत से मै यहाँ नौकरी बजा रहा हूँ। हिन्दुस्थान लौटने पर भी यही काम करूँगा, प्रमोशन लूँगा और फिर बाद मे पैशन !

यह तनख्वाह कौन देता है,—प्रमोशन देना किस के हाथ मे है, पैशन किस की तिजौरी से आती है,—यह सब जानने की हमे आवश्यकता क्या है ? परिवार की परवरिश करना हमारा कर्त्तव्य है और इस कर्त्तव्य का पालन करने का साधन यह नौकरी है। जब तक तनख्वाह मिलती है, पैशन मिलती, है तब तक देने वाला कौन है, यह जानने माथापच्ची हम क्यो करे ?

नौकरी के लिए ही मै लडाई पर आया हूँ। लडाई पर आने के कारण मेरी तनख्वाह कुछ गुनी अधिक बढ गयी हे। चार पैसे बचाने का अवसर मिल गया है। फिर यह लडाई कौन, किस लिए और क्यो लड रहा है, इसकी पूछताछ करने की हमे जरूरत क्या ?

उसने विचार करना कुछ समय के लिए छोड दिया। पिछले आठ-दस साल से हिन्दुस्थान मे चल रहे आन्दोलन उसकी नजरो के सामने मूर्त होने लगे—। उस समय के समाचार पत्र, उनमे छपे लेख, उन लेखो के लेखको पर हुए राजनैतिक मुकदमे, उन लेखको को मिली सजाएँ, उन सजाओ के कारण अखबारो का प्रकाशन बद हो जाना, बग भग का आन्दोलन, अलीपुर बम केस, कलकत्ता मे चल रहे आन्दोलन, विलायती चीजो के बहिष्कार की धूम और लोकमान्य तिलक के जेल जाने के बाद आन्दोलन का ठडा पड जाना—ये सब बाते उसे याद आने लगी। मुझे एक नौकर को क्या जरूरत इन बातो से मन को इस तरह समझाने की कोशिश करने लगा। पर मन न सुनता था।

अपने देश के लिए खून बहाने वाले विदेशी लोग अपने सकट के समय अपनी मदद के लिए आये इस उपकार-भार से उऋण होने के लिए कोई तनख्वाह न लेकर, प्रमोशन की अपेक्षा न करके, पैशन की

थोडी भी इच्छा न रखके, मादेलीन मेसोपोटामिया की समर-भूमि पर क्यो आई ? वह धनी नही थी। तुलना करके देखा जाए तो उसकी और शिघू की पारवारिक स्थिति प्रायः एक सी ही थी। ऐसा होते हुए भी वह इस व्यर्थ की झझट मे क्यो पडी ? नौकरी के हेतु से वह निश्चय ही लडाई पर नही आयी थी। कुछ समय तक वह सरकारी नौकरी कर रही थी इस मे शक नही। पर वह करती थी"अपनी सरकार" की नौकरी। पेट के लिए नही। उसके स्वदेश पर सकट आ गया था, इसलिए। पर उस नौकरी को भी छोडकर इतने मील दूर आकर वह हिन्दुस्थानी सिपाहियो के जख्म क्यो धो रही है ? हैजा के रोगियो के दस्त के बेडपेन क्यो उठा रही है ?

उसने अपने मन से पूछा—क्या हिन्दुस्थान की कोई यमुना, सरला या गोदावरी इन कामो को करने के लिए तैयार होती ? मेसोपोटामिया की समर-भूमि पर एक भी हिन्दुस्थानी स्त्री नर्स होकर नही आयी थी।

"क्यो नही आयी ?"—वह ओठ चबाता हुआ अपने आप से पूछने लगा। क्या हुआ हिन्दुस्थानी स्त्रियो को यहा न आने के लिए ? उन्हे क्यो नही आना चाहिए ? लडाई का अनुभव उन्हे भी क्यो नही लेना चाहिए ? आगे यदि लडाई हिन्दुस्थान मे हुई तब वे क्या करेगी ? क्या यूरोपियन नर्सो का मुह ताकेगी ? विलायत से नर्से बुलाई जायेगी ? या कि मर्दो को ही ये काम करने होगे ? हमारी हिन्दुस्तानी स्त्रियाँ आलस्य मे पडी हुई सिर्फ चूल्हा और चक्की सम्हालने मे ही अपनी जिन्दगी काट रही हैं। क्या उन्हे ऐसी जिन्दगी पर शर्म नही आती ? मैं लडाई पर आया पर रमा को भी लडाई पर क्यो नही आना चाहिए ? अर्जुन पलटन मे नौकरी करता है। सुभद्रा को भी आकर बैडपेन क्यो न उठाना चाहिए ?

शिघू को लग रहा था कि सब लोगो को सब करना चाहिए। पर हिन्दुस्थान मे ऐसा कहाँ सोचा जाता था ? जिस समय शिघू हिन्दुस्थान की विलायत से तुलना करता हुआ बेचैन हो रहा था, उसी समय

हिन्दुस्थान के लोग लडाई की खबरे पढने मे तल्लीन हो गये थे। "अच्छा सबक सिखाया जर्मनी को" कहकर कोई हर्ष से तालियाँ बजाते। किसने किसको सबक सिखाया इससे इससे हमारा क्या संबध ? इस मे हमने क्या किया ? इस माथापच्ची से हमे क्या वास्ता ?

लडाई बन्द होने के कोई आसार नजर नही आ रहे थे। नयी-नयी परिस्थियाँ उत्पन्न हो रही थी। केरेन्स्की नाम के किसी नेता ने रूस के शासन की बागडोर अपने हाथ मे ले ली थी। इग्लैड और रूस की मित्रता भग हो गयी थी। तुर्किस्तान से खलीफा को निकाल बाहर कर दिया था। किस राजनिष्ठा से प्रेरित होकर तुर्क लोग अब लडते ? किस खिलाफत के लिए वे अत्र अपने प्राण देते ?

शिधू को लगा क्या मजे की बात हो रही है। इस विशाल सिधु मे मैं एक बूंद के समान हूँ। दुनिया की इस उथल-पुथल मे मै क्या कर सकूँगा ?

पर मेरे जैसी अत्यन्त क्षुद्र करोडो बूंदे एक स्थान पर आकर यह सिधु निर्मित हुआ था। उस तूफान मे भी भिन्न भँवरे घूम रही थी। उन भँवरो की गति एक दूसरे से भिन्न दिशा मे जा रही थी।—छोटे-छोटे बाल्कन राष्ट्रो की उथल-पुथल हो गयी थी। लडाई समाप्त होने पर आस्ट्रेलिया, रूमानिया और सर्बिया के नाम भी रहेगे या नही, इसकी शका उत्पन्न हो गयी थी।

सारे विचार उसने अपने मस्तिष्क से निकाल डाले और मनी-आर्डर जनरल भरना शुरू किया।

जनरल टाऊनसेड ने कुतेल अमारा पर आक्रमण कर दिया था। घमासान लडाई होने की सभावना थी। शेखसाद से वह मोरचा अधिक दूर न था। वहाँ क्या होगा और क्या नही होगा इसकी सभी को चिन्ता हो रही थी। जनरल टाऊनसेन्ड द्वारा बोले गये इस धावे के बारे मे सेना मे दो मत थे। बहुतो की राय मे वह आक्रमण न करना चाहिए था।

समाचार आया था कि कुतेल आमारा घेर लिया गया है। पर वह समाचार किसी विश्वस्त सूत्र से प्राप्त नही हुआ था। साकेतिक भाषा मे तार धडाधड आ रहे थे। उनका अर्थ शिधू न समझ पाता। परन्तु इतना अंदाज उसे हो गया था कि परिस्थिति जरूर भयकर है।

यह मालूम हो जाने के कारण कि कुतेल आमारा मे भयकर लडाई होगी, अर्जुन बिल्कुल बेचैन हो उठा था। उसके साथी सिपाही वहाँ लडेगे और वह यहाँ पोस्टमैन बना बैठा था, इसे दुख हुआ।

मशीनगनो के फेरो और तोपो की गडगडाहटे लगातार कानो से टकरा रही थी शेखशाद की समूची छावनी पर अस्वस्थता के बादल छा गये थे। अत मे कुतेल आमारा को घेर लिये जाने का समाचार आ धमका। अब कोई शक ही न रहा था। दिन पर दिन बीत रहे थे और जनरल टाऊनसेन्ड के पास रसद पहुंचाना बन्द हो गया था।

शेखसाद से छावनी हटाने का हुक्म हो गया था और उसके अनुसार छावनी उखाडने का सारा प्रबन्ध भी हो चुका था। सर्वत्र गडबड मची हुई थी। हर आदमी अपना-अपना सामान बाँधने मे खो गया था। खीमे उखाडे जा रहे थे। सिर्फ पोस्ट-आफिस का खीमा उखाडने को बच रहा था।

आफिस के सारे कागज-पत्र शिधू ने समेट कर इकट्ठे किये। अपना सामान भी बाँधकर उसने एक तरफ रख दिया था।

इसी समय "घर्रघर्र" आवाज कानो मे पडी। ऐसा लगा किसी तरफ काफी घमासान मची है। अर्जुन दौडता हुआ शिधू के नजदीक आ रहा था। इसी समय एक बडा भारी बम उन दोनो के बीच मे आ गिरा। शिधू की आँखो के सामने चिनगारियाँ उडने लगी अर्जुन का क्या हुआ यह वह न समझ पाया। आँखे खोलने कि वह कोशिश करने लगा—पर सुधबुध खो गयी थी।

शिधू बेहोश होकर गिर पडा। उसके सिर से खून की धार बह रही थी।

आखरी धक्का

रमा बेचेन थी। करीब डेढ महीने से शिधू का कोई पत्र नही आया था। वही शिकायत सुभद्रा की भी थी। अर्जुन ने भी घर कोई पत्र न भेजा था।

समाचार पत्रो मे जो समाचार आते, उनमे भय और आशा का बडा विचित्र मिश्रण दिखायी देता। किसी दिन अत्यन्त भयजनक समाचार आ जाता, तो उसके दूसरे ही दिन अथवा एक दो दिन के बाद एक बडी विजय प्राप्त करने का भी समाचार आ धमकता। यह चक्र इसी प्रकार घूम रहा था, जैसे उसे कोई नियमपूर्वक चला रहा हो।

जब फौज के सफलतापूर्वक पीछे हटने के समाचार आते, तो इस पीछे हटने के पार्श्व मे कोई भारी पराजय छुपी होनी चाहिए, ऐसी प्रत्येक को शका होती।

सुभद्रा अब काफी लिख-पढ लेती थी। अपने पति का समाचार जानने के लिए समाचार पत्रो की खबरे पढने की उसे जो तीव्र उत्कन्ठा थी, उसके कारण उसने पढना बहुत जल्द सीख लिया था। लिखना सीखने के लिए अलबत्ता उसे बहुत अधिक समय लग गया। सुभद्रा के लिखने-पढने की गाँव मे चर्चा हुआ करती। समूचे कलबस्त गॉव मे लिख-पढ सकनेवाली नीच जाति की महिला एक भी न थी।

लेकिन रमा से शिक्षा पाकर सुभद्रा जब पढने लगी, तो आसपास के गॉव की स्त्रियॉ भी उससे केसरी पढवाकर लडाई के समाचार सुनने के लिए जानबूझकर उसके पास आने लगी। बाभन के घर जाकर समाचार पत्र की खबरे सुनने की अपेक्षा सुभद्रा से अखबार पढवाकर खबरे सुनना उन्हे अधिक आत्मीयता का लगता। दूसरे भद्र लोग जगह-जगह इक्ठ्ठा

होकर रोज समाचार पत्र पढते। पर जब गाँव के नीच जाति के लोग वहाँ आते, तो वे उन्हे वहाँ से भगा देते।

नीच जाति के लोगो को इस तरह भगा देने मे उन भद्र पुरुषों का कोई खास उद्देश्य न होता। परन्तु पढने के बाद उन समाचारों पर चर्चा करते। यह चर्चा वे नीच जाति के लोग सुनें और उस पर आलोचना करे यह उन्हें अच्छा न लगता।

परन्तु जब से सुभद्रा समाचार पत्र सुनाने लगी, तब से आस-पास के गाँव के नीच जातिवाले छोटे-बडे लोग यशोदा के घर आने लगे। यद्यपि यशोदा को यह पसन्द न था कि उसकी बहू लिखना-पढना सीखे, पर अब यह देखकर कि उसके अखबार पढने के कारण दूसरे गाँव के छोटे-बडे लोग उसके घर आने लगे है, उसे इसका अभिमान होने लगा।

सुभद्रा को भी इस पर गर्व होता। समाचार पत्र पढकर उसे समझने और पढकर दूसरो को सुनाने की उसकी पूरी तैयारी हो जाने के कारण सुभद्रा को रमा की यद्यपि अब जरूरत न थी, फिर भी लिखना-पढना उसे रमा ने सिखाया था और उसके इस उपकार को भूल जाने की कृतघ्नता सफेदपोशो की तरह सुभद्रा मे न थी। इसलिए रोज कम-से-कम एक बार उसके घर जाकर वह रमा से जरूर मिल जाती। उससे लडाई के बारे मे बाते करती।

शिधू के लडाई पर जाने के बाद से रमा की वृत्ति बिल्कुल बदल गयी थी। शिधू की सगति से वह बडी बातूनी हो गयी थी। पर अब उसकी यह आदत साफ छूट गयी थी। घन्टो यू ही मौन साधे वह घर के एक कोने मे बैठी रहती। जब गोपिका उसे इस तरह बैठी देखती, तो उस पर वह नाराज हो जाती। पर सास की इस नाराजगी का उसके मन पर कोई असर न होता। वह बिल्कुल एकान्त-प्रिय और कुढनी हो गयी थी। जरा जरा-सी बात पर वह चिढ उठती। गोपिका के मुह से यदि भूलकर भी कोई अनुचित या टेढा शब्द निकल जाता, तो वह क्रोध से उठा-पटक करने लगती।

उसके इस बर्ताव पर गोपिका नाराज न होती। रमा की मनः स्थिति को वह जानती थी। लडाई पर जो गया था वह जिस तरह उसका बेटा था, उसी तरह रमा का पति था। परन्तु रमा कुढती रहे और गोपिका के मन पर कोई खास परिणाम न हो, इसका कारण विचारवान लोग समझ सकते थे। रमा की अपेक्षा गोपिका ने कितने ही अधिक बसन्त देखे थे। सब प्रकार के प्रसगो से वह गुजर चुकी थी। उसने विपत्तियो के अनेक धक्के खाये थे। आपत्तियो के उन आघातो से उसका कलेजा कडा हो गया था।

रमा की बात यह न थी। उसके जीवन का यह पहिला ही संकट था। वह यद्यपि अभी लडकी ही थी फिर भी जब से सयानी हुई थी तब से आपत्ति का एक भी धक्का उसे नही लगा था। उसे सास बडी सज्जन मिली थी। पति हमेशा खुशदिल था। पड़ोसी उससे स्नेह रखते थे। पति नौकरी करके कमाता था और उसके मनोरथ पूर्ण होते थे। इस तरह उसे सर्वत्र सुख ही सुख था इसलिए संकट को सह सके इतनी मजबूती उस कोमल लडकी के कलेजे मे अभी तक नही आई थी।

उस जमाने के हिसाब से वह एक कार्यक्षम स्त्री समझी जाती थी। उसकी उम्र अभी कोई अधिक न थी। विवाह होने के बाद थोडे ही समय मे प्रसन्न-मन पति का सहवास उसे अखन्ड रूप से प्राप्त हुआ था और इसीलिए यह वियोग उसे अत्यन्त दुःसह हो गया था।

परिस्थिति का यह लेखा लेने लायक दूर-दृष्टि गोपिका मे होने के कारण उसने रमा के स्वभाव में हुए इस परिवर्तन के लिए उसे कभी नहीं दुखाया। लडाई मे घायल होकर कुछ लोग लौट आये थे। उन लोगों से लड़ाई का हाल उन दोनों परिवारो को मालूम हो गया था। पर उस पर से शिवू और अर्जुन का कोई अन्दाज नही लग सकता था। लड़ाई से लौटे हुए लोग, वहाँ उन्हें जो कष्ट होते हैं, उनके बारे मे प्राय: कुछ नही बताते। ऐसे लोग शत्रुदल की महत्ता का वर्णन करने में जितनी उत्सुकता दिखाते हैं, उतनी ही अपने दल को जोरदार बताने के

लिए अनाप-सनाप गप्पें भी हाँकते हैं। पलटन के सिपाहियों और उनकी भाषा से जो लोग परिचित हैं, उन्हें इसकी कल्पना काफी अच्छी हो सकेगी।

पर उन गप्पों से रमा डर जाती। जब वह अपने मन में यह सोचती कि ये लोग जो वर्णन सुना रहे हैं उसमे सत्य का अश कितना है और अतिशयोक्ति कितनी है और उसे अपने विवेक की कसौटी पर कसकर देखती, तो उसका कलेजा भय से काँप उठता। यह बताने के लिए कि उन्होंने लडाई मे बड़ा जौहर दिखाया, वे प्रतिकूल परिस्थितियों के जो वर्णन करते, वे सचमुच बडे भयानक रहा करते। वे भयानक वर्णन ही रमा और सुभद्रा के ध्यान मे उलझ जाते।

एक तरफ अखबार की खबरें और दूसरी तरफ घायल होकर लौटे सिपाहियों को बाते, इन दोनो के कारण रमा और सुभद्रा दोनो के मनो पर एक ही प्रकार का असर पडता।

एक दिन कुतेल अमारा के घेर लिए जाने का समाचार अखबार में आया। शिघू और अर्जुन दोनो वहीं आसपास कहीं हैं, ऐसा दोनों का अनुमान था। इसलिए अखबार में जब उन्होने पढा, तो उनका हृदय हिल गया। और ऊपर से कोई डेढ महीने से उनके कोई पत्र भी नहीं आये थे। दोनो को पक्का विश्वास हो गया कि जरूर कोई नई विकट विपत्ति उन पर आ पडी है। उस दिन से उन्होने अपने खाने-पीने पर ध्यान देना छोड दिया। सच बात क्या है इसकी यथार्थ कल्पना यशोदा को न थी और गोपिका को भी न थी, परन्तु अपनी बहुओ को पहिले की अपेक्षा अधिक बेचैन देखकर वे भी मन-ही-मन घबरा उठी थी।

उस समय के लगभग उन्हे पता चला कि एक सिपाही बसरा से बीमार होकर वापिस अपने गाँव आ गया है। उनके गाँव के नजदीक के ही एक गाँव मे वह आया था। उसे बुलाने की उन्होने कोशिश की। पर स्वास्थ्य अच्छा न होने का उसने बहाना बना दिया। बहाना कहने का मतलब यही कि वास्तव मे वह इतना बीमार न था कि आ ही न

सकता। मामूली थकावट थी उसे, पर अच्छा हो गया था। दोनो सासे और बहुएँ उससे मिलने उसके गाँव गयी।

पहिले तो इधर-उधर की दून झाडने लगा। अपनी बातो पर वह काफी नमक-मिर्च लगा रहा था। किसी भी तरह मुख्य बात पर न आता। उसने शिधू ने भेट होने की बात बताई। पर यह बताना कि वह कहाँ है और किस हालत मे है, वह टालने लगा। इस विषय मे जब उससे सीधा प्रश्न पूछा जाता, तो वह दूसरी ही बात छेड देता। अर्जुन से उसकी भेट कभी नही हुई थी। यह देखकर कि मुख्य बात बताने मे वह टाल-मटोल कर रहा है, पहिले से ही भयभीत हुई बेचारी वे औरते और भी अधिक भयभीत हो गयी।

बहुत दिनो तक अस्पताल मे था। उसे हैजा हो गया था। उस समय का हाल वह बता रहा था। अस्पताल मे सामान की जो चोरी हुई थी, उसकी जैसी तहकीकात हुई थी और उसमे किन-किन अफसरो को क्या-क्या सजाएँ मिली थी उन सब बातो के बारे मे वह बडे विस्तारपूर्वक बताकर जब शिधू का हाल बताना टालने लगा, तब गोपिका ने उससे बिल्कुल सीधा प्रश्न पूछा।

वह बोली—"अब अस्पताल की बाते बस करो। मेरा शिधू तुम्हे कहाँ मिला था, कब मिला था और किस हालत मे मिला था, यह पहिले बताओ।"

वह बोला—"तुम सुनकर घबरा जाओगी, इसीलिए मैं टाल कर रहा था। वैसे घबराने की कोई खास बात नही है। मैं जिस तरह हैजे से बीमार था, उसी तरह शिधू भैया को भी हैजा हो गया था। वहाँ का खजूर बडा खराब होता है। यही बात उनके साथ भी हुई। पर वे हैजे से बच गए। जब वे अच्छे हो गए, तो उनके बीमार पडने का हाल क्यो कहूँ, इसलिए मैं यह बताना जानबूझकर टाल रहा था। तुम्हारी बातो से ऐसा नही प्रतीत हुआ कि तुम उनकी बीमारी के बारे मे जानती हो। इसीलिए मैंने अभी तक टाला।

"अब तो अच्छा चलने-फिरने लगा है न ?"—गोपिका ने पूछा।

"चलने-फिरने लगे हैं ?" —वह सिपाही दाँत निपोरकर बोला—"अजी माता राम, यह क्या पूछती हो कि चलने-फिरने लगे हैं ? वे तो अब उससे भी आगे बढ गये है।" इतना कहकर हँस पडा।

उसकी हँसी पर गोपिका चिढ उठी। बोली—"ठीक से क्यो नही बताते ? जो भी सो साफ-साफ कह डालो न। मुझ को दुख न होगा और न उसकी घरवाली को भी को दुख होगा। कुशल से हो, तो हमें पूरा सतोष है। लडाई पर जाने के बाद आखिर मनुष्य अधिक करेगा क्या—अडे खाएगा, माँस-मछली खाएगा, इससे अधिक और क्या चैन करेगा ? बहुत ही हुआ तो शराब पीने लगेगा। यही न ? पीता होगा शराब ? पिये, मुझे इसका कोई दुख न होगा।"

'नही-नही ! ऐसी कोई बात नही है, बूढी माँ !" वह सिपाही बोला—"पहिले जब वे फ्राँस मे थे तब वहाँ माँस-मच्छी खाते थे। बीमार हो कर जब अस्पताल मे भरती हुए तो उनकी वह आदत छूट गयी। डाक्टरो ने ही छुडवा दी। बात यह थी कि फ्राँस मे मच्छी खाना ठीक था। वहा इसका इतजाम भी बढिया था। उन्हे पीन की आदत भी नही लगी। मै जो कहता हूँ, वह बात ही दूसरी है।"—ऐसा कह कर वह मन-ही-मन हँसता हुआ चुप हो गया।

सास और बहू दोनो यह सुनकर घबरा-सी गयी। माँस-मच्छी नहीं खाता, शराब भी नही पीता, तो फिर और क्या बात है ?

"अब भैया जो कुछ भी हो, सो साफ-साफ बता दो। हमे क्यों परेशान करते हो ? हमारे प्राण बिल्कुल गले तक आ गये हैं।"

वह सिपाही सिर खुजाता हुआ बोला—"बात यह है। जब वे बीमार पडे थे, तब उनकी सेवा के लिए एक नर्स आती थी। नर्स तो तुम समझती हो न ? नर्स याने दवा देने वाली स्त्री जिसे हम दायी कह सकते है। वह हिन्दुस्तानी नहीं थी। यूरोप की एक गोरी लड़की थी, याने मेम थी। उसने शिबू भैया की बडी सेवा की। डाक्टर कहा करते कि

उस गोरी लडकी की सेवा से ही उनकी जान बची, वरना उनकी हालत बहुत खराब थी। उनके बचने की आशा ही डाक्टरो ने छोड़ दी थी। पर उस मेम ने कमाल कर दिया। शिधू भैया को अपनी सेवा से मौत के मुँह से खीच लिया। जब शिधू भैया अच्छे हो गये, तो उस मेम को अपने साथ लेकर रोज घूमने जाने लगे। अँग्रेजी मे जाने उससे क्या-क्या बाते करते। मै तो समझता नही था। मेमो की आदत ही होती है, चाहे जिस मर्द के गले पड जाना, उसके साथ अकेली घूमने जाना। हाथ मे हाथ डाले सब के सामने घूमने जाते। इसमे चोरी से या छिपकर कुछ न होता। वहाँ आखिर चोरी थी किसकी ? पहचान का कोई था ही नही। दोनो खूब हँसते-खेलते और मौज करते। हमारा शिधू भैया अच्छा सुन्दर तगडा जवान है और फिर उसे मिल गयी सुन्दर गोरी जवान मेम। थोडी देर खेला उसके साथ तो क्या हो गया ? मेरी भी इच्छा होती, पर मुझ जैसे काले-कलूटे की ओर वे मेमे कैसे आकर्षित होती ? वहाँ की आबहवा मे शिधू भैया साहब की तरह गोरे हो गये है। इसलिए वह उन्हे साहब ही समझती। अच्छे होने के बाद जब उन्हे शेखसाद जाने का हुक्म मिला, तब मैं भी था उसी अस्पताल मे। मेरी उनसे पहिले की कोई जान-पहचान न थी। वे भी मुझे नही पहचानते थे। इसलिए मैंने सोचा अपना परिचय व्यर्थ क्यो दूँ। उस समय उन दोनो को एक-दूसरे की बिदा लेते देखा, बस। अब और क्या बताऊँ ? उसे कहने की भी क्या जरूरत ? ऐसा तो होता ही रहा है। इसलिए मै नही कह रहा था। शिधू भैया अब चले गये है अपनी नौकरी पर और वह छोकरी अस्पताल मे नर्स का काम कर रही है। कौन उसे शिधू भैया के साथ जाने देता ? शेखसाद मे अगर अस्पताल होता तब जरूर वह अपनी वहाँ बदली करा लेती। उनके जाने के बाद उनके पलग की ओर देख-देखकर वह अपना रूमाल निकालकर आँखे पोछती रहती। मैं भी यह देखकर मन-ही-मन हँसता। ऐसा तो चलता ही रहता है बूढ़ी अम्मा ! आप लोग इसके लिये दु:ख न करे। यह सच है

कि मैंने अपने सामने उन्हे पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर नौकरी पर जाते देखा। मुझे छ महीने की छुट्टी देकर यहाँ भेजा इसीलिए मैं यहाँ आया। यदि मुझे छुट्टी न दी जाती, तो मुझे भी शेखसाद ही जाना पडता।"

एक ही बात को वह बार-बार दोहरा रहा था। इसी बात को बताने के लिए वह पहिले इतनी आनाकानी कर रहा था। पर अब उसी बात को अन्य बातो की तरह खूब नमक-मिर्च लगाकर विस्तारपूर्वक वर्णन करके कहने लगा।

अर्जुन के बारे मे कोई जानकारी न मिलने के कारण यशोदा और सुभद्रा उदास हो गयी और शिघू का समाचार इस रूप में प्राप्त होने के के कारण गोपिका और रमा उद्विग्न हो गयी।

रमा तो पगली जैसी ही हो गयी। पहिले वह बात उसे सच ही न लगती थी। जब यशोदा ने कहा कि यह पलटनवाला गप्पे हाँक रहा है, उस समय उसने अपने आप का उस समय तक के लिए समाधान कर लिया था।

गोपिका का शिघू पर पूर्ण विश्वास था। वह बचपन से अत्यन्त धर्मभीरु था। पर कौन कह सकता है, भिन्न-भिन्न परिस्थिति मे मनुष्य मे क्या परिवर्तन हो जाएँगे। इस के बारे मे छाती पर हाथ रखकर कोई कुछ नही कह सकता।

गोपिका को थोडी देर के लिए बुरा लगा और थोडी ही देर मे वह उन सब बातो को भूल भी गयी। माता की ममता को परिस्थितियो के कारण ऐसी बातो का कोई महत्व नही मालूम होता।

परन्तु रमा के मन को काफी धक्का लगा। शिघू के स्वभाव से वह परिचित थी। उसकी वृत्ति को ठीक से वह पहचानती थी। इतना लबा विछोह, पत्नी से भेट की आशा कम, इस परिस्थिति मे उसकी एक मेम से भेट हुई और वह मुझे भूलकर उसके पाश मे फँस गया। यह सोचकर वह अत्यन्त उदास हो गयी। इस बात पर विश्वास रखूँ या न रखूँ, यही वह बार-बार सोचती, परन्तु जवान आदमी का क्या भरोसा ? यह

शंका मन मे पैदा हुई और वह पुनः उद्विग्न हो गयी ।

कुतेल अमारा के घेर लिये जाने का अखबार मे वर्णन आया। थोडे ही दिनो मे कर्नल टाऊनसेन्ड शत्रु की शरण गया और बहुत-सी सैनिक टुकडियाँ कैद कर ली गयी। अनेक सैनिक मार डाले गये। कई पलटनें भी खत्म कर दी गयी। ऐसी भयानक खबर अखबार मे छपकर आयी।

अत मे एक दिन पत्र भी आया। पत्र आये, पर वे शिधू और अर्जुन के पास से नही आये थे। वे पत्र आये थे कमाडिग आफीसर के आफिस से—

उन मे सरकार ने यह सूचना भेजी थी कि बम का विस्फोट होने होने से शिधू और अर्जुन की मृत्यु हो गयी।

पुनरागमन

विस्फोट होते ही सब तरफ धूल धूये के घने बादल छा गये और एक दूसरे को देखना असम्भव हो गया। कुछ समय के बाद दो तीन आदमी छिन्न-भिन्न दशा मे पडे हुए दिखायी दिये। डेरे नष्ट हो गये थे। ढेर लगाकर रखा हुआ सैनिको का सामान नेस्तनाबूद हो गया था।

थोडी देर के बाद उडी हुई धूल नीचे बैठी और धूये का बादल भी साफ हो गया। जो आदमी बच गये थे, वे एक दूसरे को अब देख सके। अर्जुन काफी होश मे था। उसके हाथ मे जख्म हो गया था। खून लगातार बह रहा था। वह जैसे-तैसे उठकर खडा हुआ और लडखडाता हुआ शिघू जहाँ पडा था वहाँ गया।

शिघू बेहोश था। उसके सिर से खून की धारा बह रही थी, अर्जुन ने उसकी नब्ज देखी, हृदय की जाँच की और उस समय उसका कलेजा टूट गया। उस धक्के से वह स्वय बेहोश होकर उसी के नजदीक गिर पडा।

कही से दौडते हुए डाक्टर आये। रेड-क्रास की गाडी भी आई। जल्दी-जल्दी डाक्टर गाडी से उतरे और जख्मियो की जाँच करने लगे। जो जीवित थे, उन्होने जख्मियो की पहचान कराई। सब को देखने के बाद डाक्टर ने निर्णय किया कि अर्जुन और शिघू दोनो मृत हो गये हैं।

लाश ढोनेवाली गाडियो मे लाशे लादी गयी। उसी गाडी मे शिघू और अर्जुन के मृत शरीर भी लाद दिये।

जैसे ही गाडी रवाना हुई, वैसे ही अर्जुन होश मे आया। उसी के निकट शिघू का निष्प्राण दिखनेवाला शरीर पडा था। अर्जुन से पुनः उसकी जाच की। उस समय उसे लगा कि अभी उसके हृदय मे धड़कन

हो रही है। वह चिल्लाने लगा, पर उसकी चिल्लाहट को सुनने के लिए वहाँ था कौन ? ड्राईव्हर ने सुना तो एकदम चीख उठा—"अरे बापरे, ये मुर्दे कैसे बोल उठे ? कही भूत तो नही हो गये ?"

अर्जुन ने ड्राईव्हर से चिल्लाकर कहा,—"मैं मुर्दा नही हूँ। बिल्कुल जिन्दा हूँ। तुम गाडी रोको।" ड्राईव्हर जोर से हँस पडा। पर उसने गाडी रोकी नही। वह बोला, "पहिले कबरस्तान पहुँचने दो, फिर देखा जायगा। अभी तुम मुर्दे की हैसियत से ही मेरे हवाले हो। जहाँ तुम्हे ले जाने का मुझे हुक्म मिला है, वही मे ले जाकर तुम्हे छोडूँगा। वही मेरी गाडी रुकेगी। अब अधिक गडबड मत करो। चुपचाप मुर्दे की तरह पडे रहो।"

अर्जुन बेचारा हताश हो गया। वह बार-बार शिधू की नबज देखता। उसकी गति और शक्ति धीरे-धीरे बढ रही थी। हृदय की धडकन भी स्पष्ट सुनाई पड रही थी। पर अभी तक वह आँखे नही खोल रहा था।

आखिर एक जगह गाडी रुकी और मुर्दाफरोश लाशे निकालने के लिए गाडी के पास आये। उनसे अर्जुन ने कहा—मै जिन्दा हूँ। और शिधू को भी बडी सावधानी से नीचे उतारने की उनसे विनम्र प्रार्थना की।

ड्राईव्हर की अपेक्षा मुर्दाफरोश अधिक दयालु थे। उन्होने शिधू को बडी सावधानी से उठाकर एक तरफ रख दिया। एक आदमी डाक्टर की खोज मे चल दिया।

डाक्टर के आने तक अर्जुन की जान मे जान न थी। वह बार-बार शिधू की नबज देखता, हृदय की धडक्न देखता और नाक के पास सूत रखकर देखता कि साँस चल रही है या नही।

अन्त मे डाक्टर आये। उन्होने दोनो की जाँच करके जीवित होने का निर्णय दिया और दोनो को अस्पताल मे भरती करने के लिए एक जहाज पर चढा दिया गया।

जहाज पर जो डाक्टर था उसने प्राथमिक इलाज करना शुरु किया। तब शिधू ने आँखे खोलकर चारो तरफ देखा। पर शक्ति उसमे न थी।

यह देखकर कि शिघू ने आँखे खोल दी हैं, अर्जुन के आनन्द का पारावार न रहा। इस खुशी मे वह स्वय अपना दुख भी भूल गया। उसी समय उसका जख्म भी बाँधा जा रहा था।

इलाज हो रहे थे। शिघू धीरे-धीरे होश मे आ रहा था। आँखे खोलकर वह इधर-उधर देखता, परन्तु उसकी आँखो मे जैसे प्राण नही थे। वे शून्य-सी लग रही थी। उनसे कोई सूचना नही मिलती थी। दृष्टि सन्न हो गयी थी। अर्जुन उसके कान के पास अपना मुँह ले गया और जोर-जोर से चिल्लाया। उस समय शिघू उस की ओर सिर्फ देखने लगा। उसकी मुद्रा से यह नही लग रहा था कि उसने अर्जुन को पहचान लिया है।

बेचारे अर्जुन के एकदम छक्के छूट गये। बसरा की अस्पताल मे जल्दी पहुँचने के लिए वह उत्कठित हो गया था।

अन्त मे जहाज मुकाम पर पहुँचा।

दोनो अस्पताल ले जाए गये। अर्जुन का जख्म ठीक से बाँध दिया। दूसरे जख्मियो की भी सुश्रुषा उसी समय की जा रही थी।

शिघू को अलबत्ता आपरेशन थियेटर मे ले गये। उसके सिर का जख्म काफी गहरा था। चोट उसके मस्तिष्क तक पहुंची थी। उसकी खोपडी को भी धक्का लग गया था। जख्म सी कर खोपड़ी जहाँ की तहाँ जमा दी गयी। शिघू को जिस समय वार्ड मे लाकर रखा गया, उस समय मादेलीन वहाँ आयी। शिघू की यह हालत देखकर उसके छक्के छूट गये। अर्जुन ने शिघू से मादेलीन के बारे मे सुना था। अन्दाज से उसने उसे पहचान लिया। परन्तु अर्जुन अँग्रेजी नही जानता था। वह हिन्दी मे बोलने की कोशिश करने लगा। परन्तु मादेलीन हिन्दी नहीं जानती थी। मादेलीन को यह बताने के लिए कि शिघू को जख्म कैसे हो गया, वहाँ कोई न था।

यह सुनते ही कि शिघू जख्मी होकर फिर अस्पताल मे भरती हुआ है, माधवराव एकदम दौडता हुआ आया। अर्जुन जोर-जोर से चिल्ला

रहा था—"अरे यहाँ कोई मराठी बोलने वाला नही है क्या ?"

"मैं हूँ न।" ही कहकर, जब माधवराव आगे बढा, तब अर्जुन ने उसे अपनी बाहो मे ही भर लिया।

बीती हुई सारी घटना अर्जुन ने माधवराव को कह सुनाई और माधवराव ने फिर वह सब हाल अँग्रेजी मे मादेलीन से कहा। वह सन्न हुई उसकी ओर लगातार देखती रही थी। माधवराव भी अस्वस्थ हो गया था।

शिधू ने आँखे खोली और एक बार सब की ओर निगाह फैकी। परन्तु उस दृष्टि मे पहचान न थी। अब अर्जुन ने उसे पुकारा, तब वह उसकी ओर ऐसा देखने लगा जैसे वह उसे कुछ पहचान-सा रहा है।

मादेलीन ने अर्जुन को इशारे से एक तरफ हट जाने के लिए कहा और अपने हाथो से शिधू की आँखे बन्द कर दी। फिर वह माधवराव से बोली—"इस समय इन्हे थोडी भी तकलीफ न दीजिए। मेरा ख्याल है कि विस्फोट का उनके मन पर असर हो गया है। इन्हे पूर्ण विश्राम की आवश्यकता है। कृपाकर इन्हे अभी कोई कष्ट न दे,"

दिन पर दिन बीत रहे थे। परन्तु शिधू होश मे न आ रहा था। अर्जुन का जख्म करीब-करीब अच्छा हो गया था। उसका हाथ काट दिया गया था। उसका एक हाथ इसलिए बिल्कुल बेकार हो गया। पलटन से उसे डिसचार्ज दे दिया गया और उसे हिन्दुस्तान वापिस भेज देने का हुक्म भी आ गया।

अर्जुन पागल सा हो गया। यदि मुझे वापिस हिन्दुस्तान भेज दिया गया और मेरा पटेल अकेला रह गया, तो उसकी यहाँ चिन्ता कौन करेगा ?

अर्जुन के बिल्कुल ठीक होने तक शिधू भी मामूली ठीक हो गया था। वह उठता था, खाता-पीता था और कभी-कभी घूमने जाता था। अर्जुन को तो वह कुछ-कुछ पहचान लेता, पर और किसी को भी वह न पहचान पाता। माधवराव जब उसके सामने आकर बैठता, तो शिधू

उसकी ओर सिर्फ टकटकी लगाये देखता रहता। उसकी वह स्थिति देख कर, माधवराव की आँखे छलछला आती। मादेलीन ने भी उससे बातें करने की कोशिश की, पर उसे भी वह न पहचान पाया।

अर्जुन बेचैन था कि वह अब शीघ्र ही हिन्दुस्तान वापिस भेज दिया जाएगा। परन्तु चाहे शिधू के सौभाग्य से हो चाहे स्वयं उसके सौभाग्य हो जख्मी लोगो को हिन्दुस्थान वापिस ले जानेवाला जहाज तैयार नहीं था।

इसलिए और कुछ दिन गुजरे। अब शिधू काफी अच्छा हो गया था अर्जुन को वह जब काफी अच्छी तरह से पहचानने लगा था। कभी-कभी वह उससे बाते भी करता। परन्तु उन बातो मे असगतता रहती। माधवराव को वह पहचान न पाता था। उसी तरह वह मादेलीन को भी नही पहचानता था।

शिधू की यह स्थिति देखकर मादेलीन को बडा धक्का लगा। वह फिर से आया, उससे मुलाकात हुई, अत्यन्त बडे सकट से उसके प्राण बच गये। अर्जुन साथ न होता, तो मृत समझकर उसकी लाश ठिकाने लगा दी जाती ऐसी विलक्षण आपत्ति से वह बचकर यहाँ आया है, पर वह मुझे नही पहचान सकता। यह देखकर मादेलीन का कलेजा टूट गया। उसकी ओर देखती हुई लगातार आँसू बहाती।

डाक्टर साहब से जब मादेलीन ने पूछा तो वे बोले— "यह बडा अजीब केस है। यह तो भाग्य समझो जो यह आदमी अर्जुन को पहचान लेता है। मुझे तो भय था कि इसकी स्मरण-शक्ति बिल्कुल ही नष्ट हो जाएगी। पर उस शक्ति की थोडी-सी धडकन उसके मस्तिष्क के किसी कोने मे अब भी शेष है। इसी तरह का कोई दूसरा जबरदस्त धक्का अगर कभी उसे लगे, तो उसकी पूर्व-स्मृति फिर ठिकाने आ जाएगी और सब को पहचान लेगा।"

पहिले उसे अपना नाम भी याद नही आ रहा था। अर्जुन ने बहुत कोशिशे करके उसके नाम की उसे याद दिला दी। यह देखकर कि वह

अपना नाम पहचानने लगा, अर्जुन को आनन्द हुआ।

आखिर जख्मी सिपाहियो को हिन्दुस्तान वापिस ले जानेवाला जहाज तैयार होकर आ गया और दोनो उस जहाज पर भेज दिये गये। शिधू को जब जहाज पर ले जाया गया, उस समय उसे देखकर मादेलीन फूट-फूटकर रो पड़ी। अर्जुन से भी अपने आँसू न रोके गये। माधवराव का भी कठ भर आया।

जहाज का सफर शुरू हुआ। समुद्र की हवा लगने से शिधू के स्वास्थ्य पर असर हो रहा था। वह काफी होश में आने लगा था। उसकी हलचल मे भी बहुत कुछ सुसंगतता आ गयी थी। पहिले भोजन की थाली आगे रखी जाती, फिर भी वह उसे छूता न था। किसी दूसरे को उसे जबरदस्ती खिलाना पडता था। वह यह भी भूल गया था कि खाना कैसे खाया जाता है। पर जब वह अपने हाथ से खाने लगा तो पानी माँगता। पाखाना और पेशाब के बारे में भी वह अब ठीक से सावधान हो गया था। उसमे हो रहे इस फर्क को देखकर अर्जुन का आनन्द बढ रहा था। जहाज पर उसे सम्हालना अर्जुन को कठिन हो रहा था क्यो कि उसका एक हाथ ठूँठ हो गया था। फिर भी एक हाथ से सम्हालकर वह उसे जहाज पर घुमाता। जहाज पर जो बहुत से जख्मी लोग थे, अर्थात ऐसे जख्मी हो रहे थे, उनमे शिधू जैसा एक भी केस न था। एक सिपाही ने कहा कि लड़ाई के दिनो में इस प्रकार का केस यह कोई पहिला ही नही है उस सिपाही के एक साथी की भी इसी तरह स्मरण-शक्ति खो गयी थी और उसे हिन्दुस्तान भेज दिया गया था। पर उस का खत आया था कि अब वह बिल्कुल ठीक हो गया है। उसकी स्मरण शक्ति लौट आयी है और वह सब को भली-भाँति पहचानने लगा है।

यह बात जब अर्जुन ने सुनी, उस समय उसकी जान मे जान आयी। आज नही तो कुछ दिनो के बाद उसका पटेल पूरी तरह होश मे आ जाएगा, सब को पहचान सकेगा, इस आशा से वह उल्लसित हो हो उठा। शिधू कम-से-कम उसे पहचान लेता था इतनी ही बात उसकी

दृष्टि मे बडे महत्व की थी। परन्तु घर पहुँचने पर जब रमाबाई और गोपिकाबाई मिलेगी और शिधू ने अगर उन्हे नही पहचाना, तो क्या होगा ?

आखिर जहाज बम्बई पहुँचा। वहाँ सब मुसाफिर उतार लिये गये और वहाँ के मिलिटरी आफिस ने उन्हे घर भेजने का प्रबन्ध कर दिया।

विस्फोट मे उनका सारा असबाब जलकर राख हो चुका था। अस्पताल के कपडे ही पहिनने पड़ते थे। वहाँ से जख्मियो को जहाज पर चढाते वक्त जो दूसरे फौजी कपडे उन्हें दिये गये थे, वे सब मिलटरी आफिस मे उतारकर वापिस कर देने पडे थे। बम्बई मे कपडो का इन्त-जाम करके अर्जुन शिधू को लेकर अपने गाँव के लिए रवाना हुआ।

शिधू बम्बई को भी नही पहचान सका था। जब वह यह पूछता कि हम कहाँ आ गये है और अब कहाँ जा रहे है, तो अर्जुन का कलेजा धक-से हो जाता। उसे एक नन्हे बच्चे की तरह सम्हालते अर्जुन परेशान हो रहा था।

पहिले सरकारी रिपोर्ट जो गाँव मे पहुँची थी उसमे दोनो की मृत्यु हो जाने का समाचार था। इस कारण बेचारी रमा और सुभद्रा को कम-से-कम कुछ दिनो के लिए तो अकारण ही वैधव्य सहन करना पडा। उसके कुछ ही दिन बाद दूसरी रिपोर्ट आई और उसमे दोनो के जिन्दा होने की खबर थी। उस समय उन्हे जो आनन्द हुआ, उसका वर्णन करना किसी भी लेखक की शक्ति के बाहर है। मृत मनुष्यो के जीवित होने के चमत्कार साधु-सन्तो द्वारा किये जाने के कारण उन साधु-सन्तो को जो महत्व प्राप्त होता है, उसी प्रकार का महत्व उस दूसरी रिपोर्ट को लानेवाले पोस्ट-मैन को प्राप्त हुआ। उस महारुद्र अभिषेक आदि की बड़ी घूम रही। अर्जुन की माँ ने जोखूमाई को मुर्गिया चढाई और बकरे का भोग लगाया। इस तरह उस दूसरी रिपोर्ट के आने पर दोनों परिवारों मे अनेक धार्मिक विधियाँ और उत्सव हुए थे।

किस स्थिति मे वे दोनो लौट रहे थे इसकी उन्हे कोई कल्पना न थी। दूसरी सरकारी रिपोर्ट मे लिखा था कि मुर्दे समझकर वे गाड दिये जाने वाले थे। परन्तु सौभाग्य से उनमे थोडी साँस चलती मालूम हुई। उनकी उचित सेवा की गई। इलाज किया गया। अब वे अच्छे हो गये है और हिन्दुस्थान भेजे जा रहे है।

इसके सिवा उस रिपोर्ट मे और कुछ नही लिखा था इसलिए वे किस स्थिति मे लौट रहे है उसकी उन्हे कुछ भी कल्पना न थी।

पर जख्मी होकर ही क्यो न आ रहे हो, पर वे आ रहे है इसी का उन्हे आनन्द हो रहा था। उस आनन्द के आवेश मे वे अपने आप को भूल गयी थी।

अत मे अर्जुन और शिधू गाँव पहुँचे। पहिले दोनो शिधू के घर गये। शिधू को देखते ही गोपिका दौडकर बाहर आई! शिधू ने उसे नही पहचाना।

रमा आगे बढी, पर शिधू ने उसे भी नही पहचाना। वह अर्जुन की ओर मुडकर बोला—अर्जुन, ये कौन औरते है? यहाँ क्यो आयी है?"

शिधू के ये शब्द सुनकर उन दोनो को जबरदस्त धक्का लगा। गोपिका ने कहा—'अरे अर्जुन, यह क्या हुआ? यह तो हमे पहचानता भी नही!"

"माँ, ये यहाँ जिन्दा लौट आए है, इसी को आप अपना भाग्य समझिए!" अर्जुन बोला—"इनकी स्मृति बिल्कुल विलुप्त हो गई है। सिर्फ मुझे भर पहचानते है। आप लोग भी धीरे-धीरे कोशिश करके देखिए। मेरा ख्याल है जिस तरह उन्होने मुझे धीरे-धीरे पहचान लिया —पहिले तो मुझे भी नही पहचानते थे,—परन्तु बाद मे पहचानने लगे उसी तरह तुम्हे भी वे पहचान लेगे।"

ये लोग बाते कर रहे थे इसी समय यशोदा और सुभद्रा भी वहाँ आ पहुँची। यशोदा ने दोनो को हाथ से सहलाकर अँगुलिया चटखायी। जब उसे शिधू की स्थिति का पता चला, उस समय वे दोनों भौचक्की हो गयी।

गोपिका ने कहा—"उसकी याद आती रहती है। पर मेरा लड़का जिंदा मेरे घर लौट आया यही मेरे लिए काफी हो गया।"

अर्जुन बोला—"मैं ठूठ हो गया हूँ। मेरा एक हाथ काट दिया गया है। पर इसका मुझे कोई अफसोस नही। मेरा दिमाग ठीक है। इसीलिए मैं पटेल को सँभालकर यहाँ तक ला सका। यदि हम दोनो के दिमाग गोल हो जाते तो हमारी क्या हालत होती सो भगवान ही जाने।"

रमा बेचारी स्तब्ध हो गई थी। पत्थर की मूर्ति की तरह स्तब्ध होकर वह दीवाल से टिकी खडी थी। गोपिका ने उसे पुकारा, पर वह पुकार उसे सुनाई ही न दी।

चढी आँखो से शिघू रमा की ओर देख रहा था। स्मृति की थोडी-सी ज्योति कही टिमटिमा रही थी, पर वह नजर से दिखती नही थी। गोपिका ने उसका हाथ पकडा और उसे वह घर के भीतर ले गयी।

अर्जुन को लेकर यशोदा और सुभद्रा अपने घर चल दी। रमा उसी तरह पत्थर की मूर्ति जैसी दीवाल से टिकी स्तब्ध खडी थी।

बेचारी गोपिका स्तंभित हो गई। वह डरी, कहीं इसका भी तो सिर नही फिर गया ? धीरे-से उसके पास जाकर बोली—"रमा, भीतर जाकर उससे कुछ कहकर देखो न ? लगातार अर्जुन को पुकार रहा है वह। मैं जाकर अर्जुन को लिए आती हूँ। तब तक तुम उस पर नजर रखना। चाय पिलाने की कोशिश करना। देखो पीता है या नही ?"

गोपिका की बात रमा के कानो में पहुँची या नही, इसी का पता न चलता। वह ज्यो की त्यो स्तब्ध खडी थी दीवाल से टिकी हुई। गोपिका ने उसे पकड कर हिलाया, अच्छी तरह झकझोरा। तब कही वह होश मे आई और चौंककर एक ओर खडी हो गई।

गोपिका की जान में जान आई। वह बोली—"मैंने क्या कहा, सुना तुम ने ? वह भीतर बैठा है। चाय नही पी रहा है। जरा नजर रखना उस पर। मैं जाकर अर्जुन को लिये आती हूँ।"

रमा कुछ न बोलकर, चुपचाप भीतर चली आई। यह देखकर, गोपिका अर्जुन को लाने घर से बाहर निकल पडी।

चाय का प्याला आगे रखे किसी छोटे बालक की तरह अर्जुन को पुकारता हुआ शिधू बैठा था। रमा जाकर सामने खड़ी हो गयी। फिर शिधू ने उसकी ओर न देखा। वह समझ नही पा रही थी कि क्या कहे और क्या करे। वह धीरे-से जाकर उसके सामने बैठ गयी। और जैसा कि पहले कहा करती थी, उसी लहजे मे वह बोली—"चाय ठन्डी हो रही है। अब पी लो न।"

शिधू की सिसकियाँ एकदम बन्द हो गयी। आँखे फाडकर वह उस की ओर देखने लगा। वह मन-ही मन हँस रही थी—"चाय पी लीजिए न ?"

"मुझे क्यो सता रही हो ?"—शिधू चिल्ला उठा—"अभी वह कौनसी एक औरत आयी थी। यह प्याला मेरे सामने रख गयी। अब यह एक और आयी है और कहती है चाय पी लो। और अर्जुन तो यहाँ कही दिख नहीं रहा है "

वह फिर आँखे विस्फारित कर उसकी ओर निहारने लगा। देखते-देखते उसकी मुद्रा बदल गयी। घबराहट की स्पष्ट झलक उसके चेहरे पर फैली दिखाई देने लगी। क्रम-क्रम से उसकी मुद्रा का रंग बदलता जाता था। मुद्रा बदलते-बदलते उस का चेहरा भयानक हो गया और "अर्जुन! अर्जुन!" चिल्लाता हुआ वह एकदम घर से बाहर निकल पडा।

रमा समझ नही पा रही थी कि क्या करे? अगर उसके पीछे दौडती है तो लोगों के लिए वह एक तमाशा हो जाएगा। वे क्या कहेगे, इस का उसे भय था। अगर उसका पीछा नही करती है, तो वह न जाने कहाँ चल देगा, इसकी चिन्ता थी।

जी पक्का करके रमा ने उसका पीछा किया। वह निरुद्देश्य कही भी चला जा रहा था। रास्ते की उसे कोई सुध न थी।

रमा के मन मे यह विचार उठा सही कि दौड़कर उसे पकडकर ले आऊँ, परन्तु हिम्मत नही होती थी। दूसरो के सामने वह उससे कभी बोली तक न थी। फिर आम सडक पर जाकर उसका हाथ पकडने की हिम्मत उसे कैसे हो सकती थी।

इसी समय गोपिका और अर्जुन आ पहुँचे। रमा की चिन्ता दूर हो गयी। अर्जुन दौडता चला आ रहा था। गोपिका जैसे-तैसे उसके पीछे-पीछे कदम बढाती चली आ रही थी। अर्जुन को देखते ही शिधू एकदम उसकी ओर दौड पडा और उसके गले के आसपास उसने अपनी बाहे डाल दी। वह बोला—"देखो अर्जुन, ये दोनों औरतें मुझे किस तरह तग कर रही हैं?"

बडी मुश्किल से समझा-बुझाकर अर्जुन उसे फिर से घर में ले आया। अर्जुन की आँखो मे आँसू छलछला आये थे, परन्तु वह यह कोशिश कर रहा था कि वे किसी को दिखे नही। गोपिका ने प्याले मे अँगुली डालकर देखा। चाय ठन्डी हो गयी थी। प्याला उठाकर वह चली गयी। रमा अलबत्ता वहाँ आकर खोयी-खोयी-सी खडी थी।

"अब इन्हे ही सँभालना होगा, भाभी!" अर्जुन बोला—"मैं कौन

यहाँ चौबीसो घन्टे हाजिर रह सकूँगा ।"

"पर वे तो मुझे पहचानते ही नही हैं।"—रमा ओंठ चबाती हुई सिसकी को भीतर-ही-भीतर निगलकर बोली ।

अर्जुन शिघू को समझाने की कोशिश कर रहा था । पुरानी बातें बता रहा था । उसके विवाह की घटनाओं का वर्णन करके उस समय की उसकी स्मृतियाँ जागृत कर रहा था । पर उसका कोई असर न होता । शिघू अर्जुन को छोड़कर और किसी को भी नहीं पहचानता था ।

"भैया, अब तुम यहाँ से जाओ मत ।"—गोपिका बोली—"यही रहो और इस पर नजर रखो । तुम चले गये और इसने कही खाना-पीना छोड़ दिया तो मैं क्या करूँगी ? रमा को भी वह नही पहचानता और अगर पहचान भी ले, तो वह बेचारी अकेली क्या कर सकती है ? तुम उसे अपनी बाहो मे भरे बैठे हो, इसीलिए वह शान्त है । उसे इस तरह लेकर रमा थोडे ही बैठ सकती है ? कुछ भी करो, बेटा ! जैसा मेरा शिघू वैसे ही तुम । मैं जाकर कहे देती हूँ तुम्हारी माँ से । पर जब तक यह थोडा राह पर नही आ जाता, तब तक तुम इसका साथ न छोडना ।

अर्जुन के साथ शिघू को साथ लिये अर्जुन नहाने के कमरे मे गया । उसी ने उसे नहलाया और नजदीक वाले एक कमरे मे ले जाकर बिठा दिया । किसी छोटे बालक की तरह शिघू की स्थिति हो गयी थी ।

अर्जुन को भी खाना वही खाना पडा । एक अछूत के साथ बैठकर मेरा बेटा भोजन कर रहा है, वह बीच-बीच मे उसे अपने हाथ से खिला भी रहा है, यह बात गोपिका के ध्यान मे भी न आयी । दोनो भोजन करके उठ गये और जब रमा शिघू की जूठी थाली लेकर भोजन करने बैठी तब कही गोपिका के ध्यान मे यह बात आई । वह बोली—"बहू, यह थाली मत लो । दूसरी थाली लेकर उसमे अपना-भोजन परोस लो और फिर खाओ । उस थाली मे छूत लग गयी है । तुम्हे घर मे काम करने पडते हैं । भगवान की पूजा करनी पडती है । चूल्हा सँभालना पडता है । तुम अगर उसकी थाली मे खाओगी, तो घर का काम कैसे

चलेगा ?"

"नही । मैं इसी थाली मे खाऊँगी । आप मुझे इसी में परोसिये । मे भी अछूत की तरह बाहर ही रहूँगी । आपके घर की कोई चीज नही छुऊँगी । पहिले भी तो इनके साथ बाहर रहती थी न । समझ लीजिए इस समय भी उनके साथ बाहर चली गयी हूँ । कितने दिनो से हृदय मे आस लगाये बैठी हूँ, अगर उन्होने मुझे नही पहचाना तो क्या हुआ ? पर इससे जूठी थाली पर से मेरा अधिकार चला नही जाता । अगर उन्हे छूत लगी है, तो मुझे भी लगी है ।"—बोलते-बोलते उसकी आँखो मे आँसू छलछला आए ।

गोपिका का भी कंठ भर आया । वह बोली—"ठीक है । जो तुम्हारी इच्छा, वही करो । छुआछूत करके कितने दिन बैठी रहोगी ? भगवान की यही क्या कोई कम कृपा है कि लडाई से जिंदा लौट आया? भगवान सब जानता है । उसके राज्य मे सब अपराध माफ है । ले लो वही थाली—"

दोनो भोजन करके उठी और देखा तो शिधू सो गया था । किसी बालक को सुलाते समय जिस तरह थपकियाँ देते है, उसी तरह अर्जुन उसे थपकियाँ दे रहा था । उन दोनो को द्वार पर देखते ही उसने उन्हे बाहर जाने का इशारा किया ।

दोनो गालो पर हाथ रखे रमा को बाहर दीवाल से टिकी बैठे देखकर, गोपिका ने कहा, "बहू, क्या सोच रही हो ? जिंदा लौट आया है, यही सोचकर खुश रहो । विचार करने से क्या होगा ? पुनः तुम्हारी माँग भर गयी, यही अपना भाग्य समझो,वरना उस वक्त तो ऐसा लगता था जैसे हम पर आसमान ही टूट पडा है । बिल्कुल मत सोचो । अब यही सोचना चाहिए कि वह राह पर कैसे लाया जाए ?"

बेचारी बहू सास को क्या जवाब देती ? कोई हमजोली होती, तो उसके सामने हृदय खोलकर रख सकती थी । वह प्रसग उसे याद आ रहा था । हवाई जहाज से बम गिरने के कारण पोस्ट आफिस के

नजदीक विस्फोट हुआ और उससे शिधू की मृत्यु हो गयी। यह समाचार सरकार के जरिये जब उसके घर पहुँचा था, उस समय का प्रसंग उसकी नजरो के सामने मूर्त हो उठा। उसके विधवा हो जाने की सारी विधियाँ उसे करनी पडी थी। माँग का सिंदूर पोछना पड़ा था। चूडियाँ फोडनी पडी थी आदि। यदि शिधू के जीवित रहने का समाचार कुछ दिन और न आता, तो गाँव वाले सख्ती से उसके बाल भी कटवा देते।

वैसे देखा जाए तो उसकी उम्र ही कितनी थी। परन्तु सिर्फ इसलिए कि वह एक छोटी लडकी है, धार्मिक विधियाँ पूरी करने के बाद मे गाँव के विद्वानो के हृदय कम-से-कम उस जमाने में तो नहीं पसीजते थे। सिर मुडवाकर सन्यासिनी बना दी गयी पन्द्रह सोलह वर्ष की बाल-विधवायें उस जमाने मे जगह-जगह दिखाई देती थी। यह तो रमा का भाग्य था। दूसरे ही सप्ताह मे शिधू के जीवित होने का समाचार आ गया। जब पत्र पढा जा रहा था, तभी वह दौडकर कुकुम की डिबिया ले आई थी और उसे सास के हाथ मे देकर उसने कहा था—"माँ, मुझे पहिले कुकुम लगाओ"—वह उस समय यह भी भूल गयी थी कि उसकी सास विधवा है, वह सधवा को कुकुम कैसे लगा सकती थी। उस वक्त गोपिका ने पडोस की एक सुहागिन को बुलाकर उससे बहू को कुकुम लगाने के लिए कहा था। मंगलसूत्र पुन· तैयार करवाकर पाँच सुहागिनो के हाथ से उसके गले में बँधवाया था। वस्त्र और नारियल से उसकी गोद भरी थी—ये सब प्रसग उसकी आँखों के सामने से सिनेमा की रील की तरह घूम गये।

वे आठ दिन—और उन आठ दिनो के बाद का वह सुहाग का दिन और आज उस सुहाग के धनी का घर लौट कर आने का दिन, इन तीनों स्थितियो की वह अपने मन-ही-मन तुलना कर रही थी।

सुहाग मिला। सुहाग का धनी भी मिल गया, पर वह इस स्थिति मे मिला! उसके सुहाग की उसे कोई कद्र नही, ऐसी मन.स्थिति में वह घर आया! उसके सुहाग का धनी हूँ। इसका उसे कुछ ज्ञान न होने के

कारण रमा को वापिस मिले हुए इस सुहाग मे कुछ कमी प्रतीत होने लगी। पहिले भी भरपाई हो गई थी, उससे वह इस कमी की तुलना कर रही थी। यह देखकर कि वह मौन है गोपिका बोली—"गरीब बेचारी! अरी, गया हुआ सुहाग फिर से पा गयी, यही क्या कम हुआ ? उस समय क्या हो गया था ? आज आ गया है। इसी तरह घर मे रहेगा। ईश्वर की दया आ गयी, तो फिर पहचानने भी लगेगा। अगर नही पहचाना, तो नयी पहचान करने की कोशिश करनी चाहिए। तुम्हारी माँग भर दी। फिर से मगलसूत्र बाँध दिया। तुम दोनो का विवाह अभी हुआ है, ऐसा समझ लो और फिर उससे पहचान करो। इसकी अपेक्षा मैं सास तुम बहू से और अधिक क्या कह सकती हूँ ?"

गोपिका चली गई। फिर भी रमा उसी तरह बैठी थी। पुनः पहचान कर लूँ—इसका क्या मतलब ?

सुहागरात की उसे याद हो आयी। पराये आदमी से बिल्कुल आत्मीयता का परिचय होते समय की उस मन.स्थिति का उसे स्मरण हुआ। मन पर पडा उस समय का प्रभाव भी उसे याद हो आया।

वही क्या फिर होगा ?—क्या यह पुनर्विवाह है ?—पराये से नही, उसी मनुष्य से ! दकियानूसी मेरी सास मुझे पुनर्विवाह की अनुमति क्यो दे रही है ? "फिर से पहचान कर ले !" इसका क्या मतलब समझूँ ? क्या उसी प्रकार से न ? सुहागरात की तरह ही न ? और अगर मान लो उस समय भी उन्होने नही पहचाना तो ?

शिधू के स्वभाव से वह परिचित थी। वह बड़ा पाप-भीरु था। अत्यन्त निर्मल मन का था, एकनिष्ठ था।

परन्तु जख्मी सिपाही द्वारा कही गई वह बात ! वह बात उसे याद हो आई। क्या वह सच थी ? उसे लगा अर्जुन से पूछना चाहिए। यद्यपि उसका मन उससे कहता कि वह बात सच नही हो सकती, पर उसका दूसरा मन कहता कि आज की परिस्थिति मे उस बात का सच होना ही अच्छा। यदि शिधू की एक-निष्ठा समाप्त हो गयी तो तभी आज की

परिस्थिति मे पुनः परिचय होने की आशा थी ।

शिधू सोया था । उसके कमरे के द्वार मे जाकर वह खड़ी हो गई। अर्जुन चुपचाप उसके बिस्तर के पास बैठा हुआ था । रमा को उससे ईर्ष्या हुई । ऐसी परिस्थिति मे उस स्थान पर बैठने का अधिकार उसका था । उस अधिकार के खो जाने का उसे दुख हुआ ।

उसने धीरे-से अर्जुन को इशारा किया । वह भी बात समझ गया । दबे पाँव वह धीरे-से बाहर आया और रमा जाकर उसके स्थान पर बैठ गई ।

धीरे-धीरे वह उसके बालो में अँगुलियाँ चलाने लगी । आँखें खोल कर शिधू ने उसकी ओर देखा । एक क्षरग-भर वह उसकी आँखो मे आँखें डाले टकटकी लगाये उसकी ओर देख रहा था ।

—वह तडाक से उठकर बिस्तर पर बैठ गया । रमा को अपने मन का सतुलन रोकना असम्भव हो गया । उसने अपनी दोनो बाहें उसके गले मे डाल दी और वह सिसक-सिसककर रोने लगी ।

शिधू घबरा गया । उसकी स्मृति यद्यपि विलुप्त हो गई थी, फिर भी मन की पाप-भीरुता जाग्रत थी । उसे वह अपरिचित स्त्री लग रही थी । पुरानी याद हो आई और वह चिल्ला पडा—"अर्जुन ! अर्जुन ! अरे क्या हम फ्रान्स मे आ गये ?"

अर्जुन दौडता हुआ कमरे के द्वार पर आया । उस दृश्य को देखते ही वह पीछे हट गया । परन्तु शिधू रमा के पाश से मुक्त होकर अर्जुन की ओर भागने की कोशिश करने लगा । पर रमा अपना पाश नही छोड रही थी और अर्जुन आगे नही बढ रहा था । उसे सकोच हो रहा था, परन्तु शिधू को छोडकर वह जा भी नही सकता था ।

रमा के हृदय से सारी लाज-शर्म जाती रही थी । जब वह एक बार उससे मिल गयी, तो उसका आलिंगन उससे छोडा नही जाता था । शिधू कह रहा था—

"अर्जुन ! अर्जुन ! यह क्या है ? फ्रान्स की स्त्रियाँ पराये पुरुषों

का आलिंगन करती है, पर यह स्त्री तो हिन्दू मालूम होती है। ब्राह्मणी दिख रही है और यह कैसे मुझे आकर चिपट गयी ?"

"यह क्या कहते हो ?" अर्जुन बोला—"ये रमा भाभी है न ? आपकी पत्नी हमारी छोटी मालकिन !" उसका कंठ भर आया।

शिधू अपने गले से उसकी बाहे छुडाने की कोशिश कर रहा था और वह गिडगिडाकर कह रही थी, "मुझे दूर न कीजिए !"

उसकी चिल्लाहट सुनकर गोपिका दौडती हुई आई। फिर भी रमा ने अपना पाश न छोडा। आवेग चरम सीमा को पहुँच गया था और उसी का यह प्रभाव था। क्या किया जाए यह कोई भी नही समझ पा रहा था।

गोपिका आगे बढी और उसने रमा की बाहो को छुडाया।

परायी स्त्री के स्पर्श से घबराये हुए किसी निष्पाप की तरह शिधू अपना अग सिकोड रहा था।

बडी मुश्किल से गोपिका ने रमा का पाश छुडाकर उसे दूर हटाया।

यह भूलकर कि वह उसकी सास है, रमा ने गोपिका के गले मे अपनी बाहे डाल दी और वह फूट-फूटकर रोने लगी।

"बेचारी गरीब लडकी !" शिधू बोला—"क्यो रो रही है वह ?"

उसके ये उद्‌गार सुनकर गोपिका का हृदय टूट गया। उसकी आँखो के सामने अधकार छा गया। रमा को सँभालती हुई वह उसी तरह चुपचाप बैठ गयी और रमा उसकी गोद मे सिर रखे रोती रही।

"इसे नही पहचाना तुमने ?" एक बुजुर्ग की तरह अर्जुन बोला—"यह देखो, ये गोपिका चाची है—हमारी पटेलन, तुम्हारी माँ। कम-से-कम इन्हे तो पहचानते हो या नही ?"

"यह क्या बेसिर पैर की उडा रहे हो अर्जुन ?"—शिधू हँसता हुआ बोला—"क्या तुम पागल हो गये हो ? अजी, मेसोपोटामिया मे कहाँ से आयी तुम्हारी चाची और पटेलन ?" पुनः वह विचारो में खोया सा दिखायी दिया। विचार करते-करते वह बोला—

"कौन हैं ये गोपिका चाची ? यह नाम मैंने कही सुना था शायद ?"

अर्जुन के हृदय में थोडी आशा उत्पन्न हुई। उसे अपने सीने से लगाकर उसकी पीठ को सहलाता हुआ वह बोला—"हाँ, अब याद तो करो भला ! ये है तुम्हारी माता जी। यह है तुम्हारा घर। ये हैं तुम्हारी पत्नी, रमा बाई। तुम जब डाकखाने मे बाबू थे उस समय ये तुम्हारे साथ रहती थी। करो याद, करो याद !"

हर वाक्य पर शिधू नकारात्मक गर्दन हिला रहा था।

अर्जुन हताश हो गया। पुनः पुन वही वही शब्द उच्चारण कर, शिधू की स्मृति को जाग्रत करने की वह लगातार कोशिश कर रहा था। उसकी कोशिश देखकर रमा उत्साहित हुई और आँखे पोछकर हँसती हुई शिधू के सामने जाकर खडी हो गयी।

शिधू लगातार घूमकर उसकी ओर देख रहा था। पर उस दृष्टि मे स्थिरता न थी। आँखो की पुतलियाँ लगातार थरथरा रही थी। देखते-देखते उसकी मुद्रा बदल गयी। गम्भीरता विलुप्त हो गयी और घबराहट की झलक उसकी आँखो मे चमकने लगी।

एकदम चिल्लाकर अर्जुन को उसने अपनी भुजाओ मे कस लिया। —"देखो-देखो। वह मेरे गले पडना चाहती है। उसे लाज भी नही आती। ये औरते है या चुडैलने ? चलो, मुझे यहाँ से कही दूर ले चलो।"

अर्जुन ने आँख से इशारा किया। रमा और गोपिका कुछ भी न बोल कर जड कदमो से कमरे से बाहर चल दी।

उस दिन अर्जुन वही रहा। रात को उसी ने उसे खाना खिलाया अर्जुन से दूर होने के लिए शिधू एक क्षण के लिए भी तैयार न था। उन स्त्रियो के प्रति उसके हृदय में एक प्रकार का भय समा गया था।

यह देखकर कि पुनः परिचय करने का वह प्रयत्न असफल हुआ यद्यपि रमा हताश हो गयी थी, फिर भी उसने धीरज नही छोडा और पुन. प्रयत्न करने का उसने निश्चय किया।

बंबई आने पर

लडाई से लौटा हुआ शिधू जिस समय पहली बार दिखाई दिया था, उस समय रमा के हृदय-सागर मे आनन्द की जो तरगे उमड रही थी, वे उसी दिन सायंकाल तक बिल्कुल विलुप्त हो गयी। उसे लगा मैंने ऐसा कौन सा पाप किया है जिसके लिए मुझे यह दड मिला। किसी भूखे के सामने परोसी हुई थाली रख दी जाए, पर उसे वह भोजन खाने की मनाही कर दे तो उस समय उसके मन की जो स्थिति होगी, वही स्थिति उस समय रमा की हो गई थी।

उस रात वह बिस्तर पर सिर्फ तडप रही थी। क्या उपाय करूँ जिससे मेरा पति मुझे पहचान ले, इसी विचार मे वह खो गयी थी। उसकी बाल-बुद्धि के अनुसार उसे अनेक उपाय सूझे। पर उन सब के बारे मे जब वह थोडा और विचार करती, तो अत मे हर उपाय उसे करीब-करीब असभव ही प्रतीत होता।

गोपिका के मन में भी अस्वस्थता के बादल छा गये थे। उसे भी नीद नही आ रही थी। उसे इसी पर समाधान हो गया था कि उसका बेटा जिंदा लौट आया। वह किसी को पहचाने या न पहचाने, पर अब तक हट्टा-कट्टा सामने दिख रहा है तब तक उसके मातृ-हृदय को, थोडा कम ही क्यो न हो, समाधान मालूम होता था। यद्यपि उसके मन में यह तीव्र उत्कठा थी कि उसका बेटा उसे पहिले की तरह माँ कह कर पुकारे, फिर भी उसके हृदय मे उतनी बेचैनी न थी जितनी रमा महसूस कर रही थी। कभी-न-कभी उसकी पूर्व-स्मृति जाग्रत होगी, यह आशा लिये भगवान पर भरोसा रखकर, भगवान का नाम लेते हुए शान्त रहने का प्रयत्न वह कर रही थी।

गोपिका और रमा की अस्वस्थता में यह अन्तर था।

इधर यशोदा और सुभद्रा भी अपने-अपने ढंग से छटपटा रही थी। यशोदा को इसका आनन्द हो रहा था कि इतने दिनो के बाद उसका लड़का घर लौट आया है। वह हट्टा-कट्टा है और उसका दिमाग भी दुरुस्त है। शिधू की परिस्थिति से जब वह अपने बेटे की परिस्थिति का मिलान करती तो उसका यह आनंद द्विगुणित हो जाता। पर यह देखक कि आये दिन से उसे अपने घर मे एक कौर खाने का भी मौका न आया और सारे दिन उसे पटेलन के घर ही रहने के लिए मजबूर होना पडा, उसे दुख भी हो रहा था।

सुभद्रा बेशक बिल्कुल बेचैन हो गयी थी। रमा के बराबर ही बेचैन हो गयी थी। बीच की अवधि मे रमा की परिस्थिति मे कोई भी फर्क नही हुआ था। पर यह बात सुभद्रा की न थी। उसने इस अवधि में लिखना-पढना सीख लिया था। वह अपने दिल मे यह उमग सजाये बैठी थी कि पति के आते ही उसे केसरी पढकर सुनाऊँगी और आश्चर्य-चकित कर दूंगी। परन्तु घर मे अर्जुन की इस अनपेक्षित अनुपस्थिति के कारण वह निराश हो गयी। यह सच है कि हताश न हुई, पर वह तात्कालिक निराशा भी उसे बडी दुखदायी मालूम हुई।

सुभद्रा को आशा थी कि वह वियोग उसी दिन तक रहेगा। पर दिन बीतने लगे। शिधू को छोड़कर अर्जुन घर नहीं जाता था। यह देखकर सुभद्रा बोल उठी।

रमा और सुभद्रा की परस्पर मुलाकातें होने लगी। दोनो समदुःखी थीं। दोनों के कारण जरूर अलग-अलग थे। परन्तु वस्तुस्थिति बेशक एक सी ही थी।

पाच-छ दिन गुजरे और यह देखकर कि अर्जुन घर नही आ रहा है, सुभद्रा रमा से बोली—"मुझे क्या लग रहा है, इसकी क्या तुम्हें कोई कल्पना है ? घर मे जाने कितने खत आकर पड़े हैं। पर उन्हें खोलकर पढ़ने वाला कोई नही। मराठी मे होते तो मैं पढकर सुना देती। पर वे हैं

अग्रेजी मे। क्यो मेरे घर वाले को तुमने अपने घर मे रोक रखा है ?"

"क्या मैंने रोक रखा है ?"—झल्लाकर रमा ने कहा। अगर तुम अपने घरवाले को घर ले जाओगी, तो मुझे समाधान ही होगा। वह हम दोनो के आडे आ रहा है। एक क्षण के लिए भी वह "उन्हे" अपने से दूर नही करता। मुझे तो इतना गुस्सा आता है कि क्या बताऊँ! लगने लगता है कि हाथ पकड कर बाहर निकाल दूँ तुम्हारे घर वाले को। कैसी खराब हालत हो गयी है "उनकी"। असल मे "उनकी" चिन्ता मुझे करनी चाहिए। सेवा-सुश्रूषा मुझे करनी चाहिए। मेरे स्थान पर जाकर बैठने वाला तुम्हारा घरवाला कौन होता है जी? लडाई पर जाते वक्त लगता था कि वहाँ से बडा नामा कमाकर लौटेंगे। पर यह क्या हो गया ? मेरी पहचान भी भूल गये। क्या लाभ हुआ लडाई पर जाने से ? किस के लिए लडी उन्होने यह लडाई ? किसने कहा था उन्हे जाने के लिए ? तुम्हारे घर वाले की बात ठीक है। वह पहिले से ही पलटन मे था। इसीलिए लड़ाई पर जाने के लिए मजबूर था। वह गया और हाथ खोकर आ गया। पर उसका दिमाग तो दुरुस्त है। पर इन्हे क्या मिला। इन्हे क्या जरूरत थी जाने की ? क्या किसी ने इन पर जबरदस्ती की थी ? मुझ से बडी-बड़ी बाते करते थे। कितनी बडी-बडी आशाये मन मे सँजोये मैंने दिन काटे थे। पर अब यह क्या देख रही हूँ!"

यह सुनकर सुभद्रा की आँखो मे आँसू भर आये थे। रमा करीब-करीब अपने आप से ही बोल रही थी। इसलिए सुभद्रा की सिसकी के सुनाई देने तक उसकी ओर रमा का ध्यान न था। अकारण उसे जो क्रोध आ गया था, सुभद्रा की आँसुओ से वह धुल गया। रमा गद्गद् होकर बोली—"मुझे माफ कर दो, सुभद्रा! मैं तो कुछ भी बक रही थी! इस में तुम्हारा क्या कसूर ? अर्जुनराव भी क्या करे ? इतने दिनो के बाद घर आये है, पर माँ और पत्नी से ठीक से मिले भी नही।

जी कडा करके मेरे घर रह रहे हैं और मेरे उन्हे सँभाल रहे है। सच पूछा जाए तो मुझे उनके उपकार मानना चाहिए। पर यह तो मैंने किया नही और तुम्हे भला बुरा कह दिया। कैसी चाँडालनी हूँ मैं ?"

"ऐसा न कहो, छोटी मालकिन !" सुभद्रा बोली—'जैसा तुम सोचती हो वैसा ही मैं सोचती हूँ। मालिक का सिर फिर गया, पर उसके कारण हम दोनो एक समान हो गयी। कारण भिन्न हैं, पर हम दोनो का दुख एक समान ही है।"

क्या किया जाए, यह दोनो को भी नही सूझ रहा था। जब रमा ने सुभद्रा से अपने घर का सारा हाल कहा, तब सुभद्रा को भी रमा पर दया आए बिना न रही। रमा को आशा थी कि आज नही तो कल पति से भेट अवश्य होगी। पर पति के पास होते हुए भी वह पति से वचित हो गयी थी। वह उसे परायी स्त्री मानता था। आँख उठाकर उसकी ओर देखता भी न था। जब सुभद्रा को ये सब बाते मालूम हुई तब उसका भी रमा की तरह कठ भर आया। जाति-भेद भूलकर दोनो एक दूसरे के गले में हाथ डाल रोने लगी।

उस रोने से उनका दुख थोडा शान्त हुआ। उन्हे थोडा अच्छा लगा। उनके हृदय का भार कुछ हल्का हुआ।

दिन के बाद दिन बीत रहे थे। पर कोई उपाय नही सूझ रहा था। गोपिका ने गाँव की पद्धति के अनुसार मन्नते मानकर देखी। झाड-फूँक कराई और अर्जुन के आग्रह करने पर अपनी जाति भूलकर जाखू-माई को मुर्गिया भी चढाई।

वैद्यो का भी इलाज हो ही रहा था। परन्तु किसी से कोई फायदा होता नजर न आता। गोपिका का एक दूर का भाई बंबई में डाक्टर था। उसे पत्र लिखकर उसने सारा हाल बताया।

उसने उत्तर दिया कि शिघू को बम्बई लाये बगैर कोई इलाज नहीं हो सकता। इसलिए जितना भी रुपया मिल सकता था उतना लेकर

गोपिका, शिधू, अर्जुन और रमा बम्बई गये।

गोपिका के डाक्टर भाई ने एक हाल मे उनके रहने का प्रबन्ध कर दिया। बड़े डाक्टर की फीस देने की उनकी ताकत न थी। परन्तु गोपिका के भाई के वसीले से एक प्रख्यात विशेषज्ञ से शिधू की जाँच कराई गयी। पर ये महाशय भी कोई निदान नही कर सके।

सब हताश हो गये थे। उन्हे बम्बई बुलाने वाला डाक्टर भी निराश हो गया था। शिधू को सिवा इसके उसकी स्मृति गायब थी, और कोई बीमारी न थी। वैसे वह पूर्ण स्वस्थ, अच्छा हट्टा-कट्टा और काफी तगडा था। खाता-पीता भी ठीक था। वह किसी को कोई तकलीफ न देता था पागल जैसा बर्ताव न करता था। उसमे कमी यही थी कि पूर्व-परिचित मनुष्यो को वह पहचान न पाता था। उसे लगता कि वह अभी तक रणभूमि मे ही है।

आशा की एक किरण दिखाई दी। लडाई पर गया हुआ बम्बई का एक यूरोपियन डाक्टर इसी समय के लगभग लडाई पर से बदलकर फिर अपनी नौकरी पर बम्बई आया था। उससे शिधू के डाक्टर की भेंट हो गई। उसने फ्रान्स मे लडाई के अस्पताल में काम किया था। इसलिए शिधू को वह पहचानता था।

यह देखने के लिए कि शिधू कम-से-कम रणभूमि के मनुष्यो को भी पहचानता है या नही, उसे उस डाक्टर के पास ले गये।

उस डाक्टर को देखते ही शिधू ने उसे पहचान लिया। तब डाक्टर को बडा आश्चर्य हुआ।

उस गोरे डाक्टर ने पुरानी बाते कहना आरभ किया।

सूत्र जुड़ने लगे। बेलजियम फ्रन्ट की सारी बाते शिधू को धीरे-धीरे स्मरण होने लगी। मास्यू लेग्रां की उसे चट-से याद आ गयी और साथ ही—

मादेलीन की याद आते ही उसका चेहरा खिल उठा।

"क्या आप से मादेलीन की मुलाकात हुई थी ?" शिधू ने पूछा—

"आजकल वह कहाँ है ?"

"शायद वह मेसोपोटामिया में है।" गोरा डाक्टर बोला—"पर ठीक किस स्थान पर है, यह मैं नही जानता। पूछताछ करके तुम्हें बता दूँगा।"

गोरे डाक्टर के आश्वासन से शिधू उल्लसित हो उठा। घर आते ही बड़े उल्लास से याद कर-करके वह बेलजियम फ्रन्ट की बाते कहने लगा। गोपिका और रमा को लक्ष्य करके उनसे वहाँ के हाल बताने लगा। मादेलीन से उसका परिचय कैसे हुआ, वियोग कैसे हुआ, उससे फिर से भेट कैसी हुई, इसका हाल जब वह कहने लगा, उस समय रमा के हृदय को गहरी चोट पहुँची। मेरी याद नही आती और याद आती है एक यूरोपियन लडकी की ! उसे लगा उस गाँव के जख्मी सिपाही ने जो कहा था, वह शायद सच ही जान पडता है।"

अर्जुन ने उससे बार-बार वही बातें पूछना शुरू किया। शेखसाद की स्मृतियाँ ताजी की। अमारा की बाते निकाली। हैजे से अच्छे होकर पुन पुनः डाकखाने मे काम पर जाने की बातें शुरू की। और जब वह पूछने लगा कि आगे क्या हुआ तब अलबत्ता शिधू घबड़ा गया।

"आगे क्या हुआ······? आगे क्या हुआ ?" कहकर वह बडा व्याकुल हो गया। फिर जोर-जोर से चिल्लाने लगा।

उसे शान्त करते-करते अर्जुन की आफत हो गयी। और दूसरी बाते निकालकर उन यादो को पुनः बुझाने की उसे कोशिश करनी पडी। शिधू सो गया था। पर नीद मे भी "आगे क्या हुआ ! आगे क्या हुआ !" कहकर बर्रा रहा था।

यह देखकर कि जहाँ से शिधू की विस्मृति शुरू हुई वहाँ तक उसकी स्मृति आ पहुँची है, उस यूरोपियन डाक्टर को बड़ा सतोष हुआ। शिधू की वह छटपटाहट देखकर उसके आत्मीय बेचैन हो उठे थे। पर डाक्टर को उसी छटपटाहट से आनन्द हो रहा था। डाक्टर, रोगी और रोगी के आत्मीय, इन तीनो के मनो मे इसी प्रकार की भिन्नता होती

है, यह हमें पद-पद पर दिखाई देता है। जब कोई न समझ मे आनेवाली बीमारी होती है, तब रोगी और उसके आत्मीय घबरा जाते है। पर डाक्टर को प्रयोग करने के लिए एक नया रोगी मिलने का आनन्द होता है।

उस अंग्रेज डाक्टर ने भी शिधू के बारे मे काफी दिलचस्पी दिखाना शुरू कर दिया था। वह स्वय उसके घर आकर उससे घटो बाते करता बैठा रहता। लडाई के मैदान पर उसने सुख और दु.ख दोनो का आत्मीयता से अनुभव किया था। लडाई पर जाकर जो टूंठे, लगडे और अंधे हो गये थे, उनका उसने इलाज किया था। लडाई मे अकारण हुई हत्याये देखकर, उसका हृदय टूक-टूक हो रहा था। लडाई मे जो मृत हो गये थे, उनके लिए उसे जितना दु.ख हो रहा था, उसकी अपेक्षा लडाई पर जाकर घायल हुए लोगो के प्रति उसे अधिक दया लगती। उस पर भी अंधे लोगो की अपेक्षा शिधू का केस बिल्कुल ही भिन्न था। कोई आदमी लूला, लंगड़ा या अंधा भी हुआ, फिर भी उस मनुष्य का होश ठीक रहता था। परन्तु सारे अवयव ठीक से यथास्थान होते हुए, यदि किसी की बुद्धि या स्मृति ही पंगु हो गयी हो, तो उस मनुष्य के दुर्भाग्य की परिसीमा लडाई पर गये डाक्टर ही महसूस कर सकते थे।

शिधू जैसे केस विलायत मे भी थे। वहाँ के डाक्टरो को लगता कि लगन से ऐसे केसो की जाँच और निदान करके लडाई से लौटे हुए ऐसे विचित्र केसो की सेवा करना अपना कर्तव्य है।

इस अँग्रेज डाक्टर को लगता था कि हिन्दुस्तान मे भी ऐसे घायल हुए लोगो के लिए हिन्दुस्तानी डाक्टरो की विलायती डाक्टरो की तरह आस्था और दया क्यों नही दिखानी चाहिए? वहाँ की सरकार ऐसे घायलो की बडी आस्था से और आत्मीयता से पूछताछ करती थी। ऐसे घायलों के अस्पताल मे जाकर स्वयं इग्लैंड का राजा उन लोगो को अपने आश्वासनों से हिम्मत देता था।

हिन्दुस्तान में ऐसा कुछ भी नही हुआ। लडाई पर कौन गया,

कितने गये, कैसे गये, कितने घायल हुए, इसकी किसी ने भी कोई पूछ-ताछ नही की। सरकार ने शिघ्रू और अर्जुन की भी क्या कद्र की? यह समझकर कि वे घायल हो गये हैं, उन्हे दो दमड़ी की पेशन देकर छुट्टी पा ली। उन दो दमडियो पर क्या उनकी गुजर होने वाली थी? एक का हाथ जाता रहा था। दूसरे का तो होश ही गायब हो गया था। उन लोगो के परिवार थे। हाथ बेकाम हो जाने के कारण बेचारा अर्जुन जीवन मे आगे कौन-सी नौकरी कर सकता था? होश गायब हो जाने के कारण शिघ्रू जिंदा होते हुए भी मृत जैसा ही हो गया था।

यह अग्नि-परीक्षा उन्होने किस के लिए दी? जिनके लिए उन्होने इतना जबरदस्त त्याग किया, उन्होने पेशन देने के बाद उनकी और क्या खबर ली? अर्जुन अधिक पढा-लिखा न होने के कारण अधिक समझता न था पर यदि वह बुद्धिमान होता, तो अपने आप से पूछता कि किस के लिए मैंने अपनी जान खतरे मे डाली? इसमे मुझे क्या मिला? क्या देश की सेवा के लिए? किसके देश की सेवा? जिन के देशों की सेवा करने के लिए उसने इतनी कठिन परीक्षा दी, उनके देशों ने इस देश के लिए क्या किया?

अंग्रेज डाक्टर ने हिन्दुस्थानी डाक्टर से कहा—"ऐसी मेरी विचार-धारा है। तुम्हे यह महसूस नही होती, क्योकि तुम लडाई पर नहीं गये। वहाँ जो अनर्थ हुए हैं, वे तुमने नही देखे। एक दूसरे पर गोलियाँ बरसाता था। प्राण लेता था। क्या वे परस्पर शत्रु थे? किस के लिए वे एक-दूसरे की हत्या कर रहे थे? अँग्रेज हो या जर्मन, डाक्टर की दृष्टि मे सब बीमार बराबर होते हैं। दोनों का इलाज और सेवा मैंने की है। अँग्रेज अच्छा होकर अपने घर जा रहा था। और जर्मन अच्छा होते ही जेल भेज दिया जाता था। उस जर्मन ने इग्लैंड का क्या अप-राध किया था? जिन्होने लडाई की यह आग लगाई, उन्हे इस आग की कोई आँच न लगी। इधर रणभूमि पर खून की नदियाँ बहती थीं, परन्तु इस लड़ाई को शुरू कराने वाले राजनीतिज्ञो की अँगुलियों में

आलपीन गडकर खून की बूंद नहीं निकलती थी। अपने देश के लिए मरने वाला अँग्रेज, अँग्रेजो की दृष्टि में "हीरो" था। फिर यही अँग्रेज अपने देश के लिए मरनेवाले जर्मन को क्यो जेल भेजते थे ? मुझे आश्चर्य होता है इसी बात पर कि ये यूरोपियन एक-दूसरे के बैरी होगे, पर वहाँ जाकर ये हिन्दुस्तानी क्यो मरे ? अब इसी केस को लो। इस नौजवान का जीवन बरबाद हो गया है। उसकी जवान औरत उसके लिए तडप रही है। वह उसके प्रेम के स्पर्श के लिए भूखी है और यह उसे पहचानता नही है ! उसी तरह उसकी माँ को देखो। पुत्र है, पर जैसे उसका कोई नही ! उन दोनो की वेदनाओ की कल्पना कौन कर सकता है ? कल शायद कोई कुछ रुपये देकर इसकी भरपाई करना चाहे, पर जहाँ जीवन का ही सत्यानाश हो गया है, वहाँ यह कमी रुपयो से कैसे पूरी हो सकती है ?

शिधू के उस रिश्तेदार डाक्टर को अँग्रेज डाक्टर की ये बाते जँची या नही, यह नही कह सकते। परन्तु शिधू के लिए जितनी दया, आस्था और प्रेम वह अँग्रेज डाक्टर दिखा रहा था, उतना प्रेम, उतनी आस्था, और उतनी दया हिन्दुस्थानी और रिश्तेदार होते हुए भी इस डाक्टर ने दिखाई हो, ऐसा दिखाई नही दिया।

रणभूमि पर खून के दर्शन से उसकी आँखे खुल गयी थी। इसीलिए वह शिधू के लिए इतना चिन्तित था। फुरसत के समय शिधू के घर आकर वह उससे बाते करता और उसे मनुष्यो मे लाने की कोशिश कर रहा था, परन्तु उसके प्रयत्न सफल होते नही दिख रहे थे। पास मे जो पूँजी इन लोगो के पास थी वह समाप्त हो रही थी। अब सिर्फ गाँव का निजी घर बेचना ही रह गया था। गोपिका बाई ने सोचा कि गाँव लौट चले और भाग्य को दोष देते हुए चुप बैठे।

परन्तु आशा बडी कठिन है—और फिर प्राणो की आशा ! उस आशा का सूक्ष्म ततु हाथ मे पकडे, अँग्रेज डाक्टर के आश्वासन पर गोपिका गाँव का घर बेचने को भी तैयार हो गयी।

विशाल बम्बई नगर में ये चार दुःखी प्राणी, एक को छोडकर, एक दूसरे के मुँह की ओर ताक रहे थे। यह देखकर कि गोपिका घर बेचने का इरादा कर रही है, अर्जुन दुःखी हुआ। मेरा प्रिय पटेल—रणभूमि के भयकर तूफान मे मेरा साथी—मेरा प्राणो से भी प्यारा मित्र—उसके पास उसका निजी घर भी न रहे—यह उससे बरदाश्त न होता।

नौकरी के लिए वह द्वार-द्वार भटकने लगा। ठूँठे को नौकरी कौन देता? पलटन से मिले सर्टीफिकेटों को दिखाता हुआ वह हर आफिस में जाता। पर लडाई से घायल होकर वह आया था और उसके पास एक हाथ नही था। ऐसी स्थिति मे इस व्यापारी दुनिया में दया से प्रेरित होकर उसे कौन नौकरी देता?

अंत में अर्जुन को यही लगने लगा कि अब घर बेचे बिना कोई चारा नही। परन्तु किसी की भी किस्मत का सितारा चमका। एक मिल के मैनेजर को दया आयी और अर्जुन को उसने अपनी मिल के फाटक पर दरबान की नौकरी दे दी।

लड़ाई की चक्की में पिसे हुए वे चार आदमी गिरगाँव का घर छोड-कर वरली की मजदूर-बस्ती मे एक सीमेन्ट की चाल मे रहने आये। वहाँ वे एक कमरे मे रहने लगे।

— — —

जबरदस्ती का वानप्रस्थाश्रम

अर्जुन को पच्चीस रुपया माहवार वेतन मिलता था। इतनी सी तनख्वाह में चार आदमियो की गुजर होना कठिन हो गया था। इसलिए जब-जब जरूरत पडती तब-तब छोटा-मोटा एक-एक जेवर बेचकर गोपिका गुजर चलाने की कोशिश करती थी।

रमा ने सुभद्रा को भी बबई ले आने का आग्रह पकडा। सुभद्रा की मन·स्थिति ठीक से उसी को महसूस हो रही थी। अर्जुन की नौकरी लग गई है, यह खबर गाँव पहुँच चुकी थी। नौकरी करने वाले मनुष्य की पत्नी को पति से अलग गाँव मे रहना जन-दृष्टि मे अनुचित था यह सिर्फ रमा ही समझती थी।

सुभद्रा को ले जाने के लिए अर्जुन के पास यशोदा के पत्र भी आ रहे थे। पर अर्जुन कहता था कि अभी जितने यहाँ हैं उनकी ही ठीक से गुजर नही हो रही है। फिर एक मनुष्य और क्यो व्यर्थ बढाया जाए? पर रमा कहती—चाहे जो हो, हम लोग थोडे-थोडे भूखे रह जायेंगे, पर सुभद्रा को यहाँ लाना ही चाहिए। वह जिद करने लगी। तब बडी मुश्किल से अर्जुन उसे बम्बई बुलाने के लिये राजी हुआ।

वे लोग एक ही कमरे में रहते थे और वह कमरा भी बहुत छोटा था। एक छोटे-से कमरे मे पाँच आदमी कैसे रहे? और फिर उनमे भी दो अछूत और तीन ब्राह्मण! ऊपर से दम्पति भी! परम्परा और परिस्थिति से लडने वाला वह एक विचित्र परिवार था। कौन से दुख सहे, कैसे दिन कटे, जाति-भेद के नियम कैसे निभावे, ऐसी विचित्र परिस्थिति में ये लोग फँसे थे। उन्हें क्या तकलीफ हुई होगी इसकी कल्पना ही कर लेना अच्छा।

गोपिका को इस बात का बडा दुख हो रहा था कि हमारा एक आसामी कमा कर लाता है और उसकी कमाई हम खा रहे हैं। पर इसका कोई उपाय न था। नातेदार समझकर जिसके भरोसे वे सब बम्बई आये थे, वह डाक्टर भी, उनकी ऐसी गिरी हालत देखकर अब खबर लेने को भी नही आता था। बम्बई मे उनका कोई दूसरा निकट का नातेदार न था।

गोपिका के मन मे घर बेच देने की बात बार-बार उठती। गाँव का घर था। उसे खरीदने के लिये ऐन मौके पर कौन ग्राहक मिलता ? अगर कोई खरीदता भी तो उन्ही के भाई-बन्दो मे से कोई खरीदता। एक तो वे भाई-बन्द पहिले से ही शिघू के परिवार से जलते थे। ऊपर से यह देखकर कि उन पर अचानक आपत्ति आ पडी है, वे उनके घर को बहुत सस्ते दामो मे खरीदने की कोशिश करते। फिर घर बेचने के बाद भी आवश्यक रुपये प्राप्त न होते।

गोपिका ने सोचा—अपना घर वैरी के हाथ मे जाये इससे तो यदि वह गिर पडे, तो क्या बुरा है। जी कडा करके यदि आज घर बेच भी दूँ, तो उससे जो रकम मिलेगी, उस रकम से भी हमारी गुजर आखिर कितने दिन चलेगी ? होगा यह कि घर शत्रुओ के हाथ मे चला जायगा और हम जैसे गरीब आज है, उसी तरह आगे भी बने रहेगे। इससे अच्छा तो यही है कि घर न बेचूँ। कम-से-कम एक जायदाद तो है। बनी रहेगी। आज विपत्ति के जो बादल हम पर छाये हैं, वे कभी-न-कभी दूर होगे ही। इसीलिये हमे विपत्ति का डटकर मुकाबला करना चाहिये। तब तक अपने आसामी के उपकार के नीचे दबा रहना ही श्रेयस्कर है।

पाँचो को जैसे-तैसे एक जून भोजन मिल पाता। दो-दो तीन-तीन महीने का कमरे का किराया चढ जाता और जब घर मालिक उनके पीछे तकाजा लगा देता तब तो सभी के दिलों पर गहरी चोट पहुँचती। बम्बई मे उनकी पहचान का कोई भी न था जिससे कुछ रुपये उधार

ले आते। यह आशा भी करीब-करीब जाती ही रही थी कि शिघू अच्छा हो जायेगा, काम करेगा और कमाने लगेगा। ऐसी परिस्थिति में निराशा की ओर आँखे लगाये दिन काटना गोपिका के लिये बडा कठिन हो गया था।

जब-जब अर्जुन के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करती, तब अर्जुन उसे बोलने ही न देता। वह कहता—"माँ, आपके लिये जैसे छोटे मालिक, वैसे ही मैं हूँ। अपना दूसरा ही बेटा समझ ले मुझे और खामोश रहे। भगवान अन्धा नही है। कभी-न-कभी उसे दया आयेगी ही। मेरा पटेल अच्छा हो जायगा।"

सब से अधिक दुखी था रमा। स्वयं तो दुखी थी, पर उसे अपना दुख स्पष्ट रूप से बताते नही बनता था। दूसरो के दुख के लिये मैं कारणीभूत हो रही हूँ, यह महसूस करके उसका मन पागल हो उठता। पति से उसका अलगाव हो ही गया था। पर कोई कारण न होते हुये अर्जुन और सुभद्रा का अलगाव सिर्फ मेरे ही कारण हो रहा है, यह महसूस करके उसे बडा दुख होता।

सदा अपनी आँखो के सामने रहने वाले पति का जबरदस्ती का वियोग सुभद्रा को भी महसूस हो रहा था। गोपिका कमरे के बाहर गैलरी में सोने का हठ करती। रमा और शिघू भी गैलरी में सोने की कोशिश करते। पर यह बात अर्जुन को जँचती न थी। शिघू को छोडना अर्जुन के लिये असम्भव हो गया था। यह विचित्र परिस्थिति गोपिका के मातृ-हृदय को मर्म मे दाग देने की तरह महसूस हुए बिना न रहती।

एक दिन अर्जुन जब काम पर से घर लौटा तो बडी खुशी मे था। उसकी मिल के एक विभाग में एक-दो जगहे खाली हुई थी। उसके मैनेजर ने एक जगह पर सुभद्रा को लगा देने की स्वीकृति दे दी थी और इसी कारण वह खुश था। यह देखकर कि हमारी आमदनी अब थोडी और बढ जाएगी सभी को खुशी हुई थी। अर्जुन और सुभद्रा दोनो का वेतन और अर्जुन की पेंशन, इससे बहुत कुछ कठिनाई दूर

हो सकती थी। शिघू फौज में नौकर नही था। दूसरे विभाग के जो लोग लडाई पर गये थे और वहाँ जाकर घायल हुए थे उन्हे पेंशन नहीं दी जाती थी। ग्रेच्यूटी के रूप मे दो-चार महीने की तनख्वाह दे दी जाती थी। इस नियम के अनुसार उसे कुछ ग्रेच्यूटी मिलनी थी। पर उसे प्राप्त करने के लिए जो प्रयत्न करने चाहिए थे। उन्हे करने के लिये वह असमर्थ था। इसलिए दोनो परिवारो के खर्च का सारा भार अर्जुन और सुभद्रा को ही उठाना पडता था।

सुभद्रा को नौकरी मिल जाने का सब को आनन्द हुआ। दुख हो रहा था सिर्फ रमा को। उसका मन कहने लगा—"सुभद्रा नौकरी करती है। मैं भी नौकरी करूँ।" वह अधिक पढी-लिखी नही थी। ब्राह्मण की औरत के योग्य नौकरी मिलने के लिए कम-से-कम वर्नाक्यूलर फाईनल परीक्षा पास होने की आवश्यकता थी। ऐसी कोई परीक्षा वह पास न थी। इसीलिए उसे लगा कि मैं भी मिल मे जाकर नौकरी करूँ।

मिल मे जाकर नौकरी करने का विचार सिर्फ उसके मन मै आ रहा था परन्तु प्रत्यक्ष वहाँ जाकर नौकरी करने के लिये उसका मन तैयार नही होता था। मिल मे जाकर काम करने वाली स्त्रियाँ उसके मुहल्ले मे बहुत सी थी। वे कैसी होती है, यह वह रोज देख रही थी। उसे तो यह भी लगता कि उन औरतो के साथ सुभद्रा को भी न जाना चाहिये। पर वह सोचती, नीच जाति की औरतो को यही नौकरी अच्छी लगती है। इसलिये जहाँ तक सुभद्रा का सवाल है, उसे मिल मे नौकरी करना ठीक है। उसके लिए वह कोई बुरा नही। सुभद्रा को मिल मे नौकरी करते देख उसके जाति वाले उसे बदनाम नही करेंगे। सुभद्रा भी नौकरी मिल जाने से खुश थी। परन्तु ब्राह्मण परिवार की कोई बहू या लडकी मिल के विशाल यन्त्रो के भीड़-भडक्के के बीच जाकर इन अछूतो के साथ कैसे काम करेगी ?

नौकरी करने की मन मे इच्छा होते हुए भी हर जगह उसका ब्राह्मण होना रुकावट पैदा कर रहा था। ब्राह्मणों को लगता है कि वे

श्रेष्ठ दर्जे के लोग है। अगर नौकरी करनी है, तो तनख्वाह चाहे कम मिले, पर वह नर्स या मास्टरी जैसी श्रेष्ठ दर्जे की नौकरी होनी चाहिए।

दूसरे ही क्षण उसके मन मे आता—मेरा दर्जा श्रेष्ठ है न? फिर एक अछूत के सहारे जीवन बिताना क्या मेरे लिए शोचनीय नही है? उसे लगता, यह देखने कौन आता है कि हम अछूत का दिया खा रहे है। परन्तु मैं यदि मिल मे नौकरी कर लूँ, तो दुनिया भर मे बात फैल जाएगी और मेरी बदनामी होगी। यह सच है कि मेरे परिचित अन्य रिश्तेदार वैसे मुझे कभी नही पूछते। परन्तु यदि ऐसा कुछ हो जाय, तो इतनी ही बात उनकी नजरो मे भर जायगी और वे मेरी बदनामी करने लगेगे। फिर मुझे मुँह दिखाने की भी दुनिया मे कही स्थान न रहेगा।

जब तक उसके परिचितो और नातेदारो को यह नही मालूम हुआ है, कि उनकी गुजर कैसी हो रही है, तब तक जो परिस्थिति उपस्थित हो गयी है उसके आगे गर्दन झुकाकर, अछूत का अन्न खाकर, जिंदा रहना ही उसे भला लगा।

खाना रमा ही पकाती थी। कभी-कभी गोपिका भी चूल्हा सँभालती। इसलिए यह कल्पना करके कि हम दोनो अर्जुन की रसोईदारिने है और इसीलिए वह हम तीनो को पोस रहा है, वह अपने सकोचित मन को धोखा देना चाहती थी।

परन्तु रमा और गोपिका के खाना पकाने से अर्जुन को क्या कोई सुख था? वह ब्राह्मण नही था। मास-मच्छी खाने वाला था। परन्तु रमा और गोपिका को कोई कष्ट न हो, इसलिए वे पति-पत्नी निरामिष भोजन पर पेट भरने की कोशिश करते थे। कोशिश करते थे इसलिए कहता हूँ कि जिन्हे मासाहार की आदत होती है उन्हे हमेशा निरामिष भोजन पर रहना बहुत कठिन हो जाता है। इस विषय मे अर्जुन कभी-कभी सुभद्रा का मजाक भी उडाता। किसी दिन सुभद्रा यदि कुछ कम खाती, तो वह ठिठोली करके यह बात महसूस करा देता और तभी वह

बात रमा और गोपिका की समझ में आती। एक दिन सुभद्रा ने कह ही दिया—"झूठ क्यो बोलूं ? जब तक सालन नही होता, मैं खा ही नहीं सकती। यहाँ ताजी मछलिया कहाँ मिलें ? मुझे कोकण की जो आदत पडी है। और ये इतने दिन पलटन में रहे हैं। तुम नही जानती माँ। वैसे देखा जाए तो हमारा खाना बडा सीधा होता है। भात और मछली की दाल बना ली कि हमे और किसी चीज की जरूरत नही होती। दाल, घी, सब्जी, छाछ इन सब का काम सिर्फ मछली से चल जाता है। रोटी बनाने की भी हमे जरूरत नही पडती। वैसे कहते भी है कि मछली मे बडा सत्व होता है। तभी तो थोडी-सी तनख्वाह मे ही हमारी गुजर हो जाया करती है।"

रमा की आँखे एकदम छलछला आयी। उसे लगा हम न होते तो इतनी तनख्वाह मे ये दोनो बडे मजे मे रहते। इसके सिवा अर्जुन अपनी माँ के लिए भी ५-६ रुपया गाँव भेज सकता।

दूसरे दिन से रमा ने दाल और घी की छुट्टी दे दी। छाछ और भात पर ही गुजर चलाना शुरू किया। कभी दाल बनाती भी, तो उसमे दाल कम और पानी अधिक रहता। मसाला और मिर्च अधिक डाल देती। अर्जुन और सुभद्रा इसे समझ न पाये। उन्हे यह बदलाहट महसूस भी हुई। पर दाल और घी के बिना गोपिका के गले के नीचे कौर ही नही उतरता था।

फिर दाल, भात, सब्जी खट्टी दाल, छाछ आदि पर जाना पडा। रमा को लगा हमारे लिए उन दोनो ने मास और मछली का खाना छोड दिया और हमारे खातिर दिन-रात खपनेवाले उन दोनो के लिए घी दाल और सब्जी का स्वाद हमे क्यो न छोड देना चाहिए ? अपनी सफेदपोशी से उसे घृणा हुई। रमा सोचने लगी—किसे, किस के लिए, कितना स्वार्थ-त्याग करना चाहिए ? त्याग करने का सारा हिस्सा अर्जुन ने, एक अछूत ने, ब्राह्मण से तुलना करते समय जो गाँव मे एक कीडे की तरह माना जाता है ऐसे एक नौकरी करने वाले अछूत ने, उठाया है।

लड़ाई से घायल होकर वह वापिस आया, पर एक घटें के लिए भी सुभद्रा से उसका एकान्त न हुआ। अपनी जन्मदात्री माँ के हाथ का एक कौर भी उसने नही खाया। वह नौकरी करता है, पैंशन पाता है, उसकी औरत ने भी नौकरी कर ली है और उनकी आमदनी पर उसके मालिक पटेल कहलाने वाले तीन आदमी खा रहे हैं। नौकरी करने के बाद जो समय बचता है, उस समय मे वह शिघ्रू को सँभालता है। उसे कभी फुरसत ही नही मिलती। रमा के सामने प्रश्न खडा हुआ थोडी भी शिकायत न करके ये अछूत इतना स्वार्थ-त्याग क्यो करते हैं।

वे दोनो पति-पत्नी एक कमरे मे रहते थे। पर दोनो एकान्त मे नही मिल सकते थे। वे बूढे नही हो गये थे। दोनो तरुण थे—बल्कि उनकी जवानी हाल ही मे आरम्भ हुई थी। एक ही घर में एक दूसरे से पराये हुये थे पति-पत्नी एक दूसरे के लिए छटपटा रहे थे। फिर भी एकान्त मे एक दूसरे की भेंट होना असम्भव हो बैठा था। रमा को लगा यह कैसा भाग्य का खेल है ? यह खेल कब खत्म होगा ?

अँग्रेज डाक्टर बीच-बीच मे आता रहता था। नये-नये इजेक्शन के शिघ्रू पर प्रयोग करके देख रहा था। अर्जुन के सिवा और किसी की न सुनने वाला शिघ्रू इस अँग्रेज डाक्टर की बात बिल्कुल चुपचाप मान लेता। इसलिए रमा की आशा का अंकुर अभी सूखा न था।

किसी न किसी उपाय से उसके पति की स्मृति लौट आवे इसलिए व्रत करती। पर व्रत पूरा होने पर ब्राह्मण को दक्षिणा देने के लिए उसके पास एक कानी कौडी भी न थी। गोपिका को किसी भी व्रत की याद आती तो वह रमा को वही व्रत करने के लिए कह देती और रमा चुपचाप परिक्रमा पूजा और व्रत शुरू कर देती।

पुनः-पुनः रमा के मन मे आता कि वह भी नौकरी करे। जब उसने सुभद्रा से कहा कि वह भी नौकरी करना चाहती है, तब सुभद्रा बोली—"क्या तुम मिल की नौकरी करोगी भाभी ? मिल की नौकरी क्या होती है इसकी तुम्हे कोई कल्पना भी है ? किस तरह मैं वहाँ दिन काट रही

हूँ, सो मैं ही जानती हूँ। सुबह से शाम तक खडे-खडे इधर-उधर घूमते रहना पड़ता है। खाने के लिए भी पूरा वक्त नहीं मिलता। मुकादम और जमादारिन का कडा पहरा रहता है हमारे सिर पर। ऐसी हालत मे क्या तुम काम करोगी ? यहाँ आठों पहर लगातार मशीनों की घर-घराहट होती है जिसके कारण कानों के परदे फट जाते हैं। एक दिन तुम देखने तो आओ, एक मिनट भी वहाँ नही ठहरोगी। तुम से ठहरा ही नही जाएगा। फिर तुम मिल मे काम कैसे करोगी ? जन्म से तुम सुख मे पली हो। घर के आँगन की धूप को छोडकर बाहर की धूप कभी नही देखी तुमने। पानी के घडे के सिवा कोई बोझ नही उठाया तुमने। भाग्य से सास भी तुम्हे बडी ममतामयी मिली है। किसी की कडी बात सुनने का भी मौका तुम्हे कभी नही आया। ऐसी स्थिति मे तुम क्या मिल मे काम करोगी ? फिर ब्राह्मण की लडकी हो। जिन मिलों में ब्राह्मण कभी बाबूगीरी भी नही करते, वहाँ तुम ब्राह्मण की बहू क्या मरने-खपने जाओगी ?"

"तो फिर क्या करूँ ?"—रमा बोली—"इस प्रकार दूसरे का अन्न खाना मुझे विष खाने जैसा लगता है।"

"यह कैसी बात कह रही हो, छोटी मालकिन ?" सुभद्रा भर्राये हुए स्वर मे बोली—"कह नहीं सकते कितनी पीढियो से हम तुम्हारा अन्न खाते आये हैं। तुम्हारी जमीनें जोतकर हमारे बच्चे जिंदा रहे हैं। ऐसी परिस्थिति मे मौका आने पर तुम्हारी सेवा हम न करे, तो कौन करेगा। इसे तुम दूसरे का अन्न क्यो कहती हो, भाभी ! यह क्यो नही कहती कि पीढियो से तुम लोगो ने हम पर जो उपकार किये हैं, उसका यह थोडा-सा बदला हम चुका रहे हैं ? खैर, पटेल और आसामी का नाता थोडी देर के लिए हम भूल जाएँ। फिर भी विपत्ति मे इन्सान की मदद क्या इन्सान को ही नही करनी चाहिए ? आज का यह वक्त कभी-न-कभी जाता रहेगा। आगे जब हमारे बुरे दिन कभी आएँगे उस वक्त हमें तुम चाहो तो एकाध जागीर दे देना !"

रमा आगे कुछ न कह सकी। सुभद्रा से ऐसा कोई उत्तर प्राप्त होगा, ऐसी उसे कल्पना थी ही परन्तु मन की बात बाहर निकाल देने के उद्देश्य से ही उसने सुभद्रा से वह प्रश्न किया था।

शिधू के स्वास्थ्य मे कोई फर्क नही हो रहा था। अर्जुन कही से बहुत सी पुस्तके लाकर उसके पास रख देता जिससे वह खाली न बैठा रहे। कम-से-कम कुछ पढता ही रहे। शिधू का मन पढने को करता, पर पढने की कोशिश करना भी उसके लिए असंभव हो गया था। वह पढता, पर जो पढता था उसका मतलब उसके दिमाग मे नक्श न होता। अक्षरो पर से आँखे फिर जाती। फिर भी उस लिखावट का अर्थ उसके दिमाग को महसूस न होता। उलटे उसे कष्ट होते। जब अर्जुन ने यह देखा तब उसने उसके लिए पुस्तके लाना बद कर दिया।

गोपिका पुनः-पुनः प्रयत्न करके देखती, परन्तु शिधू ने उसे नही पहचाना। एक ही जगह रहने के कारण किसी परायी स्त्री से जिस तरह पहचान हो जाती है, उसी तरह की पहचान गोपिका ने कर ली थी। माँ के नाते वह उसे नही पहचान पाता था। वह घटो शिधू के पास गप्पे करती बैठी रहती थी। बातचीत के सिलसिले मे पुरानी स्मृतियो को दोहराने की कोशिश करती। पर उन पुरानी बातो की शिधू को याद ही न आती।

रमा ने अलबत्ता उससे बात करने का कोई प्रयत्न न किया। वह स्वय परायी तरुणी से बोलने मे हिचकिचाता था, उसे सकोच होता था। वह झेपता था। वह तत्कालीन प्रथा थी। तत्कालीन तरुण समान-वय की अथवा साधारणत. तरुणी मानी जाने वाली स्त्री से बाते करता तो वह सभ्यता का लक्षण नही समझा जाता था। गोपिका ने जिस तरह शिधू से एक प्रकार से नयी पहचान कर ली थी, उसी तरह मैं भी कर लूँ, ऐसा सोचकर, एक दिन रमा ने उससे बाते करना आरभ किया, तब वह बिल्कुल मुँह फेर कर ही बैठ गया। उसके सामने चाय रखते समय जब वह पूछती—"क्या चीनी कम है—क्या दूध और

लाऊँ ?" तो वह 'हाँ' और 'ना' के सिवा उसे दूसरा कोई उत्तर न देता। सुभद्रा ने भी बड़े अदब से एक बार उससे बाते करने की कोशिश की, परन्तु उसके मन पर कोई प्रभाव न पडता था। वह अगर सबसे अधिक बाते किसी से करता था तो सिर्फ अर्जुन से। और उसने नयी पहचान कर ली थी गोपिका से। सिर्फ इसलिए कि वह बूढी थी।

पर वह बेचारी क्या बाते करती ? बोलने के लिए उसके पास ऐसा कौनसा विषय था ? अर्जुन से वह लडाई की बाते करता। वही-वही बाते बार-बार दोहराता और अर्जुन बिना ऊबे उन्हे सुन लिया करता। लडाई की बातो को छोडकर, उसे और किसी बात की याद ही न थी। इसलिए गोपिका जिस समय उस से बाते करती उस समय वह उन्हे सिर्फ सुना करता।

गोपिका ने अपनी जिंदगी मे अनेक प्रसगो का अनुभव किया था। कई सकटो का सामना किया था। वह बूढी हो गयी थी और अब मृत्यु की ओर दृष्टि लगाये बैठी थी। इसलिए इस परिस्थिति मे वह स्थितप्रज्ञ होकर शान्त रहने लगी थी। पर रमा के जीवन मे दुःख का यह धक्का पहला ही था। सास और बहू दोनो हताश हो गयी थी। परन्तु दोनो की परिस्थिति भिन्न-भिन्न होने के कारण दोनो की हताशता पर भिन्न-भिन्न प्रकार की छटाये आ रही थी। गोपिका उदास हो चली थी। रमा की बेचैनी दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ रही थी। दोनो को आगे की राह नजर नही आ रही थी। परन्तु आगे की राह को खोजने के बारे मे गोपिका जिस तरह निराश हो गयी थी, उसी तरह रमा की आशा उस राह को खोजने के लिए दशो दिशाओ मे बिना रुके दौड रही थी।

रमा शिधू से पहचान करने का बार-बार प्रयत्न कर रही थी। एक बार उसने जी कडा करके उससे बडे लाड से लागलपट करने की कोशिश की, तो वह चिल्लाकर भाग उठा। अच्छा हुआ जो अर्जुन उस वक्त था। वह उसे पकड़ कर वापिस ले आया।

रमा ने वैसा प्रयत्न फिर कभी न किया।

एक रविवार को छुट्टी होने के कारण अर्जुन शिघू के पास बैठा बातें कर रहा था। शिघू को उस समय मादेलीन की याद हो आयी थी। मादेलीन के बारे मे बाते करना जिस समय उसने आरम्भ किया, उस समय बैठक के नजदीक बैठी रमा को अर्जुन ने गैलरी मे जाकर बैठने के लिए मजबूर किया।

बडे कष्ट से वह चली गयी। मादेलीन का नाम सुनते ही उसका हाल जानने के लिए यद्यपि वह उत्सुक हो गयी थी, फिर भी शिघू के बारे मे उस घर मे अर्जुन के हुक्म को न मानने की किसी की भी हिम्मत न होने के कारण रमा को बाहर जाने के लिए बाध्य होना पडा।

शिघू बडे रंग मे आकर मादेलीन का हाल सुना रहा था। परन्तु उसमे अर्जुन को ऐसा एक भी प्रसग सुनाई नही दिया जिसके कारण शिघू के प्रति किसी के मन मे कोई अनादर पैदा हो। शिघू मे उस समय अपनी बुद्धि पर इतनी पकड न थी कि वह कोई बात जान-बूझकर छिपाने की कोशिश करता। वह बार-बार उन्ही शब्दो मे मादेलीन की प्रशसा कर रहा था। वह प्रशसा उसकी राष्ट्र-भक्ति के विषय मे थी और उसकी वे बाते अर्जुन बडे भक्ति-भाव से सुन रहा था।

इसी समय तोप की गडगड़ाहट की तरह अचानक एक ज़ोर की आवाज कानों मे पडी।

शिघू चौक पडा। एकदम रुका और बोला—"क्या लडाई इतने नजदीक आ गयी, अर्जुन ?"

"ठहरो। मैं देखकर आता हूँ।"—कहकर अर्जुन ने बाहर जाकर गैलरी मे से झाँककर देखा।

पुनः आवाज आई। उस आवाज के आते ही शिघू कमरे से उठकर बाहर गैलरी मे आया और आनन्द से थरथराता हुआ बोला—"लड़ाई! लड़ाई!! आ गये! दुश्मन बिल्कुल नजदीक आ पहुँचे!"

आवाज़ काहे की है, यह कोई भी न जान पाया। चाल के सब लोग एकत्रित हो गये और आश्चर्य-चकित होकर देखने लगे। अर्जुन बाहर जाकर कुछ पूछताछ करने का विचार कर रहा था, परन्तु शिघू को अकेला छोडकर जाने की उसे हिम्मत न होती थी। आवाज सुनकर शिघू बेचैन और बेकाबू हो गया था। क्या करूँ, इसके बारे मे सिर्फ विचार करता हुआ वह गैलरी मे उसी तरह खडा रहा।

———

वरली के सुरंग

वे दोनो गैलरी मे खडे थे। गोपिका, रमा और सुभद्रा उन दोनो के पीछे खडी हुई देख रही थी। दो आवाजो के बाद फिर कोई आवाज सुनाई नही पडी। यह देखकर, चाल के अन्य लोग, जो अपने-अपने कमरे से बाहर आकर गैलरी में खडे हो गये थे, फिर से अपने-अपने कमरो मे चले गये।

अर्जुन ने भी शिधू को कमरे मे लाकर बिठा दिया। शिधू बार-बार वही प्रश्न पूछ रहा था और कुछ भी उत्तर देकर अर्जुन उसे समझाने का प्रयत्न कर रहा था।

उसका ध्यान दूसरी तरफ आकर्षित करने के लिए अर्जुन ने मादेलीन की बात निकाली और मादेलीन का स्मरण होते ही किसी छोटे बालक की तरह लडाई की बात करना छोडकर, वह उसी की बाते करने लगा।

यदि उस समय कोई उसे बाते करता हुआ सुनता, तो उसे यह शका भी न हुई होती कि वह अपनी स्मृति खो बैठा है। मादेलीन ने उसे फ्रेंच लोगो की देश-भक्ति के बारे मे जो बाते बताई थी, उन्हे वह बडे उल्लास से कह रहा था। अर्जुन उन बातो को समझता था या नही, इसका जरा शक ही था। फिर भी वह ऐसा अभिनय कर रहा था, जैसे उन बातो के रंग मे वह पूर्ण रूप से रग गया है। रमा और गोपिका अलबत्ता उन बातो को बडे चाव से चोरी-से सुन रही थी। शिधू की बाते लगातार शुरू थी। माश्यूलेग्रा और मादेलीन ने फ्रेंच साहित्य से उसका किस तरह परिचय कराया? उन्हे पढ़कर उसके मन पर क्या प्रभाव पडा? यह सब बडे उत्साह से बता रहा था।

उन बातो को सुनते समय अर्जुन का ध्यान दूसरी तरफ आकृष्ट

हो गया था । वे आवाजें काहे की हैं, और कहाँ से आयी, यही वह सोच रहा था। वह सिपाही था । रणभूमि पर दागी जानेवाली बदूक की गोलियाँ और गडगडाहट के साथ गिरनेवाले तोप के गोले उसने प्रत्यक्ष देखे थे । दशो दिशाएँ गुँजा देने वाली रणभूमि की आवाजे कई दिनो से उसने नही सुनी थी। जो दो आवाजे उसने अभी सुनी थी, वे निश्चिय ही मामूली बदूक की न थी। उसने सोचा कोई लडाकू जहाज तो नही आ गया है ! उस जहाज से वरली के पहाड पर तोप के गोले तो नही बरसाये जा रहे है !

इसी शँका ने उसे अस्वस्थ कर दिया था। उसे लगा कोई लडाकू जहाज ही आया है। क्या हुआ यह जाकर देखे बिना उसे चैन न था और इधर शिघू अपनी बाते खत्म करने का नाम नही ले रहा था।

अर्जुन ने धीरे-से गोपिका को इशारा किया और उसे अपने पास बुलाया। गोपिका उसके पास जाकर बैठ गयी और शिघू की बातें सुनने लगी। जब शिघू ने गोपिका को सामनेदेखा तो अर्जुन पर से अपनी नजर हटाकर उसने गोपिका पर जमा दी। फ्रान्स की स्त्रियो की अलौकिक निर्भयता की और उनके अनुपम स्वार्थ-त्याग की बाते उसके हृदय मे स्फुरित होने लगी और जरा भी न घबराकर वह फ्रान्स की तत्कालीन परिस्थिति का वर्णन करने लगा।

यह देखकर कि शिघू की नजर अब उस पर नही है और गोपिका की ओर मुड गई है, अर्जुन धीरे-से वहाँ से सटक दिया और चाल से बाहर निकल पडा।

वह सडक पर आया। उस आवाज की किसी ने विशेष परवाह नही की थी। कोई कहता, कौवो को मारने के लिए किसी ने बंदूक चलाई होगी। कोई कहता, किसी आतिशबाज ने कोई बडा पटाखा छोडा होगा। परन्तु बदूक और पटाखे की आवाज मे जो सूक्ष्म अतर होता है, उसे पहचाने की अर्जुन के कानो मे आदत थी। इन दोनो आवाजो की अपेक्षा वह भिन्न थां। तोप की आवाज से उस आवाज की थोडी-बहुत

समानता थी।

हाल ही मे एमडन नामक एक क्रूजर आया था। उसने मद्रास के किनारे पर गोले बरसाये थे। इस घटना से सभी परिचित थे। कुछ लोग यह भी कहते थे कि उन्होने उस जहाज को बम्बई के किनारे से जाते देखा था। कही वही लडाकू जहाज फिर से तो नही आ गया ? कही उसने तो ये गोले न बरसाये हो ?

वह आधी दूर तक गया था कि वही आवाज फिर आई।

वह एकदम पहाड की ओर दौड पडा। पहाड के कगार टूटकर इतस्तत: फैले हुए दिख रहे थे। वरली के पहाड के उस पार समुद्र है यह वह जनता था। अब उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि क्रूजर ने ही ये गोले बरसाये हैं। वह जोर से वरली के पहाड़ की तरफ भागने लगा।

इधर फ्रान्स की ललनाओ के स्वार्थ-त्याग की बाते सुनने मे खोये हुए शिघू के कानो से भी वही आवाज आकर टकराई और वह एकदम चौक उठा। तडाक से उठकर वह खडा हो गया और अर्जुन को पुकारता हुआ गैलरी मे आया।

फिर एक और आवाज हुई।

अब शिघू बेकाबू हो गया और "अर्जुन! अर्जुन!" चिल्लाता हुआ जल्दी-जल्दी जीना उतर कर सड़क पर जा पहुँचा। गोपिका, रमा और सुभद्रा उसके पीछे दौड़ पडी।

शिघू बिल्कुल बेकाबू हो गया था। वह आगे-आगे भागा जा रहा था और वे तीनो औरते उसका पीछा करके उसे पकडने की कोशिश कर रही थीं।

चाल के लोगो को सिर्फ इतना ही पता था कि उनके चाल मे कोई एक पगला रहता है। यही सोचकर कि वही पगला भागा जा रहा है किसी ने उस ओर विशेष ध्यान न दिया। किसी-किसी ने उसे रोकने की कोशिश भी की, पर वह इतना बेकाबू हो गया था कि उसे रोक रखने की किसी में ताकत न थी। एक रोकने वाले व्यक्ति के हाथ को तो उसने

कसमसाकर काट भी खाया था ।

वह इतने वेग से भाग रहा था कि थोडे ही समय मे उसने बहुत सा फासला तय कर डाला । अर्जुन ने अब दौडना बंद कर दिया था । टूटे हुए पत्थर जिस तरफ से आते हुए दिखाई दिये थे, उसी तरफ वह तेजी से चला जा रहा था । शिघ्रू ने अर्जुन को देख लिया । अर्जुन को, देखते ही उसके दौडने का वेग बढ गया । अर्जुन को पुकार-पुकारकर शिघ्रू का गला बैठ गया था । अब अर्जुन को सामने देखते ही वह उसी की तरफ बेतहाशा भागता हुआ उसके नजदीक पहुँचने की कोशिश करने लगा ।

गोपिका, रमा और सुभद्रा तीनो जितना सभव था उतना दौड़ने का प्रयत्न कर रही थी, परन्तु बेकाबू होकर भागन वाला शिघ्रू इतनी दूर निकल गया था कि दोनो के बीच करीब एक फर्लांग का अन्तर हो गया ।

अर्जुन भागे जा रहा था और शिघ्रू उसके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ उससे मिलने की कोशिश कर रहा था । जिस तरफ से पत्थर उडते हुए आते दिखे थे उस स्थान के बिल्कुल नजदीक अर्जुन जा पहुँचा और शिघ्रू पीछे-पीछे दौडता हुआ चला आ रहा था ।

पुन. एक बडे जोर की आवाज हुई और पत्थर के छोटे-बडे टुकडे चारो ओर उड पडे । एक छोटा-सा टुकडा अर्जुन के पैरो के नजदीक आ गिरा—

इसी समय उन तीन औरतो की चीखे अर्जुन के कानो मे पडी । उसने मुडकर पीछे देखा और वह पीछे की ओर दौड पडा ।

उसके पीछे थोडी ही दूर पर लहूलुहान होकर शिघ्रू जमीन पर बेहोश पडा हुआ था ।

अर्जुन की आँखो के सामने अंधकार छा गया । उसने यह कभी सोचा ही न था कि शिघ्रू उसके पीछे आ रहा होगा ।

थोडी देर मे वे तीनो औरते भी उस स्थान पर आ पहुँची । शिघ्रू को वहाँ उस स्थिति मे पडा हुआ देखते ही एकदम उसे बाहो मे भरकर

रमा फूट-फूटकर रोने लगी । गोपिका तो पगली जैसी ही हो गयी थी। आँखो के सामने अँधेरा छा जाने के कारण सुभद्रा को लगा जैसे उसे गश आ रहा है । इसलिए वह झट से जमीन पर बैठ गयी ।

बात-की-बात मे आसपास के लोग वहाँ जाकर इक्ट्ठा हो गये । आस-पास किसी प्रकार की डाक्टरी मदद मिलने का कोई साधन नही था। आस-पास कही टेलीफोन भी न था ।

रमा को बडी मुश्किल से हटाकर अर्जुन देखने लगा कि शिधू को क्या हो गया है । शिधू के सिर मे गहरा घाव हो गया था। आस पास पत्थर के टुकडे पडे हुए थे । सब ने अदाज लगया कि उडे हुए पत्थर के टुकडो मे से ही एकाध पत्थर उसे जोर से लग गया होगा ।

शिधू के सिर से खून की धारा बह रही थी । इसी समय कोई दौड कर गया और नजदीक के होटल से बहुत सी बर्फ ले आया ।

बर्फ सिर पर रखा गया। फिर भी खून का बहना बन्द न हुआ । नजदीक कही कोई गाडी भी नही थी । सडक से एक साईकल वाला आ रहा था । वह आगे जाकर कही से एक विक्टोरिया ले आया ।

गोपिका और रमा रोती-चिल्लाती हुई उस गाडी मे चढ रही थी । उन्हे दूर करने की सबने कोशिश की । गाडी लानेवाले मनुष्य ने और अर्जुन ने बडी सावधानी से शिधू को उठाकर गाडी मे बिठाया ।

जब गाडी चलने लगी तब अर्जुन चिल्लाकर बोला—"तुम लोग अब घर लौट जाओ । कोई चिन्ता करना । मैं इनके साथ हूँ ।"

चलती गाडी को पकडकर उसके साथ दौडती हुई रमा जबरदस्ती गाड़ी मे चढ़कर बैठ गयी । अर्जुन कुछ न कर सका ।

गाड़ी अस्पताल जा रही थी । तभी सामने से एक अंबुलेन्स कार आती दिखाई दी । किसी ने फोन करके शायद उसे मँगा लिया था ।

विक्टोरिया रोक दी गई और उसमे से शिधू को उठाकर अबुलेन्स मे चढा दिया गया । अर्जुन और रमा दोनो उसके साथ थे ही ।

कार अस्पताल पहुँची । स्टेचर पर रखकर शिधू को भीतर ले गये ।

डाक्टर आये । उन्हे देखते ही अर्जुन के आनन्द की सीमा न रही । लडाई से लौट कर आये हुए ये वही अँग्रेज डाक्टर थे जो शिधू को जानते थे और उसमे काफी दिलचस्पी ले रहे थे ।

जब डाक्टर ने पूछा कि घाव कैसे लगा तब उन्हे पता चला कि पहाड फोडने के लिए जो सुरग लगाये जा रहे थे । उनमे के उडे हुए एक पत्थर से ही वह घाव हुआ है ।

अर्जुन को लक्ष्यकर डाक्टर अपनी टूटी-फूटी हिन्दी मे बोले—"बहुत अच्छा हुआ । इस बुराई से ही भलाई निकलेगी । ये वक्त तुम चिन्टा करता है, टुम शायद डरता भी होगा । पर इस जख्म के कारन ही इनका याड फिर से लोट आएगा, ऐसा हमारा आशा है ।"

वह प्रसग दुख की पराकाष्ठा का था । फिर भी रमा के चेहरे पर समाधान की एक हल्की रेखा चमके बिना न रही ।

जब शिधू को भीतर ले गये उस समय रमा और अर्जुन को बाहर वेटिग रूम मे बैठे रहना पडा । दोनो एक दूसरे का मुँह ताकते हुए बैठे थे । किसी के मुँह से शब्द न निकलता था । अर्जुन बीच ही मे उठकर टहलने लगता, दरवाजे से कान लगा कर आहट लेता और फिर अपने स्थान पर आकर चुपचाप बैठ जाता । रमा बिल्कुल सन्नाटे मे आकर स्वस्थ बैठी हुई थी । उसके मन मे विलक्षण खलबली मच गयी थी । परन्तु उस खलबली का प्रतिबिब उसके चेहरे पर बिल्कुल नही झलक रहा था । हर्ष और अमर्ष का सघर्ष चल रहा था । शिधू को जो घाव हुआ था उसके अच्छा होने की चिन्ता उसे थी ही पर इसकी अपेक्षा वह इस चिन्ता मे अधिक व्यग्र थी कि उसकी खोयी हुई स्मृति किसी तरह लौट आवे ।

मन-ही-मन वह कल्पना कर रही थी—जैसा कि डाक्टर ने कहा है वे होश मे आ जाएँ, उनकी स्मृति लौट आवे, मैं उनके सामने जाऊँ मेरी उनसे चार आँखे हो और मुझे एकदम रमा कहकर पुकारे ।

इस कल्पना से ही उसके चेहरे पर हास्य की रेखा चमक उठी ।

समय क्या हुआ था, यह उसने अपनी आँखो से नही देखा था। पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर वह हैरान हो गयी थी मृत्यु का वह समाचार झूठ सिद्ध हो जाने के कारण दुगने आनन्द का भी उसे अनुभव हुआ था —

आगे ये कष्ट आये। लडका प्रत्यक्ष सामने दिख रहा है, पर पहचानता नही है। एक तरह से वह उससे वन्चित ही हो गयी थी। वह प्रछन्न विरह उसने अनुभव किया, परन्तु मन की शान्ति डगमगाने न दी। नही पहचानता था तो न सही, पर लडका सामने तो दिख रहा था इस अधूरे आनन्द मे ही उसने हँसते हुए दिन काटे थे। पर अब यह ऐसा हो गया ! उसका कलेजा धडकने लगा। इस बार कही उसकी जान पर ही न आ जाए !

मन बडा खराब होता है। अशुभ विचार ही मनमे पहिले आता है। अशुभ के उस भ्रम गलकारी विचार से उसकी हिम्मत टूट गयी और वह रोने लगी।

सुभद्रा बेचारी बिल्कुल पागल जैसी हो गयी थी। एक तो गोपिका के सामने वह लड़की थी, फिर जाति की अछूत थी। जहाँ तक सम्भव था वह गोपिका को छूती न थी। यह महसूस करके कि पुराणपन्थी बुढ़िया है उस का ख्याल रखना चाहिए, वह उस छोटी कोठरी मे हमेशा अग सिकोडकर रहती थी, परन्तु इस समय बेशक उसने न रहा गया। वह एकदम गोपिका से जाकर लिपट गयी और अपने आँचल से उसके आँसू पोछने लगी। बीच-बीच मे गैलरी मे जाकर देख आती। फिर गोपिका से कुछ समाधान की बाते कहती और पुनः जाकर गैलरी मे देख आती। लेकिन क्या सिर्फ रास्ता देखने से ही आनेवाला मनुष्य आ जाता है ? पर मन को मनाना भी तो होता है न ?

अस्पताल मे रमा और अर्जुन के प्राण आँखो मे आ गये थे। ऐसे प्रसंग पर जब मनुष्य राह देखने बैठता है, तब समय की लम्बाई उसे अन्दाज से बाहर बढी हुई लगने लगती है। भीतर से कोई बाहर आता

तो अर्जुन उससे पूछता, पर वह व्यक्ति क्या बता सकता था ? शिधू आपरेशन थियेटर मे था और वहा जो मनुष्य थे, वे बिना आपरेशन पूरा हुए बाहर थोडे ही आने वाले थे।

समय बढने लगा, दोनो व्याकुल होने लगे। रमा से तो अब भीतर बैठा ही नही जाता था। दरवाजे की ओर आँख लगाये वह लगातार टहलने लगी।

आपरेशन थियेटर का द्वार खुला, डाक्टर आये। अर्जुन दौडता हुआ उनके पास गया। डाक्टर की प्रसन्न मुद्रा देखते ही दोनो को आधी हिम्मत आ गयी।

डाक्टर बोले—'आप एक ओर हट जाएँ। जमादार, यही है न उसकी पत्नी ? इसी को वह नही पहचानता था ? इसलिए इस समय यह उसे नही दिखनी चाहिए। वह होश मे आ गया है और उसे हम यही से उसके वार्ड मे ले जाएँगे। एक स्वतन्त्र वार्ड मे उसे रखने का मैने इन्तजाम कर दिया है। पति-पत्नी की भेट तभी होगी जब मैं कहूँगा। उसकी पत्नी से एक ओर हट जाने के लिए कह दो।

अर्जुन ने रमा को एक ओर हटा दिया। वे दोनो डाक्टर द्वारा बताये गये स्थान पर जाकर खडे हो गये।

डाक्टर आपरेशन थियेटर के भीतर गये और दरवाजा बन्द हो गया। फिर दरवाजा खुला और सिर पर पट्टी बाँधे आराम से एक हाथ गाडी पर लेटा हुआ शिधू दोनो को दिखाई दिया।

इस समय रमा के प्राण बिल्कुल आँखो मे आ गये थे। उसे अपने हृदय का स्पन्दन स्पष्ट सुनाई पड रहा था।

हाथ गाडी के पीछे-पीछे डाक्टर जा रहे थे। रमा एकदम आगे दौड पडी। अर्जुन भी अपने स्थान पर खडा न रह सका। वह भी रमा के पीछे-पीछे भाग पडा। डाक्टर की नजर रमा पर गयी और उन्होने डाटकर उसे पीछे लौटा दिया।

चुप बैठे रहने के सिवा दूसरा कोई उपाय न था। सिर्फ दो-चार

मिनट ही हुए थे। परन्तु उतना समय भी रमा को युग की तरह लगा।

डाक्टर आए और बोले--'चलो मेरे साथ।"

अस्पताल के बरामदे से डाक्टर के पीछे-पीछे जाते हुए रमा को लगा कि मैने कितना लबा सफर कर डाला।

वे दोनो एक कमरे मे पहुंचे। शिघू को एक स्वच्छ सफेद बिस्तर पर सुला दिया गया था। डाक्टर उसके बिस्तर के नजदीक जाकर खडे हो गये। वहाँ जाने से पहिले उन्होने उसी कमरे मे रमा को एक स्थान मे खडा कर दिया था कि शिघू ने अगर सहज ही आँखे खोल दी तो रमा उसे दिखायी न दे।

डाक्टर ने जब अर्जुन को बुलाया तब रमा को उससे ईर्षा हुई। समीप पहुँचकर डाक्टर ने शिघू से पूछा—"अब आपको कैसा लगता है, मिस्टर जोशी ?"

आँखे खोलकर अर्जुन और डाक्टर की ओर देखता हुआ शिघू बोला —"अब तो काफी अच्छा लगता है। सिर मे भी विशेष पीडा नही है।"

अर्जुन को लगा कि शिघू कि आवाज मे निश्चित् ही कुछ फर्क हो गया है। अर्जुन की ओर देखता हुआ शिघू बोला—"तुम आ गये, अर्जुन !" अर्जुन की आँखो से आँसू बह रहे थे। उन्हे देखकर शिघू बोला—"अरे तुम सिपाही के बच्चे हो न ? सिपाही के बच्चे रोया नही करते। मुझे कोई बहुत बडी चोट नही लगी है।"

अर्जुन को एक तरफ हटाकर डाक्टर ने रमा को इशारा किया।

काँपते हुए कदमो से रमा आकर बेड के पास खडी हो गयी।

एक क्षण-भर के लिए उसने शिघू की ओर देखा उस अथाह क्षण मे उसकी मुद्रा स्थिर हो गयी थी।

अब आगे क्या होगा ? इस विचार से रमा बिल्कुल व्याकुल हो गयी थी। उसके मन को यह विचार भी छू गया—कही पहिले की तरह वे एकदम चिल्ला तो न पडेंगे ?

बेड के पास रखी कुर्सी पर वह बैठ गयी। शिधू का हाथ उसने अपने हाथ मे लिया। मुस्कान की एक हल्की रेखा शिधू के चेहरे पर चमककर स्थिर हो गयी।

इस रेखा से रमा परिचित थी। पहले जेठे-सयानो के सामने वह उसकी ओर जब चोरी-चोरी देखता, तब इसी तरह मुस्कराता था।

रमा का कलेजा धडकने लगा। सारा शरीर काँपने लगा। खून पैर की तरफ से सरसराता हुआ मस्तक की ओर बहने लगा।

धीरे से हँसता हुआ शिधू बोला—"रमा!"

रमा ने हँसने की कोशिश न की। वह डगमगाने लगी। उसकी आँखो के सामने चिनगारियाँ चमकी—

और धडाम से वह कुर्सी से नीचे गिर पडी।

———

मृत्यु के अन्त तक

होश मे लाकर डाक्टर ने रमा को घर भिजवा दिया। डाक्टर को जितना हाल मालूम था उतना वे धीरे-धीरे शिघू को बताने लगे। उसके विस्मृति-काल की प्रत्येक घटना, उस घटना के कारण उत्पन्न हुई परिस्थिति, उस परिस्थिति के कारण हुए परिणाम—डाक्टर जितनी बातें जानते थे, वे सब वाते उन्होने शिघू से समझाकर कह दी। अर्जुन और गोपिका के मुह से अव्यवस्थित एव असंगत रूप से शिघू को वे बातें मालूम हो, इससे पहले अधूरी ही क्यो न हो, पर सुसगत रूप हो और उसके थके हुए मस्तिष्क का आकलन हो सके इस रीति से सारा हाल उससे कहने का काम डाक्टर ने बडी कुशलता से किया।

पहचान की उतनी ही झलक रमा को मिली थी। जब गोपिका को पता चला कि शिघू की स्मृति पुनः लौट आई है, तब सिर्फ इस समाचार के सुनते ही वह आनन्द से बेहोश हो गयी। पर रमा को संतोष नही हुआ था। सिर्फ पहचान लिया, इतनी-सी बात उसे अधूरी प्रतीत होती कुछ देर शिघू के पास बैटकर टूटे हुए धागो को जोड लूं, ऐसा उसे लगता था। परन्तु डाक्टर ने उसे जबरदस्ती भगा दिया था। अत्यन्त प्रिय व्यक्ति से अधिक बाते करने का तनाव शिघू का थका हुआ मस्तिष्क कहाँ तक बरदाश्त करेगा, इसका डाक्टर को शक था।

रमा न वह रात बडी बेचैनी से काटी। उसे लग रहा था कि जाऊँ, अपने पति से मिलूं, जी भर के उससे बातें करूं, अपने हृदय का दुख उसे बताऊँ। अर्जुन ने उन लोगो के लिए कितना निष्काम स्वार्थ-त्याग किया है, यह उसके कान मे डालूं।

अर्जुन को भी डाक्टर ने शिघू से अधिक बाते नहीं करने दीं।

परन्तु इसके लिए अर्जुन को बुरा न लगा। शिधू ने जिस तरह उसे अब पहचाना था, उसी तरह पहिले की पहचान भी वर्तमान थी ही। डाक्टर ने सख्त ताकीद कर दी थी कि कोई भी शिधू से पाँच मिनट से अधिक न बोले।

शिधू ने माँ को भी पहचान लिया। शिधू को देखते ही गोपिका की आँखो से लगातार आँसू बहने लगे। हृदय मे दबाकर रखा हुआ सारा दुखावेग उस समय एकदम उमड पडा। आँखो के किनारे आये आँसुओ को पीती हुई रमा सिर्फ उसकी ओर देख रही थी। सास के सामने पति से बाते करना उसके लिए सम्भव न था। माँ से बाते करते समय कन-खियो से वह रमा की ओर देख रहा था। वह भी मन-ही-मन हँस रही थी। माँ से बाते करते समय रमा की ओर देखकर हँसते हुए दोनो मे मूक भाषण का विनिमय हो रहा था।

पाँच मिनट कब खत्म हो गये इसका उन्हे पता तक न चला। गोपिका को करीब-करीब घसीटकर कमरे से बाहर निकालना पडा।

रोज शाम को चार बजे जाकर वे लोग शिधू से मिल आते। पर पाँच मिनट से अधिक उन्हे वहाँ रहने की इजाजत न थी। डाक्टर ने शिधू का इतजाम, किसी अमीर जैसा कर दिया था। सब को यही लगता था कि डाक्टर स्वय अपनी जेब से यह सारा खर्च कर रहे होगे। अपने नाते का डाक्टर पराया हो गया और एक पराया अंग्रेज अपनी इतनी चिन्ता करता है। जब गोपिका बाई इसका जिक्र करती तब अर्जुन कहता—"रणभूमि पर का नाता खून के नाते से भी अधिक घनिष्ठ होता है।"

गोपिका और रमा को हिन्दी या अंग्रेजी नही आती थी। इसलिए डाक्टर के साथ बाते करना उनके लिए सम्भव न था और यदि उन्हे ये भाषाये आती भी होती, फिर भी सफेदपोश की कुलीनता को छोड कर साहब से बाते करने की उनकी हिम्मत भी न होती। इसलिए ऐसे समय अर्जुन दुभाषिये का काम करता।

डाक्टर साहब ने शिघू का सारा हाल अर्जुन से पूछ लिया था और उसमे की कौन-सी बात शिघू से कही जाए और कौन-सी उससे न कही जाए, इसकी पूर्ण जानकारी उसे देकर ही वह अर्जुन को शिघू से बाते करने की अनुमति देते, और फौजी आदमी होने के कारण अर्जुन बडे अनुशासन से उनकी आज्ञा का पालन करता। शिघू से वह प्राय अपनी मिल के बारे में ही बाते किया करता था। पैसे के अभाव मे उस अभागे परिवार की किस तरह खीचातान हो रही थी उसका अलबत्ता उसने शिघू को पता न चलने दिया।

शिघू की स्मृति मे अब तनिक भी दोष नही रह गया था। पहिले से लेकर आज तक के सारे धागे ठीक से जुड गये थे। कमी थी सिर्फ विस्मृति-काल की। उस काल में उसने किसे नही पहचाना और उसे न पहचानने के कारण दूसरो पर क्या प्रभाव पडा यही बाते उसे याद न आती। अस्पष्ट-सी याद आती, पर वह अधूरी थी। जब अर्जुन ने उससे उस समय का हाल कहा तब उसे बडा दुख हुआ।

शिघू ने देखा कि उसमे एक दोष आ गया है। उसने वह दोष डाक्टर को भी बताया। जब उसे दुख होता तो उसका हृदय भर आता, पर आँखो से आँसू न आते। आसुओ के अभाव मे उसका हृदय व्याकुल हो जाता था।

डाक्टर को भी इस लक्षण का निदान करते न बनता। किसी भी बात का आत्यन्तिक परिणाम न होने देने की खबरदारी लेना चाहिए, ऐसी डाक्टर ने उसे सलाह दी।

अत मे वह बिल्कुल अच्छा हो गया और डाक्टर ने स्वय उसे अपनी मोटर मे घर पहुँचा दिया।

घाव भर चुका था। लडाई पर बम-विस्फोट के कारण सिर में जिस स्थान पर उसे चोट लगी थी, ठीक उसी जगह यह घाव भी होने के कारण सिवा एक दाग को छोडकर अब उस जगह उस घाव का कोई अता-पता बाकी नही रहा था। ड्रेसिंग की आवश्यकता अब नही रही

थी। इसीलिए डाक्टर ने उसे अस्पताल से डिसचार्ज कर दिया था। डाक्टर की असीम सज्जनता के प्रति सभी कृतज्ञ थे।

शिधू के घर आते ही रमा का मन बिल्कुल बेकाबू हो गया। सारी लाज शरम छोडकर उसने सास से कहा—"अब तुम कमरे से बाहर चली जाओ। मैं अकेली इन से एकान्त मे बाते करना चाहती हूँ।"

गोपिका को उसकी यह बात विशेष अच्छी न लगी। उसकी दृष्टि मे वह बेशर्मी थी। गोपिका को लगा, यह उसके साथ एकान्त मे ऐसी क्या बाते करेगी? अच्छा हो गया, घर आ गया, फिर सिर्फ यह देख-कर ही उसे संतोष क्यो न मान लेना चाहिए?

उस जबरदस्ती के वानप्रस्थाश्रम मे रमा ने अपनी भावनाओ को कैसे कुचल दिया था, इसकी कल्पना उस बुढिया को हो, यह सभव न था। रमा भी बिल्कुल आधुनिक थी यह बात भी नही। यह भी सच है कि वह भी पुराने काल के पुराणपथी परिवार में बढी हुई थी। पर वह एक जवान लडकी थी। बुढापा और जवानी मे जितना अन्तर होता है, विशेषतः पुराने जमाने के बुढापे से तुलना करने पर वर्तमान काल की तरुणी की जो मन स्थिति होती है, उसकी कल्पना गोपिका को न होने के कारण रमा की बात उसे बुरी लगी। बडे कष्ट से ही क्यो न हो, पर वह बाहर चली गयी। अर्जुन और सुभद्रा पहिले ही मिल मे अपने-अपने काम पर चल दिये थे।

चाय का प्याला लिये शिधू की बैठक की ओर जाने से पहिले रमा ने दरवाजे और खिडकियाँ अन्दर से बन्द कर लीं, परन्तु प्याला शिधू के सामने रखने के बाद वह बडे अदब से दूर जा बैठी।

शिधू ने उसकी ओर देखा। प्याला उठाकर हाथ मे लिया। प्याला मुँह को न लगाकर वे उसे नीचे रखकर वह बोला—"तुम्हारे चेहरे मे भी फर्क हो गया है, रमा!"

"आईने में देखा था क्या?"—रमा ने पूछा।

"देखने की क्या ज़रूरत?"—शिधू हँसता हुआ बोला—"मुझे

सब याद आ रहा है। सिर्फ बीच ही के समय की याद नही आ रही है। परन्तु पहिले की स्मृति पूरी तरह से जाग उठी है। डाकखाने में नौकर था तब हम दोनो साथ रहते थे। कुछ ही दिन पहले हमारी सोहाग रात हुई थी और माँ गाँव चली गयी थी। तुम लाज से गडी जाती थीं। मारे शर्म के मुझ से बाते न करती। इसलिए मैं तुम्हे छेड़ता था। मेरी बातो का जवाब देने मे भी तुम्हे शर्म आती।"—शिबू की दृष्टि रमा की ओर गयी और वह एकदम रुक गया।

रमा की आँखो से आँसुओ की धारा बह रही थी। उन आँसुओं को आने के लिए गद्‌गद् की सवेदना उसे नहीं होती थी। डोर खींचते ही माला के मोती जिस तरह गिर पडते हैं, उसी तरह आँसुओ की बूँदें उसकी आँखो से टपक रही थी। फिर भी वह हँस रही थी। तो क्या वे उसके खुशी के आँसू थे ? क्या खुशी के आँसू आने के लिए गला भर आने की जरूरत नही होती ?

रमा के मन पर का अधिकार जाता रहा। उसने सारी लाज-शर्म ताक पर रख दी। एकदम उसने अपनी दोनो भुजाएँ उसके गले मे डाल दी और उसने भी उसे अपने अक मे भर लिया।

सुख का प्याला लबालब भर गया है, ऐसा रमा ने महसूस किया।

चाय का प्याला ज्यो-का-त्यो भरा वही रखा था।

दोनो के मुँह से शब्द नही निकलते थे। भेट के समय क्या-क्या बाते करूँगी, इस विषय मे उसने जिन वाक्यो की योजना पहिले से ही अपने मन मे कर रखी थी, वे सारे वाक्य प्रत्यक्ष भेट के समय जाने कहाँ गल गये।

उसकी पीठ को सहलाता हुआ शिबू बोला—"तुमने मेरे लिए कितने कष्ट भोगे, रमा—"

उसके इस एक ही उद्‌गार ने उसके आनन्द पर पानी फेर दिया। उसने कष्ट भोगे ? किसने ? क्या उस अकेली ने ही ? उसके लिए यदि सच्चे कष्ट किसी ने भोगे हैं, तो सुभद्रा ने भोगे हैं। मैंने कष्ट भोगे हो,

तो विवशता के कारण। पर इलाज होते हुए भी लाइलाज हो गयी थी सुभद्रा। उससे पहिले मैं अपने पति से मिली। पर अपने अच्छे हट्टे-कट्टे और पूर्ण स्वस्थ पति से सुभद्रा का अभी तक एकान्त नही हुआ।

यह महसूस होते ही उसके हृदय मे बडी तीव्र चुभन हुई। वह एकदम शिधू से दूर हो गयी और बोली—"सच्चे कष्ट भोगे हैं सुभद्रा ने, मैंने नही।"

"सो किस तरह ?" शिधू ने पूछा।

इस प्रश्न के उत्तर मे रमा को पहिले से सारा हाल उसे सुनाना पडा। इस विलक्षण परिस्थिति की कल्पना तब तक शिधू को बिल्कुल ही नही हुई थी।

अर्जुन और सुभद्रा ने उसके जिए कितने कष्ट भोगे, कितना स्वार्थ-त्याग किया और वह भी बिना थोडी भी शिकायत किये। यह सब जब शिधू ने सुना, तो उसका हृदय भर आया।

वह व्याकुल हो गया। उनका चेहरा बिल्कुल पीला पड गया। भरे हुए हृदय से जो आवेग उमड रहा था उसके स्रोत को बाहर निकलते समय कही बाधा हो रही थी। वह बीच ही मे अँटक रहा था।

उसकी वह अजीब-सी हालत देखकर रमा के छक्के छूट गये। "आपको अचानक यह क्या हो गया ? क्या कही दर्द उठा है ?"—रमा ने पूछा। उसके स्वर मे काफी घबराहट थी।

बडे कष्ट से शिधू ने उस आवेग को रोका। वह उसे निगल गया। तब कही उसका पीला चेहरा निखरने लगा। वह सिसकी के बाद सिसकी रोक रहा था। सुपारी लग जाने से जैसी हालत हो जाती है उसी तरह उसकी हालत हो गयी थी। सारा बदन पसीने से तर हो गया था। मस्तक पर पसीने की बूँदें उभर आयी थी। परन्तु जहाँ से उमडते हुए आवेग का स्रोत बहकर निकल जाना था, वे आँखें एकदम सूखी थीं। दयनीय मुद्रा से वह बोला—"मुझ से रोते नहीं बनता।"

रमा स्तभित हो गयी। रोते नहीं बनता, इसका क्या मतलब ?

यदि रोते न बने तो मनुष्य जिंदा कैसे रह सकता है ?

रो न सकने के कारण उसे कितनी यातनाएँ हुईं, रमा ने वे प्रत्यक्ष देखी। इसलिए उसके दयनीय उद्गारो का उसे पूरा-पूरा अंदाज हो गया।

उसकी बातें वही समाप्त हो गयी। आगे कुछ और कहने के लिए उसे भय लगा। वह आग्रह करने लगा, तब वह बोली—"अभी रहने दीजिए। अब फिर कभी बताऊँगी।"

"फिर बताना चाहे न बताना। पर एक बात मैं जान गया हूँ कि मैं अब मनुष्यो के बीच आ गया हूँ। अब मुझे कही-न-कही नौकरी कर लेनी चाहिए। नौकरी किये बिना अब चारा नहीं। अर्जुन कोई शिकायत नही करता यह सच है। पर इससे क्या ? आखिर कब तक हम उसकी जान पर जिंदा रहे ? नौकरी कहाँ मिल सकती है, यही अब मुझे देखना है।"

शिधू के हाथो से अपना हाथ छुडाकर रमा चट-से उठी और दरवाजा खोलकर बाहर आई।

"मिल लिये एकान्त मे दोनो खूब जी भरके ?"—गोपिका के स्वर में व्यग की चोट साफ दिख रही थी। अपनी सास का यह ताना रमा को अच्छा न लगा। सास के मुँह से ऐसी बात उसने इससे पहिले और कभी न सुनी थी। इसलिए उसके मन मे यही प्रश्न खडा हुआ कि संकट दूर होते ही क्या गोपिका के भीतर की सास जाग उठी है ?

प्रत्येक की जन्मगत वृत्ति अब जाग्रत होने लगी है, ऐसा उसे लगा। शिधू के उद्गारो की उसे याद हो आयी। उसने कहा था—"आखिर कब तक हम उसकी जान पर जिंदा रहे ?" उस उद्गार की जड में अभिमान की भावना है। यह विचार है कि हम उच्च वर्ण के हैं। ऊँच-नीच की सफेदपोशी भावना है, ऐसा उसे शक हुआ। अर्जुन के स्थान में यदि कोई सगा भाई होता तो शिधू के मुँह से क्या ऐसे उद्गार निकलते ?

उन उद्गारो के कारण उपकार की प्रतीति मे कही दोष आ रहा है, ऐसा उसे लगा।

गोपिका भीतर जाकर शिधू से बाते करने लगी। रमा ने जो बातें उससे कही थी, वही बातें वह उसके सामने दोहरा रही थी। रमा को लगा सास की बातो मे कही पर कुछ कमी है। अर्जुन और सुभद्रा द्वारा किये गये स्वार्थ-त्याग और भोगे गये कष्टो का जिस प्रेम और आस्था से उसने वर्णन किया था, वह आस्था और प्रेम गोपिका के शब्दो मे न था। गोपिका इस ढग से सब बता रही थी, जैसे जो भी अर्जुन और सुभद्रा ने उनके लिए किया, वह इसलिए किया कि उनका वह कर्त्तव्य ही था और यदि उपकार भी किये तो उन पर पीढियो से जो उपकार हम करते आये है, उन उपकारो का ही उन्होने बदला चुकाया है। रमा को लगा शिधू दोनो के वक्तव्यो का मन-ही-मन मिलान कर उन्हे जाँच रहा है।

उसने जिस समय वही बाते कही थी, तब भावनाओ से शिधू का हृदय उमड उठा था, इसीलिए उसे पता चला था कि वह रो नही सकता। परन्तु वही हाल जब गोपिका उसे सुना रही थी, तब पह उन्हे शान्ति से सुन रहा था। उसके मन पर वैसा कोई प्रभाव नही पड रहा था। पुन: उसके सामने प्रश्न उपस्थित हुआ, पहला आवेश निकल जाने के कारण ही तो कही यह यह परिणाम न हुआ हो? एक बार उसे जो कुछ लगना था सो लग चुका। इसलिए वही हाल फिर से सुनने पर पहिले का प्रभाव उसके मन पर फिर कैसे पडेगा?

उसे लगा व्यर्थ ही आडे-टेढे विचार मेरे मन में आ रहे है! बात यह है कि मेरे कमरे से बाहर निकलते ही सास ने मुझ पर जो ताना-कशी की उसी का असर मेरे मन पर हो गया है और उस असर के कारण ही ये अनाप-सनाप विचार मेरे मन मे उठ रहे है।

शाम को अर्जुन और सुभद्रा दोनो घर आये। तब फिर वही बाते निकली। अर्जुन किसी को कुछ बोलने ही न देता। उपकारों का उल्लेख ही न करने देता। यह देखकर शिधू ने कहा—"अब जो हो गया, सो हो गया। पर अब मुझे भी कही नौकरी तलाश करनी चाहिए।

इतने दिनो तक गृहस्थी का भार तुमने उठाया। अब मैं भी पूर्ण स्वस्थ हो गया हूँ। मुझमे अब कोई दोष नही रहा। अब इस गृहस्थी की चिन्ता मुझे करनी ही चाहिए।"

"मतलब ?" अर्जुन बोला, "क्या तुम मुझे छोडकर चले जाओगे ?"

"यह तो अब बिल्कुल असभव है।" शिधू बोला—"जहाँ तुम, वहाँ मैं। तन मे प्राण रहते तक अब तुमसे मैं अलग नही होऊँगा। अपने ही मिल मे मेरे लिए भी एकाध नौकरी तलाश दो न ?"

"ऐसा क्यो करते हो ? अब तुम अच्छे हो गये हो। पहिले वाली नौकरी ही क्या तुम्हे नही मिलेगी ?"

शिधू सोच मे पड गया। उसकी नौकरी खत्म हो गई थी। उस स्थान पर अब तक दूसरे की नियुक्ति भी हो गई होगी। फिर भी उसने एक दरख्वास्त देने का निश्चय किया।

वह बोला—"निश्चित रूप से यह नही कहा जा सकता कि पहिले वाली नौकरी मिल ही जाएगी। अगर न मिले तभी मुझे खुशी होगी। यदि वही नौकरी मिल गयी तो मुझे पुनः कोंकण जाना पडेगा और वहाँ जाना याने तुमसे अलग होना पड़ेगा और यह मैं बिल्कुल नहीं चाहता।"

अर्जुन बड़े चक्कर मे पड गया। शिधू से अलग रहना उसके लिए असभव था। शिधू के लिए उसने अपने सर्वस्व का त्याग कर दिया था। घर-द्वार, मा-बाप किसी की भी कोई परवाह न की थी। यही नही बल्कि अपनी पत्नी से भी वह एक तरह से वचित हो गया था। इसीलिए उसे लगा कि शिधू को पहिली नौकरी न मिले।

अब सब कुछ सुचारु रूप से चलने लगा। पर फिर भी उन दो दपतियों के जबरदस्ती के वानप्रस्थाश्रम का अत न हुआ था।

———

धर्म कब याद आता है ?

उस दिन से शिधू के दिमाग मे नौकरी खोजने की बात घूमने लगी। सबसे पहिले उसने अपनी पुरानी नौकरी को फिर से प्राप्त करने का प्रयत्न किया। नौकरी के लिए वह अयोग्य ठहरा दिया गया था जिसके फलस्वरूप डाक-विभाग ने उसे अपने कर्मचारियो की सूची से सदा के लिए हटाकर उसका अतिम फैसला कर दिया था। इसलिए अपनी पुरानी नौकरी पर उसका अब किसी भी प्रकार का कोई हक नही रह गया था। उसकी नौकरी चन्द वर्षो की ही थी, इसलिए वह पेंशन पाने का भी अधिकारी न था। लडाई पर जाकर वह घायल हो गया था, उसकी सुध-बुध खो गई थी, इसीलिए जब उसे लडाई से छुट्टी दी गई, उस समय कुछ महीनो का वेतन उसे इनाम के रूप में दे दिया गया था। इससे अधिक उसे कुछ न मिला। अदि वह अर्जुन की तरह पहिले से ही पलटन मे नौकर होता तो लडाई मे घायल होने के बाद उसे जीवन भर कुछ-न-कुछ पेशन मिलती रहती। पर वह था सिव्हिल मुहकमे मे और सिव्हिल मुहकमे के नौकरो के लिए ऐसी कोई व्यवस्था न थी।

उसने सोचा, यदि डाक्टर का सर्टीफिकेट मिल जाए, तो वह पुनः नए सिरे से अपने पुराने डाक-विभाग मे ही भरती होकर, तार बाबू का काम करने लगेगा। पहिले की नौकरी के कुछ वर्ष यदि बेकार चले गये, फिर भी कोई हर्ज न था। यह आशा तीव्र रूप से उसके मन मे जाग उठी और इस दशा मे प्रयत्न करने का उसने निश्चय किया। जिस अंग्रेज डाक्टर ने उसे अच्छा किया था, उसकी सिफारिश से उसने स्थानीय सिव्हिल सर्जन से "फिट सर्टीफिकेट" प्राप्त करने की कोशिश की। पर नतीजा कुछ न निकला। उस सिव्हिल सर्जन पर डाक्टर की

सिफारिश का कोई असर न हुआ । अन्य सिव्हिल सर्जनो की तरह उसके खून मे भी डाक्टर की वृत्ति कम और आफीसरी की वृत्ति अधिक थी । वह शिघ्रू की पहिली बीमारी से पूर्णतया परिचित था । जिसे एक स्मृति-भ्रंश हो गया था, उस शिघ्रू को सरकारी नौकरी के लिये "फिट सर्टीफिकेट" देने से उसने साफ इन्कार कर दिया ।

यह तो कुछ इसी तरह की बात हो गयी कि माँगने गई पूत और खो आई भतार ! थोडी आशा थी कि डाक-विभाग मे नही तो कम-से-कम रेलवे में ही तारबाबू की जगह मिल जायगी । पर अब वह आशा भी जाती रही ।

उसने सोचा कि जब क्लर्की ही करनी है तो मिल मे ही क्यो न की जाए ? क्लर्कों को सब जगह एकसा ही वेतन मिलता है । पढे-लिखे सफेदपोश लोग उन दिनो मिलो मे क्लर्की की नौकरी प्राय. नही करते थे । इसलिए वह मिल मे ही कोई नौकरी खोजने लगा । अर्जुन ने भी अपने ढग से इस काम मे उसकी मदद करना आरम्भ कर दिया था ।

मिल के फाटक पर पहरा देने वाले एक हथकटे सिपाही का क्या प्रभाव हो सकता है ? परन्तु वह लडाई से लौटा हुआ जख्मी सिपाही था । इसलिए मिल के अफसरो मे अर्जुन बडा लोकप्रिय था । जाबर और हैड जाबर की तो बात ही क्या, मिल का मैनेजर भी कभी-कभी पाँच-दस मिनट उससे बातें करते खडा रहता । अर्जुन ने मैनेजर से मिलने का निश्चय किया ।

इस बीच शिघ्रू भी भिन्न-भिन्न मिलो और कम्पनियो मे जाकर नौकरी खोजने की कोशिश कर ही रहा था । मिलटरी अकौन्ट्स मे बहुत सी नई जगहे निकली थी । उनके लिए हजारो मद्रासी भाई पूना आये थे । जब वे सब जगहे भर गयी, तब बचे हुए मद्रासियो का दल मद्रास न लौटकर नौकरियो के लिये बम्बई आ धमका । इसलिए उन दिनों बम्बई मे दूसरो को मामूली क्लर्क की नौकरी मिलना भी कठिन हो गया था । चाहे जितने कम वेतन मे बी० ए० , एम० ए० पास तथा

शार्ट-हैन्ड और टाईपिंग जानने वाला मद्रासी क्लर्क जब तीन आदमियों का काम अकेला ही करने को तैयार हो जाता, तो उस वक्त मामूली मैट्रिक पास महाराष्ट्रीय को कौन पूछता ? लड़ाई के बाद मद्रासी टिड्डी दल ने गरीब महाराष्ट्रियों के मुख का कौर छीन लिया। जहाँ पहिले साठ-साठ रुपये महावार के तीन आदमी काम करते थे, वहाँ १२० रुपये मूल्य के तीन आदमियो का काम अकेला एक डिग्रीधारी मद्रासी तीस रुपये पर करने को तैयार हो जाने के कारण पूजीपतियो के आफिस वाले अधिक वेतन के महाराष्ट्रीयो को अपने कार्यालय मे क्यो स्थान देते ?

वेतन कम करने की दरिद्री वृत्ति, पूँजी-पतियो के दिमाग मे पहिले पहल घुसने के लिए, बम्बई के बाजार मे लडाई के बाद उतरने वाले डिग्रीधारी मद्रासी भाई ही कारणीभूत हुए।

शिधू जोशी हताश हो गया। उसे लगने लगा, मेरी स्मृति खो गई थी वही अच्छा था। अब मैं समझदार हो गया हूँ। घूमने-फिरने लगा हूँ और मेरे स्वास्थ्य मे भी अब कोई दोष नही रह गया है तो अब मुझे नौकरी क्यो नही मिलनी चाहिए ? लडाई पर जख्मी होकर लौटने का श्रेय जिस तरह सिपाही को मिलता है उसी तरह लडाई से घायल होकर लौटे हुए क्लर्क को भी क्यो न मिलना चाहिए ? मैंने जो देह दड-भोगा उसका का यही इनाम है ?

वह सोचता था कि जब वह लोगो से कहेगा कि वह लडाई पर गया था और वहाँ से जख्मी होकर लौटा है, तो लोग उस पर गर्व करेंगे और उसके प्रति उनके हृदय में आदर की भावना जाग्रत होगी। कम-से-कम अनुकंपा तो निश्चय ही उत्पन्न होगी !

जहाँ वह आदर की अपेक्षा कर रहा था, वहाँ जब उसने अपने लिए लोगों से यह कहते सुना कि लडाई पर क्यो गये थे मरने—उस समय उसकी पुरानी स्मृति हरी हो जाती और उसने लडाई पर जाने की जो नासमझी की थी, उसके लिए वह पछताने लगता।

लड़ाई पर जाने से पहिले उसने बड़ी-बड़ी आकांक्षाएँ अपने मन में

संजोकर रखी थी। उसने सोचा था कि लडाई से लौटने के बाद वह एक बडा "हीरो" बन जायेगा लोगो मे उसकी प्रतिष्ठा बढेगी उसके कार्यों की प्रशसा होगी समाचार पत्र उस पर लेख लिखेंगे। आर्थिक लाभ चाहे भले ही न हो, पर कम-से-कम उसका नाम तो जरूर होगा, ऐसी उसकी अपेक्षा थी। परन्तु नौकरी की याचना के लिए वह जहाँ भी गया, वहाँ हर आदमी उसे मूर्ख सिद्ध करने लगा। तब उसे इसी पर आश्चर्य होता, कि वह लडाई पर जाने के मोह मे कैसे फँस गया था।

पुराना इतिहास उसकी नजरो के सामने मूर्त हो उठता। वीरवृत्ति को उत्तेजना देनेवाले तत्कालीन समाचारो के लेख उसे याद आ जाते। अग्रेज सरकार उस समय शिवाजी पर का अपना क्रोध भूल गयी थी। स्वामी रामदास के श्लोको का हवाला देकर शिवाजी मावलो को आह्वान देनेवाले सरकारी सूचना-पत्र उसकी नजरो के सामने भूल जाते। लडाई पर जाने से हिन्दुस्थान का कल्याण होगा। कहने वाले नेता और उनके भाषण उसकी दृष्टि के सम्मुख मूर्त हो जाते।

इन नेताओ पर अब उसे बडा क्रोध आ रहा था। उनके द्वारा गलत राह दिखाने के कारण ही उसके दिमाग मे लडाई पर जाने का पागलपन घुसा था और इसीलिए वह लडाई पर गया था और अत मे इसी कारण ही उसका सत्यानाश हो गया। यह सोचकर वह उन नेताओ को लाखों गालियाँ देने लगा। परन्तु नेताओ को गालियां देने से उसे नौकरी थोडे ही मिलने वाली थी ?

अन्त मे अर्जुन के प्रयत्न ही सफलीभूत हुए और उसी की मिल मे शिघू को क्लर्क की नौकरी मिल गई। फाटक पर पहरा देनेवाले दरबान के और क्लर्क के वेतन मे कोई विशेष फर्क न था। शिघू को एक प्रकार से यह अच्छा ही लगा। वेतन कम ही क्यो न मिले, पर कम-से-कम अर्जुन की तरह वह भी नौकर हो गया, इतना ही उसे समाधान हुआ और वह अपने काम पर हाजिर हो गया।

मिल के कर्मचारियो को शिघू का हाल मालूम हो गया था। वे

लोग जानते थे कि लडाई मे घायल हो जाने से कुछ दिनो तक उसका दिमाग बिगडा हुआ था। इसलिए सब लोगो के हृदय मे उसके प्रति सहानुभूति थी। वे हमेशा यह सावधानी रखते कि उस पर काम का अधिक बोझ न पडे। उसके साथी क्लर्को मे उसकी तरह सफेदपोश और कोई न था। मद्रासी भाईयो का तो मिलो मे अभी तक प्रवेश ही नही हुआ था।

शिधू को नौकरी मिल जाने के बाद उस परिवार ने घर बदलने का निश्चय किया। अर्जुन को छोडकर न रहने की शिधू ने प्रतिज्ञा की थी। एक ही कमरे मे अछूतो के साथ रहना अब गोपिका की जान पर आ आ रहा था। पहिले सारी गृहस्थी अर्जुन ही चलाता था, इसलिए गोपिका को ऐसी शिकायत करने की कोई गु जाइश ही न थी, पर अब शिधू को भी नौकरी मिल जाने से उसकी यह शिकायत शुरू हो गई।

शिधू का आग्रह था कि अब जो घर लिया जाए उसमे दो कमरे हों और वे दोनो एक दूसरे से लगे हो। पर गोपिका को यह बात जँचती न थी। वह कहती, "हम एक ही चाल मे रहेगे, पर हम दोनो के कमरे अलग-अलग, एक दूसरे से दूर होने चाहिये। ऐसा होने से हम एक दूसरे के घर आसानी से आ-जा सकेंगे।"

गोपिका के मन मे अब उपकार की भावना के बदले जाति-भेद की भावना पैदा होने लगी थी। जब एक ही कमरे मे ये दोनो परिवार एकत्रित रहते थे, तब अर्जुन और सुभद्रा को अपने अपने अग सिकोडकर उसके बीच रहना पडता, जिससे कि गोपिकाबाई को उनकी छूत न लग जाए। उसी कमरे मे रसोई भी बनती थी और दोनो अछूत वही रहते थे। इसलिए उसी कमरे मे रसोई बने, यह बात भी गोपिका को बडी नागवार गुजरती थी, पर परिस्थिति के आगे सिर झुकाये बिना उसे कोई चारा ही न था और इसीलिए वह उस भ्रष्टाचार को चुपचाप बरदाश्त कर रही थी। पर अब उसका बेटा कमाने लगा था इसलिए उसे लगने लगा कि अब वह अछूतो के साथ क्यो रहे ?

रमा यद्यपि पुराणपंथी वातावरण मे बढी थी, पर वह परिस्थिति को महसूस करती थी। यद्यपि उसके पति को नौकरी मिल गयी थी, फिर भी वह यह महसूस करती थी कि उतनी-सी तनख्वाह मे बम्बई जैसे शहर मे उन तीनो की ठीक से गुजर न होगी। वह यह भी जानती थी कि जब तक उसकी गृहस्थी मे अर्जुन थोडा-बहुत भी हाथ नही बँटाएगा, तब तक बम्बई मे उन तीनो का निर्वाह होना असम्भव था। पर उसके मन में सिर्फ यही एक स्वार्थ-भावना न थी। वह यह भी सोचती थी कि अर्जुन और उसकी पत्नी ने उन तीनो पर इतने उपकार किये हैं कि अब उनसे एकदम अलग हो जाना महान कृतघ्नता होगी।

सबके एक स्थान मे रहने से किसे आर्थिक लाभ होगा या हानि होगी यह विचार गोपिका के मन मे न आता। परन्तु कृतज्ञता की अपेक्षा धर्म-अधर्म और छुआछूत की ही उसे अधिक परवाह थी।

जब गोपिका यह शिकायत करने लगी तब रमा ने सारे अधिकार अपने हाथ मे ले लिए और बडे अदब के साथ गोपिका को चुप किया। वह बोली—"धर्म-अधर्म और छुआ-छूत की अब क्यो इतनी परवाह की जाए? अछूतो के अन्न पर ही आज तक हम जिन्दा रहे है। हमारे लिए पति-पत्नी दोनो मिल मे खपते थे और हमे पोस रहे थे। उस समय धर्म कहाँ चला गया था? उस समय छुआ-छूत कहा चली गई थी? दोनों सीधे चूल्हे तक आते-जाते थे।"

"अरी, वह आपद्धर्म था।"—गोपिका बोली—"यदि कोई खास मौका आ जाने पर धर्म के विरुद्ध थोडा आचरण हो जाए, तो प्रायश्चित लेकर हम अपने आपको शुद्ध कर ले सकते हैं। वह समय ही वैसा था। रुपये-पैसे की क्या कोई छुआ-छूत मानता है? अछूतो के घर का ही पैसा तो हमारे घर मे आ रहा है न? अरी, पैसा परमेश्वर है। उसमे कोई दोष नही। छुआछूत होती है मनुष्यो मे, अछूत के द्वारा छू लिये गये कपडो मे। अब मैं हूँ बूढी विधवा यदि इस उम्र मे धर्म अधर्म और छुआछूत के नियमो का पालन न करूँ, तो तुम लोगो को ढग कैसे सिखाऊँगी?

दोनों ने हम पर उपकार किये हैं इससे मैं कहाँ इन्कार करती हूँ, पर अब यह भ्रष्टाचार और कब तक चलता रहेगा ?"

"जब तक तन मे प्राण है तब तक ।"—रमा ओठों को दाँतो तले चबाती हुई बोली, "दोनो परिवारो को एक स्थान मे लाकर जिस ईश्वर ने जीवित रखा है, वह ईश्वर क्या इतना निर्दयी है ? जिस मनुष्य ने हम लोगो के लिए अपने प्राणो की भी परवाह नही की, उस मनुष्य की जाति के बारे मे कुछ कहना मुझे अच्छा नही लगेगा। जब हम पर विपत्ति का पहाड टूट पडा था, उस समय हमारी जाति के लोग कहाँ मर गये थे ? हम पर आसमान टूट पडा था, कही हमे किनारा नजर नही आ रहा था, उस समय हमारी जाति के तीन लोग क्यो नही आये हमे मदद करने ? मै तो अर्जुन को ब्राह्मण से भी उच्च समझती हूँ। दुनियाँ मे अगर कोई सच्चे ब्राह्मण है, तो वे अर्जुन जैसे अछूत ही है।"

होश मे आकर रमा ने अपनी जबान रोक ली। सारे जीवन में साध से उसने कभी ऐसा भला-बुरा नही कहा था। उसका वह आवेश देखकर, गोपिका ने कोई उत्तर न दिया। वह चुप ही हो गई।

उस दिन शाम को जब शिधू घर आया, तब गोपिका ने उससे कहा, "अब तुम अच्छे हो गये हो। कमाने भी लगे हो। अपने पूर्वजों का घर गाँव मे खाली पडा है। उसमे ताला लगा है। चूहो ने खाली घर मे ऊधम मचा रखा होगा। घर के देव अँधेरे मे पडे है। वहाँ किसी को जाकर दीया जलाना चाहिए। इसलिए अब मैं गाँव चली जाती हूँ। वही रहूँगी। यदि कुछ पैसे वहाँ भेज सको, तो भेज देना, वरना पुरखों के घर मे भगवान जिस हालत मे रखेगा, उसी तरह रहूँगी।"

शिधू को शक हुआ कि घर मे कुछ गड़बडी हो गई है। वह बोला, "अभी इतनी जल्दी क्या पडी है ? नये घर मे चल ही रहे है। वहाँ सब जम जाने दो। फिर तुम अगर चाहो, तो चले जाना।"

गोपिका के प्रस्ताव पर अर्जुन को भी आश्चर्य हुआ। वह बोला— "आप ही के आधार पर तो हम लोग यहाँ आकर रहे हैं। यह भी मिल

मे जाकर कमाती है। आप यदि गाँव चली जायेंगी तो छोटी मालकिन के साथ कौन रहेगा ? वे दोपहर भर अकेली कैसे रहेगी ?"

"तो फिर उसे भी मिल मे कोई काम लगा लो ?" गोपिका उमड कर बोली—"जिस तरह तुम दोनो मिल में जाते हो उसी तरह ये दोनो भी जाएँगे।"

अर्जुन कुछ उत्तर देने वाला था, पर रमा ने उसे आँख से इशारा कर दिया।

शिघू बडा अस्वस्थ हो गया। उसने सोचा, हर परिस्थिति मे मेरी माँ ने इतने सतोष से जीवन बिताया और अब जब मैं कमाने लगा हूँ तभी वह इतनी नाराजगी क्यो दिखाती है ? यह पहेली वह हल न कर पा रहा था। रमा से पूछना संभव ही न था। क्योकि दोनो का एकान्त मे मिलन ही न हो पाता था।

दोनो परिवारो को आखिर उसी तरह की एक दूसरी चाल मे दो कमरे मिल गये। ये दोनो कमरे एक दूसरे से जुडे थे और उनके बीच मे एक दरवाजा था। सब लोग जाकर नया घर देख आये, पर गोपिका को वह पडोस पसन्द न आया। वह बोली—"पडौसी सब बडे गन्दे मालूम होते हैं। लगातार मछलियो की बू आ रही थी वहाँ। ऐसी जगह मैं कैसे भोजन पाऊँगी ?"

"और अब जहाँ रह रहे है, क्या वहाँ गन्ध नही आती ?"—शिघू बोला—"जैसे यहाँ आती है उसी तरह वहा भी।"

"फिर घर बदलने की जरूरत ही क्या है ?"—गोपिका बोली—"यहाँ क्या बुरा है ? दूना किराया भी क्यो दिया जाए ? व्यर्थ खर्च ही बढा रहे !"

"ठीक है।"—शिघू बोला—"जैसी तुम्हारी इच्छा।"

"ठीक क्या है !"—अर्जुन जरा गुस्से से ही बोला—"एक ही कमरे मे दो परिवार अब और कितने दिन रहेगे, पटेलन ? एक ही घर मे पति-पत्नी एक दूसरे से मिल नही सकते, यह बात आपके ध्यान मे कैसे

नही आती ?"

"मैं अब बूढी हो गयी हूँ।"—गोपिका क्रोध से बोली—"बुढिया को कहाँ से आई अक्ल ? तुम सब जवान हो। बारह घाट का पानी पी कर लडाई जीतकर आये हो। मेरा सारा जीवन गाँव मे बीता है। मैं बम्बई मे नही रह सकती। लाचार थी, इसलिए इतने दिन जैसे-तैसे रही, सब बरदाश्त करती रही। भगवान का नाम लेकर सारा धर्म-अधर्म और छुआछूत ताक पर रख दिया था मैंने। पर इससे आगे मै यह भ्रष्टाचार बरदाश्त नही कर सकती। मैं अपने गाँव लौट जाऊँगी। प्रायश्चित लूँगी। तुम लोग सुख से यहाँ राज करो।"

शिघू के मस्तिष्क मे अब प्रकाश पडा।

नया घर नयी गृहस्थी

नये घर मे गृहस्थी सजा दी गयी। कमरे दो थे, पर चूल्हा एक ही रखा गया। सुभद्रा ने दो परिवारो के लिए अलग-अलग दो चूल्हे रखने का प्रस्ताव किया था। परन्तु शिघ्रू और अर्जुन दोनो को यह प्रस्ताव स्वीकार न हुआ। रमा को तो एक ही चूल्हा रखने से कोई एतराज था ही नही।

सुभद्रा यही सोचती थी कि एक ही चूल्हा रखने से उसके पति को सामिष भोजन खाने को न मिलेगा जो कि उसे बेहद पसन्द था। वह अपने पर से यह अनुमान कर रही थी। निरामिष भोजन से वह ऊब उठी थी। पर अर्जुन अपना आग्रह छोडने को तैयार न था। वह बोला—"इतने दिनो तक हम लोगों ने एक साथ खाया है। फिर इस वक्त ही क्यो हम अलग-अलग पकाकर खावे ? यदि मांस.मच्छी खाने को न मिली, तो हम कोई मर नही जाएँगे!

गोपिका बोली,—"यदि सुभद्रा की इच्छा हो, तो तुम लोग क्यों व्यर्थ रुकावट पैदा कर रहे हो जी ? अर्जुन और सुभद्रा को उनकी पसन्द का खाना मिलेगा और रमा को भी थोड़ा आराम मिल जाएगा। अभी उसे ही सब का खाना पकाना पड़ रहा है।"

"पर पटेलन जी, क्या आपने यह भी सोचा है कि एक ही चूल्हा रखने से खर्च की कितनी बचत होगी ?"—अर्जुन बोला—"दो जगह चूल्हे रखने से दुगना कोयला लगेगा, दो सब्जियाँ लानी होंगी, नमक, मिर्च और मसाले का भी अलग-अलग प्रबन्ध करना होगा। वही यदि एक ही जगह सबका खाना पके तो खर्च में उतनी ही बचत होगी।"

"तुम्हारे जी मे आए सो करो!"—कहकर गोपिका कमरे से

बाहर चल दी।

यह देखकर कि एक ही जगह सब की रसोई बनना गोपिका को पसन्द नही है, रमा को आश्चर्य हुआ। वैसे देखा जाए तो एक ही स्थान मे दोनो की रसोई बनने से अर्जुन का ही नुकसान था। उसे क्या था? सिर्फ मछली पका लेने से ही उसका दाल, सबजी और रोटी आदि का काम चल जाता परन्तु एक ही चूल्हे पर निरामिष पकने से दाल, घी, कढी, सबजी, भात, रोटी, छाछ आदि चीजे सब को एकसी परोसी जाने के कारण इस बढते हुए खर्च का भार अर्जुन पर ही अधिक पडता था।

रमा ने यह बात समझाकर भी बतायी, परन्तु शिधू ने उस पर कोई उत्तर नही दिया। यह देखकर कि हर बात मे गोपिका विरोध कर रही है, उसे बुरा लग रहा था। अपनी माँ के हृदय मे अर्जुन और सुभद्रा के प्रति कृतज्ञता की कोई भावना न हो, यह बात उसे चुभ रही थी। कम-से-कम यह देखकर कि रमा को यह पसन्द है, उसे जँचता है, शिधू को समाधान होता था।

नये घर मे आने के बाद पहिले ही दिन गोपिका ने अपना बिस्तर गैलरी मे ले जाकर बिछाया। शिधू ने ऐसा न करने का सुझाव दिया। तब वह बोली—"पूर्व-जन्म मे क्या पाप किया था जिससे इस जन्म मे मैं विधवा हो गयी! अब कम से-कम इस जन्म मे तो तुम दोनो के बीच मैं बूढ़ी क्यो कोई रुकावट बनूँ और पाप कमाऊँ? तुमने शौक से दो कमरो वाला घर लिया है, तो उन कमरो को सार्थक हो जाने दो।"

गोपिका यद्यपि उदासीनता का दिखावा कर रही थी, फिर भी उसकी बातो मे जो व्यग था वह दूसरो के ध्यान मे आये बिना न रहा। सुभद्रा धीरे से रमा से बोली—"इतनी आपत्तियाँ आयी थी, आसमान टूट पडा था, फिर भी वे दिन सुख मे बीते। अब कही आसमान साफ दिख रहा है तो एसे समय क्यो अडंगा लगा रहे है ये? लक्षण कोई ठीक प्रतीत नही होते, रमा भाभी! मैं सोचती हूँ आप यदि सास जी की बात मान लेती, तो अच्छा होता।

रमा चुप ही रही। वह भी आखिर जवाब क्या देती ? सुभद्रा की तरह उसे भी लगता था कि विपत्ति अच्छी, पर असमाधान अच्छा नही। विपत्ति मे थोडे ही सुख से मनुष्य का समाधान हो जाता है। छुआछूत और धर्म-अधर्म के ये विचार विपत्ति के समय कहाँ गायब हो गये थे ? अलग-अलग रसोई बनाने की बात उस समय कहाँ निकली थी ? विवाह होने के बाद से क्या किसी का भी कोई मतभेद हुआ था ? सास के पास उसे रहने का अधिक अवसर नही आया था। प्राय वह पति के साथ ही रहा करती। कभी छुट्टियो मे पति घर-गाँव आता, तो वह भी उसके साथ आती। यदि कभी गोपिका बीमार पड जाती तो थोडे दिन आकर सास के पास रह लेती। उस समय गोपिका ने उस पर अपने सासपन का रोब कभी न जमाया था। सुख के दिनो मे जो सुख और संतोष मे रही, सकट मे घबराई नही, वही सास इस समय इतना विरोध क्यो दिखा रही ?

गोपिका के असमाधान के कारण उत्पन्न हुई काली छाया उस नये वातावरण मे कभी की साफ हो गई। रमा और सुभद्रा के लिए वह दिन बडे भाग्य का प्रतीत हुआ।

बाहर गैलरी मे सोयी गोपिका को खिडकी के पास खडी होकर आहट लेते हुए पड़ोस के कमरो वाले देख रहे थे।

पर गोपिका को भीतर की कानाफूसी तक सुनाई न दी। जबरदस्ती के वानप्रस्थाश्रम का अन्त सिर्फ मौन मे हुआ था। एकान्त मे बाते करने योग्य बहुत विषय थे। पर उन सब बातो को बोलने की शक्ति किसी की भी वाचा मे न रह गयी थी।

दिन निकला। तब रमा को लगा, जैसे जग हँस रहा है। सभुद्रा के चेहरे पर भी विलक्षण ताजगी आ गयी थी। दोनो की आँखे चार हुई। तब दोनो के अधरो पर अर्थ-भरी मुस्कान मचल उठी।

"आज हवा कितनी अच्छी है ?"—रमा बोली।

"होनी चाहिए।" इस तरह हँसकर कहती हुई कलेऊ का डिब्बा

लिये सुभद्रा मिल जाने के लिए निकल पडी।

रमा अकेली ही गैलरी मे खडी थी। पडोस के कमरे वाले उसके कमरो की ओर धीरे-से झाँककर आगे चल देते थे। उसकी पडोसिन भी अछूत ही थी। पर वह थी बडी हँस-मुख। उसकी नजर से नजर टकराते ही रमा ने सहज हँस दिया। तब वह रमा से बोली—"आप कैसे आई इस बस्ती में रहने ? इस चाल मे कोई बाभन रहने नही आता।"

"अजी कहाँ के बाभन और कहाँ के शूद्र !"—रमा बोली—"जब वक्त पड़ता है, तब जात पात को पूछता कौन है ?"

उस औरत ने प्रश्न पूछने आरम्भ किये और रमा ने उत्तरो मे अपना सारा हाल उसे सुनाया।

वह औरत भी मिल के एक क्लर्क की पत्नी थी, पर वह क्लर्क सफेद-पोश न था। वह भडारी जाति का था। औरत का नाम नर्मदा था। परन्तु अडोस-पडोस के लोग उसे उसके कुलनाम से ही पहचानते थे। नर्मदा मायेकरीन उस चाल मे सभी को प्रिय थी।

चाल मे यदि किसी के बच्चे बीमार पडते, तो उसकी सेवा करने के लिए वह हमेशा तैयार रहती। खाली बैठे रहना, हमेशा सोते रहना अथवा व्यर्थ ही गप्पे हाकते बैठे रहना उसे बिल्कुल पसन्द न था। इसी-लिए वह कोई-न-कोई काम कही से अपने लिए खोज निकालती।

यह देखकर कि रमा किसी से बाते कर रही है, गोपिका कमरे से बाहर आई। इस समय तक रमा की बाते बन्द हो गयी थी और नर्मदा भी अपने कमरे मे जा रही थी। रमा ने अपनी सास से उसका परिचय करा दिया।

कमरे मे आने पर गोपिका बोली—"तुम्हारा यह स्वभाव अच्छा नही हैं, रमा ! जाने कहाँ की कौन भडारी औरत ! उसके साथ इतनी बाते क्यो कर रही थी ? भडारी जाति बहुत हल्की होती है। इस जाति के लोग ताडी निकाला करते हैं। मराठो से भी हम इस जाति को नीच मानते हैं। दुर्भाग्य से हमे इस चाल मे आकर रहना पडा है। पाडवो

की तरह अज्ञातवास मे दिन काटने पड रहे हैं। तब हमें चुप अपने घर में बैठे रहना चाहिए। इन हल्के लोगो से हम जितनी दूर रहे उतना ही अच्छा।"

"वैसे तो वह औरत बडी अच्छी मालूम हुई।"—रमा बोली—"बडे प्रेम से हमारी पूछताछ कर रही थी।"

"आजकल तुम्हारे दिमाग मे यह क्या घुस गया है, रमा ?" गोपिका चिढकर बोली -"मैं जो कहूँ उसका विरोध करने की ही जैसे सनक सवार हो गयी है तुम पर ! हम पुराने घर मे ही ठीक थे। वहाँ भी औरते ही थी। पर वे दिन मे मिल चली जाती थी, इसलिए उनके साथ विशेष परिचय नही हो पाया था किसी का। यहाँ आने पर पहिले ही दिन से तुमने यहाँ की औरतो से परिचय करना शुरू कर दिया। मैं यह पसद नही करती।"

इस डर से कि यदि कोई उत्तर देती हूँ, तो बात का बतंगड बन जाएगा, रमा चुप ही रही। परन्तु यह देखकर कि अपनी सास का स्वभाव बदल गया है, उसे अत्यन्त दुख हुआ। थोडे अच्छे दिन आते ही जातपांत के प्रश्न को उठाकर, दोनो परिवारो मे, एक दूसरे के प्रति विरोध की भावना पैदा करने की अपनी सास की वृत्ति रमा को दुस्सह हो गयी। उसे यही लगा कि जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप मे हमे जिंदा रखा, उनके प्रति अपने हृदय मे अब घृणा की भावना रखकर, पडौसियो की भी जाति का प्रश्न उठाकर, पडौस धर्म का पालन करने से उसे परावृत्त करने वाली गोपिका के भीतर की "सास" अब अच्छी तरह से जाग उठी है।

रात के काम-काज से निपट रमा ने सुभद्रा का नर्मदा से परिचय करा दिया गैलरी मे वे तीनो बैठी बाते कर रही थीं। यह बहाना बना कर जैसे वह कुछ भी नही सुन रही है गोपिका द्वार मे खडी थी। उनकी बैठक मे ऐसी कोई बात निकलना सभव ही न था जो किसी भी तरह आपत्तिजनक कही जा सकती।

मामूली बाते हो रही थी, फिर भी गोपिका को अच्छी न लगी। वह दरवाजे से ही चिल्लाई—"अब कितनी देर तक और बाते करती रहोगी तुम लोग ? मुझे उस गैलरी मे अब सोना जो है।"

तीनो उठकर अपने-अपने कमरे मे चल दी। झल्लायी हुई गोपिका गैलरी मे आयी और उसने अपना बिस्तर वहाँ लगा दिया। तब नर्मदा बोली—"अच्छा हुआ जो आप यहाँ रहने आ गयी। पहिले इन कमरों मे दो शराबी रहा करते थे। बडी तकलीफ थी हमे उनके कारण। अब आप जैसे भद्र लोग आ गये है। इससे अगर कुछ हुआ, तो फायदा ही होगा। हमारे आचार-विचार सुधर जाएँगे। ऐसी चाल मे आप जैसो का पडोस मिल जाना बडे भाग्य की बात है। वरना यहाँ तो एक सिरे से दूसरे सिरे तक गँवार ही लोग रहते हैं। किसी मे कोई अच्छे ढग नही। आज तक लडाई की खबरें हम अखबार मे पढा करते थे। हमने कभी स्वप्न मे भी नही सोचा था कि लडाई से लौटे हुए लोग इस तरह आकर हमारे पडोस मे रहेगे। परन्तु अब हमने प्रत्यक्ष देखा तो इसे हमने अपना बडा भाग्य समझा।" नर्मदा लगातार बोल रही थी। परन्तु गोपिका ने सिवा हुँकारी भरने के एक भी शब्द अपने मुँह से बाहर नही निकाला।

बेचारी नर्मदा ऊबकर अपने कमरे मे चल दी। और गोपिका सिर पर ओढना लेकर चिढी हुई मनःस्थिति मे ही सो गयी।

स्वास्थ्य ठीक हो जाने के बाद से शिघू ने रोज अखबार पढना आरम्भ कर दिया था। रोज के सारे अखबार खरीदना उसके लिए असम्भव था। मिल के कुछ लोग अलग-अलग अखबार रोज खरीदा करते और एक दूसरे को पढने दिया करते। वह एक प्रकार से चलता-फिरता वाचनालय ही हो गया था। इस कारण यद्यपि दो-दो तीन-तीन दिन के पुराने अखबार शिघू को पढने मिलते, फिर भी बिल्कुल ही पढने न मिलने की अपेक्षा, पुराने ही क्यो न हो, पर पढने को तो मिलते थे।

लड़ाई कहाँ तक आई, कहाँ हो रही है और किस-किस मोर्चे पर

क्या-क्या हो रहा है, यह जानने की उसकी इच्छा बेकाबू हो गई थी। युद्ध के कारण राजनीति मे बडी उथल-पुथल मच गयी थी। रूस की हार हो जाने से शत्रु राष्ट्र और मित्र राष्ट्र के नाते अदल-बदल हो रहे थे। अमेरिका भी लडाई मे शामिल हो गया था और अमेरिका की फौज फ्रान्स की रणभूमि पर आ धमकी है, यह आश्चर्यकारक सामाचार इसी समय आ पहुँचा था। अमेरिका की सहायता प्राप्त हो जाने के कारण युद्ध का रग एकदम बदल जाएगा, ऐसी सब को आशा थी।

शिघू स्वयं रणभूमि से लौटकर आया था। इसलिये मिल के लोग खासकर उसके साथी क्लर्क तथा अन्य पढे-लिखे कर्मचारी लडाई की चर्चा करने के लिए उसके पास आते। अखबारो मे जो खबरें आती थी, उनमे की वहुतसी झूठी और वनावटी है, ऐसी शिघू की धारणा थी।

नौकरी की खोज मे जब वह घूमा था, उस समय लाइब्रेरियो मे जाकर अखबारों की पुरानी फाइले उलटकर वह देखता। पुराने अखबारो मे प्रकाशित हुए समाचारो से उसने अपने प्रत्यक्ष अनुभवो को जिस समय पडतालकर देखा उस समय उसे यही दिखाई दिया कि हिन्दुस्तानमे भेजे जानेवाले लडाई के समाचार अधिकाश मे बनावटी थे। थे। स्पष्ट रूप से यह कहना उचित था या नही, इसकी उसे परवाह न थी। लडाई की आग मे झुलसकर वह लौटा था। बनावटी खबरें भेजकर इधर लोगो को धोका देने की जो व्यवस्थित रूप से कोशिश की जा रही थी, उस पर उसे क्रोध आ जाता था। अपने प्रत्यक्ष अनुभव अपने साथियो से कह कर, अखबार की खबरो पर पूर्ण रूप से विश्वास न रखने के लिये वह उन्हे जताया करता।

यह बात न थी कि हिन्दुस्तान के लोग यह नही जानते थे कि लडाई की बनावटी खबरे यहाँ भेजी जाती हैं। यह कल्पना उन्हे भी थी। "हम बडी सफलता से पीछे हटे"—यह वाक्याँश उस समय सब के मजाक का विषय हो गया था। पहिले प्रकाशित हुए इस "बडी सफलता से पीछे हटने" के सच्चे वर्णन जिस समय शिघू बताने लगता, उस समय सुनने

वालो पर भी उसका अच्छा असर पडता। उनके भाई-बन्द भी लडाई पर गये थे। कुछ काम आ गए थे। कुछ घायल हो गए थे। इसलिए शिधू को इस लडाई पर जितना गुस्सा आता, उनता ही उन्हे भी आता था। सफेदपोश लोग लडाई के समाचार पढकर गिरगाँव मे सिर्फ जर्मनी की सराहना करते, तो इधर मिल-नगरी मे जो अछूत और मराठे आदि थे, उनका खून अपने आत्मीयो के बलिदान के कारण खौल उठता था। इसीलिए सफेदपोशो के सुसस्कृत वातावरण की अपेक्षा मजदूर-नगरी का यह दुखी वातावरण शिधू को बिल्कुल अपना-सा लगने लगा।

———

हमारा दिन

यूरोप मे लडाई की धूमधाम शुरू थी, पर उस लडाई के लिए उसी समय हिन्दुस्तान मे जो धूमधाम मची हुई थी, वह अलबत्ता बिल्कुल भिन्न प्रकार की थी।

हिन्दुस्तान की सेना मेसोपोटामिया गयी थी, इसलिए पर्याय से हिन्दुस्तान की तिजौरी पर कुछ-न-कुछ बोझ पडता ही था। परन्तु इग्लैंड को उस समय पैसो की जरूरत थी। एक तो पहले ही हिन्दुस्तान दरिद्री, फिर लडाई की आंच प्रत्यक्ष रूप से हिन्दुस्तान को न लगी थी। इस हालत मे विदेशियो की दृष्टि से देखा जाए तो हिन्दुस्तान को लडाई के खर्च के लिए अपना पैसा बाहर भेजने की कोई आवश्यकता न थी। हिन्दुस्तान के पैसे निकालकर लडाई मे काम मे किस तरह खर्च किये जाएँ यही उस समय अँग्रेज सरकार के सामने प्रश्न था।

वार-लोन (युद्ध-ऋण) हिन्दुस्तान मे निकाला गया। ब्याज अधिक मिलता था सही, पर आखिर वह कर्ज ही था। कभी-न-कभी उसे लौटा देना था। कर्ज की ओट मे हिन्दुस्तान का पैसा यूरोप की लडाई लडने के लिए क्यो खर्च किया जाए, यह भी एक प्रश्न ही था।

इसीलिए हिन्दुस्तानियो की राजभक्ति को उभाडने का प्रयत्न किया गया। वार फड, जैसे अनेको फड शुरू किये गये। अनेक लखपतियों ने अपनी जन्म-जात राजभक्ति से प्रेरित होकर लाखो रुपये इन फडो में दिये। बहुतो ने पदविया पाने की आशा से अपनी थैलियो के मुह खोल दिये। सरकारी नौकरो के वेतनो से, उनकी इच्छा या शक्ति न होते हुए भी कुछ रुपये वार-फड के लिए वसूल किये गये। गरीब लोग भी किसी-न-किसी रीति से लडाई के खर्च मे हाथ बँटाये, इसलिए साढे सात

रुपये के कैश सार्टीफिकेट निकाले गये और जिन्हे साढे सात रुपये देने की भी ताकत न थी, ऐसे लोगो के लिए चार-चार पाँच-पाँच आदमी मिलकर भी एक-एक केश सर्टीफिकेट ले सके, ऐसी योजना भी निकाली गयी गाँव-गाँव के छोटे किसानो और मजदूरो से भी तहसीलदारो द्वारा जबरदस्ती इन फडो के लिए चन्दा वसूल किया जाने लगा।

सभी के हृदय मे राजभक्ति का जैसे उबाल आ गया था। नाखुशी से पैसे देने वाला व्यक्ति भी वारफड मे मुट्ठी-मुट्ठी भरकर रुपया देकर अपनी उदारता का प्रदर्शन कर रहा था। ऐसे धनिक को बदले मे कुछ-न-कर इज्जत प्राप्त होने की आशा थी। राव बहादुर या खान साहब आदि होने की महत्वाकाक्षा थी। परन्तु अपने पेट को मारकर गरीबो ने भी जो पैसे दिये थे वे क्यो दिये इसका स्वय उन गरीबो को भी कोई पता न चला। तहसीलदार जैसे अफसर गाँवो मे जाकर पैसे माँगते थे और सरकारी आज्ञा का पालन करना चाहिए इसीलिए किसान और मजदूर घर मे से पैसे निकालकर उन्हे देते थे। देने की ताकत नही थी, फिर भी देते थे। इसके परे उन्हे और कुछ भी महसूस न होता था। एक रुपये से लेकर साढे सात रुपये तक देने वाले किसानो को तो कोई राय साहबी या राय बहादुरी मिलने वाली न थी। डेढ लाख या डेढ हजार देने वाले धनी पुरुष जो रकम देता था, वह उसकी सम्पत्ति का एक थोडा सा अश था। पर गरीबो के घर से आने वाला प्रत्येक पैसा, कभी तो उसकी समूची पूँजी ही होती, और बहुधा कर्ज होता। गाँवो से लडाई के लिए चन्दा वसूल करने का काम देश-भर मे हो रहा था। इसीलिए मिलो मे काम करने वाले लोगो को अपने गाँवो के भाईबन्दो और बुजुर्गो की इज्जत रखने के लिए स्वय अधपेट रहकर, उन्हे पैसे भेजने पडते थे और इसीलिए मिल के मजदूरो और अन्य छोटे कर्मचारियो मे लडाई की चर्चा लगातार शुरू हो गयी थी।

शिघू रोज अखबार पढता था। लडाई के लिए हिन्दुस्तान ने जो स्वार्थ-त्याग किया, लडाई की प्रत्यक्ष आँच हिन्दुस्तान को न लगते हुए

भी लडाई चलाने के लिए धन की उससे जो मदद मिल रही थी, उसके बारे मे अखबारो मे बडी प्रशंसा होती। जिस के दिमाग पर आघात हो गया था, शिधू उसे पढकर क्षण-क्षण मे अस्वस्थ हो जाता। लडाई के लिए उसने अपना रक्त बहाया था। लडाई के कारण उसका दिमाग बिगड गया था, वह तो सयोग की बात थी कि बाद मे वह अच्छा हो गया, परन्तु यदि वह ठीक न होता, तो लडाई के कारण जिंदा रहकर भी एक मृत की तरह ही उसे दुनिया मे अपना शेष जीवन काटना पडता।

इस विचार के मन मे उठते ही उसके हृदय मे आग भडक उठती। अर्जुन का ठूँठा हाथ देखता, तो उसका खून सनसनाने लगता। पहिले की तरह ही उसके सामने प्रश्न खडा हुआ कि ये यातनायें और यह विडम्बना हम किसलिए बरदाश्त करे ?

हिन्दुस्तान को स्वराज्य की एक बडी किश्त देने की बाते कही जाती थी। भारत-मत्री माटेग्यू साहब और तत्कालीन भारत के वाइसराय चेम्सफोर्ड के बीच इस सम्बन्ध मे मत्रणाये हो रही थी और इन मत्रणाओ मे जो सब्ज बाग दिखाये जाते, उनके जोर पर ही लडाई के लिए अलग-अलग फड निर्मित करके चन्दे इकट्ठे किये जाते थे।

हिन्दुस्तान के बडे बडे नेता इस लडाई के बारे मे चर्चा करते। इस लडाई से ही हिन्दुस्तान की भलाई होगी, इन नेताओ मे से एक विशेष वर्ग के नेताओ को यह निश्चित लग रहा था।

समाधान अगर नही हो रहा था तो गरीबों का। पूर्ण स्वराज्य क्या है, उपनिवेशिक स्वराज्य किस चिडिया का नाम है, यह सब वे लोग बिल्कुल नही समझते थे। उन्हे सिर्फ एक ही बात समझ मे आती थी कि इस लडाई के लिए उन्हे अधपेट रहकर अपना पैसा वारफड मे देना पड रहा है। इसीलिए वे भगवान से प्रार्थना करते थे कि यह लडाई जल्द से जल्द बन्द हो जाए।

पैसा इस प्रकार से जा रहा था। परन्तु उस हिसाब से मनुष्यों का

संहार अधिक नहीं हो रहा था। इसीलिए शायद हिन्दुस्तान मे उस समय इफ्लूएजा की सक्रामक बीमारी का प्रादुर्भाव होने लगा। किमी समय प्लेग से बेजार होकर अब निर्भय हुए लोगो को भी इन्फ्लूएंजा की इस बीमारी से डर लगने लगा। सच पूछा जाए तो इफ्लूएजा याने जुकाम। पर बिल्कुल थोडे ही समय मे जुकाम की इस सक्रामक बीमारी ने जितने लोगो को मौत के घाट उतारा, उतने कई वर्षो के प्लेग मे भी नही मरे थे।

हिन्दुस्तान मे जहाँ-तहाँ इस बीमारी के कारण हाहाकार मच गया था। ऐसा एक भी गॉव न बच था, जहाँ इस बीमारी ने उत्पात न मचाया हो। और वार फड के लिए जिस तरह हर गाँव के हर घर से कम-से-कम एकाध रुपया तो वसूल किया ही जाता था, उसी तरह हर गॉव के प्रत्येक घर का कम-से-कम एक आदमी इफ्लूएजा से मरता ही था! हिन्दुस्तान मे लडाई नही हुई, लडाई के कारण मनुष्य-सहार भी नही हुआ था। उसी की भरपाई का ठेका जैसे इस बीमारी ने ले लिया लिया था।

बम्बई मे इस बीमारी का बडा जोर था। सफाई या गन्दगी, अमीरी या गरीबी, उच्च-वर्ण या अधो-वर्ण, मलाबार हिल या परेल, ऐसा कोई भी भेद-भाव न रखकर इस बीमारी ने अपने पैर सर्वत्र फैला दिये थे।

सभी के मुह सूख गये थे। नीलगिरी तेल की बोतलो की बिक्री जोरो से शुरू थी। इस तेल से भीगा हुआ रुमाल नाक के सामने पकडे हर मनुष्य घूम रहा था। जिसका जरा कही बदन थोडा गरम हो जाता कि उसी समय मारे डर के उस मनुष्य के हाथ-पाँव लूले पड जाते थे।

शिधू की चाल मे यही चर्चा का विषय था। हर आदमी अपने-अपने ढग से कुछ-न-कुछ प्रतिबधक उपाय कर रहा था। बम्बई की परिस्थिति से ऊबी हुई गोपिका इस नयी गडबडी के कारण बेचैन हो उठी और शिधू कि सम्मति प्राप्त कर अपने गाँव चली गयी। विरोध की काली छाया दूर हो जाने से रमा को भी अच्छा लगा। गोपिका के

प्रति उसके मन में किल्मिष न था, परतु जाति-भेद और धर्म-अधर्म के प्रश्न बार-बार निकालकर, अर्जुन और सुभद्रा को ही नही, बल्कि पडोस के लोगो को भी वह एक प्रकार से बडा त्रास दिया करती थी। इसके कारण रमा को दुख होता था और इसीलिए सास के गाँव चले जाने से उसे विशेष बुरा न लगा।

वार फड के लिये मिल के मालिक और मैनेजर के प्रोत्साहन से, अथवा चाहे तो जबरदस्ती से कहिये, मिल के कुछ कर्मचारियो ने एक नाटक का अभिनय किया और उसकी आमदनी 'अवर डे' फड को दी। उस अभिनय के समय मिल के मालिक स्वय उपस्थित थे। नाटक को अभिनीत करने मे शिधू जोशी ने बडे परिश्रम किए थे। जब मिल के मालिक को इसका पता लगा, तब उसने शिधू को जानबूझ कर सब के सामने अपने पास बुलाया और उसकी पीठ पर हाथ फेरकर नाटक की सफलता के लिए उसे हार्दिक बधाई दी, परन्तु शिधू की अब इतनी गुलाम-वृति नही थी कि इस कोरी बधाई से उसका सीना फूल जाता। जब उसके साथी क्लर्कों ने उसके इस अकल्पिक सम्मान के लिए उसकी पीठ ठोकी तब वह बोला—"इस मे क्या धरा है जो मैं घमड से फूल जाऊँ ? मिल का मालिक कोई भगवान नही है और उसने आखिर किया भी क्या है ? सिर्फ मुझे शाबासी दी, बधाई दी। यही न ? क्या मेरी तनख्वाह मे एक रुपये की भी बढोतरी की ? तुमने और हमने सारे परिश्रम किये, नाटक जमाया, घर-घर जाकर टिकट बेचे, पैसे इकट्ठे किए और वारफड मे दिये। पर इसका श्रेय किसको मिला ? मैनेजर को मालिक को अथवा दोनो को ! वहाँ शिधू जोशी या गणू भोसले का कोई नाम ही नही लेगा। हम जैसे ऐरे-गैरे नत्थू-खैरो को मुफ्त का श्रेय भी प्राप्त नही होगा। फिर खुश होने की बात कहाँ है ? किसलिए मैं अपना सीना फुलाऊँ ? क्या इसलिए कि मालिक ने मेरी पीठ ठोकी ? मालिक के पीठ ठोकने से मेरी पीठ का चमडा सोने का नही हो जाता या कि मुझे एक कौर भोजन अधिक नही मिल जाता। क्यो हमने इतने

परिश्रम किए ? किस के लिए ? कहाँ जाने वाले है ये पैसे और किन्हे मिलने वाले है वे ? भारतीय सिपाहियो को मिलेगे या कि गोरे सिपाहियो को शराब पिलाने मे खर्च होगे ? यह भी तो हमे नही मालूम। सरकार ने एक फड निकालने का ढिढोरा पीटा, उसे नाम दे दिया "अवर डे फड" और बस, हम बौखला गये ! सरकारी, अर्ध-सरकारी और गैर सरकारी, सभी लोग चन्दा इक्ट्ठा करने मे जुट गये। पर इस पैसे का विनयोग किस तरह होगा, यह किसी एक ने भी सरकार से पूछा है क्या ? मैं लडाई पर गया था। डाक-विभाग मे काम करता था। वहाँ देखता था। ससार के कोने कोने से सिपाहियो के लिए सैकडो पार्सल रोज आते थे। उन मे जो चीजे होती, वे सिपाहियो को इनाम के रूप मे लोगो द्वारा भेजी जाती थी। उन पार्सलो मे कपडे होते, दवाएँ होती, मेवा-मिठाई होती। यहाँ के धर्मावतार अपनी प्रतिष्ठा के लिये लडाई के मैदान पर खून बहाने वालो के लिए ये चीजे भेजा करते थे। पर वे किन-किन के पास पहुंची किन लोगो ने उनका उपयोग किया, क्या किसी ने इसकी भी कोई पूछताछ की है ? हम अपनी आँखो से देख रहे थे कि ये चीजे मैदान पर लडनेवाले सैनिको तक पहुँच ही न पाती थी। बीच ही मे अफसरो या अन्य कर्मचारियो द्वारा लूट ली जाती थी। जिनके लिये ये चीजे भेजी जाती थी उन्हे उनके दर्शन भी न होते थे। यही हाल इन सारे फडो का भी होगा। बार-बार मन मे यही प्रश्न उठता है कि सारी उछल-कूद हम किसके लिए कर रहे है। क्या जरूरत है हमे इस उछल-कूद की ? इस नाटक के लिए हमने मजदूर से रुपया-आठ आना ऐठे, अफसरो की सख्ती से लोगो ने अधपेट रहकर टिकट खरीदे। उन्होने अपने बच्चों को एक दिन भूखा रखा, पर पैसे दिये, टिकट खरीदे। बच्चो के मुह के कौर निकालकर 'अवर डे फंड' के मुँह मे ठूसे। यह सब किसके कल्याण के लिए किया ? मेरी ओर देखो—इस अर्जुन की ओर देखो—हम किस तरह दर-दर भटक रहे हैं। हम लोगो की कौन खबर लेता है ? तुम्हे हम दो ही दीख रहे हैं। पर हमारे जैसे दो सौ हैं या दो हजार,

यह देखने कौन आता है ? लड़ाई मे जाकर खून बहानेवाले हम यूँ इस तरह मर रहे हैं। फिर यह 'अवर डे फंड' किसके लिये है ? किसका कल्याण होने वाला है इस फड से ?"

शिधू का यह लम्बा भाषण जिन्हे जँचा, उन्होने आहे भरी। सच है! सच है ! कहते हुए वे चल दिये। जाने के बाद वे उस भाषण को शायद भूल भी गये होगे। बहुतो ने शिधू का मजाक उडाया और बहुतो ने तो शिधू को धमकी दी कि लोगो को वह व्यर्थ भडका रहा है, इसलिए वे मैनेजर से उसकी शिकायत कर देंगे।

———

सूखी आँखें

मिल के मालिक सेठ कुन्दनलाल के बगले पर, "अवर डे फंड" के लिए जिन लोगो ने नाटक का अभिनय किया था, उनमे से कुछ चुनिन्दा लोगो को दावत दी गयी थी।

वैसे देखा जाए तो नाटक से कुल आमदनी सिर्फ चार सौ रुपये ही हुई थी। इतनी रकम सहज फेक देना कुन्दनलाल के लिये असम्भव नही था और उन्होने वैसी बडी-बडी रकमे 'वार फड' को दी भी थी, परन्तु अपने समन अपनी मिल के मजदूर और नौकर भी राजभक्त है, यह साबित करने के लिए वे इस नाटक के फदे मे पडे थे और इसीलिए उन्होने यह दावत दी थी।

नेपियन सी रोड के कुन्दनलाल के बगले पर जब ये लोग पहुँचे उस समय स्वय मालिक ने आगे बढकर उनका स्वागत किया। मालिक की इस विनम्रता का शिधू को छोडकर और सब लोगो के मन पर बडा प्रभाव पडा। सफेदपोशो के दाम्भिक आचार-विचारो से शिधू बहुत अच्छी तरह परिचित था, इसलिए कुन्दनलाल की इस विनम्रता के ढोग से शिधू को बडी घृणा हुई।

इस दावत मे ही मालिक के सौ दो सौ रुपये खर्च हो गये होगे। मालिक द्वारा इतना रुपया खर्च करते देखकर प्रत्येक मनुष्य जब मालिक की प्रशसा करने लगा, उस समय शिधू को बडा बुरा लगा। थोडी भी भूल हो जाने पर निर्दयता से सजा देने वाले मालिक और मैनेजर इतनी उदारता क्यो दिखा रहे है, इसे कोई भी नही सोचता था। यद्यपि शिधू के मन मे बार-बार यह आ रहा था कि अच्छी खरी-खोटी सुनाकर,

उनकी आँखो मे अंजन डाल दूं, फिर भी पूरी तरह विचार करके उसने अपनी जबान रोक ली।

घर जाने के बाद नर्मदा का पति मयेकर जिस समय मालिक के बँगले पर घटी घटना का हाल अर्जुन को कहने लगा, उस समय अलबत्ता शिघू से न रहा गया। वह बोला, "किस की तारीफ कर रहे हो जी? जानते हो, हमारे इस मालिक ने वार फड में एक लाख रुपये दिये हैं। हम लोगो से उसने नाटक कराया और चार सौ पचास रुपया इकट्ठा करके सरकार को भेज दिये। इस तुलसी-पत्र से क्या वार फड की सुवर्ण तुला का पलडा नीचे झुक जाएगा? और ऊपर से यह दावत दी। यदि दावत ही देनी थी तो मिल के सभी लोगो को क्यो न दी? चुन्निदा लोगो को ही क्यो दी? दोगे इसका उत्तर?'

"तुम्ही बताओ न?" मयेकर बोला –

"वह अपना ऐश्वर्य दिखाना चाहता था हमे।" शिघू होठ चबाता हुआ बोला, "इस सीमेट की चाल मे हम रोते पडे हैं। हमे वह दिखा देना चाहता था कि देखो, हम कितने ऐश्वर्यशाली हैं? अपना वैभव दिखाकर हमे लज्जित करने के लिये क्लर्कों को उसने बुलाया। आज या कल हमारे दिमाग मे अगर कभी अपने अधिकारो सम्बन्धी विचार आ जाएँ तो इसके लिए वह पहिले से ही हम पर अपनी धाक जमा देना चाहता था। समझे जनाब? क्या करेंगे ये मालिक? मर और खप तो हम रहे है न? पैसे खर्च करके मिल की मशीनो को खरीदने के सिवा इन्होने और क्या किया था कि क्या कर रहे हैं? हम जो माल तैयार करते हैं, उसे ऊँची कीमत पर बाजार भेजने के सिवा इनका दूसरा काम ही क्या है? हमी अधे हैं, आँखे होकर भी देखना नही चाहते। इसीलिए उनके ये दाँव चल रहे हैं। क्या जरूरत थी यह नाटक करने की? जिसने सहज ही एक लाख रुपये दे दिये, वह हम मजदूरों और मिल के हम जैसे अन्य छोटे कर्मचारियो के नाम से क्या हजार पाँच सौ और नही दे सकता था? परन्तु सिर्फ इतनी रकम बचाने के लिए हमारे

चेहरो को रग लगवाकर उसने हमे रंगमंच पर नचवाया। मिल का काम सुचारु रूप से करते हुए हमने नाटक की प्रैक्टिस की, रिहर्सल किये, नाटक किया, घर-घर जाकर टिकट बेचे और हमे मिला क्या ? साढे चार सौ रुपये ! इतने पर ही हम खुश हो गये ! हमारे पैसो से यह लडाई चलेगी, ऐसा हमे लगने लगा। यह दावत नही थी, मयेकर ! यह जले पर नमक छिडका गया है। नेपियनसी रोड के उस ऐश्वर्य को देखकर तुम्हारी आँखे चौधिया गई, पर मेरे हृदय मे आग जल रही है।

हम तो प्रत्यक्ष लडाई से लौटे हुए लोग है। तो क्या हमसे ज्यादा इन आलसी धनियो को लडाई की अधिक फिक्र होगी ? कब यह लडाई बन्द होती है, इसके लिए हम क्यो इतने उत्सुक हो रहे है, जानते हो तुम ? हमे लगता है कि हमारी जो दुर्दशा हुई है, वैसी दुर्दशा उन बेचारो की न हो जो अभी वहाँ लड रहे हैं। एकदम लडाई बन्द होनी चाहिए, ऐसा हमे लगता है। पर लडाई को आगे चलाने के लिए ये लोग सग्रह करके भेज रहे है। अभी और हजार आदमियो के जीवन का सत्यानाश करने वाले है ये !

"फिर नाटक के समय तुमने हमसे क्यो नही कहा ?"—मयेकर ने पूछा।

"अभी भी नही कहना चाहता था।" शिधू बोला, "मेरी यह बात किसे जँचेगी। यहाँ तुम अकेले हो। मेरे प्रति तुम्हारे हृदय मे थोडी करुणा है, मेरे शब्दो पर तुम्हारा कम-से-कम थोडा विश्वास है, ऐसा मुझे लगता है। इसलिए मैं तुमसे कह रहा हूँ। हम कोकणवासी बडे उत्सव-प्रिय होते है। किसी भी उत्सव को मनाने का हमे थोडा भी अवसर मिल जाए तो एकदम उसमे शामिल हो जाते है। फिर व्यर्थ ही मैं किसी को निरुत्साहित क्यो करता ? इसलिये चुप रहा। परन्तु इस समय भीतर से आवेश उमड उठा, इसलिये कह रहा हूँ। ये बाते और किसी से मत कहना। कल यदि मैनेजर को पता चल गया, तो मुझे नौकरी से हाथ धो बैठना होगा।"

मयेकर क्षणभर के लिए स्वस्थ बैठा। शिघ्रू की बातो का उसके मन पर प्रभाव पड़ गया था। उस जमाने मे ऐसे विचारो का प्रचार मिलों में नही हुआ था, जहाँ-तहाँ मनमानी चलती थी। किसे नौकरी क्यो दी और किसे नौकरी से क्यो निकाल दिया, इसकी उस जमाने मे कोई कुछ फिक्र न करता। मालिक, मैनेजर और हैडजाबर की सनक के विलक्षण उदाहरण मयेकर को मालूम थे। पैसे की बचत के लिये मिल-मालिक कितनी बाल की खाल निकालते हैं, कितने सजग रहते हैं, इसकी उसे याद हो आई। एक पुरानी बात उसकी नजरो के सामने मूर्त होने लगी और जब वह उन्हे बताने लगा, तब अर्जुन बोला—"मैं फाटक पर रहता हूँ, यह अच्छा है। भीतर क्या झमेले हुआ करते हैं, इसका मुझे कुछ भी पता नही चलता। मेरी घरवाली जब बार-बार शिकायत करती तो मैं उसे डाँटकर चुप कर देता, परन्तु अब मेरे दिमाग मे थोडा प्रकाश पड़ा। आगे आँखें खोलकर देखता रहूँगा।"

मर्दो मे हो रही इन बातो को तीनो औरते ध्यान से सुन रही थी। तीनो के मन पर तीन प्रकार के प्रभाव पड रहे थे। मैं पति से मिल के कुछ अन्यायो के बारे में जो शिकायते किया करती थी, उनका सच्चा कारण पति को मालूम हो गया, इसलिए सुभद्रा को समाधान हुआ। अपने पति ने कैसे कष्ट सहन किये, इसका हाल मालूम हो जाने के कारण समय-कुसमय पति पर मैं व्यर्थ नाराज हुई,इसका नर्मदा को दुख हुआ। रमा के मन पर जो प्रभाव पडा, वह बिल्कुल भिन्न प्रकार का था। शिघ्रू की पुरानी नौकरी का उसे स्मरण हो आया। जब वह पोस्ट आफिस में नौकर था, उस समय उसका स्वभाव बडा आनन्दमयी था। उसके उस विनोदी स्वभाव की उसके आज के क्रोध से वह तुलना करके देखने लगी।

उसके सामने प्रश्न उपस्थित हुआ, यह काहे का परिणाम है? शारीरिक व्याधि का या मानसिक व्याधि का या दोनो का मिलाकर?

उसे लगा यह परिणाम, लडाई पर जाने की जो नासमझी इन्होंने

की, उसका है। यदि लडाई पर न जाते, तो आज उनकी यह दशा क्यों होती ? सुख से कही भी तारबाबू या पोस्ट-मास्टर की हैसियत से सम्मान के साथ रह सकते। स्वभाव उसी तरह खुश-मिजाज बना रहता। उन्हे भी सुख होता और मुझे भी कष्ट न होते।

उसे पुनः-पुन लगता, मनुष्य के स्वभाव मे फर्क हो सकता है, पर उसकी भी आखिर कोई सीमा है या नही ? सदा हँस-मुख रहने वाला उनका पहिले का चेहरा अब जैसा डरावना क्यो दीखता है ? आँखें गंजेड़ी की तरह लाल-लाल क्यो दिखती हैं ? जरा कही बोलने का स्वर ऊंचा उठा, तो मस्तिष्क की नसे तनकर ऊभर क्यो आती हैं ? और अगर जरा कही थोडा गुस्सा आ गया, तो आँखो से चिनगारियाँ निकलने का आभास क्यो होता है ? कितना फर्क हो गया है यह ? खोई हुई स्मृति जिस तरह फिर से लौट आयी है, उसी तरह खोया हुआ आनन्दी-स्वभाव भी क्या फिर लौटकर नही आएगा ? उसकी आँखे एकदम सजल हो उठी।

शिघू कमरे के भीतर गया और उसने भीतर से कुंडी लगा ली। देखा तो रमा की आँखो से लगातार आँसू बह रहे थे।

"क्या हुआ, क्या हुआ, रमा !"—शिघू ने घबराकर पूछा।

आँखे पोछती हुई रमा बोली—"आप लोग जो बातें कर रहे थे उन्हें मैं सुन रही थी। इस कारण पुरानी यादें हरी हो गयी। लडाई पर जाने से पहिले की याद हो आयी। चार अगस्त का स्मरण हो आया। उस दिन लडाई शुरू हुई थी। उस समय आपने क्या कहा था, कैसे कहा था, वह सब याद आ गया। उस समय आपका स्वभाव मेरे स्मृति-पट पर घूम गया। कहाँ गये वे दिन ? उस समय भी हम कौन बडे अमीर थे। बीस ही रुपये तो मिलते थे न ? पर कितने आनन्द मे थे हम लोग ?"

शिघू बिल्कुल सन्न हो गया था। उसके माथे पर शिकनें उभर उठी थीं। क्रूरता की छाया उसके चेहरे पर फैलती हुई दिख रही थी। बोलते बोलते रमा रुक गयी। जब उसके चेहरे पर उसकी नजर गयी, तो

उसके छक्के छूट गये। एकदम चौंककर उसने पूछा—"क्या हुआ ?"

"तुम भाग्यशालिनी हो, रमा ! तुम्हारी आँखो से आँसू टपक रहे हैं। जैसा तुम सोच रही हो, वही बातें मेरे मन में भी आ रही हैं, परन्तु तुम्हारी आँखो से आँसू निकल जाने के कारण तुम्हारा दुख हल्का हो जाता है। मैं भी तुम्हारी तरह ही दुख के आवेग से गद्गद् हो जाता हूँ। मेरा हृदय पसीज उठता है, पर आँखो के रास्ते वह बाहर नही निकलता। इसलिए मेरी घुटन होती है। मुझे अपने पर ही आश्चर्य होता है। गभीरता क्या होती है यह पहिले मैं जानता ही न था। इसीलिए सभ्य समझे जाने वाले बडे लोगो का मेरे प्रति मत अच्छा नही था। पर उस समय मैं अपने ही आनन्द मे मस्त रहता। किसी की भी परवाह न करता। तुम्हारी तरह मेरे सामने भी प्रश्न खडा है—कहाँ गया वह मेरा स्वभाव ?"

वह चुपचाप बिस्तर पर बैठ गया। श्वास बन्द हो जाने के कारण मनुष्य जिस तरह घबरा जाता है उसी तरह भौंचक्का हो गया था।

रमा ने घबराकर अर्जुन को पुकारा।

अर्जुन दौड़ता हुआ ही आया। तब तक भी शिघू होश मे नहीं आया था। उसे स्वतन्त्रता से साँस लेते नही बनता था। पानी का प्याला भर कर अर्जुन उसके मुँह के पास ले गया। एक-दो घूँट गले के नीचे उतरते ही एक लम्बी आह भरकर वह होश मे आया।

बर्तन का पानी लेकर उसने उसकी आँखो से लगाया। उस समय वह एकदम क्रोध से चिल्लाकर बोला—"आँखो का पानी क्यो लगा रहे हो ? क्यो मुझे धोखा दे रहे हो इस तरह ? बिल्कुल सूखी पडी हैं ये आँखें भीतर का पानी भरकर आँखो के रास्ते ऊपर नही आता तब तक क्या बाहर का पानी लगा कर समाधान देना चाहते हो ? इससे मेरा समाधान कैसे होगा ?"

"क्या हुआ ?"—अर्जुन ने पूछा।

"होगा क्या ?" एक लम्बी आह भरकर बोला—"जो होना चाहिए

वही हुआ है तुम्हारा हाथ टूट गया—मेरा दिमाग चल गया।"

"पर वह फिर से लौट तो आया न ?" अर्जुन ने बडे स्नेहसिक्त स्वर मे कहा।

जोर से अपना माथा पीटकर बोला—"हाँ लौट तो आया है। अक्ल आ गयी है। स्मृति लौट आयी है। पर यही बड़ा दुख हो गया है, ऐसा लगता है, उसी तरह रहा आता, तो अच्छा होता। उधर लडाई हो रही है। उस लड़ाई की खबरे हम रोज अखबारो मे पढ़ते है। वहाँ खून बह रहा है और इधर से फन्डो में एकत्रित हो कर वहाँ पैसा जा रहा है। इस तरह खून चूसा जा रहा है। यह देखता हूँ, तो हृदय मे जैसे आग भडक उठती है। वह याद बार-बार नजरो के सामने खडी हो जाती है। वहाँ के लोगो को मारने के लिए हम इधर से पैसे भेज रहे हैं। क्या यह पुण्य है ? क्या यह देश-भक्ति है ? क्या यही सच्ची राजभक्ति है ?"

अर्जुन सिर्फ शिधू के मुँह की ओर टकटकी लगाकर देख रहा था।

"मेरे मुँह की तरफ देखते हो ?" शिधू उबलकर चिल्ला पड़ा—"जमीन पर बहा हुआ खून तुमने मुझसे अधिक देखा है। तुम्हारे हाथ से मनुष्यो की हत्याये हुई हैं। उन मनुष्यो को तुमने क्यो मारा ? बताओ क्यों मारा ?"

"वाह यह भी कोई प्रश्न है ?"—अर्जुन बोला—"वह सिपाई का धर्म है।"

"यह कैसा सिपाही का धर्म ? नाहक किसी के प्राण लेना क्या धर्म है ? क्यों मार रहे थे उन लोगो को ? उन्होने तुम्हारा क्या बिगाडा था ? अर्जुन वह धर्म नही था—वह अधर्म से भी अधिक अधर्म था। जिन्हे तुम मार रहे थे वे तुम्हारे वैरी नही थे। तुम्हारे देश के भी वैरी नही थे। किसी गधे ने हुक्म दे दिया और तुम पिल पडे मारने को। भगवान ने तुम्हें इस पाप का प्रायश्चित दिया और तुम अपना एक हाथ जिन्दगी-भर के लिए खो बैठे। उन हुक्मों को मैं तार द्वारा भेजता था। उस पाप

का मुझे भी प्रायश्चित मिला। मैं अपना दिमाग खो बैठा।"

अर्जुन की पलकें गीली हो गयी। उसकी आँखों में आँसूओं को देखते ही शिघू झल्लाकर उठा और चिल्ला पडा—"रोओ मत। मेरे सामने मत रोओ। किसी की आँखो मे आँसू देखता हूँ, तो मेरे सारे बदन में जैसे आग लग जाती है।"

रमा के इशारा करते ही अर्जुन कुछ न बोला, वहाँ से चल दिया। फिर रमा ने शिघू को जबरदस्ती बिस्तर पर लिटा दिया।

———

स्वर्ग की दो राहें

उस दिन रमा ने निश्चय किया कि आँखो मे कभी आँसू नही आने दूँगी। उस दिन से शिधू की दृष्टि एक ही बात पर गड गयी—'किस-किस की आँखों में आँसू आते है ?

पडोस के लडके रोते हो, तो घन्टो वह उन की ओर देखता रहता उन्हे अपनी गोद मे लेकर उनके आँसू पोछता।

शिधू की यह लत मालूम हो जाने के कारण नर्मदा हमेशा यह सावधानी बरतती कि पडोस के लडके शिधू के सामने न रोवे।

रमा और नर्मदा मे अब काफी घनिष्ठता हो चुकी थी। दोनो दोपहरको घर मे खाली रहतीं। नर्मदा के मन मे बार-बार आता कि वह भी जाकर मिल मे मजदूरी करे। उसके पति को जो वेतन मिलता था, वह परिवार की गुजर के लिए पर्याप्त न होता। ऊपर से कुछ पैसे गाँव भी भेजने पडते थे। उसे लगता वह भी नौकरी करे और परिवार की परवरिश मे थोडा हाथ बँटावे, परन्तु उसका पति क्लर्क था। यद्यपि सफेदपोश जाति का न था, फिर भी काम से वह सफेदपोश बन गया था। नर्मदा को समझाने के लिए यद्यपि वह यह कहा करता कि घर मे जो लोग है उन्हे सँभालने के लिए भी तो घर मे कोई रहना चाहिए, फिर भी उसे यह बात नही जँचती थी। क्लर्क जैसे प्रतिष्ठित मनुष्य की औरत मिलमे आकर मजदूरी करे। पत्नी यदि मिल मे जाकर मजदूरी करेगी तो जातवाले उसे बदनाम करेंगे।

पोशाक और रहन-सहन आदि के बारे मे मयेकर बडे टीपटाप से रहता। पत्नी को भी टीपटाप से रहना चाहिए, ऐसा उसका अनुशासन था। स्वयं नर्मदा को भी सफाई पसन्द थी। परन्तु मयेकर की रुचि,

स्वच्छता और टीपटाप इससे भी दो कदम आगे बढ गई थी । उसकी बडी महत्वकाक्षा थी कि उसकी पत्नी को देखकर, लोगो को यह लगना चाहिए कि वह किसी सफेदपोश की पत्नी है। इसीलिए वह नर्मदा को भडारी ढग के जेवर नही पहिनने देता था, साडियाँ ब्राह्मणो के ढग की ला देता। पति के आग्रह से ही उसने चोली को छुट्टी देकर ब्लाउज पहिनना शुरू कर दिया था।

और नर्मदा थी भी वैसी ही। सुन्दर और साफ-सुथरी पोशाक पहिन-कर जब रमा के साथ बाहर निकलती, तो लगता जैसे बहिनें हैं।

कोई काम न होने के कारण वे दोनो दोपहर को मन्दिर मे कथा-पुराण सुनने के लिए जाती, पर रमा का मन पुराण की कथाओ में न लगता। उम्र मे वह कोई प्रौढा नही थी। पर जीवन मे-उसने जो दुख सहन किये थे, विशेषत. जिस एक प्रसग से वह हाल ही मे गुजरी थी, उसके कारण असमय मे ही प्रौढा हो गयी थी।

यह देखकर कि शिधू के स्वभाव मे फर्क हो गया है, उसे आश्चर्य हुआ। शिधूके इस बदले हुए स्वभाव का उसके मन पर जो असर हुआ, उसके कारण यदि पुरानी जानपहचान का कोई मनुष्य उसे देखता तो उसे उसके चेहरे मे भी बहुत सा परिवर्तन हुआ दिखायी देता। एक दिन वे दोनो पुराण सुनने मन्दिर जा रही थी, उस समय रमा ने कहा—
"काफी सुन चुकी मुई ये पुराण की कथायें। बचपन से उन्ही-उन्ही को को सुनकर ऊब उठी हूँ। सब ढकोसला है। इतने व्रत किये इतने उपवास किये, सब कुछ कर छोडा, पर भगवान ने भाग्य न बदला। हमने ऐसा कौनसा अपराध किया था जिससे हमारी ऐसी दुर्दशा हुई। भगवान के प्रति अब मेरी श्रद्धा नही रही।

उनके उदगारो को सुनकर, नर्मदा स्तम्भित हो गयी। उसके दुख को वह जानती थी। परन्तु उसका प्रभाव उसके मन पर इस हद तक पड़ा है, ऐसा नर्मदा ने न सोचा था।

नर्मदा ने रमा से इस विषय में कोई बहस न की। उसने कहा—

"ठीक है। नही सुनना चाहती, तो न चलो।" और उसने मन्दिर जाने का इरादा त्याग दिया। वह सिर्फ इतना ही बोली—"घर मे खाली बैठे-बैठे आखिर करे क्या? सुबह से ही हमारे घर के मर्द नौकरी पर चल देते है। दोपहर को वही भोजन करते है। उसी समय हम लोग यहाँ अकेली बैठकर खाती है। यदि गाँव मे होती तो कम-से-कम खेतों मे जा कर कुछ काम करती। यहाँ क्या काम है? खाली बैठे अनाप-सनाप विचार मन मे आते है, बस!"

"क्या यहाँ कोई पुस्तकालय नही है?" रमा ने एकदम पूछा।

"हाँ, है तो शायद।"—नर्मदा बोली—"अच्छा सोचा तुमने।"

मिल के कुछ लोगो ने इधर-उधर से कुछ पुस्तके लाकर एक कमरे में रख दी थी और उस कमरे को वे अपना पुस्तकालय कहा करते। पुस्तकालय का चन्दा एक आना महीना था। एक आना देना किसी को कठिन न होता।

वे दोनो उस पुस्तकालय से पुस्तके लाकर पढने लगी। आखिर पढती भी क्या? उपन्यास या नाटक? और ऐसी पुस्तके वहाँ थी भी कितनी? उस समय स्वर्गीय श्री काशीनाथ रघुनाथ मित्र का "मनोरजन" मासिक-पत्र अत्यन्त लोकप्रिय था। मित्र जी के द्वारा प्रकाशित की जानेवाली अन्य पुस्तके भी उस समय बडी प्रतिष्ठित मानी जाती थी। उन पुस्तको का चुनाव भी बडा अच्छा था। परिवार में हर व्यक्ति उन पुस्तकों को पढ़ सकता, ऐसा वह साहित्य था।

वे दोनो पढते मे समय बिताने लगी। उस पढने के कारण समाजिक प्रश्नों की ओर उनका झुकाव हो गया। भिन्न-भिन्न सामाजिक प्रश्नो पर वे आपस मे चर्चा करने लगी। कभी-कभी पड़ोस की स्त्रियो को इकट्ठा करके बारी-बारी से उन्हे भी पुस्तके पढ़कर सुनाती।

परन्तु पड़ोसिनो का मन उन पुस्तको में न लगता। वे कहती—"जहाँ देखो वहाँ बाभनो की ही बातें लिखी है, जैसे बाभन को छोड़कर दुनिया मे और दूसरे लोग रहते ही नही हैं। यदि लिखता है तो लेखको

से कहो कि पहिले वे हमारे बारे में लिखें। हमारे घर की और हमारी जाति की बाते लिखें। पर ये बडे-बडे लेखक हमारे विषय मे जानते ही क्या हैं ? कौन आता है हमारे घर देखने ? जो भी कलम उठाता है, वह गिरगाँव[1] के ही चक्कर काटता है या पूना की बातें लिखता है, जैसे गिरगाँव और पूना के बाहर कोई दुनिया ही नही ! सब बातें पढे लिखे लोगो की लिखी रहती हैं। यदि तुम चाहती हो कि तुम्हारी किताबें सुनें, तो हमे ऐसी किताबे लाकर सुनाओ जिनमे हमारे बारे मे लिखा हो और अगर नही लिखा है तो उन लेखको से कहो कि अब लिखें।"

उन दोनो का पडोसिनो को पुस्तके पढकर सुनाने का प्रयत्न बेकार हुआ। बाभनो की बाते ही उन मे क्यो न लिखी हो, पर नर्मदा को वे अच्छी लगती थी। रमा तो ब्राह्मण थी ही। उसे दूसरो की बाते शायद समझ मे भी न आती।

नर्मदा की यह महत्वाकाक्षा थी कि वह ब्राह्मण सरीखी रहे। इसी लिए वह उन पुस्तको को बडी दिलचस्पी से पढा करती और उनमे जिन आचार-विचारो का वर्णन होता उनका अनुकरण करने का प्रयत्न करती।

दिन के बाद दिन बीत रहे थे। जहाँ तहाँ इन्फ्लुएन्ज़ा की चर्चा बढ रही थी। लडाई की अपेक्षा अखबारो मे इन्फ्लूएन्जा की चर्चा ही अधिक जोर से हो रही थी।

अब आस-पास की चालो मे भी इस बीमारी के केस होने लगे तब सभी के छक्के छूट गये। जो बीमार हो जाता वह फिर उठता न था। हर दिन दरवाजे के सामने से लगातार शव-यात्राएँ जाने लगीं। उन्हें देखकर रमा का हृदय बेचैन हो उठता। नर्मदा भी भय के मारे अधमरी सी हो जाती। सुभद्रा दिन-भर मिल मे रहती, इसलिए एक तरह से वह सुख मे थी। पर जब मिल के लोग भी बीमार पडकर मरने लगे और

---

(१) बम्बई का वह मुहल्ला जहाँ प्राय सफेदपोश लोग रहा करते हैं।

उनकी मृत्यु के समाचार मिल में पहुँचने लगे तब मिल मे काम करने वालो के कलेजे टूटने लगे ।

यह बीमारी छूत की है या नही, इस विषय मे अभी कोई निर्णय नही हो पाया था । परन्तु यह मानकर कि सक्रामक रोग आखिर छूत का ही रोग होता है, जहाँ इस बीमारी से लोग मरते, वहाँ कोई जाता न था ।

सब तरफ हाहाकार मच गया था । लडाई की बाते करना लोग भूलने लगे थे । किस गाँव में बीमारी कितने जोर से फैली, कहाँ कितने आदमी उसके शिकार हुए, इसी की चर्चा जहाँ-तहाँ होती थी ।

इस बीमारी का शिघू के मन पर कोई असर न पडा था । इस विषय मे वह पूर्णरूप से उदासीन था । उसका सारा ध्यान सिर्फ लडाई के फैसले पर केन्द्रित हो गया था । अखबार मे आनेवाली लडाई की खबरो पर उसका तनिक भी विश्वास न था ।

फ्रास की रण-भूमि पर अमेरिकन फौज के उतरने के बाद लडाई का रंग बदलने लगा था । पहिले के मित्र-राष्ट्रो में अब परस्पर मन-मुटाव होने लगा था । विजय की सीमा पर खडे हुए जर्मनी के पैर भी उखडने लगे थे । रूस मे स्थापित हुई करेन्स्की की सत्ता का अत होने के भी आसार नजर आने लगे थे । महायुद्ध से रूस करीब-करीब हट गया था । तुर्किस्तान मे उथल-पुथल मच गई थी । जर्मनी मे भी कही क्राति न हो जाए, ऐसी शका प्रदर्शित की जाने लगी थी । ऐसे आसार निश्चित नजर आने लगे थे कि महायुद्ध के प्रागण मे अमेरिका के कदम रखने का परिणाम मित्र-राष्ट्रों के लिए लाभदायक होगा ।

इस एक विषय को छोड़कर शिघू का ध्यान और किसी भी तरफ न था । जब उससे कोई इन्फ्लूएंजा के बारे में बातचीत करता तो वह कहता—"कहाँ की बीमारी लिए बैठे हो ? इस बीमारी मे जो लोग मर रहे हैं, वे संयोग से मर रहे हैं । पर वहाँ एक दूसरे की जान के प्यासे जो लोग अकारण खून बहा रहे हैं, उनकी ओर देखो, उनकी खबर लो ।

बीमारी से आदमी लाचारी से मरते हैं। डाक्टर लोग उपाय कर ही रहे हैं। इस बीमारी से कोई जिन्दा रह जाता है, कोई मर जाता है। परन्तु लड़ाई के मैदान पर जो मौते हो रही हैं, उन्हे टालने का कोई उपाय है? वहाँ डाक्टरो की जरूरत नही। लडाई बन्द होना ही वह उपाय है।

"परन्तु यह लडाई बन्द कौन करेगा?" मयेकर ने पूछा।

"यही तो मेरा भी प्रश्न है।" शिधू ओठ चबाता हुआ बोला—"जानते हो, लडाई क्यो बन्द नही करते? जिन लोगो ने लडाई चलाई है, उन्हे लड़ाई के अनर्थों की आँच नही लगी है। मनुष्य कैसे मर रहे हैं, यह भी उन्होने पूरी तरह से नही देखा है। राष्ट्र की प्रतिष्ठा बनी रहे, इसी एक उद्देश्य पर दृष्टि रखकर उन्होने यह मनुष्य-सहार शुरू किया है। थोडा भी विचार न करके दूसरे लोग भी अपनी खुशी से लडाई पर जा जाकर मजे से मर रहे हैं। यहाँ इन्फ्लूएञ्जा का केस हो गया, तो जिस घर मे वह केस हुआ है, उस घर के पास भी कोई आदमी नही फटकता। परन्तु वहाँ सरकार का हुक्म होते ही लडाई की छूत की बीमारी मे घुसकर, प्रत्येक मनुष्य को अपनी खुशी से मरना पडता है। इन राजनीतिज्ञों को क्यो पीछे रहने देते हैं? राजनीति के दाँव चलाने के लिये जिन लोगो ने यह बेहिसाब नर-सहार चलाया है, उन्हे कौन सजा दे? एक आदमी जब दूहरे आदमी का खून करता है तो उसे अपराध मानकर खूनी को फाँसी की सजा दी जाती है। उस खून करने मे मदद करने वाले को भी वही सजा मिलती है। पर यहाँ एक आदमी हुक्म देता है और दूसरे हजारो मनुष्यो की हत्या कर रहे हैं। ऐसा हुक्म देनेवाले दुष्टो को किस कानून से कौन सी सजा दी जाएगी?"

इतने क्रोध से शिधू बोल रहा था कि सिर्फ मयेकर के मन पर ही नही, बल्कि अर्जुन के मन पर भी उसका असर हुए बिना न रहा।

सिपाहीगीरी का अर्जुन को बड़ा अभिमान था। रणभूमि मे काम आने से स्वर्ग मिलता है—आदि परम्परागत कल्पनाएँ उसकी रग-रग में

भिन गई थी। शिघू की बातों का यद्यपि उसके मन पर प्रभाव पडा, फिर भी वह बोला—"लडाई मे अगर मर गये तो स्वर्ग मिलता है न ?"

"चुप रहो, अर्जुन।" शिघू चिढकर चिल्ला पडा—"क्या किसी ने स्वर्ग देखा है ? और वह स्वर्ग भी हमे और तुम्हे क्यो मिलेगा ? स्वर्ग प्राप्त हो इसलिए क्या यह लडाई हो रही है ? जर्मनी को लन्दन और पेरिस पर अपने झडे गाडने थे, रूसका जार जर्मनी के कैसर को निगल जाना चाहता था, और भी किसी राष्ट्र को किसी दूसरे राष्ट्र का मुल्क अपने अधीन कर लेना था, इसीलिये तो यह लडाई शुरू हुई ? स्वार्थी राजनीतिज्ञ पुरुषो ने स्वर्ग का नाम निकाल कर तुम्हारे और हमारे जैसे मूर्खों को लड़ाई पर भेजा। धर्म के नाम पर पादरी लोग भी उपदेश करने लगे, जैसे ये पादरी स्वर्ग के द्वार की ताली लेकर उसके पास ही खडे थे। चोर और हरामजादे है सारे ! राजनीतिज्ञ भी और पादरी भी ! उनके बेटो को लडाई पर नही जाना पड़ता था। लडाई पर गया मनुष्य यदि मर गया तो यहाँ उसके घर का बटाढार हो जाता है, परिवार का नाश हो जाता है। खेती-किसानी धूल मे मिल जाती है, उसके पीछे जो लोग बचे रहते हैं उन्हे खाने के लाले पड़ जाते है और उधर वह अभागा स्वर्ग मे जाकर किसी अप्सरा के गले मे हाथ डाले मजा करता है ? यही न ? कभी किसी ने जिसे देखा नही, जिसका अनुभव कभी लिया नही, वहाँ से लौटकर वहाँ का अनुभव जिसने कभी हमे बताया नही, ऐसे स्वर्ग के काल्पनिक वैभव के लिये एक दूसरे की जान लें ! क्या तुम्हे यह नही लगता कि ऐसी हत्याये कराने वाले चाहे हिन्दू हो या ईसाई, दोनो खून के प्यासे राक्षस है। इधर यूरोप मे मैंने देखा आकाश की ओर आँखे लगाये पादरी उपदेश करते थे—रिक्रूटिंग कर रहे थे। उन पादरियो से कहना चाहिये कि आप स्वर्ग तशरीफ ले जाइये न ? दूसरो को क्यों उपदेश करते हो ? उस भगवान को क्यो संकट मे डालते हो ? वह भगवान आखिर सुने भी किस-किस की ? अंग्रेज पादरियों की या जर्मन पादरियो की ? और ये राजनीतिज्ञ लोग ! गद्दों पर

बैठकर हुक्म देते हैं ? उनसे कहना चाहिए तुम ही चले जाओ न स्वर्ग मे ? हमे स्वर्ग मे भेजने की तुम इतनी कोशिश क्यो करते हो ? जिन्दा हैं तब तक हमे पेटभर अन्न और लज्जा ढाँकने को वस्त्र तो कम-से-कम मिलने दो। इतने करोडो रुपयो की राख कर दी तुमने ! यदि यही रुपये गरीबों को बाँट देते तो कितने लोगो का कल्याण हो जाता ! इन भूखो मरने वालो के लिए, भूखके साथ लडनेवाले लडवैयो के लिए क्या किसी ने कभी कोई 'वारफड' निकाला है—'अवरडे फड' निकाला है ? कभी किसी ने कोई नाटक अभिनीत किये है क्या इन गरीबों के लिए। ऐसा क्रोध आता है, जिन्होने यह लडाई शुरू की है, उन्हे तोपो से उडा दे। उन्हे मालूम होना चाहिए कि उन्ही के द्वारा लायी गई इन तोपो से गोले कैसे चलते हैं ? मजे से पडे हैं घरो मे गद्दियो पर लेटे हुए और पडे-पडे हुक्म छोड रहे हैं। ऐसा लगता है ......"

शिधू को आगे के शब्द नही सूझ रहे थे। उनके मस्तक मे रक्त चढ गया था। वह थरथर काँप रहा था। आँखो से जैसे चिनगारियाँ निकल रही थी। दोनो मुट्ठियो को उसने कसकर बाँध लिया था कि उसके कारण उसके हाथ की नसे तनकर उभर उठी थी।

देखते-देखते वह धडाम से नीचे गिर पडा।

वज्रपात

सभी के मुँह सूख गये। रमा की घबराहट का तो कोई पारावार ही न था। अर्जुन ने समय को पहचाना और बिना घबराये शिधू के मस्तक पर पानी का छिडकाव करना शुरू किया। तब कही एक बडी लम्बी साँस लेकर वह होश मे आया।

सबकी जान मे जान आई। परन्तु शिधू को बोलने का जो जोश आया था, वह किसी भी तरह उससे रुकता न था। थोडा अच्छा लगते ही पहिले की बातो को लेकर वह जब बोलने लगा, तब अर्जुन बोला—"अरे, हटाओ भी इन लडाई की बातो को। सूतक भी दूर हो गया लडाई का। अब क्या जरूरत है उन बातो की ?"

"सूतक अभी कैसे दूर होगा ?" शिधू तिलमिलाहट से बोला—"तुम क्यों ठूँठ हो गए। मेरा दिमाग गया, नौकरी गयी, भीख माँगते घूम रहे है दर-दर हम। हमारी मौत तक यह सूतक कैसे दूर होगा ? हमारे जीवन को पूरी तरह मिट्टी से मिला दिया है इस लडाई ने। तुम और मैं—हम दोनो एक दूसरे को ही देखते है। परन्तु हम जैसे कितने ही लोग हमारी नजरो की ओट मे धाड मारकर रो रहे होगे। लडाई से लौटकर आये कितने ही लोग भूखो मर रहे होगे। जो लोग लडाई से अभी नही लौटे हैं, उनके ाल-बच्चो की क्या दुर्दशा हो गई है, इसका पता लगाया है क्या किसी ने ?"

यह देखकर कि शिधू पुनः अपना सतुलन खो रहा है, मयेकर भी बोल उठा—"अनर्थ हुए हैं इसमे शक नही, परन्तु उन्हे टालना न तुम्हारे हाथ में है और न हमारे हाथ में है। अब और यह एक बीमारी भी आ धमकी है। पहिले लगा कि सिर्फ जुकाम का बुखार है। पर जब

दो दिन के भीतर ही रोगी मरने लगे, तब नई बीमारी का नाम इनफ्लु-एंजा रख दिया। इसलिए इनफ्लुएंजा मे जो अब इतने लोग मर रहे हैं, इसके लिए कोई क्या करे ?"

"इसका कोई उपाय नही है।" जमीन पर हाथ पीटकर शिबू बोला —"परन्तु उसका उपाय है। कौन इस लडाई को बन्द करेगा ?"

"अब आप-ही-आप बद हो जाएगी यह लडाई।" मयेकर बोला—"अब उसके बन्द होने की सभावना पैदा हो गई है। क्या फायदा है हमे इन लडाई की बातो से ? वहाँ हमारा हाथ नही पहुँचता। परन्तु यह बीमारी हमारे घरों मे घुस आई है। नीचे के मजिले का एक आदमी कल ही तडाक-फडाक मर गया। अब किस पर आफत आती है, कौन जाने ? पहिले मजिल पर एक-दो बीमार पडे हैं, ऐसा भी सुन रहा हूँ। उन्ही की फिक्र है हमे। यदि भागकर गाँव जाने की सोचें तो छुट्टी कौन देगा ? और छुट्टियाँ भी कितनी ले ? फिर छुट्टी लेकर खावे क्या ? इस बीमारी के कारण मिल मे पहले ही लोग कम हो गए हैं इसलिए एक आदमी को चार-चार आदमियों का काम करना पड रहा है। दिल मे जरूर आता है कि गाँव चल दे। परन्तु बिना बीमार पडे छुट्टी नही मिल सकती। और इस बीमारी से जो बीमार हो जाता है, वह फिर उठता नही। घर मे नीलगिरी तेल की बोतलें लाकर रख दी हैं। तुम भी अपने रूमाल को इस तेल से भिगोकर सूँघते रहना। कहते हैं इस बीमारी से बचने का यही एक उपाय है।"

विषयान्तर कर देने का परिणाम अच्छा हुआ। गैलरी मे खडे लोग धीरे-धीरे वहाँ आकर इकट्ठा हो गये और अपने-अपने ढग से बीमारी के बारे मे बातें करने लगे।

सभी के दिल बैठ गये थे। सब यही सोचते थे कि प्लेग से बचने के लिए कम-से-कम टीका निकल गया था। पर इस बीमारी की अभी तक कोई प्रतिबन्धक दवा भी न निकली थी।

एक-एक मजिल चढकर बीमारी ऊपर आ रही थी। मयेकर दि

का बडा कच्चा था। यह सोचकर कि नौकरी चली जाए तो हर्ज नहीं, परन्तु इस बीमारी से बचना चाहिए, उसने छुट्टी की दरख्वास्त दे दी और मजूरी की प्रतीक्षा भी न कर, वह अपने परिवार को लेकर गाँव चल दिया। रमा और सुभद्रा को संकट मे छोडकर गॉव जाना नर्मदा की जान पर आ रहा था, पर वह बेचारी क्या कर सकती थी ?

मिल के लोगो को काम पर रहते समय यदि बुखार आ जाता तो वे एकदम घर चल देते। मजदूरो की अपेक्षा क्लर्कों पर ही इस बीमारी की विशेप कृपा दिखती थी। गिरगाँव में तो हाहाकार मच गया था। हर आदमी को हर दिन का भय लगता था। रमा का मन पहिले ही जला हुआ था। ऊपर से रोज अपनी आँखो के सामने वह शव-यात्राएँ देखती थी। उन शव-यात्राओ के साथ होने वाले सरापा सुनती तो तालियो के हर आघात से उसके कलेजे की धडकन बढती जाती थी।

नर्मदा के गॉव चल देने के कारण रमा घर मे दोपहर-भर अकेली ही रहती थी। सुभद्रा के काम से लौटते तक उसके प्राण आँखो मे मे समाये रहते। उसकी चाल के कितने ही कमरे खाली हो गये थे। अब तो कोई गैलरी मे भी आकर खडा नही होता था। इस डर से कि किस कमरे से कब रोने की आवाज सुनाई पड जाए वह अधमरी-सी हो गयी थी। सहज ही कोई बच्चा रोता तो भी उसका मन हक्का-बक्का हो जाता।

हर दिन उसका खून सूख रहा था। शिवू के ध्यान मे यह आ रहा था या नही, यह वह न समझ पाती। दुखकी कोई भी बात पति से कहने की हिम्मत न पडती थी। घर लौटने पर सुभद्रा एक तरफ गैलरी मे खडी होकर यदि उससे कानाफूसी करने लगती तो अर्जुन उसे टोक देता उससे बातें न करने देता। सब लोगों के काम पर चले जाने से वह घर में अकेली पड़ जाती थी। इसलिए जब सब लोग काम से लौटकर घर आते तो उनसे बाते करने की उसे इच्छा होती। सुभद्रा से बातें करने लगती तो अर्जुन उसे रोक देता। इस प्रकार सब ओर से उसकी

घुटन हो रही थी। सब यूँ चुपचाप कैसे रह सकते थे ?

शिघू के पास लडाई को छोडकर चर्चा का कोई दूसरा विषय ही न था। कहीं-न-कही से अखबार भिडाकर वह घर लाता और शाम को काम से लौटने पर उन्हें पढ़ता रहता। यह उसका दैनिक क्रम हो गया था। अखबार अँग्रेजी के होते। इस कारण वह क्या पढता है, इसका किसी को भी पता न चलता। अखबारो मे क्या लिखा है यह वह किसी को न बताता। रमा को भी पूछने का भय लगता। लडाई की बात निकले और पहिले की तरह ही उसकी स्थिति फिर हो जाए तो ? इस लिए जो उसे पढना है वह पढे, पर उसे बोलने नही देना चाहिए, यही रमा ने निश्चय किया था। अगर वह खुद लडाई की बाते कहने लगता तो उन्हे सुनी-असुनी करके वह सुभद्रा के पास जा बैठती और फिर वह विषय वही तक रह जाता।

शाम को घर आने ने के बाद शिघू के घर स्वय न जाने का और सुभद्रा को भी वहाँ न जाने देने का अर्जुन ने निश्चय कर लिया था। अर्जुन ने सुना था कि घर में पढे अखबार के समाचारो को शिघू दूसरे दिन आफिस के लोगो को सुनाता है। उसे लगता उधर आफिस में चाहे जो होता रहे, पर उसके सामने लडाई की अब कोई बातें नही होनी चाहिए। आफिस के लोगों को लडाई की कोई कल्पना न थी। वे अगर कुछ भी कह देते फिर भी चल सकता था। परन्तु उसका विश्वास था कि कुछ भी उडान-छू उत्तर देकर वह नही छूट सकेगा, इसलिए शिघू के साथ लडाई की बातें करना अर्जुन बिल्कुल टाल रहा था।

अर्जुन उसके कमरे मे क्यो नही आता, इसकी शिघू ने कभी कोई पूछताछ न की। अखबार पढने पर उसका मस्तक भ्रमण मे ही तल्लीन हो जाता। कल्पना के चित्रो को जब वह कभी-कभी अपने-आप से ही पुटपुटाने लगता। ऐसे समय उससे कुछ न पूछने की सावधानी रमा बरतती।

और वह स्वय भी कहाँ इसकी परवाह करता कि उससे कोई पूछे !

उसे यही दुख होता कि उसकी बाते और उसके विचार घर मे किसी की भी समझ मे न आते थे। लड़ाई मे उस समय जो उलट-फेर हो रहा था उसकी ओर देखने का उसका दृष्टि-कोण दूसरो से बिल्कुल भिन्न था। लडाई पर जाने का उसे दड मिला था। लडाई मे घायल और मृत हुए लोगो को उसने देखा था और इसीलिए रणभूमि के प्रत्यक्ष दर्शन से उसके मन पर जो प्रभाव पड़ा था उसके कारण उसके मुँह से निकलने वाले उदगारो को मिल के कोलाहल मे रहने वाले मनुष्य नही समझ पाते थे, इसी का उसे दुख होता था।

वैसे देखा जाए तो स्वय सफेदपोश होने के कारण उसका स्थान गिरगाँव मे था। उसके भाई बन्द, जातिवाले और रिश्तेदार आदि गिर-गाँव मे रहते थे। पर उसके मजदूर-नगरी मे आकर रहने के कारण सफेदपोशो की दृष्टि मे वह पतित माना जाता था। वे उसकी कोई खबर न लेते और इसे भी उनकी कोई परवाह न थी।

कभी-कभी उसके सामने यह प्रश्न खडा होता कि क्या गिरगाँव मे रहने वाले लोग भी मेरे विचारो को समझ सकेगे? अखबार पढने पर उसे लगता कि मिल के बाबू लोगो की तरह गिरगाँव के विद्वान भी इस विषय मे हृदय-शून्य ही है। प्रसूता की वेदनाओ को बाझ नही समझ सकती, इस कहावत का उसे स्मरण हो आता।

राजनीतिज्ञ लोगो की दृष्टि अस्थिर थी। उसे देखकर शिधू के प्राण बेचैन हो उठते। उसे लगता कि इस लड़ाई का हिन्दुस्तान की राजनीति से कोई अत्यन्त आत्मीयता का सम्बन्ध है। पर यह सम्बन्ध रजनीति के किस क्षेत्र मे आता है, इतना समझाने लायक राजनीति का अध्ययन उसने नही किया था।

उसका सारा जीवन सरकारी नौकरी मे बीता था। सरकारी नौकरो को राजनीति मे सम्बन्ध नही रखना चाहिए, इस तरह अन्य नौकरो की तरह उसकी भी वृति थी। पर इस लडाई की हर घडी बदलने वाली परिस्थिति के कारण लडाई में झुलसा हुआ उसका जीव राजनीति की

खिड़की से जग की ओर देखने लगा था ।

कुछ भी न बोलकर वह घन्टो विचारों मे खोया रहता । उस समय रमा के प्राण बिल्कुल आँखो मे आ जाते । क्या सोच रहे हो यह पूछने का भी उसे डर लगता । शायद उस प्रश्न के कारण ही उसकी वृति कहीं भड़क उठे तो ?

बेचारी रमा की बिल्कुल घुटन हो गई थी ।

एक दिन ठीक दोपहर को एक विक्टोरिया चाल के सामने आकर रुकी । उस समय रमा अकेली ही घर में थी और गैलरी में खडी हुई जैसे-तैसे वक्त काट रही थी । यह देखने के लिए कि गाडी मे से कौन आया उसने सहज ही नीचे झाँककर देखा और अर्जुन के कन्धे पर बोझ डालकर शिधू को गाडी मे से उतरता हुआ जब उसने देखा तब उसका कलेजा टूट गया ।

शिधू को बडा तेज बुखार चढ़ा था । जीना चढकर ऊपर आने के श्रम के कारण कमरे मे आकर पहुँचते ही वह एकदम बिस्तर पर लेट गया । उसे एकाएक ग्लानि आ गयी थी । बिस्तर खोलकर उसे ठीक से बिछाने का भी अवकाश न मिला ।

रमा को मालूम हो गया कि अन्त मे इन्फ्लुन्जा की नजर हमारे घर की और मुड़ी । अर्जुन का चेहरा बिल्कुल उतर गया था । क्या करे यही वह नही समझ पा रहा था । मिल मे कोई डाक्टर न था । इसलिए तत्काल दवा देने की भी कोई सुविधा न थो । किस डाक्टर के पास जाऊँ और कैसे जाऊँ ? खैर, पर अभी एकदम कौन-सा उपाय करूँ ? कोकरण होता तो पत्ती की चाय ही बनाकर दे देता । यह सब वह सोच रहा था ।

इसी समय रमा बोली—"पहले दौडकर किसी डाक्टर को ले आओ पर इससे पहले यदि कही थोडी बर्फ मिले तो भेज देना जिससे मैं सिर पर कम-से-कम पट्टी रख दूँगी ।"

इनफ्लूएन्जा मे क्या इलाज किया जाता है, यह वह भी कहाँ जानती थी ? और जानता भी कौन था ? साधारण लोगो को प्राथमिक उपचारो

का ज्ञान देने का सरकार और म्यूनीसिपल्टी ने कोई प्रबन्ध नही किया था। इसकी उनके पास कोई योजना न थी। इस बीमारी मे जो लोग मरे उसका कारण यह अज्ञान ही था। जहाँ बुखार आते ही इलाज किया गया वहाँ अकसर मृत्यु नही हुई।

उसने डाक्टर लाने के लिए कहा सही, पर डाक्टर को फीस कहाँ से दी जाये ? यह उसे पहली चिन्ता हुई। शिघू के स्वास्थ्य की अपेक्षा इस चिन्ता से ही अर्जुन के प्राण अधिक व्याकुल हो उठे।

बर्फ लाकर अर्जुन कब चला गया, यह रमा के ध्यान मे भी न आया। वैसे वह कोई भेद-भाव न रखता था। पर उस समय रमा को लगा कि बर्फ लाने के लिए मुझे उसे पैसे देने चाहिए थे।

डाक्टर ने आकर शिघू की जाँच की। दवा लिख दी। अर्जुन जा कर दवा ले आया। दवा देना शुरु हो गया।

अर्जुन से यह पूछना कि डाक्टर की फीस का क्या हुआ बार-बार रमा की जिव्हा पर आता था। दवा के लिए भी अर्जुन ने उससे पैसे न माँगे। दवा की कीमत क्या होती है, इसकी उसे कुछ कल्पना न थी। पडोसियो से सुनकर उसे कुछ अन्दाज था कि हर बार की दवा को कम-से-कम आठ-बारह आने लगते है।

और डाक्टर कितनी फीस लेता है ?

रमा का मन जैसे किसी ने मसल डाला हो, ऐसा हो गया था। जब तक कोई महान सकट नही आया है, तब तक जो प्रसंग उपस्थित है उस सामना करने और अर्जुन से कुछ भी न पूछने का निश्चय करके वह शिघू की सेवा-सुश्रुषा करने लगी।

पुलटिस से सेकने के लिए जब अर्जुन ने उसे अलसी लाकर दी तब उसकी आँखें एकदम छलछला उठी। कमरे के बाहर जाते समय अर्जुन ने भी आँखें पोछी, ऐसा उसे आभास हुआ।

रमा का कलेजा धक-से हो गया।

उधारी

रमा को वह रात काल-रात जैसी लगी। अर्जुन और सुभद्रा दोनों शिघ्रू के पैताने बैठे थे।

ज्वर से शिघ्रू का बदन लगातार जल रहा था। तीनो उसके मस्तक पर बारी-बारी से बर्फ को पट्टी रख रहे थे। ज्वर कितना चढा है यह देखने का साधन उस चाल मे किसी के पास न था। थर्मामीटर खरीदने की ताकत उन गरीबो के पास कहाँ थी? सिर्फ बदन को बार-बार हाथ लगाकर ज्वर कुछ बढा या घटा, इसका अंदाज अर्जुन लगा रहा था और अपने अंदाज के अनुसार बीमार का तापमान नोट करने की कोशिश कर रहा था।

सभी की आँखें नीद से अलसा गयी थीं। अर्जुन ने रमा और सुभद्रा से थोडी देर सो जाने के लिए कहा। पर उसके यह स्वीकार करने पर ही कि जब उसे नीद आने लगेगी, तब वह उन दोनो मे से किसी एक को उठा देगा, वे दोनो एक ओर टाट बिछाकर उस पर सो गयी।

ज्वर लगातार सनसना रहा था और उस ज्वर के आवेश में शिघ्रू अनाप-सनाप बक रहा था। वह जोर-से चिल्लाता न था अथवा न कोई गड़बड़ ही करता था, सिर्फ अपने आपसे ही कुछ पुटपुटाता हुआ बोल रहा था और विषय था लडाई का।

अर्जुन बिल्कुल बेचैन हो गया था। सुबह उठने पर उन दोनो को मिल जाये बगैर कोई चारा न था। जैसे-तैसे आधा दिन तो कम-से-कम बिना छुट्टी के ही निकाले। परन्तु आगे छुट्टी कैसे मिलेगी, यह कठिनाई उपस्थित हुई। कितनी छुट्टी ली जाए यह भी एक सवाल था। मिल के बहुत से लोग बीमार पड़ जाने कारण कोई जब तक स्वयं

बीमार न पड जाता तब तक किसी को छुट्टी नही दी जाती थी। ये विचार अर्जुन के दिमाग मे घूम रहे थे।

थोडी देर के बाद उसने सुभद्रा को जगाया। बर्फ प्राय समाप्त हो रही थी। उतनी रात को कही बर्फ मिलना सभव नही था। इसलिए बर्फ के पानी मे कपडा भिगो-भिगोकर उसकी पट्टी शिधू के मस्तक पर रखने को अर्जुन ने सुभद्रा से कहा। शिधू अनाप-सनाप बोल रहा था इसलिए सुभद्रा के छक्के छूटने लगे। सुभद्रा से यह कहकर कि अगर अधिक बडबड़ाने लगे, तो मुझे जगा देना अर्जुन वही बगल मे सो गया।

शारीरिक और मानसिक थकावट के कारण रमा को गहरी नीद लग गयी थी। भोर होते तक सुभद्रा ने उसे नही जगाया। मिल मे जाने से पहिले रोटी बनाना यदि आवश्यक न होता तो वह रमा को न जगाती। पर रमा को रोटी बनाना था इसलिए उसे जगाना ही पडा।

रमा ने जगाकर देखा तो शिधू के ज्वर मे कोई फर्क न हुआ था। यह देखकर कि सुभद्रा को अब काम पर आना पडेगा, वह अस्वस्थ हो गयी। डाक्टर को कौन बुलाकर लाएगा? यदि बर्फ की जरूरत हो तो कौन ला देगा? ये प्रश्न रमा के दिमाग मे उठ रहे थे। वह बेचैन हो रही थी। उसे कुछ भी नही सूझ रहा था। शिधू को अकेला छोडकर कही बाहर जाना उसके लिये सभव ही न था। और अगर जाना भी चाहती तो कहाँ जाना है, यह वह जानती भी न थी।

इस समय उसे लगातार नर्मदा की याद आ रही थी। वह होती, तो उसे इस समय बडी मदद मिलती। पर रमा को यह भी लगता, न जाने कहीं वह भी बीमार पड़ जाती तो? अथवा मयेकर ही बीमार पड जाता तो? कम-से-कम सासजी ही इस समय होती। पर उनने कोई मदद मिलती, इसका भी उसे कहां विश्वास था?

पानी की पट्टी वह लगातार शिधू के मस्तक पर रख रही थी। पट्टी जब गरम हो जाती तो वह हटा देनी पड़ती।

आखिर उजेला हुआ और अर्जुन भी जागा। वह बोला—"किसी

भी तरह आज मिल से छुट्टी लेकर आता हूँ। आते समय डाक्टर के पास भी हो आऊँगा। यदि वे कहे कि पुनः जाच की जरूरत है, तो उन्हे साथ ही ले आऊँगा।"

रमा को हिम्मत आयी। शिधू को दवा पिलाने के लिए भी वह डरती थी। दाँत अच्छी तरह खोलकर दवा भी मुह मे नही डाली जा सकती थी। अर्जुन से ही यह हो सकता था। इसीलिए मिल जाने से पहिले वह शिधू को दवा पिला गया।

उन दोनो के जाने पर रमा को घर जैसे खाने को दौडने लगा। इससे पहिले वह घर मे अकेली रहती थी। उस समय घर मे कोई न होता। फिर भी उस समय उसे भय न लगता। परन्तु इस समय शिधू को बिस्तर पर बीमार पडा देख इस भय से कि अब क्या होगा, उसका प्राण व्याकुल हो उठे।

जब डाक्टर शिधू की जाँच कर रहा था, तब रमा की नजर लगातार डाक्टर के चेहरे पर लगी हुई थी। जाँच पूरी होते ही डाक्टर ने अर्जुन को बाहर गैलरी मे बुलाया। रमा का कलेजा धक् से हो गया। रमा कोई पता न चले इसलिए डाक्टर से बाते करते समय अर्जुन अपने होठो पर यूँ ही मुस्कान फैलाये हुए था। जब डाक्टर चल दिया, तब शिधू पर नजर रखने के लिए कहकर, अर्जुन दवा लाने घर से बाहर निकल पडा। जाने से पहिले उसने अपने कमरे मे जाकर अपना ट्रंक खोला। तब रमा ने अनुमान लगाया कि शायद कुछ और दवायें भी खरीदनी होंगी इसलिए पैसो की जरूरत पडी ेगी।

अर्जुन जब दवा लेकर लौटा तब उसका उतरा हुआ चेहरा देखकर रमा ने पूछा—"क्या हुआ ? कोई डर की बात तो नही ?"

"नही वैसे डर की कोई बात नही।"—अर्जुन रोनी आवाज मे बोला—"पर बडी मुश्किल आ गयी है। डाक्टर की दवा की कीमत दो दिन बाद देने से भी काम चल सकता है। पर डाक्टर ने कुछ ऐसी दवाएँ भी लिख दी हैं जिन्हे दवा-फरोश की दूकान से खरीदना होगा।

जब तक मेरे पास पैसे थे मैने कुछ नही कहा। डाक्टर की फीस, जो यहाँ बहुत अधिक है, मैं देता रहा। उसके दवाखाने से जो दवा लाता उनके दाम भी चुकाता गया। पर अब मेरे पास पैसे बिल्कुल नही बचे। इसलिए सवाल यह खडा हो गया है कि बाजार से ये दूसरी दवाये कैसे लाये। मैं तुम से यह बाते कहना नही चाहता था। पर··· " बोलते-बोलते एकदम उसका कठ रुँध गया।

रमा के पास भी क्या रखा था? पूरी तनख्वाह लाकर शिधू उसी को दे देता था। अगर उसे एक पैसे की भी जरूरत होती तो वह रमा से ही माँग लेता। इसीलिए स्वय शिधू के पास अलग से कुछ हो, यह सभव ही न था। रमा ने अपना ट्रंक खोलकर देखा। उसमे सिर्फ एक रुपया नौ आने थे। उन्हे निकालकर अर्जुन को देती हुई वह बोली—"क्या इतने से काम चल जाएगा?"

अर्जुन चुप रहा। दवाये कीमती थी। क्या कहे यह उसे सूझ नही पडता था। रमा के ध्यान मे वह आ गया। वह इधर-उधर देखने लगी। जो कुछ भी छोटे मोटे जेवर थे, बेकारी के दिनो मे वे सब पहिले ही बिक चुके थे। सिर्फ पतली सी सोने की एक जंजीर गले मे बच रही थी। उसे चट से उतारकर उसने वह अर्जुन के हाथ मे दे दी।

अर्जुन का हृदय उमड़ उठा। उस छोटे-से जेवर को हाथ मे लिये वह उसी स्थिति मे गर्दन मोडकर घर से बाहर चल दिया।

उसके जाने के बाद रमा ने पुन: अपना ट्रंक खोला और उसका कोना-कोना खोजने लगी। जितने पैसे बचत के थे वे, सब निकल चुके थे, ट्रंक की एक दरार में फँसी हुई उसे एक चवन्नी दिखाई दी। उस समय उसे इतनी खुशी हुई कि उस परिस्थिति मे भी उसे हँसी आ गयी।

दवाये लेकर अर्जुन लौटा। डाक्टर की सलाह के अनुसार उसने शिधू की छाती पर एन्टी-फ्लोजेसटीन का लेप लगाया। अब अलसी पुल-टिस के सेंकने की जरूरत न रही थी।

जो पैसे बच रहे थे वे कोई अधिक न थे। उन्हे जब अर्जुन लौटाने

लगा, तब रमा बोली—"अपने पास ही रखे रहो। अभी और भी तो जरूरत पड़ेगी न।"

"हाँ। यह मुश्किल जरूर है।" अर्जुन बोला—"अगर फिर जरूरत पड गयी, तो क्या करूँगा ? हमारी पहचान के जो दो-चार लोग यहाँ हैं, वे भी हमारी तरह ही दरिद्री हैं। फिर उधार पैसे माँगें किससे ? यदि फिर से डाक्टर को लाना पड़ा, तो मैं उसकी फीस कहाँ से दूंगा, इसी फिक्र मे पडा हूँ मैं। अच्छा हुआ जो साहब ने मुझे कम-से-कम छुट्टी दे दी। लगता है सुभद्रा को छुट्टी नही मिली और नही मिली यही अच्छा हुआ। इस चिन्ता से कम-से-कम वह तो दूर रहेगी। डाक्टर की फीस का क्या होगा, यही प्रश्न है।"

बेचारी रमा भी क्या कर सकती थी ? उसे लगा जैसे उस पर आसमान ही टूट पडा है। यदि जाकर किसी के सामने हाथ फैलाना चाहे तो समूची बम्बई मे उसके परिचय की केवल उसकी एक चचेरी बहिन थी। यद्यपि उसे यह पता था कि वह कहाँ रहती है पर उसके पास जावे या न जावे, यही एक प्रश्न उसके सामने खडा हो गया था। वह कुछ देगी या नही इस प्रश्न की अपेक्षा यदि वह कुछ न दे तो मेरे मन को क्या लगेगा, इसी का वह विचार कर रही थी।

दोपहर को सुभद्रा जब घर आई तो उसे देखकर रमा को आश्चर्य हुआ। उसने जैसे-तैसे आधे दिन की छुट्टी ले ली थी।

यह देखकर कि सुभद्रा घर मे है, रमा जी कडा करके अपनी चचेरी बहिन के घर गिरगाँव गयी। उसकी बहिन की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी थी। उसके पति को दो सौ रुपये माहवार वेतन मिलता था। इसलिए उसके रहने का घर भी अच्छा बडा था।

वहाँ जाने पर रमा को बडा संकोच हुआ। बहिन को सामने देखते ही उसे अपने आप पर बडी शर्म आई। वह जो साडी पहिने थी उससे रमा ने अपनी साडी की तुलना की। बहिन की नौकरानी की साड़ी भी रमा की साड़ी से लाख दर्जे अच्छी थी।

बहिन ने उसे पहचान लिया यही रमा ने अपना बडा भाग्य समझा। उस पर जो सकट था वह उसने अपनी बहिन को कह सुनाया। उससे कितने रुपये उधार माँगे इसका भी वह अपने मन मे कोई निर्णय नही कर पा रही थी। वह बिल्कुल गोल-पोल बोल रही थी, पर उधार माँग रही थी।

रमा की बात सुनती हुई उसकी बहिन गभीर चेहरा बनाकर बिल्कुल मौन बैठी थी। जब रमा सब कह चुकी तब उसकी बहिन बोली—"बडा कठिन समय आ गया है। उस जगह तुम कैसे रहती होगी, क्या करती होगी, यही मैं नही समझ पाती। उधारी की बात क्यो करती हो ?"

रमा का चेहरा खिल उठा। बहिन कह रही थी—"तुम्हारी मुश्किल को आसान करने मे यदि मैं भी थोडा हाथ बँटा सकूँ तो उससे मुझे खुशी ही होगी। हमारे घर मे भी बडा विचित्र हाल है। हमारे "इन का" स्वभाव तुम नही जानती। अगर मै चार पैसे की बेणी खरीदना चाहूँ तो वे चार पैसे मुझे उन्ही से माँगने पडते है। मेरे पास एक पैसा भी नही रहता। उधर गाँव मे घर बन रहा है। वहाँ सिर्फ रुपये भेजने पडते हो यह बात नही, बल्कि हर शनिवार-रविवार को बोट से गाँव तक आना-जाना भी हो रहा है। फिर आजकल आफिस मे उनके पहिले साहब की बदली हो गयी है और नया साहब उनकी नाक मे दम कर रहा है। दिन भर उन्हे तंग करता रहता है। वे आफिस से झल्लाये हुए ही लौटते है और वहाँ का सारा गुस्सा मुझ पर उतारते हैं। इसके बावजूद आज शाम को उनके आफिस से लौटने पर मैं तुम्हारा हाल उनसे कहूँगी और फिर हम देखेगे कि तुम्हारे लिए हम क्या कर सकते हैं। तुम कल इसी वक्त फिर आ जाना।"

रमा लौट पडी। कल की आशा मन में दबाये वह घर आयी। सारा हाल सुनकर अर्जुन को भी अच्छा लगा। फिर भी वह बोला—"इन धनियो का कोई भरोसा नहीं। मैंने एक उपाय खोज निकाला है,

पर उसके लिए तुम्हारी अनुमति चाहिए।"

अपना इरादा रमा से कहना उसकी जान पर आ रहा था। पर जी कड़ाकर के वह बोला—"जो जेवर बेचा था उसमें के कुछ रुपये बचे हैं। उनमे के कुछ रुपये दवा के लिए रखकर बाकी रुपयो से एक पीपा मिट्टी का तेल खरीद लेता हूँ। उस तेल को फुटकर बेचूंगा। यदि पूरा बिक गया तो आठ-बारह आने सहज बचेंगे।" रमा की आँखें एकदम सजल हो उठी। अर्जुन कह रहा था—"तुम मेरी साहूकार हो। इस धंधे मे जो भी लाभ होगा, लाकर तुम्हें सौंप दूंगा और मेरी मजदूरी के बदले मुझे शाबासी दे देना।"

उसके उत्तर की अपेक्षा न कर अर्जुन चल दिया।

दोनो शिघू की सुश्रुषा कर रही थी। अभी तक बुखार तो कम हुआ ही न था पर वह होश मे भी न आया था। साँस बडे जोर-जोर से चल रही थी। यह देखकर दोनो घबरा उठी थी।

शाम को अर्जुन कंधे पर पीपा लिए घर लौटा तो उसके चेहरे पर हँसी चमक रही थी। उस दिन उसने पूरा एक रुपया कमाया था। लडाई से लौटा हुआ एक टूठा आदमी तेल बेच रहा है, यह देखकर लोग उससे जानबूझ कर तेल खरीदते थे। अपनी सिपाहीगीरी पर अर्जुन को बडा नाज था। अपनी पलटनिया पोशाक वह कभी नही छोडता था। इस समय वही पोशाक उसके बडे काम आई।

अर्जुन के सामने फिर एक समस्या खडी हो गयी। दूसरे दिन डाक्टर को बुलाने की जरूरत थी। पर बुलावे कैसे ? यदि डाक्टर को फीस देता है तो तेल खरीदने के लिए पैसे नही बचते थे और दूसरे दिन डाक्टर को बुलाना तो अत्यन्त आवश्यक था।

रमा को अपनी बहिन से आशा थी।

दूसरे दिन सुबह डाक्टर आये। उस समय अर्जुन ने उनकी फीस दे दी। डाक्टर ने शिघू की जाँच करके बडी आशा दिखायी। उसने कहा कि केस कोई उतना बुरा नही है। रोगी बच जाएगा। तब सभी

को बडी हिम्मत आई ।

सुभद्रा को उस दिन छुट्टी नही मिली । इसलिए अर्जुन शिघ्रू के पास बैठा और रमा दोपहर को अपनी बहिन के घर गयी । रमा को देखते ही उसकी बहिन हँसती हुई बोली—"तुम्हारा बडा भाग्य है, रमा ! एक तो पहिले ही उनका स्वभाव बडा चिडचिडा है । ऊपर से आजकल उन्हे आफिस में बहुत तंग किया जा रहा है । परन्तु मैंने जब उन्हे तुम्हारा हाल बताया तो उनकी आँखो मे आँसू भर आये ।" इतना कहकर उसने दो रुपये निकालकर रमा के हाथ में रख दिये और बोली—"ये लो । कुछ-न-कुछ काम पड ही जाएँगे ।"

वह लगातार अपने पति के स्वभाव का वर्णन कर रही थी । रमा भीतर-ही-भीतर जल रही थी । सिर्फ दो ही रुपये ? दो रुपयो मे क्या धूप जलेगी ? उसे लगा डाक्टर को सुबह जो फीस दी थी कम-से-कम उसकी ही भरपाई हो जाती !

उसकी बहिन बोली—"ये रुपये उधार नही दिये हैं भला ! ऐसा उन्होने साफ-साफ कह दिया है । वे बोले—अपनी बहिन से कह देना कि हम कोई साहूकार थोडे ही हैं जो किसी को कुछ उधार दे—और मुझे भी जता दिया है कि मैं तुम से ये रुपये वापिस न मागूँ । उन्होने यह भी कहा कि अब माँगने फिर न आना । इससे अधिक मैं कुछ न दे सकूँगा ।"

रमा को लगा वे दो रुपये उसके मुँह पर फेंक दूँ । पर प्रसंग की ओर ध्यान देकर उसने सारा क्रोध पी लिया और बोली—"बडे उपकार किये तुमने, जीजी । तुम्हारे इस उपकार से कैसे उऋण होऊँगी ?"

भीतर से रसोइया आया और बोला—"बाई साहब, चाय तैयार है ।"

बहिन ने रमा से कहा—"अच्छा, तो अब तुम जाओ । ट्राम पर चढ़ते-उतरते वक्त जरा सावधानी रखना, जाओ ।" ऐसा कहकर वह चाय पीने के लिये भीतर चल दी । एक प्याली चाय रमा को देने की

भी उसने परवाह न की।

घर आकर रमा ने वे दो रुपये अर्जुन के हवाले किये और वहाँ का सारा हाल कह सुनाया। वह बोला—"ये धनी लोग बड़े दरिद्री होते हैं। खैर, इस समय जो मिले हैं उतने ही सही। तेल खरीदने के लिए दो रुपयो की ही ज़रूरत थी। एक-दो दिन में हम भी धनी हो जाएँगे। कोई चिन्ता न करो, भाभी! भगवान ऊपर से हमे देख रहा है।"

रमा के सामने प्रश्न खडा हुआ—सचमुच क्या भगवान हमे ऊपर से देख रहा है।

———

जीवन के लिए संघर्ष

चौथे दिन से शिधू के स्वास्थ्य मे सुधार होने लगा।

डाक्टर की फीस और दवा के लिए पैसे कहा से लाएँ, इसकी अर्जुन को रोज चिन्ता लगी रहती। मिट्टी का तेल बेचकर वह रोज कम-से-कम एक रुपया कमा लेता था। परन्तु उतनी कमाई से काम न चलता। रमा को कोई पता न देकर उसने सुभद्रा का एक जेवर बेचा और कही से रुपये ले आया और इस तरह अपना खर्च जारी रखा।

डाक्टर की फीस और दवा के लिए रुपये कहाँ से आते है इसके बारे मे अर्जुन से कुछ पूछने की रमा को हिम्मत न पडती। अर्जुन किसी न किसी तरह से पैसे जुटा रहा है, यह वह देख रही थी। तेल बेचकर इतने रुपये जुटाना सम्भव न था, यह भी वह जानती थी। पर उपकारो के बोझ के तले दबकर स्वस्थ बैठे रहने के सिवा वह और कुछ भी न कर सकती थी।

और ऐसे मनुष्य को हल्की जाति का कहकर मेरी सास उसे मुझसे दूर करना चाहती थी! यह भी अच्छा ही है जो वह इस समय यहाँ नही है। इस विचार से रमा को खुशी हुई।

शिधू को निमोनिया हो गया था और उसके एक फेफडे पर उसका असर होने लगा था। पर डाक्टर ने उसे चिन्ता-जनक नही बताया। ज्वर धीरे-धीरे कम होने लगा था, पर थकावट और कमजोरी उसे बहुत महसूस होने लगी थी। बोलने की भी उसमे ताकत न रह गयी थी। उस बीमारी की हालत मे भी वह समाचार-पत्र पढने के लिए माँगता। और यदि वह उसे न दिये जाते तो क्रोध मे आकर दवा पीने में भी आनाकानी करने लगता। उसका यह क्रोध किस तरह शान्त किया

जाए यह अर्जुन अच्छी तरह जानता था। कुछ भी हो, पर उसे समाचार पत्र न पढने देने का अर्जुन ने पक्का निश्चय कर लिया था।

अर्जुन की छुट्टी समाप्त हो गयी और शिधू के पास अकेली बैठने का मौका रमा पर आया। शाम को मिल से लौटते ही अर्जुन तेल बेचने चल देता और रात को करीब दस बजे तक लौटता। बेचारी रमा और सुभद्रा एक दूसरा का मुँह ताकती हुई चुपचाप बैठी रहती। पडोस की नर्मदा का गाव चला जाना दोनो को बडा अखर रहा था।

शिधू का ज्वर अब करीब-करीब उतर गया। पर बिस्तर से उठ कर बैठने की ताकत अभी उनमे न थी। बुखार उतरने के बाद उसे कौन-कौन सी दवाये दी जाएँ इसकी एक सूची डाक्टर ने अर्जुन को दे दी थी। उन दवाओ को खरीदने के लिए अर्जुन ने रमा के अनजाने सुभद्रा का एक दूसरा जेवर बेचा।

उस जेवर को सुभद्रा रोज पहिनती थी। जब रमा के ध्यान मे आया कि सुभद्रा उस जेवर को अब नही पहिनती तब उसने सहज ही उस उसके बारे मे पूछा। सुभद्रा घबरा उठी। कुछ भी उडता हुआ उत्तर देकर रमा को सन्तोष देने की कोशिश की, परन्तु रमा का समधान न हुआ। रमा जब बिल्कुल पीछे ही पड गयी तब उसने सच बात बता दी।

रमा को बडा धक्का लगा। यह उपकार बेजोड था। रमा ने सोचा—हर माह दो सौ रुपये की आमदनी वाली अपनी बहिन सिर्फ दो रुपये दे, उन्हे देते समय दान-वीरता का बडा रोब दिखाया और फिर माँगने के लिए कभी न जाने की सख्त ताकीद भी दी! और इधर ये नीच जाति के लोग अपना सर्वस्व बेचकर मेरे पति के इलाज का प्रबन्ध करे! इस विचार से उसका हृदय उमड उठा।

कितने ये उपकार? उपकार पर उपकार की तहे चढ रही थी। रमा का हृदय बिल्कुल व्याकुल हो उठा। किसके सामने अपना हृदय खोल कर दिखऊँ? किस के पास जाकर यह भार हल्का करूँ? शिधू की वर्तमान स्थिति मे उससे यह बात कहना सम्भव ही न था।

अर्जुन को एक तरफ ले जाकर जब उसने पूछा, तब क्रोध में आकर वह सुभद्रा की खबर लेने उठ पडा। उसे शान्त करते-करते रमा की नाक मे दम आ गया। जब उसे यह धमकी दी कि बात शिधू के कान में पहुँच जाएगी और इससे कष्ट होगे तब कही वह शान्त हुआ।

धीरे-धीरे शिधू उठकर बैठने लगा। ठन्डे दिमाग से बातें करने लगा। बाते करने के लिए रमा को छोडकर और कौन था? और रमा भी उससे क्या बातें करती? पुरानी बाते निकालती तो कही-न-कही लडाई का धागा निकल ही पडता और फिर शिधू को रोकना बडा कठिन हो जाता।

इन सब बातो को सँभालते-सँभालते रमा का जी बिल्कुल पस्त हो गया। शिधू की तनख्वाह न होने से हाथ खाली था। बदन के कपडे फट गये थे। उनमे पैबन्द भी आखिर कितने लगाये जाते? यह तो अच्छा था। फिर भी इज्जत तो ढाँकनी ही चाहिए थी। गैलरी मे जाकर खडे रहने की भी उसे शर्म आने लगी। नयी साडी खरीदने के लिए क्या वह अर्जुन से पैसे मागे?

क्या करे यह उसे सूझ न पडता। मालिक मकान तथा दूकानदार आकर रोज तकाजा करते। रोज आकर दरवाजे पर धरना देकर बैठते। शिधू जब तक बिस्तर पर पड़ा था, तब तक इन लोगो को जैसे-तैसे समझा-बुझाकर लौटा देती। जब शिधू उठकर कमरे मे टहलने लगा तो स्वस्थ हुआ देखकर दूकानदार ने फिर तकाजा करना शुरू किया। अर्जुन से इस विषय मे कुछ कहने की उसे हिम्मत न होती थी। सुभद्रा सारे दिन मिल मे रहती इसलिए उसे इसका पता न चलता।

यह देखकर कि तकाजे शुरू हो गये है शिधू अपने आप काम पर जाने का हठ करने लगा। अभी तक उसमे पुरी ताकत नहीं आयी थी। अर्जुन उसे काम पर न जाने देता। जब शिधू को यह मालूम हुआ कि उसके लिए अर्जुन रोज फेरी लगाकर तेल बेचता है तब उस का हृदय फट पडा। वह सोचने लगा, अब इस मनुष्य के और कितने

उपकार लूँ ? प्रत्यक्ष जन्मदात्री मा भी पराथी हो गयी, यहां से चली गयी और वह हल्की जाति का आदमी, जिसे हम कभी अपने पास भी नही आने देते थे, जब गाँव में था तब जिसकी हमने कभी पूछताछ भी न की, जिसके बारे मे हमने कभी कोई दिलचस्पी न दिखायी। लड़ाई पर भेंट हो जाने से विदेश मे मुलाकात हो जाने से जिससे स्नेह जोड़ा, वहीं वह विपत्ति आयी, वह था इसीलिए मैं यहाँ जिन्दा लौटा, वह था इसी लिए आज ये दिन देखे, और अब तो वह ठूँठे हाथ से मेरे लिए तेल बेच रहा है ? मेरे लिए घर-घर चक्कर काट रहा है। मैं उसके इन उपकारो का बदला कैसे चुकाऊँगा ? ऐसा लगता है कि मेरी स्मृति जाती रही थी, वही अच्छा था। उसके लौट आने से आखिर लाभ ही क्या हुआ ? याद लौट आने से ही मै यह चुभन महसूस करने लगा। इसीलिए मन व्याकुल हो रहा है। क्या करूँ, कुछ भी नही सूझ पड़ रहा है। यदि उससे कहूँ कि तेल बेचने न जाया कर, तो यह गृहस्थी कैसे चलेगी ? और ये लोग मुझे काम पर जाने से भी रोक रहे हैं। काम पर न जाऊँ तो करूँ क्या ? वहाँ रोज मेरी तनख्वाह जो कट रही है। आमदनी और खर्च का मेल कैसे होगा ? कैसे राह निकलेगी इस कठिनाई से ?

रमा का मन भी द्विविधा मे पडा था। वैसे देखा जाए तो शिघू का स्वास्थ्य अब बहुत कुछ सुधर गया था, परन्तु मिल तक पैदल जाने की ताकत उसमे न आई थी। अर्जुन बोला—"यदि आफिस जाना ही चाहते हो तो तागा करके जाओ। शाम को धीरे-धीरे पैदल चले आना। मिल का कोई भी आदमी तुम्हे घर तक पहुँचने के लिए तैयार हो जायगा। मैं तुम्हारे साथ धीरे-धीरे नही आ सकूँगा क्योकि मुझे यहाँ आते ही पीपा उठाकर तेल बेचने के लिए फेरी लगानी चाहिए।"

तेल बेचने के लिए जाना अर्जुन के लिए किसी कर्मठ ब्राह्मण की सन्ध्या-पूजा की तरह ही आवश्यक हो गया था।

दूसरे दिन तागे मे बैठकर शिघू आफिस गया। घर मे रमा अकेली रह गयी थी वह बेचैन हो उठी थी। तकाजे वालो से पिन्ड छुड़ाने के

लिए ताला लगाकर कहीं बाहर चल दे, ऐसा उसे लगने लगा था।

शाम को जब शिधू घर लौट कर आया तो बिल्कुल थक गया था। यद्यपि वह बहुत धीरे-धीरे पैदल आया था, फिर भी उतना परिश्रम उसे बरदास्त न हुआ। पर उसके आफिस जाने से एक लाभ यह हुआ था कि उसका बकाया वेतन उसे मिल गया था जिसे वह घर ला सका।

उसकी वह कमजोर हालत देखकर, आफीसर ने उस पर थोडी दया दिखायी और आधी तनख्वाह पर उसे कुछ दिनो की और छुट्टी दे दी।

आफिस मे आदमियो की कमी थी ही। जरूरत होने पर अधिक छुट्टी मिलना संभव नही था, इसलिए उसे छुट्टी देते समय यह ताकीद दे दी थी कि यदि जरूरत पड गई तो उसे बिना छुट्टी पूरी हुए एकदम काम पर आ जाना होगा।

अधूरी पूंजी पर अर्जुन ने तेल का व्यापार शुरू किया था। तेल बेचते हुए लडाई की बाते बताकर वह ग्राहको का मनोरजन करता। इसलिए वह सबका प्रिय हो गया था और उसकी ग्राहक सख्या बढ गयी थी। तेल पूरा बिक जाने पर वह थोक दुकानदार के पास जाता और बिक्री के पैसे से पुन: उसकी दुकान से दूसरा तेल का पीपा उठाता और बिक्री शुरू कर देता। ऐसा उसका नित्य-क्रम था।

रोज रुपया-बारह आने कमाने के लिए वह जो कष्ट कर रहा था, उसे देखकर शिधू का कलेजा टूट रहा था। वह कहता—"क्या इसीलिए हम लडाई पर गये थे? यदि हम पहिले ही यह जानते कि रण-भूमि पर प्राणों की परवाह न कर अपना खून बहाने के बाद हमे ऐसे कष्ट मिलेगे तो हम लडाई पर जाते ही क्यों?"

"यह सच है।"—अर्जुन कहता—"पर बेचारी सरकार भी आखिर क्या करे? कितने लगडे-लूलो को पोसे? मुझे आखिर पेशन तो दे ही रही है या नही? तुम क्लर्कों को तीस साल नौकरी करने के बाद पेंशन मिलती हैं। उससे पहिले नही दी जाती। उससे पहिले मिली भी तो एक तिहाई पेंशन दी जाती है। पर हम सिपाहियों को लड़ाई में घायल ही

जनरल टाऊनसैन्ड की मूर्खता के कारण किनने आदमी प्राणों से हाथ धो बैठे ? इसके लिए कौन जिम्मेवार है ? एक मनुष्य का अंदाज चूक जाए और उसके परिणाम स्वरूप हजारो मनुष्यो के प्राण चले जाये, ऐसी बेअदाज की यह लडाई अभी तक बन्द क्यो नही करते ? सुनता हूँ अभी तक रँगरूट भरती हो रहे है। क्यो मरने जा रहे है ये लोग वहाँ ? भूखो पेट यही क्यो नही मर जाते ?"

यह देखकर कि शिधू के बोलने का स्वर ऊँचा चढ रहा है, अर्जुन ने विषयातर करने के लिए बीच ही मे मिल की बाते छेड दी। फिर भी मस्तक पर चढा शिधू का खून नीचे न उतरता था। वह बोला—"और यह दूसरी लडाई यहाँ चल रही है ! बिना तोपो की, बिना गोलो की ! मिल की मशीनो मे पीस-पीसकर मार रहे है लाखो लोगो को, पर किसी को कोई परवाह है क्या इसकी ? वारफड शुरू कर दिया है। हर मिल वाला उसके जोर पर मनमाना शोषण कर रहा है गरीबों का। मजदूरो को छुट्टियाँ नही, उन लोगो के लिए डाक्टर नही, पीने को उन्हे ठीक से पानी तक नही मिलता। सुबह से शाम तक उन्हे जैसे जेल मे ठूँस दिया हो ! कोई अपने बाल-बच्चो तक को नही पहचानता। लडाई शुरू होने के बाद से पाँचों घी मे हो गयी हैं इन व्यापारियों की। यहाँ एक रंग का व्यापारी है। मामूली आदमी था वह। लडाई शुरू हुई। जर्मनी से रंग आना बन्द हो गया। गोदाम में रखे चार आने के माल के चार रुपये बनाये बेटा जी ने और अपनी निजी इमारतें खडी कर रहा है। व्यापारी लोग मौज कर रहे है। इसलिए वे नही चाहते कि लड़ाई बन्द हो। इसीलिए लडाई को आगे चलने देने के लिए वार लोन, वार-फड और अवर डे फडो मे खोलकर पैसा दे रहे हैं। और हम लोग जिन्होने वहाँ जाकर अपना खून बहाया है, इस तरह भूखों मर रहे है। बारह घटे नौकरी करके भी सिर पर तेल का पीपा लिये दर-दर भटक रहे हैं। आग लगाओ उस लड़ाई को और लड़ाई शुरू करने वाले राजनीतिज्ञो को !

किसी बहाने अर्जुन बाहर चला गया, फिर भी शिधू बोल ही रहा था।

दूसरा दौरा

शिधू के स्वास्थ्य में अब काफी सुधार हो गया था। वह नित्य की भाँति आफिस जाने लगा था। उसकी शक्ति बहुत क्षीण हो जाने के कारण आफिस का काम ठीक से करते न बनता था। बुखार से उठने के बाद गई हुई ताकत फिर से आने के लिए उसे जो खुराक मिलनी चाहिए थी वह प्राप्त होना असभव होने के कारण उस कमजोरी मे ही उसे आफिस में जाकर काम करने के लिए मजबूर होना पडा था।

उस दिन अर्जुन दोपहर की छुट्टी मे घर आया। उसके सिर मे दर्द था। घर आते वक्त उसे सुभद्रा से यह कहने की फुरसत न मिली कि वह घर जा रहा है।

घर आया तो आश्चर्यचकित हो गया। उसी तरह बीच की छुट्टी मे घर कभी न आने वाले अर्जुन को अचानक आया देखकर, रमा भी आश्चर्य मे आ गई।

अर्जुन के आश्चर्य-चकित होने का कारण बडा विलक्षण था। जीना चढकर जब वह ऊपर आया तो गैलरी में कोई अपरिचित स्त्री खडी हुई उसे दिखाई दी। जब नजदीक जाकर देखा तो वह रमा थी।

वह रेशम की जरदार मूल्यवान साडी जिसे 'पैठणी" कहते हैं, पहने थी। उस के बदन मे चोली भी रेशमी थी। उस पोशाक मे अर्जुन ने उसे पहिले कभी न देखा था। वर्तमान आपत्ति के दिनो मे त्यौहार पर भी वह इन मूल्यवान वस्त्रों को कभी बाहर नही निकालती थी। वह पैठणी उसकी पैतृक सपत्ति थी। वैसी साडी अब देखने को भी नहीं मिलती और यदि बाजार मे जाकर वह बेची जाए तो उसका कोई खरीददार भी न मिलेगा। हाँ, उसके जर को जलाकर ज्यादा से ज्यादा

चार-पाँच रुपए मिल सकते थे।

उसे देखते ही अर्जुन बोला—"यह क्या है पटेलन भाभी ? कोई त्यौहार है क्या ? यह सजावट आज किसलिए ?"

रमा की आँखो से आँसुओ की धाराए बहने लगी। अर्जुन के छक्के छूट गए। वह बोला—"जब तुम्हे देखा तो गौरी जैसी दिखी और अब एकाएक यूँ रोती क्यो हो भाभी ? मैं सोचता हूँ कि सारे दुखो को तुमने इस कीमती वस्त्र से ढंक दिया है। मेरे सिर मे दर्द था इसलिए मैं घर आया। पर तुम्हे देखते ही जी भरकर आनन्द हुआ और मैं अपना सारा दुख भूल गया। लेकिन देखता हूँ तो तुम यूँ रो रही हो।"

कुछ न बोलकर रमा ने खूँटी पर से अपनी साड़ी उतारी और उसकी एक-एक तह खोलकर अर्जुन को दिखायी। उस साडी मे बीसो पैबंद तो लगे ही थे, पर अब उन पैबदों मे भी छिद्र हो गये थे।

रमा बोली—"देखा तुमने, अर्जुनराव ! यह ऐसा हो गया है इसलिए यह पैठणी निकालनी पडी। यह दरिद्रता का वैभव है, अर्जुनराव ! एक साडी खरीदने की भी ताकत नही है हमे। इसीलिए सहेज कर रखी इस पैठणी को पहनना पड रहा है। यह बुरी तरह बदन मे चुभ रही है, और अंतरतम मे भी ! भीतर और बाहर लगातार चुभन हो रही है इस पैठणी के कारण !" वह अपनी सिसकी न रोक सकी।

अर्जुन का कंठ भर आया। वह बोलने का प्रयत्न कर रहा था, पर उसके मुँह से शब्द ही न निकलते थे। कुछ भी बोलना चाहिए इसलिए उसने मुँह खोला ही था कि इसी समय ...

इसी समय दूकानदार आ धमका। रमा को उस पोशाक मे देखते ही वह बोला—"ओ हो हो ! यह ठीक हुआ बाई साहब ! अब दे डालिए मेरी उधारी।"

"कहाँ से लाऊँ बाबा !"—दयनीय मुद्रा करके रमा बोली।

"क्यो भला ?" दूकानदार बोला—"अब तो आप ऐसी कीमती साड़ियाँ पहिनने लगी। क्या रुपए हाथ में आए बिना कोई इतनी कीमती

साडियाँ पहिनता है कभी ? ऐसे मूल्यवान वस्त्र बिना पैसों के कोई कैसे खरीदेगा ?"

'नही भाई !" रमा ने सिसकियो के बीच कहा—"तुम गलत समझ रहे हो। घर में एक कौड़ी नही है, इसीलिए यह साडी मजबूर होकर पहिन रही हूँ।"

"पैसे नही हैं, इसीलिए यह साडी पहन रही हो ?"—दूकानदार विस्मयचकित होकर बोला—"यह तो बडी अनोखी बात है। गरीबी में ऐसी अमीरी शान कौन दिखाएगा ?"

रमा बडी स्वाभिमानी थी, पर पैसों के अभाव में लाचार हो गई थी। अपनी दुखमयी हालत के बारे में उसने आज तक कभी खोलकर किसी से कुछ नही कहा था। परन्तु अब बात चरम सीमा को पहुँच गई थी। इसलिए उसे अपना अभिमान लपेटकर एक ओर रख देना पडा।

वह खूँटी के पास गयी। उसने अपनी साडी की एक तह खोल कर उस दूकानदार को दिखायी और कहा—"देखा ! यह बात है, इसीलिए यह साडी पहिननी पडी। यह दो सौ रुपए की है। क्या इसके लिए कोई ग्राहक मिल जाएगा ?-यदि इसकी इतनी ही कीमत कही मिल जाए जिससे तुम्हारी उधारी चुका सकूँ तो भी सतोष हो जाएगा। इतना ही भार कम हो जाए तो इस फटी साडी को पहिनकर ही मैं दिन काट लूँगी।"

दूकानदार स्तब्ध हो गया। वह क्या उत्तर देता है, इस ओर अर्जुन का ध्यान लगातार लगा था।

रमा कह रही थी—"तुम जानते नही भैया ! वे लडाई पर गए थे। वहाँ उनके सिर मे जख्म हो गया था। उनकी स्मृति भी जाती रही। भगवान ने उनकी स्मृति पुन लौटा दी। इसके बाद यह बीमारी आई। उनका वेतन बंद हो गया। अब बताओ कहाँ से तुम्हारे पैसे दें ? चूल्हे पर हडी तो चढनी चाहिए न ? जाकर किसी दूसरे के पैर पडूँ इससे तुम्हारे सामने ही दामन फैलाती हूँ। धर्म की बहिन मानकर मुझे इतनी

भीख दे दो। उनका स्वास्थ्य जरा ठीक हो जाने दो। हमें जब पैसे मिलने लगेंगे तो हम तुम्हारा एक-एक पैसा चुका देंगे। तब तक हमारे पीछे तकाजा न लगाओ और न हमे उधार देना ही बद करो। बस, यही भीख तुमसे चाहती हूँ, भैया!" ऐसा कह कर सचमुच हीं उसने उस दूकानदार के चरण पकड लिए।

वह गिरगाँव का दूकानदार न था। गरीबो के दुख देखने का उसे अभ्यास था। जब उधारी बढ जाती और ग्राहक उसके पैसे न देता तो वह ग्राहक को खूब गालियाँ देता। पर इस समय यह देखकर कि एक ब्राह्मण की औरत अपने बनिये के चरण पकड रही है, उसका हृदय भर आया। कुरते की बाँह से आँसू पोंछता हुआ वह बोला—"कोई चिन्ता न करो, बहिन! जब तुम्हारे पास पैसे आवे तब देना और जिस चीज की जरूरत हो मेरी दूकान से मांग लेना। जाने क्यों जाते हैं ये लोग लडाई पर? लडाई पर ले जाते वक्त तो उन्हे बडा सब्ज बाग दिखाया जाता है, पर लडाई से लौटने पर उनकी हालत क्या है, क्या सरकार को यह नही देखना चाहिये? क्या करूँ बहिन, मेरी कपडे की दूकान नहीं, वरना मैं एक साडी भी तुम्हे उधार दे देता।" उसका कंठ भर आया था। मुँह से शब्द नही निकल पा रहा था। कुछ भी न कहकर वह बह चला गया। अर्जुन स्तब्ध ही खडा था।

बिस्तर पर सिर रखकर रमा सिसक-सिसककर रोने लगी। इतने स्पष्ट शब्दों मे उसने अपनी गरीबी कभी किसी के सामने खोलकर नही दिखाई थी।

दूकानदार का हृदय पसीज गया था और उसे दया आयी थी, इस में शक नहीं, पर उसे लगा कि मैंने स्वय अपने हाथ से ही अपने स्वाभिमान पर आघात किया।

अर्जुन बोला—"रोओ मत भाभी! रोने से क्या होगा? शिधू भैया को रोना पसन्द नहीं, यह जानती हो न? गरीब पर गरीब को ही दया आती है। एक छोटी सी दूकान लेकर धन्धा कर रहा है

बेचारा। मिल के बाबुओं की उधारी पर क्या धन्धा चलता होगा बेचारे का ? अब उसके पैसे नहीं मिलते तब वह लोगो पर बिगड जाता है, उन्हे गालियाँ तक देता है। उसके बारे मे लोग ऐसी शिकायत करते हैं। पर कह नही सकता कि उसके घर भी दोनो जून चूल्हे पर हाडी चढती होगी या नहीं ?" बोलते-बोलते अर्जुन रुक गया। उसके सिर का दर्द अब बहुत बढ गया था। वह बोला—"मेरे सिर मे बहुत दर्द हो रहा है। मैं कमरे मे जाकर बिस्तर पर थोडी देर लेटता हूँ।"

वह क्या कह रहा था, रमा को सुनाई तक नही दिया। वह अपने ही दुख मे चूर थी। उसका बिचार-चक्र घूम रहा था—मुझे एक पराये आदमी के सामने, दामन फैलाकर याचना करने का मौका आया, मुझे उसके चरण पकडने पडे। मेरा हृदय इस दुख से विदीर्ण हो रहा है। डाकखाने की नौकरी करते समय बीस रुपये मे ही सुख की गृहस्थी चल रही थी। लडाई शुरू हुई, हर चीज की कीमत बढ गई, बम्बई मे आकर रहना पडा और ऊपर से यह रोज की झिकझिक! पहिले अर्जुन के उपकारों का मुझे बडा बोझ लगता था। पर वह वह अपने गाँव का ही है। हमारा आसामी है। एक तरह से हमारा आश्रित है। अपने आश्रित का उपकार लेना आश्रयदाता के लिए यद्यपि लाचारी है फिर भी दोनो आत्मीयता के सूत्र में बंधे हैं। पर यह दूकानदार तो एकदम पराया है। अगर उसके पैसे न दें तो चिल्लाता है, गालियाँ देता है और ऐसे दूकानदार के चरण पड़ने पडे !"

उसे लगा इससे तो मुझे मौत ही क्यों न आ गयी ? ऐसे लज्जा-जनक जीवन से मर जाना क्या बुरा ? कैसे हमारी यह स्थिति सुधरेगी ? बीमारी मे हम पर जो कर्ज हो गया है वह कैसे चुकेगा ?

उस कर्ज का बोझ भी कौन बड़ा भारी था। अमीर लोग मामूली अपनी एक बैठक की पान-सुपारी में ही दस-बीस रुपये उडा देते हैं। उतनी क्षुद्र रकम के लिये दूकानदार के चरण पकडने का मौका आवे ? कहाँ से यह रकम लायी जाय ? कैसे चुकेगा यह कर्ज ?

अपने ही विचारो मे वह इतनी खोई हुई थी कि अर्जुन की उसे सुधि ही न आयी। वह उठकर बैठी और इधर-उधर देखने लगी। अर्जुन वहाँ न था।

उसने अर्जुन के कमरे के भीतर झाँककर देखा। चद्दर ओढे बिस्तर पर सोया हुआ था। उसका चेहरा लाल-लाल दीख रहा था। रमा के आने की उसे आहट मिली, फिर भी उसने आँखे खोलकर नही देखा। इसलिए वह उसके पास गई। इससे पहिले उसने किसी पराये पुरुष के बदन को हाथ नही लगाया था। सिर्फ क्षण-भर के ही उसने यह मालूम किया कि क्या मुझे पराये पुरुष के बदन को छूना चाहिये ?

फिर सोचा, ऐसे प्रसंग पर सकोच क्यो रखा जाये ? उसने उसके मस्तक पर हाथ रखा। अर्जुन का बदन ज्वर से जल रहा था। उसने धीरे-से उसे पुकारा। पर वह होश में न था।

अब क्या करूँ उसे सूझता न था। यदि मिल का रास्ता जानती होती, तो दौडकर शिधू और सुभद्रा को बुला लाती। पडोसियो मे नर्मदा को छोडकर और किसी से उसकी पहचान न थी।

वह कमरे के बाहर आयी। उसे गैलरी मे एक लडका खडा हुआ दीखा। इशारे से उसने उस लडके को अपने नजदीक बुलाया और उससे कहा—"मैं तुम्हे एक पैसा दूँगी। चने लेकर खा लेना, पर तुम मेरा एक जरूरी काम करो। हमारे घर के लोग जिस मिल मे काम करने जाते हैं वह मिल कहाँ है, यह तुम जानते हो ?"

लड़के ने हाँ कहा। तब वह बोली—"वहाँ दौड जाओ, बेटा। वहाँ सुभद्रा का पता लगाना और हमारे उन्हे भी खोजना। उनसे कहना अर्जुन को तेज ज्वर चढा है। जल्दी डाक्टर लेकर आओ।" ऐसा कहकर उसने लडके के हाथ पर एक पैसा रख दिया। कूदता-फाँदता वह लडका चल दिया। परन्तु रमा की बेचैनी न गई। उसे लगा, क्या यह लडका सचमुच मिल में जाएगा या कि चने लेकर दूसरे लड़कों के साथ कहीं खेलने लगेगा ?

वह बिल्कुल भौंचक्की-सी हो गई थी। उसने सोचा और एक पैसा देकर कम-से-कम थोडा बर्फ मँगा लेती। कोई दूसरा लडका मिल जाये इसलिए उसने इधर-उधर देखा। दोपहर के वक्त चाल में सर्वत्र सन्नाटा था।

कुछ उपाय तो करना ही चाहिये था, इसलिए उसने ठडे पानी की पट्टी अर्जुन के मस्तक पर रखना शुरू किया। कोलन वाटर उस घर मे कहाँ से आता। अर्जुन का ज्वर लगातार बढ रहा था। इतने जल्दी वह बकना भी शुरू कर देगा ऐसी उसे आशा न थी। पर ज्वर मे वह जोर-जोर से परेड के हुक्मो को बोल रहा था।

रमा के प्राण बिल्कुल व्याकुल हो उठे। उसे लगा सुभद्रा होती तो दौडकर बर्फ ले आती। डाक्टर को भी बुला लाती। सास के द्वारा लगा दिये गये अनुशासन के कारण वह कभी बाहर नही गयी थी। बर्फ की दूकान भी जिसे मालूम न थी वह भला डाक्टर को बुला ला सकती थी? सुभद्रा चाहे जहाँ जाती है, चीजें खरीद कर ले आती है, मिल में तो वह जाती ही है। वह सारी मजदूर नगरी से पूर्ण रूप से परिचित है। और मैं? मैं पढी-लिखी जो हूँ? ब्राह्मण जो हूँ? सब से ऊँची जाति की हूँ?

क्या जरूरत थी इस शिक्षा की? लाग लगे इस ब्राह्मण होने को। घर के बाहर कदम न रखने से ही क्या कोई बडा हो जाता है। ऐसे बिकट प्रसग पर जब कि प्रत्यक्ष हमारा उपकार कर्ता ज्वर मे पड़ा हुआ है, उस के लिये बाहर जाकर मैं एक पैसे का बर्फ भी नही ला सकती? एक डाक्टर नहीं ला सकती! ऐसा ब्राह्मण होना किस काम का?

बार-बार वह ठडे पानी की पट्टी अर्जुन के मस्तक पर रख रही थी। पुन. बाहर जाकर देखती थी कि कोई आ रहा है या नहीं। वह लड़का आखिर गया कहाँ? अभी तक कोई क्यों नही आ रहा? उसे लग रहा था खुद ही पूछते-पूछते डाक्टर के पास चली जाऊँ, पर उस डाक्टर का नाम भी उसे कहाँ मालूम था? उसे लगा, वह लडका कहीं भटक ही गया है! अब शाम तक कोई नही आयेगा! और तब तक

अर्जुनराव का कोई इलाज भी नही किया जा सकता।

उसका मन बेचैन हो रहा था। आदमी तो कोई भी नजर अही आ रहा था। और अगर कोई दीख भी जाता, तो उससे कहती कैसे? हर क्षण उसे युग की तरह लगने लगा, तभी उसे आभास हुआ जैसे नीचे कोई गाड़ी आकर रुकी है।

देखा तो शिधू और सुभद्रा डाक्टर को लेकर आये थे। रमा का जी ठडा हुआ।

तेल का पीपा

सुभद्रा आ गयी थी, इसलिए अच्छा हुआ, नहीं तो डाक्टर को फीस कहाँ से दी जाती, यह समस्या खडी हो जाती। सुभद्रा के पास कुछ पैसे हमेशा रहते। अर्जुन अपने पैसे कहाँ रखता है इसकी सुभद्रा को कोई कल्पना न थी। इसलिए अपने सग्रह से पैसे निकालकर उसने डाक्टर की फीस दी और वही दवा लाने के लिए डाक्टर के साथ गयी।

शिघू शरमिन्दा-सा होकर अपने कमरे मे जाकर बैठ गया। उसे लगा, जब मैं बीमार था उस समय डाक्टर की फीस अर्जुन देता था। अब वह बीमार है इसलिए डाक्टर की फीस देने की बारी मेरी थी। पर वह फीस दूँ कहाँ से ?

सुभद्रा के आने तक रमा अर्जुन के पास बैठी थी। बीच-बीच मे वह उसके मस्तक पर बर्फ की पट्टी रखती जाती थी। ज्वर के सब लक्षण वही थे। उतना ही तेज ज्वर, वही बेहोशी, वही श्वासोच्छ्वास ! रमा व्याकुल हो गयी। अर्जुन को भी इन्फुलुएन्जा हो गया था। उस घर में उस बीमारी की पुनरावृति हुई थी। अच्छे होने मे भी वही पुनरावृति हो कि हम सब कुछ पा गये, ऐसा रमा को लगा।

सुभद्रा ने डाक्टर को फीस दी, यह उसने देखा था। शिघू की तरह उसके मन मे भी वही बात आयी थी। परन्तु शिघू ने उस बात को तीव्रता से महसूस किया, उतनी तीव्रता रमा के मन मे नही आती थी। परायेपन का भेद-भाव उसने अपने अन्त.करण से बिलकुल निकाल डाला था। उसने दृढ़ता से अपने मन मे यह निश्चय कर लिया था कि किसी भी तरह अपने मन मे सुभद्रा के परिवार के बारे मे वह परायेपन का कोई भाव कभी न आने देगी। मनमे इस भाव को यदि

वह आने देती तो उससे क्या फायदा होता ? पहिले से ही दोनो परिवार एक ही घर मे रह रहे थे। उनका खाना एक ही चूल्हे पर पकता था। आज भी वही बात हो रही थी। सिर्फ कभी-कभी सुभद्रा अर्जुन के लिए खाने के कुछ पदार्थ अलग से पका देती थी। पर पकाती थी उसी चूल्हे पर। जब ऐसा कुछ होता तो सब लोग एक साथ खाना नही खाते थे। शिधू को माँस-मच्छी से कोई घृणा थी ही नही, परन्तु रमा के खातिर वह ऐसे समय अलग से अपने कमरे मे खाना खाने के लिए तैयार हो जाता। गृहस्थी की कौन क्या चीज लाये यह भी कोई तय नही था। गृहस्थी मे किसने कितने पैसे खर्च होते है इसका हिसाब भी कोई नही देखता था। अर्जुन के पास दो आदमियो का वेतन आता था और शिधू के घर कमानेवाला एक और खाने वाले दो थे। रमा को लगता कि इन तीन कमाने वालो के बीच एक मैं ही बेकार हूँ। इसीलिए सब की रसोई बना देने का काम उसने अपने जिम्मे ले लिया था। वहाँ जाति का कोई सवाल न था। सुभद्रा के हाथ का पका खाने मे भी उसे कोई एतराज न था। इतनी उन दोनो मे घनिष्ठता हो गई थी। प्रश्न पड जाता था ऊपरी खर्च का। और इसीलिए पैबन्द लगी साडी पहिन कर वह दिन काट रही थी। अर्जुन के ध्यान मे यह बात नही आयी थी और जिस समय उसके ध्यान मे आया उस समय बुखार के कारण उसने बिस्तर पकड लिया था।

सारी गृहस्थी की बातो का सब तरफ से विचार करने लायक ताकत शिधू के दिमाग मे न रह गई थी। जो सामने आ जाता वही उसे दिखाता था। डाक्टर की फीस मैं न दे सका यही उसे चुभ रही थी। सुभद्रा जब दवा लेकर वापिस लौटा तब शिधू भी उसके साथ अर्जुन के कमरे मे गया। अर्जुन की सेवा करने लायक ताकत उसमे थी ही नही और उसका मन भी उतना तैयार न था। इसका कारण उच्च-नीच का भेद-भाव न था। उसका मन सिर्फ डर गया था। एक तो उसका दिमाग कमजोर था। दूसरे हाल ही मे वह बीमारी से उठा था। कही फिर से

बीमारी उलट पडती तो ? वह बिमारी से नहीं डरता था। पर बीमार होने पर खर्च कैसे चलेगा, यह भय उसके हृदय में जम गया था। इसी लिए वह बीमार अर्जुन के नजदीक जाने से डरता था। और सुभद्रा ने भी उसे बीमार के कमरे मे नही आने दिया। उसने कहा—"हम दोनो यहाँ हैं। आप जाकर उधर कमरे मे बैठिए। आप हाल ही मे बीमारी से उठे हैं। बीमार की सेवा आपसे नही हो सकेगी। व्यर्थ कष्ट ही होगे आप को।"

जैसा वह चाहता था उसी प्रकार की अनुमति मिल जाने से वह अपने कमरे मे जाकर बैठ गया। जब शाम हुई तब वह अस्वस्थ हो गया। तेल का पीपा लेकर फेरी पर जाने का अर्जुन का वह वक्त था। आज की फेरी चूक जाएगी। आज की कमाई डूब जाएगी। इसके लिए क्या उपाय किया जाए ? सुभद्रा गैलरी मे खडी थी। उससे शिवू ने पूछा—"पीपे मे तेल है क्या ?"

इस चिन्ता के समय भी सुभद्रा हँस पड़ी। बोली—"अगर हो भी तो क्या फायदा ? क्या मैं वह काम कर सकूँगी ? और अब खाना पकाने का भी वक्त हो गया है। भाभी को जाकर चूल्हा सँभालना होगा। इसलिए "उनके" नजदीक मुझे ही बैठना होगा। फिर बाहर कैसे जा सकती हूँ ?"

कुछ भी उत्तर न देकर शिवू अपने कमरे मे जाकर बैठ गया। एक तरह यह उसे अच्छा लगा कि उसके पूछने का उद्देश्य सुभद्रा के ध्यान मे न आया था। पीपा लेकर स्वय फेरी पर जाने की वह सोच रहा था। एक तो भरा हुआ पीपा उठाकर ले जाने की ताकत उसमे न थी और फिर वह यह भी नही जानता था कि पीपा लेकर कहा जाए और कहाँ तेल बेचे। उसने अपने मन को यह कहकर समझा लिया कि बिना जाने कोई धन्धा करना ठीक नहीं होता।

पर फेरी पर न जाने का क्या यही एक कारण था ? मान लो, अगर वह यह जानता भी कि अर्जुन तेल कहाँ और किस तरह बेचता है

तो भी तेल लेकर वह फेरी पर जाता ? जब उसने अपने मन से यह सवाल पूछा उस समय उसका मन उसे कोई सन्तोषजनक उत्तर न दे सका।

उस दिन उसे पढ़ने को अखबार मिल गये थे। विचार करके दिमाग को तकलीफ देने के बजाय वह अखबार पढता बैठा रहा। उस मे के समाचार भी दिल पर असर करने वाले थे। अमेरिका की सेना जब से यूरोप मे आयी थी तब से शत्रु-दल पीछे हट रहा था। रोज नये-नये जय प्राप्त होने के समाचार आ रहे थे।

उन समाचारो को पढकर उसे अच्छा लगा। कोई भी जीते, पर यह लड़ाई बन्द हो जाए, ऐसा उसे लगता। लड़ाई की इस घमासान मे हजारो लोग मर रहे होगे ऐसा उसे विश्वास हो गया। अमेरिका यूरोप से कितनी दूर है। वहाँ के लोग यूरोप मे आकर अपने प्राण व्यर्थ क्यो दे ? हिन्दुस्तान के लोग लडाई पर जाकर मर रहे थे, -पर वे गुलाम थे। बरसो से तनख्वाह लेती हुई जो पलटने पडी थी उन्हे इस सकट के समय प्राण देना आवश्यकता था। परन्तु अमेरिका क्यो जाकर वहाँ मरे ? क्या सबन्ध था उसका ? अमेरिका के प्रैसीडेन्ट डाक्टर विल्सन पर शिघू को क्रोध आ गया। इस मनुष्य ने क्यो अपनी सेना यूरोप भेजी ? क्या उसने इस विषय मे अपनी सेना से राय ली थी ? उसे लगा, अमेरिका की सेना स्वेच्छा से लडने नही आयी है। भारतीय सेना की तरह अमेरिकन सेना पर भी जबरदस्ती की गयी होगी।

कहते हैं कि दुनिया मे शान्ति थापित करने के लिए अमेरिका ने यह सेना भेजी है। एक दूसरे का गला दबोचकर जो राष्ट्र मरने के लिए तैयार हो गये थे, उनके देशो मे शान्ति की स्थापना करने के लिए, पूर्ण शान्ति मे रहने वाली अपने देश की सेना को इस मूर्ख प्रेसिडेन्ट ने यूरोप मे लडने के लिए क्यो भेजा ? यह कल्पना करके कि डाक्टर विल्सन ही उसके सामने खडा है उसने यह सवाल पूछा, पर उस बेचारे को कोई उत्तर ही न मिला।

शिधू होश मे आया। उसे लगा, अपना उपकार-कर्ता नजदीक के ही एक कमरे मे ज्वर में पड़ा है और मैं यह क्या सोच रहा हूँ। भाड़ में जाए वह लड़ाई और भाड मे जाए वह यूरोप। यहाँ अर्जुन की जान बचाने का प्रश्न महत्वपूर्ण है। उसने दरवाजे से झांककर देखा। अर्जुन उसी स्थिति मे पडा हुआ था। अलसी की पुलटिस से सुभद्रा उसकी छाती सेंक रही थी। हाथ के इशारे से सुभद्रा ने उसे अपने कमरे मे जाने के लिए कहा। फिर भी वह उसी तरह देखता खडा रहा। उस की दृष्टि जैसे वहीं स्थिर-सी हो गयी थी।

अगर कही यह अच्छा न हुआ तो ? नहीं-नही ऐसा कैसे होगा ? आखिर मैं बच ही गया कि नही ? क्यो ऐसा अशुभ विचार मेरे मन मे आया ?

अगर हो ही गया तो हम क्या करेगे ? हमारा आगे क्या होगा ? यदि वैसा हो गया तो हमारी सँभाल कौन करेगा ? मैं जब बीमार पडा था तब मेरा सारा खर्च उसने उठाया। रमा अपनी बहिन के पास से जो दो रुपये लायी थी वे भी उसने जा कर उसे लौटा दिये। उन पर एक आना व्याज भी दे आया था वह उसे। वह ले नही रही थी, पर उसे खूब खरी-खोटी सुनाकर दो रुपये एक आना उसके मुँह पर फेंक कर वह वहाँ से चला आया था। वह हाल उसने रमा से नही कहा था। धीरे-से मेरे कान मे कह दिया था।

और कितना आनन्द हुआ था मुझे उस समय ? उसने मुझे सिर्फ जिन्दा ही नही किया, बल्कि मेरी प्रतिष्ठा भी रखी। नही-नही, उसे नहीं मरना चाहिए। चाहे जो हो, किसी न किसी तरह उसे अच्छा करना ही होगा।

इस एक ही विचार मे खोया हुआ वह सारी रात छटपटाता रहा था। रमा सुभद्रा के साथ कमरे मे बैठी थी और उसके काम मे हाथ बँटा रही थी। दोनो पारी-पारी से अर्जुन की सेवा कर रही थीं। उसे लगा एक शाम मैंने व्यर्थ खो दी। तेल की एक फेरी व्यर्थ चली गयी।

आठ-दस आने जो भी मिल जाते क्या वे कम थे ? एक पैसा भी इस समय सौ रुपये की तरह है। उसने निश्चय किया कि चाहे जो हो कल तेल का पीपा लेकर फेरी लगाने अवश्य जाऊँगा।

दूसरे दिन सुभद्रा डाक्टर को ले आयी। अर्जुन की जाँच करने के बाद उसने सब को काफी हिम्मत दी। वैसे चिन्ता करने का कोई कारण नही था, परन्तु शिधू ने डाक्टर से कहा—"आपने मुझे लगाने के लिए जो एन्टीफ्लोजेस्टीन दिया था, उसकी क्या इसे जरूरत नही है ?"

"छि ! छि !" डाक्टर बोले—"वह तुम्हारे लिए था। इसे अलसी की पुलटिस ही काफी होगी।"

यह कितना पक्षपात ? शिधू को लगा यह डाक्टर क्यो इतना भेद-भाव करता है ? सफेदपोशो के लिए एन्टीफ्लोजेस्टीन और हल्की जाति वालो को अलसी की पुलटिस ! उच्च और नीच जातिवालो की हड्डियो और माँस मे क्या कोई फर्क होता है ? क्या दोनो के खून मे कोई अन्तर होता है ? पढ़े-लिखे लोगो की यह कैसी धारणा है ?

शिधू अपने आप ही हँसा। उस डाक्टर पर उसे रहम आया। उस डाक्टर ने सोचा होगा कि शिधू अच्छी तनख्वाह पानेवाला सफेदपोश क्लर्क है और अर्जुन है नीच जाति का एक मामूली सिपाही। वह अपने आप से बोला—"कैसा धोखा खाया बेचारे ने। वह कहाँ जानता है कि आज धनी अर्जुन है और उसी के पैसे पर यह ब्राह्मण जी रहा है ! सफेदपोशी का कितना यह प्रभाव कि डाक्टर भी धोखा खा गया !

अर्जुन के स्वास्थ्य मे विशेष फर्क नही पड रहा था। दोनों लगातार उसकी सेवा मे लगी थी। कुछ देर से ही क्यो न हो, पर शिधू आफिस गया।

शाम को वह घर लौटा। आते ही उसने पहिले तेल का पीपा उठा कर देखा। वह पूरा भरा हुआ था। यह देखकर कि रमा और सुभद्रा का ध्यान उसकी ओर नही है, उसने पीपा उठाया और वह जीना उतरने

लगा।

जीने मे एक पडोसी से भेट हो गयी। वह बोला—"यह क्या है शिघू बाबू ? पीपा लेकर कहाँ चले ? भरा हुआ दिखता है।"

"कुछ नही। यूँ ही जा रहा हूँ।" कहकर, उसे टालता हुआ शिघू पहिला जीना उतर कर नीचे गया।

दूसरे जीने मे दो-तीन व्यक्ति और मिले। पीपा उस समय उसके कन्धे पर रखा हुआ था। एक ने पूछा—"यह क्या है जोशी जी ? कन्धे पर पीपा लिए कहाँ निकल पडे ? क्या अर्जुन जमादार की तरह फेरी लगाने जा रहे हो ?"

"हाँ ! कोशिश करके देखता हूँ।" इस तरह मन-ही-मन पुटपुटाता हुआ शिघू आगे चला। चाल की सीढियाँ उतरकर वह नीचे आया तो उसके साथी दो चार क्लर्क मिले। सभी एकदम चिल्ला पडे—"अरे वाह जोशी जी, शायद तेल बेचने जा रहे हैं आप ?"

शिघू पीपे के वजन के नीचे झुका था। उसे सहारा देकर पीपा कन्धे पर से उतारता हुआ एक क्लर्क बोला—"जोशी जी, यह तुम्हारा काम नही। अपने शरीर को कष्ट-भर दोगे। क्या फेरीवाले की तरह तुम सडक पर चिल्ला सकोगे ? तुम्हारे खून मे वह बात नही। तुम तो मेज पर कागज काले कर सकते हो। इन कामो को करने के लिए हल्की जाति के लोग ही चाहिए। शारीरिक परिश्रम करने की घुट्टी ही पीकर आते हैं वे लोग।"

कुछ न बोल पुन. पीपे को कन्धे पर रखकर शिघू आगे चलने लगा

उसके कानो मे शब्द आये—"अरे वाह ! बाभन ने तो बडी कमर कसी मालूम होती है। दाल-भात खाकर ऐसी मेहनत के काम नही बनते और सडक से चिल्लाते जाने की हिम्मत होगी इसे ? कही दो-चार लडको ने थोडा-सा मजाक कर दिया तो भाग ही जाएगा यह बाभन।

जल्दी-जल्दी कदम बढाने की शिघू कोशिश कर रहा था। परन्तु पीपे का बोझ उसके लिए असहनीय हो रहा था। वह पीपे को नीचे रखता

फिर उठाता और आठ-दस कदम चलने के बाद फिर उतारता और फिर उठाकर चलने लगता। इस तरह वह कर रहा था। आसपास के लडको ने उसे देखा तो उन्हे बडा मजा आया और वे उसकी हँसी उडाने लगे। शिधू को लगा कि पीपा पटककर भाग जाऊँ। उन क्लर्कों के शब्दो की उसे याद हो आयी।

उसी तरह पीपा सिर पर रखे पीछे मुडा और बड़े कष्ट से जीना चढकर अपने कमरे मे आया।

रमा गैलरी मे ही खडी थी। यह देखते ही कि तेल का पीपा कन्धे पर रखे शिधू आ रहा है, उसे आश्चर्य हुआ। कमरे मे जाकर वह चुपचाप बिस्तर से टिककर बैठ गया और बोला—"रमा, मै हार गया। मैं बिल्कुल नालायक हूँ। इस दुनिया में मैं किसी काम का नही। मुझे जिन्दा रखने के लिए अर्जुन फेरी लगाता था। मैंने सोचा, उसके लिए मै भी वही करूँ। पर नही, यह सम्भव नही है। मैं मूर्ख हूँ, नासमझ हूँ, कृतघ्न हूँ, जीवित रहने के लिए नालायक हूँ, मेरी देह मे ताकत नही, मन मे शक्ति नही ! किस काम की यह सफेदपोश जिन्दगी ?"

दरवाजा बन्द करके रमा भीतर आयी और दोनो बाहे उसके गले मे डालकर बोली—"क्यों मन को इतना कष्ट दे रहे हैं आप ? क्या जरूरत है पीपा ले जाकर तेल बेचने की ? सुभद्रा ने मुझसे अभी कहा कि अर्जुन को इस सकट की पहिले से ही कल्पना थी। इसलिए आप की बीमारी मे जो खर्च हुआ था उस अन्दाज से पैसे बचाकर उसने सुभद्रा को दे रखे थे, जिससे वक्त-जरूरत पर काम पडे। वही इस समय काम आ रहे हैं। इसलिए आपको तेल-वेल बेचने जाने की कोई जरूरत नही।"

"पर मैं उसके लिए क्या कर रहा हूँ ?" शिधू ओठ चबाता हुआ बोला।

"चुप रहिए। मन को ऐसा कष्ट न दीजिए। ताकत होती, पैसा होता तो क्या हम पीछे हटते ? अर्जुन अपना माँ-बाप है। माँ से कभी कोई

उऋण नहीं होता ।"

एक क्षण-भर के लिए शिघ्रू चुप बैठा और बाद मे अपने मन-ही-मन बुदबुदाने लगा—"अर्जुन मेरी माँ है !" अर्जुन मेरी माँ है ।"

"अब कैसा अच्छा लगा !"—रमा बोली ।

उसे अपने नजदीक खींचकर शिघ्रू बोला—"मैं ऐसा मूर्ख कैसे हो गया हूँ। तुम और अर्जुन न होते, तो मेरा क्या होता ? अर्जुन मेरी माँ है और तुम कौन हो ?"

उसके अधर से अधर लगा कर रमा ने कहा—"मैं ! मैं पेज[1] की माँ और सेज की रमा !"

शिघ्रू इतना हँसा कि उसके पेट मे बल पड गये ।

नजदीक के कमरे मे अर्जुन ज्वर के आवेश में जोर-जोर से ड्रिल के हुक्म दे रहा था ।

———

१ भोजन देने वाली मा

पुराने धागे

अर्जुन का स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधार की राह पर आ रहा था। जितनी जल्दी शिधू अच्छा हो गया था उतनी जल्दी अर्जुन बिस्तर न छोड सका। उसका निमोनिया अच्छा होगा या नही, डाक्टर को भी इसका शक होने लगा था। परन्तु डाक्टर ने कहा कि दवा की अपेक्षा रमा और सुभद्रा की सेवा से ही अर्जुन को स्वास्थ्य लाभ हुआ।

शिधू ने किसी भी कार्य का अपने पर भार लेना छोड दिया था। ऑफिस जाने के सिवा और कोई भी काम करने की ताकत उसमे न थी। फिर वह सेवा क्या करता? उसका काम एक ही था—अखबार पढना।

परन्तु उन्हे पढने के बाद समाचारो के बारे मे चर्चा करते की उसे जो सनक आती, उसके दूर होने की कोई सम्भावना न थी। डाक्टर ने सख्त ताकीद दे दी थी कि अर्जुन को किसी भी प्रकार का कष्ट न दिया जाए। रमा और सुभद्रा जितना सम्भव था उतना शिधू को टाला करती। मिल के क्लर्कों से यदि वह लडाई की बाते करता तो वे उसकी हँसी उड़ाते। फिर भी मिल मे उसे कुछ श्रोता मिल जाते। पर वे क्लर्क न होते, मजदूर होते। कुछ ऐसे लोग होते जो अपने को मजदूरो के नेता कहते। शिधू की बाते उनके मन पर असर कर जाती। उनके कुटुम्बी लडाई पर जाकर काम आये थे। लडाई के कारण गाँवो मे खेती की क्या दुर्दशा हो गई थी, इसकी उनमे से कई लोगो को प्रत्यक्ष आँच लगी हुई थी। ऐसे लोगों को शिधू की बाते जँचने लगी।

लडाई से लौटे हुए और वहाँ पर जख्मी हुए मनुष्य के नाते सभी

को उसके प्रति आदर था। उन से अधिक आदर उस के प्रति इन मज-दूर नेताओ को मालूम होने लगा। लडाई के कारण किसानो और मजदूरो पर जुल्म ढाये जा रहे थे, जो जबरदस्ती उन पर हो रही थी और इच्छा न होते हुए भी उन्हे जिस तरह बलात पकडकर लडाई पर ले जाया जा रहा था, इसकी आँच सभी को लगी थी। मिल के मजदूरों में असन्तोष पैदा करना चाहिए, यही शिबू चाहता था। शिबू का कहना था कि लडाई शुरू करने और उसे जारी रखने की जितनी जिम्मेदारी सरकार की है उतनी ही जिम्मेदारी देश के पूँजीपतियो की भी है। लडाई के कारण यदि किसी को लाभ हो रहा है, तो व्यापारियो को ही हो रहा है। देशपूजा और राष्ट्रपूजा की अपेक्षा द्रव्यपूजा ही इन व्यापा-रियो का ध्येय है। द्रव्यापार्जन के लिए व्यापारी लोग अपना देश बेचने के लिए भी पीछे नही हटेगे।

इस काम में सभी देशो के व्यापारी एक समान हैं। जर्मनी से चोरी से आए माल पर "मेड इन इँग्लैंड" की छाप लगाकर वह माल इँग्लैंड के बाजार मे खुले आम बेचा जा रहा है, ऐसी भी अफवाह थी।

लडाई की परिस्थिति से लाभ उठाकर अन्धाधुन्ध नफा कमानेवाले हिन्दुस्तान के व्यापारी तो उनके सामने ही थे। यूरोप मे लडाई हो रही थी तो हिन्दुस्तान मे कपडा सस्ता होना चाहिये था ऐसी जनता को आशा थी। पर बात बिल्कुल उल्टी हो गयी थी। विदेशो से कपडे की आयात जैसे-जैसे कम होने लगी वैसे-वैसे हिन्दुस्तान के मिल वाले काफी और सस्ती कपास मिलने पर भी अपने माल की कीमत पर बेहिसाब बढाने लगे थे और अपने इस लाभ के साथ मजदूरो की मजदूरी बढाने का कोई ख्याल न करते थे।

मिल के मजदूरो मे इसीलिए असन्तोष बढने लगा था।

गाँवो के किसान अलग हैरान हो रहे थे। सरकार उन पर जुल्म ढा रही थी। साहूकार उनका खून चूस रहे थे और लडाई के कारण उनकी सख्या घट रही थी। इसीलिए मजदूरों और किसानो मे असन्तोष

की आग भडकने लगी थी।

शिधू के विचार सुनने के लिए धीरे-धीरे अधिक श्रोता एकत्रित होने लगे। छोटी-मोटी सभाएँ होने लगी। शिधू अपने मतो को साफ-साफ शब्दो मे उनके सामने रखने लगा और उसके परिणामस्वरूप मिल के मजदूर अपने असन्तोष के प्रमाण प्रत्यक्ष रूप से शिधू के सामने पेश करने लगे।

यह विष धीरे-धीरे फैल रहा था। भिन्न-भिन्न मिलो के मजदूर शिधू का भाषण सुनने लिये आने लगे। लडाई से जख्मी होकर लौटा हुआ एक सफेदपोश मजदूरो मे मिलकर मजदूर की तरह रहता है, मजदूर की तरह सोचता है, मजदूर की दृष्टि से देखता है और मजदूर की बोली मे बाते करता है, यह सब देखते ही उसे अनुयायी मिलने लगे।

हर जगह कुछ खराब लोग भी होते ही है। इसके अनुसार मिलो मे भी कुछ चुगलखोर लोग मौजूद थे। धीरे-धीरे शिधू की हरकतो का समाचार मिल के मालिको तक पहुँचा और मैनेजर ने एक दिन शिधू को अपने आफिस मे बुलाकर खूब डाँटा।

इस डाँट के कारण ही शिधू के प्रति मजदूरो का आदर बढ़ने लगा। डर लगा अर्जुन को। स्वास्थ्य सुधर जाने पर वह हाल ही मे अपने काम पर आने लगा था। उसके कानो में जब यह समाचार पड़ा तब वह शिधू से बोला—क्यो तुम इस झंझट मे पडते हो? इतनी बडी लड़ाई लडने वाली सरकार! उस सरकार से लडने की हम मजदूरो की क्या हस्ती? कुछ भी हो, आखिर मिल के मालिको पर सरकार की कृपा है। सरकार उनकी रक्षा के लिये उन्हे हर तरह की मदद देगी। मजदूर कोई दंगा करे तो मालिक लोग सरकार की सहायता से एक क्षण में सारे दंगाइयो को कुचल डालेंगे। आज मालिक की नाराजगी के कारण तुम अपनी नौकरी से तुरन्त हाथ धो बैठोगे। अगर ऐसा हो गया तो इस हालत में तुम्हे खोजने पर भी अन्यत्र कोई नौकरी न मिलेगी।"

"बस, कह चुके ? इतनी ही बात न ?"—शिवू बोला—"अब मेरा और अधिक बुरा क्या होगा ? नौकरी चली जाएगी, इतना ही न ? बीमार पडने का भी जहाँ सुभीता नही । आधी रोटी खाकर अधपेट रहने की अपेक्षा एकदम निर्जला एकादशी क्या बुरी ? बहुत हुआ तो अकेला मे मर जाऊँगा, पर हजारो लोग जाग उठेंगे । आज यह लडाई बन्द हो गई, समझ लो कि बन्द ही हो गयी है । परन्तु लडाइयो का युग शुरू हो गया है । कई बरसो से ऐसा महायुद्ध नही हुआ था । पर युद्ध के बाद युद्ध होने लगेंगे । कम-से-कम उस समय तो हमारे लोग व्यर्थ न मरे । और अब स्वराज्य मिलने वाला है । यहाँ के लोगो को विदेश ले जाकर मारने के लिए जो गप्पे दी थी उन गप्पो के पहाड से अब कौनसी चुहिया निकलेगी, यह हम देखेंगे ही ।'

"यह मैं कुछ नही समझता ।"—अर्जुन बोला—"मुझे सिर्फ तुम्हारी चिन्ता हो रही है । तुमसे भी अधिक रमा भाभी की चिन्ता मुझे अधिक बेचैन कर रही है ।"

"जब तक तुम हो तब तक मुझे किसी की भी चिन्ता नहीं ।"—शिवू अर्जुन को अपनी बाहों में भरता हुआ बोला—"तुम मेरी इस झंझट मे न पडो । जिस तरह मिल के दरवाजे पर खडे होकर पहरा कर रहे हो उसी तरह पहरा करते रहो । मिल के मजदूरों मे असतोष और असमाधान की आग लगाये बगैर मुझे समाधान न होगा ।"

यह देखकर कि अब दलीलें बेकार होगी, अर्जुन चुप हो गया ।

यह सब क्या हो रहा है, रमा को इसकी कोई कल्पना न थी । उसने अर्जुन से पूछा तब उसे सब हाल मालूम हुआ । वह भी आखिर क्या कर सकती थी ? उसे डर लग रहा था इसमे शक नही, लेकिन शिवू को रोकना उसके हाथ मे न था । शिवू की जन्मजात आनन्दी वृत्ति अब एकदम विलुप्त हो गयी थी । उसका स्वभाव बड़ा कठोर बन गया था। उसमे जरा भी लचीलापन नही रहा था । इसीलिए रमा ने सोचा कि लाड-प्यार से उसके मन को मोड़ने की कोशिश करना बेकार है ।

जब शिंधू को समय मिलता तब वह जाने कहाँ-कहाँ भटकने चला जाता। गिरगाँव मे वह विशेष आता-जाता न था, परन्तु अपने को मजदूरो का नेता कहने वाले एक मनुष्य के साथ वह सेन्डहर्स्ट रोड पर स्थित सर्वेन्ट्स आफ इडिया सोसाईटी के आफिस मे गया। लडाई की विशेष परिस्थिति की जानकारी प्राप्त करने की कुछ लोगो को वहाँ बडी जिज्ञासा थी। ऐसे कुछ नेता वहाँ उसे मिले। अपने मन के विचार उसने उन नेताओ पर साफ-साफ शब्दो मे प्रकट किये। लडाई और किसानो एंव मजदूरों के स्वार्थो का परस्पर सन्बन्ध क्या है, इसका अपने मत के अनुसार उसने जो निष्कर्ष निकाला था, वह उसने उनके सामने रखा। उन नेताओ ने मजदूरो का एक सगठन बनाने का शिधू को आश्वासन दिया।

लेकिन शिधू को सतोष न हुआ। उसे यही लग रहा था कि वे नेता लोग उसकी बात ही नही समझे है। परन्तु उसके साथ मजदूरो का जो नेता आया था वह यह नही समझ पा रहा था कि शिधू का समाधान क्यो नही हुआ ?

प्रार्थना समाज के मोड पर उसकी पीठ पर किसी ने थाप मारी। आश्चर्य-चकित होकर उसने मुडकर पीछे देखा तो वह माधवराव था।

बसरा का जलवायु अनुकूल न होने के कारण बीमारी का बहाना बनाकर वह हिन्दुस्तान लौट आया था। वह नौकरी से इस्तीफा देने का इरादा कर रहा था। वह बडा आग्रह करके शिधू को अपने घर ले गया। उसे चाय पिलाई और शिधू के छावनी छोडने के बाद से वहाँ जो-जो घटनाएँ हुई उनका हाल बताना शुरू कर दिया।

पहिले की अपेक्षा भी वहाँ की स्थिति अधिकाधिक बिगडती जा रही रही थी। सिपाहियो मे भी असन्तोष अधिक फैल रहा था। आफीसरो मे भी लडाई के प्रति विशेष आस्था नही रह गई थी। यह सिद्ध करने लिए कि लडाई जारी है, यूँ ही कही-कहीं एक-दो आक्रमण कर दिये जाते थे, ऐसा माधवराव ने बताया।

शिघू ने फिर अपना सारा हाल बताया। उसे सुनकर माधवराव का बडा दुख हुआ। उसकी नित्य की उल्लसित और बातूनी वृत्ति उस हाल को सुनते ही एकदम अस्त हो गयी। अपने पर बीती विपत्तियो का हाल कहते समय शिघू को क्रोध आ रहा था। परन्तु माधवराव की आँखो मे आँसू देखते ही शिघू का सतुलन एकाएक खो गया।

"रो मत !" शिघू एकदम चिल्ला उठा—"किसी की आँखो मे आँसू देखता हूँ तो मेरे सारे बदन मे जैसे आग लग जाती है।"

"स्वाभाविक ही है।"—माधवराव बोला—"जो जला-भुना है वही इसे समझता है।"

"स्वाभाविक नही !"—शिघू ओठ चबाता हुआ बोला—"यह अस्वाभाविक है। इस लडाई ने मुझे राक्षस बना दिया। हृदय से दुख का आवेग उठता है, पर आँखो से आँसू नही टपकते। इसलिए मेरी इस तरह घुटन होती है। मैं एक अजीब-सी बेचैनी महसूस करता हूँ। लगता है जैसे पागल हो जाऊँगा। न जाने और कितने लोगो का इसी तरह सत्यानाश हो गया होगा ?"

पुन. शिघू की नित्य की छटपटाहट शुरू हो गई। जैसे-तैसे समझा बुझाकर माधवराव ने उसे शांत किया। दो खजूर खाने से कालरा कैसे हो जाता था, आदि बाते निकालकर उसे हँसाने का प्रयत्न किया। मादे-लीन की याद दिलाई।—

मादेलीन का नाम निकलते ही शिघू भौचक्का हो गया।

"कहाँ होगी वह ? मेरी याद भी आती होगी उसे ?" शिघू बोला।

माधवराव बोला—"क्या तुम्हे नही मालूम ? मादेलीन आजकल यही बम्बई मे है।"

शिघू की मुद्रा एकदम बदल गयी। आनन्द की लहरे उसके हृदय मे उमडने लगी। उसके चेहरे पर एक प्रकार की दिव्य ज्योति चमक उठी। उस स्मृति से ही वह रोमांचित हो उठा।

उसका कण्ठ भर आया, पर आसू न निकले। वह बोला—"मादेलीन

यहाँ बम्बई मे है और अभी तक मुझसे भेंट नही की। वह मेरे लिए ही आई है इसमे शक नही, खास मेरे लिए। कहाँ है वह ? क्या तुम जानते हो ?"

"चलते हो अभी ?" हमेशा के अपने उतावले स्वभाव के अनुसार माधवराव बोला।

"चलो।" कहकर शिधू उठकर खडा हो गया—"कहाँ है वह ? कही-नजदीक ही है क्या ? या कि फोर्ट मे है ? क्या मोटर नही मिलेगी एकाध ? क्या करूँ ?" उसका चेहरा एकदम उतर गया। जेब मे हाथ डालकर उसने देखा। सिर्फ दो आने ही थे। वह बोला—"हम कैसे जायेंगे ?'

"तुम उसकी चिन्ता न करो।" माधवराव बोला—"जब जाना ही है तब हम जरूर जाएंगे। फिर उसमे कोई रुकावट नही। टैक्सी करके चलेंगे। क्या करे हवाई जहाज नही है, वरना उसमे बैठकर चलतें। फोन करके पूछे लेता हूँ—वह तुम्हारी ही पूछ-ताछ करती थी।" कपडे पहनता हुआ माधवराव कह रहा था, "तुम्हारा कहना ठीक है। तुम्हारे लिये ही आई है वह। पर इस सिन्धु मे बिन्दु का कहाँ पता चलेगा ? कैसे पता चलता तुम्हारा उस बेचारी को। बडी आस्था से पूछ रही थी। अब चलकर चकित किये देता हूँ। समझे ? पहले उसे बताऊँगा नही। अभी सिर्फ फोन से पूछता हूँ कि वह अपने होटल मे है या नही ?"

बोलते-बोलते माधवराव कब चला गया, शिधू को इसका पता तक न चला।

शिधू अपने होश मे न था, वह उतना ही बेचैन हो गया था। माधवराव की तरह उसे भी लगता था कि पख होते तो उडकर चला जाता।

"अजी, अब चलो भी।" कहते हुए माधवराव शिधू को घसीटकर जाने लगा।

विदेशी मेहमान

अपोलोबदर के एक होटल मे शिधू और माधवराव जिस समय जाकर पहुँचे उस समय मादेलीन गैलरी मे खडी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। लिफ्ट से ऊपर आया हुआ शिधू मुश्किल से ही चार कदम ही आगे बढा था कि तभी मादेलीन ने आगे बढकर अपनी दोनो बाहें उसके गले मे डाल दी और बडी गम्भीरता से उसे चूम लिया।

भावनात्मकता का अकुर शिधू के हृदय मे सूख जाने के कारण उस चुबन का कोई भी वैकारिक परिणाम उसके मन पर न हुआ। माधवराव ने अलबत्ता उसका हाथ पकडकर उस पर जोर से ताली दी और जोर-जोर से हँसना शुरू कर दिया।

गैलरी मे खडे हुए एक-दो गोरे दम्पति उस दृश्य को देखकर तुच्छता से नाक सिकोड रहे थे। एक व्यक्ति बोला, "फुलिश गर्ल!" इन काले आदमियो को देखो। किस तरह हमारी लडकियों पर जादू कर रहे हैं।"

यद्यपि माधवराव ने उस व्यक्ति के उद्गार सुन लिये थे फिर भी शिधू और मादेलीन के कानो मे वे न पडे। वे दोनो अपनी ही तद्रा मे थे। शिधू का हाथ पकडकर वह उसे अपने कमरे मे ले गयी और एक कुर्सी पर उसे बिठा दिया। माधवराव साथ मे था ही।

कितनी ही देर तक वे दोनो एक दूसरे की ओर सिर्फ देख रहे थे। माधवराव इतना बातूनी था, पर वह भी चित्र-लिखा-सा तटस्थ बैठा था।

बसरा के बेस ऑफिस से जिस समय शिधू चला गया था, उस समय के प्रसग मादेलीन की नजरो के सामने से सिनेमा की तरह सरक रहे थे। उस समय शिधू ने उसे पहचाना न था। उस समय वह सिर्फ अर्जुन को

ही पहचानता था। यह देखते ही कि उसकी स्मृति लौट आई है, मादेलीन को अवर्णनीय आनन्द हुआ।

माधवराव से चुप न बैठा जाता था। वह बोला, "अब इनकी याद लौट आई है।"

इस समय ये बाते न कीजिए। मै देख रही हूँ कि इनकी स्मृति लौट आई है और मुझे इतने से ही समाधान है। यह तो एक ही है। पर ऐसे हजारो लोग होगे, जो इस लडाई के कारण मनुष्यो मे से उठ गये होगे। इस लडाई मे अग्रेज अपने स्वार्थ के लिए आए, परन्तु सात समुद्र पार करके अपना घर-बार छोडकर जो हिन्दुस्तानी सेना बिना किसी स्वार्थ के फ्रास की रक्षा के लिए आई, उसका ऋण बडा है। फ्रास को उन्होने हमेशा के लिए ऋणी कर रखा है। इसी दृष्टि से मै इनकी ओर देखती हूँ। स्मृति का विलुप्त हो जाना कितनी भयकर बात है! ऐसी सजा ये नौजवान क्यो भोगे ?

"और भी एक बात है।" माधवराव बोला—"ये रो नही सकते। इनकी आँखो मे आँसू नही आते।"

"अरे, आँखो मे आँसू नही आते ?" स्तमित होकर मादेलीन बोली—

शिधू टकटकी लगाये उसकी ओर देख रहा था। उसके हृदय मे किसी अज्ञात उर्मियो की बेकाबू घटाये उमड उठी थी। उसके मुह से शब्द नहीं निकल रहा था। उस वातावरण का माधवराव के मन पर भी प्रभाव पडा। वह भी कुछ न बोलकर चुप बैठ गया।

मादेलीन मन-ही-मन पुटपुटा रही थी—"आँसू नही आते, हृदय का झरना आँखो के द्वार तक आकर रुक जाता है! क्या हो गया यह! आँसूओ के बिना मनुष्य जिंदा कैसे रहे ?" वह थोडी देर चुप रही और पुनः बोली—"अर्जुन कहाँ है ? वह तो कुशल से है न ?"

"वह कुशल से है।" शिधू बोला—"इसीलिए मैं जीवित हूँ उसी ने मुझे जीवित रखा। अपना सर्वस्व खर्च करके उसने मुझे पुनर्जन्म दिया।"

शिधू ने अपना हाल कहना शुरू किया। उसे कहते हुए कभी-कभी

उसका खून मस्तक में चढ जाता। वह घबरा जाता और फिर मादेलीन उसके नजदीक बैठकर प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरने लगती।

वह दृश्य देखकर माधवराव गदगद हो जाता और हृदय भर जाने से आँखो मे आने वाले आँसू शिधू को दिखाई न दे इसलिए उठकर खिडकी के पास जाता और बाहर देखने लगता।

दीये जलने का वक्त हो गया था। मादेलीन बोली—"चलो, हम तुम्हारे घर चले।"

शिधू के छक्के छूट गये। ऐसी गन्दी बस्ती मे उसे कैसे ले जाएँ? वह किस बस्ती मे किन परिस्थितियो मे रह रहा था, इसकी कोई जानकारी न होने के कारण माधवराव बोला—"चलिए, मैं भी चलता हूँ आप के साथ। मैंने भी अभी तक इनका घर नही देखा है।"

शिधू के चेहरे पर दयनीयता के भाव उमड रहे थे। वह बिल्कुल बेचैन हो गया था। जोर से हाथ मलता हुआ वह बोला—"नही! यहीं आपकी मुलाकात हो यही अच्छा है। मैं ही कल फिर यहाँ आ जाऊँगा। वह दृश्य आप न देखे!"

"कहाँ रहते हैं आप?" मादेलीन ने पूछा।

"नरक मे। गरीबी के रौरव मे उबलने वाले लोग जहाँ सड़ा करते हैं, उस नरक मे।"

"चलो वही चले!" मादेलीन ने निश्चय-पूर्वक कहा।

"नही!" शिधू चिल्ला उठा।

"वह नरक नही, मेरी दृष्टि मे स्वर्ग है!" कहकर बडे प्रेम से शिधू के कधे के नीचे हाथ डालकर वह उसे खीचकर बाहर लाई।

"आपको वहाँ कैसे ले जाऊँ?" शिधू ने गिडगिडाकर कहा।

"आप जहाँ रहते हैं?" मादेलीन बोली—"फिर मुझे वहाँ जाने मे क्या हर्ज है?"

शिधू बोला—"मैं नही चाहता कि कम-से-कम हमारी गरीबी आप जैसे विदेशियों को दिखाई दे।"

"हमे यदि कुछ देखना है तो तुम्हारी गरीबी ही देखना है।" मादेलीन गम्भीरता से बोली—"तुम्हारी इस गरीबी को हम नही देखते। हमने कभी देखा नही, इसलिए हमने लडाई मे तुम्हारे प्राण लिए। चलिये।"

टैक्सी करके वे मजदूर नगरी मे सीमेट की चाल के द्वार पर आये। यह देखकर कि एक मेम शिधू के साथ आई है, चाल मे रहने वाले सब लोग गैलरी मे आकर इकट्ठे हो गये।

गन्दगी की वह परम सीमा देखकर मादेलीन के रोंगटे खडे हो रहे थे।

शिधू बोला—"देखिये सच्चा हिन्दुस्तान यही है।"

हाथ मे हाथ डाले वे दोनो जिस समय कमरे के दरवाजे पर आए, तब रमा आश्चर्य-चकित हो गई। माधवराव साथ था ही। मादेलीन को देखते ही अर्जुन दौडकर आया। उसका हाथ पकड कर जिस समय शेकहैन्ड करने लगा, तब रमा और सुभद्रा आश्चर्य से चकित हो गई। कैसे उसने हिम्मत की? मेम का हाथ पकड लिया।

अर्जुन के गले मे हाथ डालकर मादेलीन ने जब चुम्बन लिया तब यह देखकर उन दोनो की क्या स्थिति हो गई थी, इसका वर्णन करना असम्भव है। गैलरी मे खडे लोगो का आश्चर्य भी चरम सीमा को पहुँच गया था। लड़के बच्चे 'ही-ही' हँस रहे थे। उस गन्दी चाल के उन दो कमरो की स्वच्छता और टीपटाप देखकर मादेलीन को आश्चर्य हुआ। उन कमरो की प्रत्येक वस्तु दारिद्रय की मूर्तिमान प्रतीक थी। परन्तु वह दारिद्रय घिनौना न था। धनी की दृष्टि को असहनीय होने वाली वह निर्मल दरिद्रता मादेलीन को पवित्रता की प्रतीक प्रतीत हुई।

शिधू ने परिचय कराया, "यह है मेरी पत्नी।"

मादेलीन ने कसमसाकर रमा को बाहो मे भरकर उसका चुम्बन लिया। रमा सिहर उठी। परपरागत की अस्पृश्यता की कल्पना उसके हृदय में जाग्रत हुए बिना न रही।

सुभद्रा का भी इसी तरह से परिचय हुआ। वह बेचारी बिल्कुल हर्ष-विभोर होकर मन-ही-मन हँसने लगी। उसे लगा कितनी भाग्यशाली हूँ मैं। एक गोरी मेम ने मुझे बाहो मे भरकर चूम लिया।

माधवराव की आँखे सजल हो गयी थी। इसलिए वह गैलरी के कठघरे से टिककर रास्ते की ओर देख रहा था।

कमरे मे कुर्सी न थी। सन्दूक पर ट्रंक रखकर अर्जुन ने उस पर कंबल बिछाया और मादेलीन के लिए बैठक तैयार कर दी। उस खुरदरे कम्बल का स्पर्श मादेलीन को महसूस हुआ। पर उसने सोचा, यही सच्चे हिन्दुस्तान का वस्त्र है! यही स्पर्श बडे भाग्य का है?

सब लोग एक दूसरे के मुँह की ओर लगातार देख रहे थे। रमा बिल्कुल कोने मे जाकर खडी हो गई थी। उससे शिघू बोला—"आओ, इधर बैठो। इनसे अँग्रेजी मे बातें करो। कम-से-कम अब तुम जरूर पछताती होगी कि तुमने अग्रेजी नही सीखी।"

उन्ही के साथ भोजन करने का मादेलीन ने हठ पकड लिया, तब अलबत्ता अर्जुन का कलेजा टूट गया। जिस समय अर्जुन शिघू के कानों में यह पूछ रहा था कि मादेलीन के लिए बाजार से कौन-कौन सी खास चीजें लायी जाएँ, उस समय मादेलीन उनकी ओर देख रही थी। अंदाज से वह ताड गयी कि दोनो आपस मे क्या बातें कर रहे हैं। इसलिए वह तुरन्त बोली—"देखो जी मेरे लिए बाहर से कोई भी खाने की चीज मत लाओ। समझे! मेरे लिए कोई खास खाना भी मत पकाओ। तुम लोग जो रोज खाते हो वही मैं भी खाऊंगी।

माधवराव ये अर्जुन को इशारे से एक तरफ बुलाया। धीरे से एक दस रुपये का नोट अर्जुन के हाथ मे थमाकर उसकी मुट्ठी बन्द कर दी।

अर्जुन बोला—"नही-नही जी! इसकी क्या जरूरत?"

"पहले मेरी सुनो।" माधवराव बोला—"मैं यह कोई दान नहीं दे रहा हूँ। समझे? बसरा मैं मैंने शिघूजी से दस रुपये उधार लिये

थे । जब वह वापिस आया, तो उसकी स्मृति खो गई थी । इसलिए उस वक्त लौटाना मैंने ठीक नही समझा । उन्ही रुपयो को अब मैं लौटा रहा हूँ । इस समय ये रुपये उसके हाथ मे देना उचित नही, इसलिए तुम्हे दें रहा हूँ ।"

माधवराव बिल्कुल सफेद झूठ बोल रहा था । परन्तु उसकी बात से अर्जुन का समाधान हो गया ।

रमा के सामने समस्या उपस्थित हुई । खाना क्या पकाया जाए ? शिघू बोला—"हो जाने दो इन्ही की मन की । जो रोज पकाती हो वही पकाओ । कुछ भी फर्क मत करना । हमारा ऐश्वर्य देख लेने दो इन्हें ।"

खाना पकने तक उनकी बाते चल रही थी । रमा और सुभद्रा काम मे लग गई थी । परन्तु कुछ समझ मे न आते हुए भी अर्जुन बडी श्रद्धा से उन बातो को सुन रहा था । मैसोपोटामिया मे रहते समय मादेलीन का स्वास्थ्य खराब हो गया था और नर्स का काम छोडकर उसे फ्रांस लौट जाना पडा था । दोनो रणभूमियों पर हिन्दुस्थान के लोगो का हो रहा सहार देखने के कारण हिन्दुस्थान देखने की उसकी जिज्ञासा बेकाबू हो उठी थी । जहाज से सफर करना उन दिनो बड़ा खतरनाक था । बम्बई आते ही उसने मिलिटरी ऑफिस के जरिये शिघू और अर्जुन के बारे मे पूछताछ की । परन्तु उसे इतना ही लग सका कि दोनो को डिसचार्ज करके पेशन दे दी गई है । इसके आगे और कोई पता न चला । मिलटरी ऑफिस मे उस वक्त ठीक से व्यवस्था न थी । मिलटिरी एकाउंट मे मद्रासी लोग भरे थे । महाराष्ट्रीयो के नाम भी वें लोग ठीक से नही पढ सकते थे । अर्जुन पेशनर था । इस कारण सच पूछा जाए तो उसका पता प्राप्त होना असंभव न था । पर नाम के हिज्जे में कुछ गड़बड़ी हो जाने के कारण मादेलीन को उसका पता नँ मिल सका । शिघू का डाकखाने से सारा सम्बन्ध टूट चुका था । इसलिए उसका पता लगना सभव ही न था । एक दिन माधवराव अपोलोबंदर घूमने गया था । वहाँ अचानक मादेलीन से उसकी मुलाकात हो गयी

थी। यदि यह मुलाकात न होती तो आज का यह मिलन का संयोग उपस्थित ही न होता। मादेलीन को लगा कि भवितव्यता नाम की कोई चीज अवश्य है और उसके सूत्र एक दूसरे में उलझे हुए होते हैं। और वे जिस तरह उलझे होते हैं उसी तरह आप-ही-आप सुलझ भी जाते है।

खाना सजाने के लिए मेज जैसी कोई व्यवस्था करने की अर्जुन कोशिश कर रहा था। परन्तु मादेलीन ने उसे साफ रोक दिया।

हिन्दुस्थानी प्रथा के अनुसार नीचे बैठकर बिना कांटे चम्मच के खाने मे उसे बडी तकलीफ हुई, इसमें शक नहीं। पर उसे एक कठिन परीक्षा समझकर वह हाथ से खाने का प्रयत्न कर रही थी। भात और दाल किस तरह मिलाते हैं, हाथ से उठाकर कौर मुंह मे कैसे डाला जाता है, दही में डुबोकर रोटी कैसे खाई जाती है इत्यादि पाठ माधवराव उसे पढा रहा था और वह उसकी सूचना के अनुसार उस भोजन के समारोह को सपन्न करने का सफल प्रयत्न कर रही थी।

यह सुनकर कि पति के खाये बिना पत्नी नहीं खाती, मादेलीन को बड़ा अजीब-सा लगा। उसे लग रहा था कि भोजन समारोह में सब लोगों को एकत्रित होकर भोजन करना चाहिए। जब खाना खाया जा रहा था तब चाल के प्रायः सभी लोग आकर झांककर देख जाते थे।

मादेलीन जिस समय जाने लगी, उस समय आने के समय जो विधियाँ हुई थी, वही फिर दोहराई गई। उसके लिए टैक्सी लाने के लिए माधवराव को बहुत दूर तक पैदल जाना पडा।

मादेलीन के जाने पर अर्जुन मुंह भरके उसकी प्रशंसा कर रहा था। रमा के हृदय मे जो किल्मिष आ गया था वह मादेलीन को प्रत्यक्ष देखने के कारण अब सहज ही दूर हो गया था। रमा को इस समय अगर कुछ लग रहा था तो सिर्फ यही कि उसने मादेलीन को छू लिया तो क्या वह इस छुआछूत को माने। क्या वह स्नान करके पवित्र हो। शिधू बोला—"अर्जुन की छूत लगती है, यह माँ की शिकायत

थी, तब तुम माँ को दोष देती थी। तुम्हारे मन में अर्जुन के प्रति कृतज्ञता के कारण जो आत्मीयता निर्मित हुई, उसके कारण तुम्हे उसकी छूत नही लगती। उसी तरह यह भी है। इससे जब तुम्हारा अच्छा परिचय हो जाएगा, तब इसके प्रति भी तुम्हे कोई परायापन न लगेगा। लडाई पर जाने से मुझे जो एक बडा सर्वमान्य तत्व मिला वह यही कि इन्सानियत के राज्य मे जाति, वर्ण और धर्म के भेद नही।"

"मैं भी ऐसा कहाँ कह रही हूँ ? रमा बोली—"कलबस्त के पलटन वाले ने जो कहानी बनाकर कही थी उसके कारण मेरे मन पर थोडा परिणाम हो गया था। परन्तु अब मुझे मालूम हो गया। इन विलायत वालो के चुबन लेने के समारोह मे कोई विशेष मतलब नही रहता। यह बात अब अनुभव से मुझे मालूम हो गई, इसलिए अब मेरे मन का सारा किल्मिष धुल गया।"

अर्जुन बोला—"देखो भाभी, हम लोग कम-से-कम साफ और टीपटाप लोग है। पर फ्रास के किनारे पर जब हम पहली बार उतरे थे, तो फ्रांस की तरुणियो ने पान तमाखू खाकर गदे हुए हिन्दुस्तानियो के चेहरो का चुबन लिया था। उस समय यदि आप देखती तो बेहोश ही हो जाती।"

सभी हँस पडे।

शिवू बोला—"हंसी आती है, इसी को कम-से-कम भाग्य समझना चाहिए।"

"मैं भी तो वही कहती हूँ।" रमा बोली—"बस हमेशा हँसते रहना चाहिए। भूलकर भी हमे रोने की याद न आनी चाहिए। आज मादेलीन को देखा और मुझे लगने लगा कि आज से हमारे रोने के दिन समाप्त हो गये।"

उन चारों दु.खी जीवो के जीवन मे वह दिन बडे आनन्द मे बीता। क्या रोने के दिन सचमुच समाप्त हो गये थे ?

जागृति

दूसरा दिन बडे ग्रानन्द का उदय हुग्रा। सुबह उठकर देखा तो मयेकर परिवार कोकण से लौट ग्रा गया था, नर्मदा ग्रायी, पर ग्रपना कमरा खोलने से पहले रमा ग्रौर सुभद्रा से मिली। सुख-दुख की बातें होने लगी। मयेकर भी शिघू के साथ बातें करता गैलरी में खड़ा था। ग्रपना कमरा खोलने की भी उसे याद न रही।

यद्यपि इनफ्लुएंजा की बीमारी ग्रब भी शुरू थी, फिर भी वह ग्रपने गाँव से लौटकर बम्बई जाने के लिए बाध्य हो गया था। यदि वह न जाता, तो उसकी नौकरी चली जाती। ग्रौर ग्रगर नौकरी चली जाती, फिर से वह मिलती इसकी ग्राशा बिल्कुल न थी। घर बैठकर खाता क्या? बम्बई से पैसे भेजे तब कहीं गाँव में चूल्हे पर हडी चढती थी। मयेकर ने कहा—"ग्रपने मन को समझा लेता हूँ, बस ऐसा समझकर कि बीमारी का जोर ग्रब बहुत कम हो गया है, मैं लौट ग्राया हूँ। गाँव में भूखों मरने की ग्रपेक्षा, यहाँ ग्रच्छी तरह खा-पीकर मरना ग्रच्छा।"

सब लोग बड़े खुश थे। मिल मे जानेवाले लोग मिल में चले गये। मयेकर को उस दिन नौकरी पर हाजिर नहीं होना था।

शिघू का मन काम मे न लगता था। कोई बहाना बनाकर उसने छुट्टी ली ग्रौर वह घर लौट ग्राया।

उसे ग्रचानक घर ग्राया देखकर रमा के छक्के छूट गये। उसका मन बडा सशयालु हो गया था। जरा भी कुछ कम-ग्रधिक देखती, तो उसके मन मे भला बुरा शक होने लगता। पर शिघू ने जब कहा कि मादेलीन से मिलने के लिए वह छुट्टी लेकर ग्राया है, तब उसका जी ठडा हुग्रा।

अब उसके मन मे मादेलीन के बारे मे किसी भी प्रकार का सकोच नही रहा था। औरतो की नजर बडी पैनी होती है। मादेलीन जब तक वहाँ थी तब तक रमा ने उसे बिल्कुल बारीकी से निरखकर देखा था। उसने एकबार भी ऐसा न देखा कि मादेलीन अथवा शिधू ने एक दूसरे की ओर चोरी-चोरी देखा हो।

यद्यपि यह आधुनिक कल्पना कि स्त्री और पुरुष मित्र हो सकते हैं, रमा को जँची न थी, फिर भी उसने अभी-अभी विदेशो के वर्णन सुने थे, उसके कारण उन दोनो के परस्पर निस्सीम स्नेह के बारे मे उसे अब कोई सशय नही रह गया था।

शिधू की जेब मे कुल पूँजी चार आने थी। ट्राम से फोर्ट तक जाने के लिए छः पैसे लगते थे, आफिस आने के लिए छः पैसे खर्च करने के बाद भी उसके पास एक आना बचाता था। मन मे यह हिसाब लगाकर वह फोर्ट जाने के लिए रवाना हुआ। वह अगर माधवराव के घर जाता, तो उसे एक आना और खर्च करना पडता। यही नही, बल्कि माधवराव को अपने साथ ले जाना पडता।

वह होटल मे पहुँचा। मादेलीन मिली। और उसी समय पता लगा कि लड़ाई बन्द हो गई—आर्मिस्टिस हो गई।

मादेलीन को एक दिन से अधिक रहना सम्भव न था। उसने जहाज मे अपना स्थान सुरक्षित करा लिया था। उसका पैसेज पहले ही बुक हो चुका था। परन्तु अब आर्मिस्टिस हो जाने के कारण सफर मे किसी भी प्रकार का भय नही रहा था।

उस दिन वह मादेलीन के साथ उस होटल मे ही खाना खाने के लिए रह गया। बहुत दिनो के बाद विदेशी पद्धति से खाना खाने का अवसर प्राप्त होने के कारण उसे लगने लगा जैसे वह विदेश मे ही है, हिन्दुस्तान मे नही। आस-पास चारों तरफ गोरे लोग दीख रहे थे। सारा इंतजाम विदेशी ढग का था। खिड़की के बाहर नजर डालने से सामने दिखाने वाला दृश्य भी विदेशी वातावरण से मिलता जुलता था।

और सामने मादेलीन बैठी थी। उस वातावरण की भिन्नता के कारण उसके विचारों को भी एक अजीब मोड मिला। हिन्दुस्तान की मिलो मे मजदूरो की क्या हालत है, इस विषय पर वह मादेलीन से बातें कर रहा था। मजदूरो की वर्तमान परिस्थिति से वह उसे परिचित करा रहा था। शिघू की "चाल" मे कुछ समय बिताने के कारण मादेलीन उस परिस्थिति की थोडी-सी झलक देख ही चुकी थी।

शिघू ने आग्रह किया कि वह मिल में चलकर सारी परिस्थिति अपनी आँखों से देखे, और वह तैयार भी हो गयी। वह उसे लेकर अपनी मिल मे आया और मैनेजर से उसका परिचय कराया। उस समय मैनेजर ने शिघू को भी बैठने के लिए कुर्सी दी। जहाँ मेज के नजदीक खडे होना भी सम्भव न था, वहाँ सिर्फ एक गोरे चमडे के साथ आने से जो उसका स्वागत हुआ, उसे देखकर आनन्द होने के बजाय शिघू को क्रोध ही आया।

मिल देख चुकने के बाद मादेलीन को लेकर शिघू अपने घर आया। आने जाने का खर्च मादेलीन ही कर रही थी। इसलिए उसकी चार आने की पूंजी मे से छः पैसे से अधिक खर्च न हुए थे। इसकी उसे बडी खुशी हो रही थी।

मादेलीन को लेकर वह घर आ तो गया, पर घर मे उसका स्वागत कैसे किया जाए, यह उसके सामने एक समस्या ही थी। माधवराव के द्वारा दिये गये दस रुपये अर्जुन ने रमा को दे दिये थे। पर वह बात शिघू को मालूम न थी। मादेलीन के आने पर मयेकर की सहायता से रमा ने जिस समय होटल से बिस्कुट और केक आदि मँगाकर उसके स्वागत की तैयारी की, तब शिघू को बडा आश्चर्य हुआ।

एक विदेशी सुसंस्कृत महिला अपनी गन्दी चाल मे आकर हममें मिल-जुलकर हमारे साथ बर्ताव कर रही है, इसका मयेकर परिवार पर भी प्रभाव पडा। यही नहीं, बल्कि ऐसे बडे आदमी की शिघू से मित्रता होने के कारण उसके प्रति भी उन्हें आदर मालूम हुआ।

फ्रेंच प्रथा के अनुसार मयेकर को जो पहिली सलामी दी गई थी उसे देखकर बेचारी नर्मदा के छक्के छूट गए थे। पर रमा ने हँसकर उसकी सराहना की।

थोडी देर के बाद मिल को छुट्टी दे दी गई थी। इस कारण सुभद्रा और अर्जुन भी घर आ गये थे।

मयेकर बोला—"यह सब मादेलीनबाई के चरणो का प्रताप है। उनके आने के कारण लडाई बन्द हो गई। मैं भी आ गया। इतने महान सकट से गुजरने के बाद हम सब एक दूसरे से फिर मिले। बादल साफ होने लगे। अब अच्छा सूर्य प्रकाश पडेगा। सब को सुख के दिन दिखेगे। अब मुझे लगता है कि यह बीमारी भी काला मुँह करेगी।"

बम्बई की मिलो की विदेशो की मिलो से जब मादेलीन तुलना करने लगी तो उसे सुन कर मयेकर को भी आश्चर्य हुआ। जब उसने यह सुना कि वहाँ के मजदूरो की हालत यहाँ के मजदूरो से कई गुनी अच्छी होने पर भी, वे अपनी हालत को और अधिक सुधारने के लिए झगड रहे है, तब वह बोला—"शिधूबाबू जो कहते थे, वह बात मुझे अब जँच गई। हम उन्हे दोष देते थे कि वे मजदूरो मे असतोष और अशान्ति फैलाने की कोशिश कर रहे है और इसका हमे डर लग रहा था। यूँ ही मालिक को नाराज क्यो किया जाए, इसलिए शिधूबाबू के आन्दोलन से मै और मेरी तरह और भी कई लोग काफी दूर रहने का प्रयत्न करते थे। पर अब पता चला, अब समझ मे आया। आप फ्रान्स भले ही चली जाएँ, परन्तु वहाँ के मजदूर आन्दोलन के बारे मे हमे आप पता देती रहिए। वहाँ की कुछ सस्थायें मजदूरो के लिए आन्दोलन कर रही हो तो उनका हाल भी हमे मालूम होना चाहिए जिससे हमे भी उससे कुछ शिक्षा मिलेगी और हम भी अपना मार्ग निश्चित कर सकेंगे।

"आन्दोलन के समान दूसरा कोई साधन नही।" मादेलीन बोली —"मैं जब से हिन्दुस्थान मे आयी हूँ तब से यहाँ की परिस्थिति का

अध्ययन कर रही हूँ । मैंने देखा कि तुम्हारे धर्म ने तुम्हें कमजोर बना दिया है । मैं तुम्हारे धर्म की निन्दा नही करती । मेरे देश मे धर्म को विशेष महत्व चाहे न दिया जाता हो, फिर भी दूसरो के धर्म के प्रति व्यक्तिगत मेरे मन में कोई मनमुटाव नही । परन्तु भगवान और भाग्य पर भार डालकर आकाश की ओर आँखे लगाये प्रार्थना करने का जो मार्ग तुम्हारा धर्म सिखाता है उसके कारण ही तुम्हारा सत्यनाश हुआ है । उधर रूस जाग उठा है । कोई अद्वितीय तत्वज्ञान दुनिया के सामने आएगा, ऐसा लगने लगा है । मार्क्स नाम के एक जर्मन तत्ववेत्ता ने जो तत्वज्ञान निर्मित किया, उससे स्वय जर्मनी के लोगो ने कोई फायदा नही उठाया । हमारे देश मे उसके कुछ अनुयायी हैं । परन्तु मार्क्स के तत्वज्ञान को आधार मानकर रूस मे अब जो क्रान्ति हो रही हे उसका सारी दुनिया की राजनीति पर विलक्षण प्रभाव पडेगा, ऐसा मैं सोचती हूँ । यहा के बाद मैंने रूस जाने का निश्चय किया है । मैं चाहती हूँ कि वहाँ के मजदूरो का यहाँ के मजदूरों से सम्बन्ध हो जाए । तुम दरिद्री हो । आन्दोलन चलाने के लिए आवश्यक धन तुम्हारे पास नहीं, परन्तु यहाँ का आन्दोलन चलाने के लिए रूस से तुम्हें मदद मिल गयी, तो हिन्दुस्थान मे क्रान्ति हो जाएगी, ऐसा मुझे साफ दिख रहा है । यहाँ की सर्वेंट आफ इडिया सोसाइटी के एक प्रख्यात मजदूर नेता से मेरी भेट हुई थी । उनका मत भी यही है । मैं लौट कर जब अपने देश जाऊँगी, तब कसकर इसकी कोशिश करूँगी कि ये सूत्र कैसे जुड सकते हैं । उससे पहले तुम लोग यहाँ के मजदूरो के मन तैयार करने की कोशिश करते रहो । इस लडाई से जो अनर्थ हुए हैं उनकी आँच मध्यम श्रेणी के लोगो को नही लगी । पूजीपतियो को लड़ाई के कारण खूब फायदा हुआ । जो लडाई मे मरे है वे बिल्कुल निम्न स्तर के लोग हैं । पर इस लडाई के कारण ही उनकी बुरी दशा हो गई है, यह उन्हें महसूस करा देना चाहिये । भविष्य की लडाई के समय वे सावधान रहें, इस प्रकार से उनका मत तैयार हो जाना चाहिए । शेर के मुँह को

जब मनुष्य का खून लग जाता है तब वह जिस तरह मनुष्य मारने का धडाका शुरू कर देता है उसी तरह युद्ध का रक्त मुँह मे लग जाने से ये सुखासीन राजनीतिज्ञ स्वस्थ न बैठेगे । आज नही तो कल लडाईयाँ कुरेदकर निकालेगे । उस समय इस लडाई का स्मरण लडाकू जाति को देना चाहिए । हिन्दुस्तान के पीछे एक परम्परा है, एक इतिहास है। उस इतिहास के स्मरण से हम फ्रेंच लोगो की तरह तुम लोगो का खून खौल उठता है । भविष्य की लडाई के समय लडाई के जोश से हिन्दुस्तानी लोग परायो की राजनीति के लिए अपना खून नही बहायेगे । इस की अभी से तैयारी करनी चाहिए । रोज यही बात कहते रहना चाहिए, रोज आन्दोलन करते रहना चाहिए । विस्मृति होने से ग्लानि आ जाती है वह ग्लानि न आनी देना चाहिए । सफेदपोशो से कुछ नही होगा । वे सिर्फ वाचाल होते है । अपनी बुद्धि पर उन्हे अभिमान होता है इसलिए वे कभी एक नही होगे । भाग्य समझो कि मजदूरो को इस बात का ज्ञान नही कि वे बुद्धिमान है । उन्हे पदवियो का अभिमान नही, सभ्यता की शेखी नही । क्रान्ति करेगे तो मजदूर ही करेगे ।"

उसका भाषण सुनते हुए गैलरी मे खडा एक क्लर्क जोर से हँस पडा । तब सबका ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हुआ । मयेकर ने कहा—"क्यो हँसे जी ? वे क्या कर रही हैं उसे तुम समझे भी हो ?"

"हाँ कुछ कुछ समझ गया हूँ ।"—वह बोला

"फिर हँसे क्यो ?"

"ये मेम साहब बडी लम्बी-लम्बी गप्पे हाँक रही है ।" सुख और सन्तोष से हम रह रहे है और हमसे कह रही है कि आन्दोलन करो । हमने आन्दोलन किया और यहाँ की मिले बन्द हो गयी, तो इन विदेशियों की पाँचो घी में हो जायेगी—।"

"यहाँ से भागो तुम !" शिधू चिल्ला उठा । और वह क्लर्क चला गया । यह बीच ही मे क्या बात हो गयी मादेलीन यह न समझ पायी । शिधू ने उससे सारी बात कही तब वह बोली—"इस तरह तो चलता

ही रहेगा। ऐसे लोग हमारे देश मे भी क्या कम है। परन्तु गुलामी में खुशियाँ मनाने की तुम हिन्दुस्तानियो की वृति देखती हूँ, तो मुझे दुख होता है। मैं बडे-बडे लोगो से मिली, परन्तु बुद्धिमानो को भी यह कहते देखकर कि अंग्रेजो की छत्र-छाया के बिना हमारा कुछ नही होगा, मुझे बडा धक्का लगा।" वह क्षणभर के लिए चुप बैठी। उस की नजर बड़ी करुणापूर्ण हो गई थी। वह बोलने लगी तब उस का कठ गदगद हो गया था—"तुमसे मैं क्या कहूँ? कुछ भी हो, आखिर मैं विदेशी हूँ। आज तुम पर जो शासन कर रहे है उनसे मेरा साम्य है। उस साम्य के कारण तुम मेरे भाषण सें चमकोगे ही, इसे मैं महसूस करती हूँ। मैं कल चली जाऊँगी फिर कब भेंट होगी इसका कोई ठिकाना नहीं। परन्तु हिन्दुस्तान के बाहर के जाग्रत हुए मजदूरो का तुम से सम्बन्ध करा देना यह मेरा एक पवित्र कर्तव्य है, यह निश्चय करके ही मैं हिन्दुस्तान का किनारा छोड रही हूँ।"

उसके भाषण का मयेकर के मन पर बडा विलक्षण प्रभाव पड़ा। स्वभाव से वह बडा डरपोक था। आप भले और अपना काम भला, इस वृत्ति से नौकरी करते हुए दिन काटना ही उसके जीवन का उद्देश्य था। परन्तु अन्तःकरण की जिस आत्मीयता से, और जिस आवेश से मादेलीन बोल रही थी, उस का प्रभाव उस की सन्तोषी वृत्ति पर पडे बिना न रहा। मुझे थोडी बहुत अग्रेजी आती है उसका मुझे यह बडा फायदा हुआ, ऐसा मयेकर ने कहकर दिखाया।

दूसरे दिन के जहाज से मादेलीन जाने के लिए निकली, उस समय ये सारे लोग उसे पहुँचाने बन्दर गये।

एक यूरोपियन महिला साधारण मजदूर स्त्री-पुरुषो से आलिंगन कर करके विदा ले रही है, फूट-फूटकर रो रही है, जहाज छूटते समय भी डेक पर खडी होकर उमडनेवाली सिसकियो को मुँह से रुमाल लगा कर दाब रही है, हाथ हिलाकर विदा ले रही है यह देखकर गोरे लोगों की बात छोड़िये, पर बन्दर के मजदूरो को भी आश्चर्य हुआ।

लड़ाई के बाद-नींद

माधवराव उस समय बेकार था, फिर भी उसके पास काफी पूँजी थी। लडाई से लौटने के बाद वह काफी रुपया अपने साथ लाया था और वही रुपया अभी उसके पास था।

शिधू को पता भी न चल पाता और कभी-कभी वह उसे मदद कर देता। किसी न किसी बहाने वह कोई कपडा, कुछ मिठाई या ऐसी और भी कुछ चीजे लाकर शिधू के घर दे जाता। कहता,ये मेरे गाँव से आई है। मैने इन्हे खरीदा नही है।

उधारी लौटाने के बहाने उसने अर्जुन को जो दस रुपये दिये थे उस पहेली को शिधू हल न कर सका। रमा ने उससे कहा कि ये वही रुपये माधवराव ने लौटाये हैं जो आपने उन्हे बसरा मे कभी उधार दिये थे। पर शिधू को यह बात जँची नही। जब उसने इसके बारे मे माधवराव से पूछा, तब माधवराव बोला—"यार उस समय की बाते तुम्हे याद भी है? एक दिन मुझे रुपयो की बडी जरूरत पड गयी थी और मेरी तनख्वाह मिली नही थी, उस समय तुमने मुझे दस रुपये लाकर दिये थे। मैं तो ले नही रहा था। पर मेरी जरूरत को महसूस करके तुमने दस रुपये का एक नोट जबरदस्ती मेरी जेब मे ठूँस दिया था।

माधवराव ने इतना सुन्दर अभिनय किया कि आखिर शिधू को वह बात सच लगी। एक दिन जब वह एक साडी और चोली के लिए कपड़ा लेकर आया, तो रमा वे चीजें लेती न थी। तब माधवराव बोला,"मेरी बहिन का विवाह हुआ है। हमारे गाँव की प्रथा है कि घर मे जब कोई मगल-कार्य होता है तो उसके उपलक्ष्य मे हम अपने नातेदारो और स्नेहियो को नये वस्त्र बांटते हैं। इस तरह मुझे कोई दस-बारह साड़ियां

बाँटनी पडी । आप हमारे कारबार तरफ की रीतियाँ नहीं जानतीं।"

दक्षिण कोकण की रीतियो को जब मयेकर बताने लगा, तब रमा ने वे वस्त्र स्वीकार किये ।

उधर मिल मे कुछ गुफ्तगू हो रही थी। मयेकर को शक हुआ कि जब मादेलीन बाते कर रही थी, उस समय गैलरी मे खडे जो लोग उसका भाषण सुन रहे थे, उनमे से ही किसी ने जाकर मैनेजर से चुगली की होगी । मैनेजर ने हर व्यक्ति को अपने दफ्तर मे बुलाकर काफी डाँट-फटकार की और धमकी दी । जब शिधू से पूछा गया तब वह बोला, "मालिक का कुछ नुकसान हो, यह मेरी बिल्कुल इच्छा नहीं। मालिक का कोई बुरा न हो, असावधान रहने के कारण एकदम आग न भडक उठे, इसके लिए मैं बडा सावधान रहता हूँ । हिन्दुस्तान के बाहर दुनिया मे जो आन्दोलन हो रहे हैं, उसका प्रभाव यहाँ पडे बिना न रहेगा । यूरोप मे चल रहे आन्दोलन की ओर कोई ध्यान न देता था, कोई उसकी चिन्ता तक न करता था, उसकी किसी ने परवाह भी न की थी । परन्तु इस लडाई के कारण अब दुनियाँ के सारे देश एक दूसरे के नजदीक आने लगे है । हमारे जैसे आदमी लडाई पर गये—बिल्कुल निम्न-स्तर के लोग गये, विलायत की अब कोई शान नही रही । मजदूर आन्दोलन अब रुकेगा नही । इसे चलाने के लिए मैं नही तो कोई दूसरा खडा हो जाएगा । इस समय आप लोगो को मजदूरो की चिन्ता करनी चाहिए । मजदूरो मे मिल के प्रति आत्मीयता पैदा करनी चाहिए । यदि यह नही करोगे, तो मैं कह सकता हूँ कि फिर ईश्वर ही, अगर वह कहीं है तो, तुम्हारी रक्षा करेगा।"

उस दिन से मैनेजर ने शिधू पर नजर रखने के लिए अपने मनुष्य नियुक्त कर दिये। परन्तु शिधू का प्रचार धडल्ले से चल रहा था। मयेकर उसे अपने ढग से रोकने की कोशिश करता, परन्तु इसका उस पर कोई असर न होता । मयेकर ने रमा से कहा—"भाभी ! अब आप ही शिधू बाबू को समझाइए। उनकी जीभ बड़ी पैनी है । जब बोलने

लगते है तो फिर उन्हें होश नही रहता और इधर हमारे ही लोग चुगल-खोर हैं। यहाँ तो हमसे बडी आत्मीयता दिखाते है और उधर जाकर चुपचाप मैनेजर और मालिक के कान भर देते है।"

"मैं उनसे क्या कहूँगी,मयेकर लाला ?" रमा बोली—"आपने उन्हे पहिले नही देखा। उनके पहले के स्वभाव से आप परिचित नही हैं। वे सदा प्रसन्न-मन रहा करते थे। हमेशा हँसते-खेलते रहते, उनमें बचपन ही भरा था ऐसा ही कहिए न। परन्तु अब सिक्के का रग बिल्कुल बदल गया है। अब पहले की एक भी बात उनमे न रही। मामूली बाते करने मे भी मुझे डर लगता है, फिर यह इतनी बडी बात उनसे कैसे कहूँ ?"

नर्मदा ने एक बार अपने ढंग से प्रयत्न करके देखा पर शिधू एकदम उस पर चिल्ला उठा—"तुम घर घुसनी औरते इन बातो को क्या समझोगी ? खून बहाया है हम मर्दो ने। प्राण गए हैं हम मर्दों के। औरतो ने क्या किया ? चूडियाँ फोडी, मगलसूत्र तोडे और माँग का सिंदूर पोछ डाला। उन्हे लगा अपने मृत पति के लिए हमने यह कितना बडा काम कर दिया और अपने को कृतकृत्य समझा। परन्तु हजार सुहागिनो की मागो का सिंदूर पोंछ देने से भारतमाता की माँग मे सिंदूर नही भर जाता ? यदि कुछ दिल मे लगता हो तो आकर हममे शामिल हो। बैठे-बैठे चूल्हा फूंकते रहने की अपेक्षा कम-से-कम बहरे मजदूरो के थोडे कान ही फूँको। मर्दों की तरह आगे बढो। उधर विलायत में देखो, औरतें बन्दूक लेकर रणभूमि पर जाने की माँग कर रही थीं। परन्तु वहाँ मर्द भी बडे ईर्ष्यालु, डरपोक, नामर्द ही होते हैं। उन्हे लगा यदि औरतो ने तलवार के जौहर दिखाए तो मर्दों की इज्जत जाती रहेगी ! इसलिए लाल क्रास का पट्टा देकर मर्दों ने औरतो को अस्पताल मे रख दिया।

यदि अपने देश के प्रति तुम्हें कुछ प्यार या अभिमान हो, तो इस चाल के कबूतरखाने से निकल कर बाहर जाओ और मजदूरों को जाग्रत करो !"

नर्मदा को लगा, कहाँ मैं बोल पड़ी !

नया वर्ष उदित हुआ। पदवियों की खैरात बाँटी गई थी। शिघू के मालिक को 'सर' की पदवी मिली थी। मैनेजर को लगता था जैसे वह 'नाईट हुड' उसे ही मिली हो !

उस दिन मिल बन्द रखी गयी। सब मजदूरो को एक दिन का अधिक वेतन दिया गया। सब को लगा हमारे मालिक कितने उदार हैं !

और यह हाल सुनकर शिघू के हृदय में क्रोध की आग भड़कने लगी। उसे लगा जैसे उस के सारे बदन मे आग लग गयी हो। वह बेचैन होकर गैलरी में टहलने लगा। उसकी वाचा नही फूट रही थी।

शिघू को जिस समय ऐसा क्रोध आया था, उसी समय रमा का शरीर ज्वर से जल रहा था। सुभद्रा और नर्मदा लगातार उसके बिस्तरे के पास बैठी थी। पर शिघू उस तरफ झाककर भी न देखता था।

अर्जुन लगातार दौड-धूप कर रहा था। वह आकर माधवराव को बुला लाया। माधवराव ने सलाह दी कि रमा को किसी अच्छे अस्पताल में ले जाकर भरती कर देना चाहिए। अर्जुन बोला—"हमने यहाँ दो आदमियो की सेवा करके उन्हे अच्छा कर लिया। फिर क्या तीसरे की भी हम सेवा न कर सकेंगे। इन्हे यही रहने दीजिए। हम सेवा करके ठीक कर लेंगे।" परन्तु माधवराव ने अर्जुन की बात नहीं मानी।

वह बोला—"तुम लोग मर्द थे। यह स्त्री है। सुभद्रा और नर्मदा उसकी सेवा करेंगी। मैं यह नही कहता कि वे नहीं करेंगी। पर इस सेवा के कारण ही उन दोनों को इस बीमारी की छूत लग गयी तो उसका नतीजा क्या होगा, यह सोचा है तुमने ? स्त्रियों को इस बीमारी से बड़ा भय रहता है। इनफ्लुएजा से जो मरे हैं उनमें स्त्रियों की सख्या ही अधिक है। इसलिए कहता हूँ। तुम्हें कोई चिन्ता न होनी चाहिए। मैं ही सारा प्रबन्ध किये देता हूँ। मैं तुम में से किसी की भी न सुनूंगा। रमा भाभी को मैं अस्पताल में ही भरती करूँगा; और मैंने जो एक बार कह दिया सो कह दिया।"

अम्बुलेंस कार लाकर माधवराव रमा को अस्पताल ले गया और वहाँ उसे भरती करा दिया।

नर्मदा और सुभद्रा भी साथ गई थी। वे वहाँ का सारा प्रबन्ध देख आयी। तब उन्होने कहा कि माधवराव ने ठीक ही किया।

क्या चल रहा है, इसका शिधू को होश न था। अपने ही विचारो मे खोया वह पिजडे मे बन्द शेर की तरह गैलरी मे टहल रहा था।

उस दिन मिल के अफसरो ने कुदनलाल को एक शानदार पार्टी दी थी। मिल के भिन्न-भिन्न विभागो के मुख्य अधिकारी, जाबर, हैडजाबर भी निमत्रित थे।

मजदूरो को किसी ने भी नही बुलाया था। और मजदूरो को निमत्रित करना सभव है, ऐसा कोई भी समझदार मनुष्य न कहता।

सर कुंदनलाल के बगले के अहाते मे दीवाली की तरह रोशनी की गयी थी। नाच-गाना हो रहा था। बबई के सब बडे-बडे लोग उपस्थित थे। बडे-बडे सरकारी अफसर भी आये थे। अग्रेजी ढग से पार्टी का प्रबन्ध किया गया था और भाषण आरम्भ हुए।

सर कुदनलाल के गुणो का वर्णन करते समय हर भाषणकर्ता को अपने शब्द अधूरे लग रहे थे। उन भाषणो को सुनकर सर कुदनलाल का हृदय भर आया था। उत्तर देने के लिए कुदनलाल खडे हुए। उस समय उनका स्वर गदगद हो गया था। वे बोले—"मित्रो, आपकी यह सहानुभूति देखकर मेरा हृदय कृतज्ञता से भर गया है। महायुद्ध के भयकर संकट मे अपनी दयालु सरकार की सहायता करने मे मैंने जो थोडी सी मदद की है, वह दरिया मे खसखस के बराबर है। मेरी उस राज-भक्ति के पारितोषक के रूप मे हमारी सरकार ने आज मुझे···

एक बड़ा कोलाहल-सा सुनाई दिया। मजदूरो का एक बडा दल शिधू के नेतृत्व मे घुस आया और सर कुदनलाल से मुलाकात करने के लिए हो-हल्ला मचाने लगा।

सर कुंदनलाल बड़े खुशी मे थे। उन्होने बड़े दयालु हृदय से. अपने

मजदूरो को भीतर बुलाया। सब एक पक्ति मे खडे हो गये। नेता की हैसियत से शिघू कुंदनलाल के सामने जाकर खडा हो गया।

शिघू को देखते ही मैनेजर का मुँह खट से उतर गया। अब कोई अजीब प्रसग उपस्थित होगा, ऐसा उसे लगा। सर कुदनलाल शिघू को पहचानते थे। उन्होने पूछा—"कैसे आए मि० जोशी ?"

"यह क्या हो रहा है ?" शिघू ने गम्भीरता-पूर्वक पूछा।

"महायुद्ध के संकट मे सरकार की थोडी सी मदद करने का जो कार्य मैंने किया उसके लिए सरकार ने 'सर' की पदवी देकर मुझे सम्मानित किया है। अत मेरा अभिनन्दन करने के लिए आज मेरे सारे मित्र पधारे है।"

"और हम कौन हैं ? क्या आप के बैरी है ? हमे क्यों नही बुलाया ?"

"यह सामारोह मेरे मित्रो ने किया है। यदि मैं यह सामारोह करता तो तुम्हे जरूर बुलाता ?"

"फिर ये जाबर और हैडजाबर यहाँ क्यों है ?"

"मेरे मित्रों ने ही उन्हें निमंत्रित किया है।"

"फिर आपके मित्रों ने हमें क्यो निमंत्रित नहीं किया ? क्या जाबर और हैडजाबर ही आपके मित्र हैं और हम सब आपके बैरी है ?"

"मि० जोशी, यह आनंद का समारोह है। यहाँ झगडा करने की क्या जरूरत ?"

"आनन्द आपको हुआ होगा, पर हमारे पेट में आग जल रही है। हजारों लोगो का खून चूसकर प्राप्त किये करोडों रुपयो में से मुट्ठी भर रुपये आपने फेंक दिये इसलिए आप 'सर' हो गये ! हम गरीबों ने अपने कलेजे का खून दिया, हाथ-पैर दिये, दिमाग दिया, सिर दिया, तो हमें तो किसी ने 'सर' नही बनाया ? क्या मूल्य सिर्फ रुपयों का ही है ? आप की दयावान सरकार की रक्षा करने के लिए हमने अपना खून बहाया, जो पलटन वाले थे वे लडाई मे इसलिए गये क्योंकि वे नौकर थे, पर लड़ने का जोश हृदय मे रखकर लड़ाई पर गया मुझ जैसा सिविलियन

अपना दिमाग खो बैठा। घर के लोगो से भी वञ्चित हो गया—आज खाने के लाले पडे है उसे। प्राणो की परवाह न करके लडाई पर जाने का क्या यही इनाम है ?"

"यह मैं क्या बताऊँ ? मै कोई सरकार नही। तो फिर आप सरकार से कहिए न।" शिधू का चेहरा हरा-पीला हो गया था। उसका सारा बदन काँप रहा था। मुह से निकलने वाला हर शब्द आग की चिनगारी की तरह उड रहा था। वह बोला—"तो फिर जाकर अपनी सरकार से कहिए कि लड़ाई से लौटे हुए प्रत्येक मनुष्य का जब तक कोई बडा कल्याण कल्याण नही होता है तब तक सरकार द्वारा दी गई इस पदवी को हम स्वीकार न करेगे।"

सर कुदनलाल ठहाका मारकर हँसने लगे। आस पास बैठे लोगो मे भी कहकहे की लहर दौड गयी।

शिधू का खून दिमाग मे चढ गया था। मन पर का उसका अधिकार छूट चुका था। आत्यतिक क्रोध के पराकाष्ठा से बेकाबू होकर उस ने सर कु दनलाल के मुह पर एक जोर का चाँटा जड़ दिया।

सब तरफ हाहाकार मच गया। मैनेजर ने टेलीफोन करके पहिले से हो पुलिस वालो को बुला लिखा था। वे आ पहुँचे थे। शिधू की खोज करता हुआ अर्जुन भी इसी समय वहां आ पहुँचा।

क्रोध के आवेश मे शिधू कु दनलाल पर घू से और चाटे बरसा रहा था। पकड़कर खीचने वाले पुलिस वालो से भी वह नही रोका जा रहा था। जब उसके हाथ पकड़ लिए, तब वह कुन्दनलाल को लाते जमाने लगा। पुलिस ने उसे हथकडियाँ पहना दी और जब वे उसे ले जाने लगे, तब अर्जु न आगे बढकर बोला—"मेरे पटेल को कहाँ लिए जा रहे हो ?"

"पुलिस थाने पर।" एक पुलिस सिपाही ने उत्तर दिया।

"तो फिर मुझे भी ले चलो।"—अर्जु न बोला।

"तुम्हे क्यो ले चले। तुमने कोई गुनाह नही किया है।"

"मैं गुनाह अभी करता हूँ।"—ऐसा कहकर अर्जु न वहाँ से तीर

जैसा निकला और जाकर कुन्दनलाल पर एकदम टूट पडा और अपने ठूठे हाथ से उन्हे पीटना शुरू कर दिया।

पुलिस ने अर्जुन को भी पकडा। हथकडियाँ ठोंकी। तब अर्जुन बोला—"व्यर्थ है तुम्हारी ये हथकडियाँ। मेरा एक हाथ ठूंठा है।"

पुलिस ने उसकी भुजा को मजबूत रस्सी से बाँध दिया।

उन दोनो को पकड़कर ले जाने के बाद शांत चित्त से सर कुंदन-लाल ने अपना भाषण समाप्त किया।

*　　　*　　　*

रमा अस्पताल मे तडपती पडी थी।

सुभद्रा और नर्मदा, शिघू और अर्जुन की बाट जोहती हुई गैलरी में खडी थी। मयेकर शिघू के दल के साथ न गया था।

मयेकर लाकअप में उन दोनों से मिलने आया। उस समय शिघू बोला—"आज मेरा जन्म सार्थक हो गया। देखो मयेकर मेरे हृदय के भीतर खौलने वाला उफान जब इस तरह बाहर निकल पड़ा और जब मैंने अर्जुन को देखा तब मुझे एकएक रमा की याद हो आयी और मेरी आँखो से एकदम आँसू गिर पडे। रमा से कह देना कि अब मैं मनुष्यों में आ गया हूँ। अब उसे चिंता करने की कोई जरूरत नहीं। मैं रोने लगा हूँ। अब मैं मौत से भी नही डरूंगा।"

शिघू की आँखो से लगातार आँसुओं की झडी लगी थी। मयेकर सिसक-सिसककर रो रहा था। अर्जुन अलबत्ता पत्थर के पुतले की तरह तटस्थ होकर बैठा था।

शिघू एकदम हँस पड़ा। वह हँसते-हँसते बोला—"मयेकर, मेरे भाई बन्दो से मेरा संदेश कह देना। मैं उनका अनंत अपराधी हूँ। मैंने बड़ी नासमझी की। मैं अपने मन को न रोक सका, क्या करूँ! मैं अपने को न रोक सका और इसलिए मैं मनुष्यों में आ गया और इसीलिए मुझे माफ कर दो। मेरे कारण शायद तुम लोगों को कोई कष्ट हुए तो उनसे कह देना कि उसका पाप मेरे सिर पर है। यह मैं जानता हूँ।

मयेकर से सिसकी नही रोकी जाती थी। वह रो रहा था।

"रोते हो मयेकर ?" शिधू बोला—"अब रोना ही है सबको। रोने का समय आ गया था और मै रो नही सकता था, इसका मुझे दुख था। पर अब मेरा सुख का प्याला पूरा भर गया है। अब मैं मन-माना रोऊँगा। लडाई अब बद हो गयी है। लडाई पर हम लोगो को जब बाँध कर ले गये, तब सरकार ने वचन दिया था कि हिन्दुस्तान को स्वराज्य देगे। चर्चाएँ चल रही है। माटेग्यु-चेम्सफोर्ड रिफार्म आ रहे हैं। राज्य का सविधान बदलने वाला है।"

हथकडियो मे जकडे हुए हाथों से आंसुओ को पोछता हुआ बडे प्रेम से हँसकर शिधू बोला, "मयेकर, कोई लाख कहे कि हिन्दुस्तान का बडा कल्याण होगा, परन्तु इस लडाई के कारण जिस समय हमने खून बहाया उस समय हमने यह कभी नही सोचा था कि हमे यह पुरस्कार मिलेगा। हमे लडाई पर भेजने वालो ने भी ऐसा कभी नही सोचा था। नये सविधान के आने से भी कुछ न होगा। फिर से अगर लडाई हुई और मै जिदा रहा तो कहूँगा ही। परन्तु अगर मै मर गया तो मेरे देश भाइयो से कहना—"तुम्हारा सत्यानाश हो जाए फिर भी कोई हर्ज नही, परन्तु अपनी खुशी से लडाई पर न जाना। अगर तुम पर जबरदस्ती करे, तो भी लडाई पर मत जाना। लडाई पर जाकर क्या होगा ? हमारा क्या हुआ ?

हथकड़ियो से बँधे हाथ ऊपर उठाकर शिधू मयेकर से बोला—"हमे यही पुरस्कार मिला न ? पैसे देकर कोई 'सर' हो गया, इसलिए सिर देकर हमे ये हथकडियाँ मिली ?"—कह कर वह ठठाकर हँस पडा।

हथकडी से बँधे हाथ से अर्जुन को चुटकी काटकर वह बोला—"सुना अर्जुन, अबे सिपाही के बच्चे ! लडाई के बाद क्या ? लडाई के बाद यह ! लडाई के बाद ये हथकडियाँ ..." ऐसा कहकर हथकडियो से बंधे हाथ उसने ऊपर उठा दिये। हथकडियाँ झनझना उठी।

समाप्त